MANAV ASTRO & VEDIC

LADNUN [RJ] , BANGALORE [KA] 8586094945 , 8302680069

सभी प्रसंगों व विवादों का न्याय क्षेत्र बालोतरा ही होगा।

त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति

संवत्-२०८३

राजा,धान्येश -बुध



उपराजा,नीरसेश,धनेश -गुरु



।।श्री महालक्ष्म्यै नमः।।



मंत्री- मंगल



सस्येश-शुक्र



चतुरंग बलोराजा जगती वशमानयेत् ।
अहं पंचांग बलवान् आकाशं वशमानये।।

त्रिकाल ज्योति पंचांगम् सर्व शास्त्र समन्वितम्।
सरलं सुलभं सर्वमान्यं भारतादि देशकम् ।।

त्रिकाल ज्योति

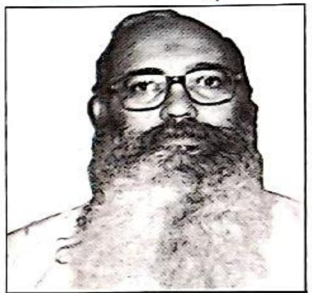


पंचांग प्रवर्त्तक
दैवज्ञ स्व.पं.भवानीशंकर द्विवेदी

ग्रामे नगरे पुरे प्रान्ते प्रचारं बहुवर्तते ।त्रिकाल ज्योति पंचांगम् ब्रह्मपक्षादिनिर्मितम्।।

त्रिकाल ज्योति

श्री विक्रम संवत् २०८३ शाकः १९४८ सन् 2026–27 ई.



पंचांगकर्त्ता
पं.पृथ्वीराज द्विवेदी

प्रकाशक एवं मुद्रक पं.पृथ्वीराज द्विवेदी–गणित फलित हस्तरेखा विशेषज्ञ

सम्पादक–अरुण दवे,वास्तुविज्ञ,याज्ञिक व स्नातक

त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय,बालोतरा 344022 (राज.)

फोन–कार्यालय–02988 224...,मो.9414688805,9460666431,9414755236

प्रकाशन वर्ष
वर्ष ४५ अंक १ पक्ष १

प्रकाशन तिथि
ता.१ जनवरी २०२६ ई.

मूल्य 120/– रुपये

मेघेश,फलेश,दुर्गेश–चंद्र



रसेश–सूर्य



शनि



संवत्सरः	सिद्धार्थ
वर्ष नाम	माघ
रोहिणी निवास	तट
समय निवास	रजक
मेघ नाम	काल
संवत्विश्वा–	अष्टादश

राहु



केतु



"त्रिकाल ज्योति" समाचार पत्र का पंचांग विशेषांक

त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति त्रिकाल ज्योति

व्रत पर्वोत्सव निर्णय:

नक्षत्र सूचको दिष्ट मुपवासं करोति यः स व्रजत्यन्धाता मिस्त्रं सार्धमृक्ष विडंबिना(वाराह चार्य) अर्थात् नक्षत्र सूचक (अविदित्वैव यःशास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते) जो पुरुष बिना शास्त्र के जाने दैवज्ञ हो जाय, के उपदेश किये हुए उपवासादि को जो पुरुष करता हैं वह उस नक्षत्र सूचक के साथ अंधतामिस्र नामक नरक में पड़ता है। निष्कर्षतः आर्ष प्रमाणों से व्रतोत्सवों का निर्णय करना हैं तो आर्ष पंचांग सूर्य सिद्धांत, ब्रह्मसिद्धान्तादि गणित से बनने वाले पंचांग ''पंचवृद्धिःरसक्षयः(65घटी-54घटी)के तिथ्यादिमानों से निर्णय करें ।आज के शताब्दी पंचांग या अंग्रेजी पंचांगों की नकल से बने नकलची पंचांगों की तिथि अपने ही सूत्र 'सप्तवृद्धि दशक्षयः'' का भी अतिक्रमण कर पंचदशघटी(15घटी) तक बढ़ जाती है। कृष्ण पक्ष शुक्लपक्ष की अष्टमी के आसन्न इन पंचांगों की तिथियों में बहुत फर्क रहता है जो मुख्य विवाद की जड़ है। ये आर्ष सूत्रों को तोड़मरोड़ कर अपने व्रतपर्वो को सही बताते है जिससे पंचांग पढ़ने वाले भ्रमित हो जाते है। गणित पूर्वाचार्यों की व निर्णय भी पूर्वाचार्यो के सूत्रों से करना शास्त्र सम्मत है। यही वाराहमिहराचार्य का निर्देश है। धर्मशास्त्रोक्त प्रमाण- यावेद बाह्याःस्मृतयोमाश्च काश्चकुदृष्टयः ।

सर्वास्ता निष्फलाःप्रेत्य तपोनिष्टा हि ता स्मृताः ।।1 ।।

अर्थात् जो स्मृतियां वेद से बाहर है और जो ग्रन्थ वेद विरुद्ध कुतुर्कमूलक है। वे परलोक के सम्बंध में निष्फल है, क्योंकि तमोगुण से कल्पित है। उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोन्यानि कानिचित्। तान्यर्वाक्कालिक तया निष्फलान्यं नृतानि च।।2 ।।अर्थात् वेद मूल से विरुद्ध पुरुष कल्पित शास्त्र उत्पन्न होने पर शीघ्र ही विनष्ट हो जाते हैं वे नवीन होने के कारण निष्फल और असत्य है।

-:निर्णयार्थ आर्ष सूत्रः-

धर्म में भी दो भेद- आजकल मतमतावलम्बियों के कारण धर्म में भी दो भेद -(1) स्मार्त (2) वैष्णव दो होनें से धर्मकृत्य व्रत पर्वोत्सव भी दो-दो होने लग गये हैं। साधारण हिन्दू जनता स्मार्त धर्मी, वैष्णव धर्मी होनें के मतभेद में फंस जाती है इस देश का अति प्राचीन सनातन धर्म ही है। सनातन धर्म का अभिप्राय प्राचीन धर्म, परंपरागत धर्म, विभिन्न देवी, देवताओं की पूजा उपासना, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तर्पण आदि प्रमुख अंग है। सनातन धर्म में सनातनतम अर्थात् आदिपुरुष नारायण(विष्णु)ही है। नारायणपरा वेदा- वेद नारायण के परायण है। पितृदेव मनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्- पितर, देवता, मनुष्यों के सनातन नैत्र वेद ही है। अर्थात् अपौरुषेयवेदोक्त धर्म ही स्मार्त धर्म है।

(1) **स्मार्त**- श्रौत स्मार्त वेद पुराणों में वर्णित सनातन धर्म धर्मशास्त्रोक्त प्राचीन वेद व ऋषि प्रमाणों का पालन करना ही स्मार्त धर्म है। स्मार्त धर्म में पंचदेव गणेश, विष्णु, शिव, सूर्य, दुर्गा की पूजा या इनके विविध अंशावतारों के स्वरूपों की पूजा स्मार्त है। ये सब हिन्दु सनातन धर्मावलम्बि व वर्णाश्रम धर्मालम्बि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि गृहस्थी सब स्मार्त धर्मी ही है। इन सब को आर्ष पंचांगीय ऋषि प्रमाण प्रदत्त धर्मशास्त्र ग्रंथों के आधार पर दिये व्रत पर्वोत्सव मनाना ही श्रेयष्कर है।

(2) **वैष्णव**- एक मात्र विष्णु या राम के पूजक रामानुज, मध्व, वल्लभ, भागवती, रामस्नेही, वैरागी आदि मतावलंबी व तप्तमुद्राधारी, ऊर्ध्वतिलक धारी इन गुरुद्वारों के कंठीधारी गृहस्थी, संत(साद), वैष्णव गृहस्थी जिनकी जाति गुरुद्वारा की कण्ठी व गौत्र है। कुछ कंठीधारी वर्णाश्रम धर्म से बंधे हुये नहीं है गुरुद्वारा धर्म से बंधे हुये ! स्त्रियों के भी कांन फूंक कर गुरु बनते है! जो इस गुरुद्वारा, कंठी के आलावा दूसरे गुरुद्वारा कंठी वालों से वैवाहिक सम्बंध बनाते है जाति कोई भी हो गुरुद्वारा दूसरा होना ही उनका वैष्णव धर्म है। इनका धर्मशास्त्र गुरुद्वारा का मत मानना, व्रत पर्व त्यौहार मनाना ही है इनके कारण एकादशी, कृष्ण जन्माष्टमी, विजया दशमी आदि व्रतोत्सवों का विवाद रहता है। मथुरा, वृंदावन, अयोध्या आदि वैष्णव संप्रदाय मठाधीशों का स्मार्त विपरीत व्रतपर्व निर्णय पूरे देश को भ्रमित कर ज्योतिष की हंसी करा देता है। वस्तुतः राम कृष्ण पूजक भी वैदिक धर्मी स्मार्त ही है। इनमें भी द्वैत भाव पैदाकर धर्म को बांटनें का प्रयास है। जो आर्ष वेद विरुद्ध कृत्य हैं इन्हें भी स्मार्त व्रत ही मनाने चाहियें। इष्ट देव प्रसन्न होंगे।

(1) **वार - उदयादुदयं वार**- सूर्योदय से सूर्योदय तक वार रहता है।
रात 12 बजे से वार तारीख अंग्रेज बदलते हैं।

(2) **व्रतादि** - दिन व्रत दिन में, रात्रिव्रत रात में। **व्रत**- एक समय भोजन।
उपवास- पूरे दिन भोजन नहीं ।

(3) **अहोरात्र**-(दिनरात)६०घटी(24घंटा)एक घटी=0.24मिनट, 1घंटा-2.३०घटी
होरा-दिनरात में 24 होरा 1घंटे में 1 होर। वार से 6ठा वार दूसरी होरा क्रम से वार होरा होगी। सौम्य वार शुभ होरा, क्रूर वार अशुभ होरा।

(4) **प्रहर(याम)**- दिन में 4प्रहर+रात में 4प्रहर कुल 8 प्रहर। एक प्रहर 3 घंटे का।

(5) **दिनमान/2=** (1) पूर्वान्ह - सूर्योदय से आधा दिन 6 घंटा के आसन्न
(2) अपरान्ह- मध्यान्ह से सायं तक 6घंटे के आसन्न।

(6) **तिथि-** घटी के अनुसार तिथि रहती है। कम घटी या ज्यादा घटी के बाद तिथि बदल जाती है जिस का ज्ञान- **उदयव्यापिनी-** सूर्योदय से सूर्यास्त समय तक। **रात्रि व्यापिनी-** सूर्यास्त के बाद में चंद्रोदय के समय में हो तक। **शुद्धातिथि(पूर्णा)**-सूर्योदय से सूर्यास्त तक। **चंद्रोदय व्यापिनी-**चंद्रोदय के समय में हो। **सिनीवाली-**चतुर्दशी मिश्रित अमा जिसमें चंद्र दर्शन आंशिक होवे। **कुहू-**चंददर्शन नहीं होवे प्रतिपदा मिश्रित अमावस्या।

(7) अरुणोदय (उषःकाल, संध्याकाल, ब्रह्ममुहूर्त)- सूर्योदय से 1.30 डेढ़ घंटापहिले का समय। **अरुणोदय / संध्याकाल-** सूर्योदय से3 घटी अर्थात् 1घंटा 12 मिनट पूर्व का अरुणोदय व 2 घंटा पूर्व उषाकाल समय। प्रातः संध्या के संकल्प में सूर्योदय व्यापिनी तिथि वारादि को बोला जाता है।

(8) **पंचधाभक्ता**=दिनमान/5=(1) **प्रातःकाल-** सूर्योदय से 48मिनट पूर्व व 3 मुहूर्त (6घटी) तक= सूर्योदय +2घंटा 24 मिनट तक।

(2) **संगवकाल**(प्रातःकाल) के बाद 6 मुहूर्त (12 घटी) तक =सूर्योदय + 4घंटा 48 मिनट तक।

(3) मध्यान्ह काल (मध्यान्ह दिन) - आगे 9 मुहूर्त (18 घटी) तक = सूर्योदय+ 7घंटा 12 मिनट तक मध्यान्ह संध्या का समय पूर्वा 36 पर 36 मिनट।

(4) **अपरान्ह अभिजित** (विजय) के मुहूर्त- मध्यान्ह 24 मिनट पूर्व व मध्यान्ह +24 बाद का 48 मिनट का समय कुतुपकाल भी कहते हैं अपरांन्ह।

सायान्ह काल- मध्यान्ह के बाद 12 मुहूर्त(24 घटी) तक = सूर्योदय +9घंटा .36मिनट तक यह समय पितृकार्य में ग्राह्य है।

(5) **सायान्ह (प्रदोष) काल-** सूर्योदय के बाद 15 मुहूर्त (30 घटी) तक = सूर्योदय + 12 घंटा सूर्यास्त तक। प्रदोष= सूर्यास्त+2.24= बजे तक तारा दिखने से **नक्त**(रात्री) मानते हैं। **सायं गोधूलि** =सूर्यास्त पूर्व 24 मिनट व सूर्यास्त पर 24 मिनट= 48 मिनट तक गोधूलि रहता है। गुरु दिने सूर्यास्त **पूर्व अर्धयाम** त्याज्यः। शनि दिने सूर्यास्त बाद **कुलिक** त्याज्यः। 13+शनिवार प्रदोष व्रत महापुण्यदायक है।

(9) **दिनमान/15**=मुहूर्त 8वां भाग कुतुप काल= 1 मुहूर्त(48मिनट) = सूर्योदय+6 घंटा24मिनट तक कुतुपकाल। **कुतुपकाल**= मध्यान्ह-24 मिनट व मध्यान्ह +24 तक यह अभिजित(विजय) भी है।

रात्रिमान/15= मुहूर्त 8वां भाग **निशीथ** (अर्धरात्रि) काल=1मुहूर्त (48 मिनट)=सूर्यास्त+6.24 तक निशीथ(मध्यरात्रि) काल।

(10) **तिथि वेध-** (1) **पूर्वविद्धा** तिथि- जो तिथि पहिली तिथि से विद्ध(वेध,मिली) हो वो पूर्वविद्धा कहलाती है। अर्थात् पहिली तिथि में 3 मुहूर्त (2घं.24मिनट) तक मिली है। या 12 घटी(4 घं.48मिनट) तक पहिली तिथि से मिली हो तो पूर्वविद्धा, उस पहिले दिन व्रत करें।

(2) **परविद्धा तिथि-** जो तिथि आगे की तिथि में 3 मुहूर्त के बाद मिली हो या 12 मुहूर्त के बाद मिली (विद्ध,वेध) हो तो दूसरे दिन उसी उदय व्यापिनी तिथि में व्रत करें।

तिथिव्रत निर्णय- कर्मणो यस्य यः कालः तत्काल व्यापिनी तिथि- व्रतपर्व का कर्म काल समय शास्त्र सम्मत तिथि हो उसका व्रत पर्व उसी समय में करें।

(11) **श्राद्ध ज्ञान-** (1) महालय श्राद्ध- भाद्रपद शु.15 से आश्विन कृष्ण पक्ष अमा तक।(2) **पार्वणश्राद्ध** -नाना श्राद्ध आश्विन शुक्ला प्रतिपद पिता आदि तीन का पार्वण। (3) **एकोदिष्ट श्राद्ध**-वार्षिक संवत्सरीश्राद्धः या क्षयाहः संवत्सरी श्राद्धः। सपत्लिक पिता आदि तीन का पार्वण। श्राद्ध मृत्यु तिथि क्षयाहदिन को ही करें। तारीख को नहीं करें।

(12) **नवरात्र(प्रगट दो)**-(1) चैत्र शुक्ला 1 से वासंत नवरात्र (2) आश्विन शुक्ला 1 से शारदीय नवरात्र - इसमें गर्बा आदि उत्सव होते हैं।(2) गुप्त दो- (1) आषाढ़ शुक्ला 1 से (2) माघ शुक्ला 1 से - इन में दसमहाविद्यादि गुप्त विद्याओं का अनुष्ठान होता है।

घटस्थापन- (1) प्रतिपदा क्षय हो तो अमायुक्ता ग्राह्यः(2) द्वितिया क्षय हो तो मुहूर्त मात्र प्रतिपदा ग्राह्यः। (3) प्रतिपदा वृद्धि हो तो प्रथम प्रतिपदा ग्राह्य (4) अमा वृद्धिः हो तो अमायुक्ता प्रतिपदा में करे। अर्थात् **प्रतिदा में ही घट स्थापन करें, द्वितिया में नहीं।** आश्विन प्रतिपदा में यदि वैधृत और चित्रा का संयोग हो तो वैधृत जन्य दोष नहीं वरना वैधृत त्याग करके करें। अभिजित में वैधृतादि दोष नहीं।

(13) **हरिवासर-** आषाढ़ शु.12 को अनुराधा प्रथम चरण, भाद्रपद शु.12 को श्रवण द्वितिय चर्ण ,कार्तिक शु. 12 को रेवती चतुर्थ चर्ण का संयोग, हो तो हरिवासर कहलाता है इन नक्षत्रों के चर्णो को त्याग कर पारणा करें, नहीं तो एकादशी का व्रत भंग हो जाता है।

(14) **एकादशी व्रत-** (1) **स्मार्ता-** (1) यदि दशमी में एकादशी का क्षय हो तो उसी दिन स्मार्ता व्रत करें द्वादशी में पारणा करें। (2) दशमी विद्धा हो या द्वादशी क्षया हो तो भी एकादशी में व्रत करें। एकादशी पूर्ण या वृद्धि हो तो भी पूर्ण एकादशी को व्रत करें।

हरिवासर त्याग कर पारणा करें।(2) **वैष्णव**-(1) एकादशी क्षय हो तो द्वादशी को व्रत करें।(2) दशमी 56घटी से एक पल भी अधिक हो तो द्वादशी को व्रत करें।(3) दो दिन 11 हो तो अगले दिन एकादशी करें।(4) **भागवत(निम्बार्क)**-दशमी 45 घटी से एक पल भी अधिक हो तो निम्बार्क द्वादशी को व्रत करते हैं। शेष दिनों में यथात् एकादशी को ही करते हैं।

(15) महारात्रियाँ - (1) मोहरात्रि (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)-अर्द्धरात्रि व्यापिनी (सूर्यास्त + 6घं.24मि.) या चंद्रोदय व्यापिनी को सप्तमी विद्धा अष्टमी हो तो स्मार्ता व दोनों दिन अर्द्धरात्रि को हो तो अष्टमी को व्रत करें। अगर रोहिणी हो तो श्रैष्ठ नहीं हो तो भी चंद्रोदय व्यापिनी अष्टमी में ही व्रत करते हैं। सप्तमी विद्धा को वैष्णव व्रत नहीं करते हैं। परन्तु रोहिणी युत हो तो विशेष फलदायी है।

(2) कालरात्री (दीपावली) -सायं प्रदोष (सूर्यास्त+2घं.24मि.तारा दिखने तक) से मध्यरात्रि तक अमा हो उसी दिन दीपोत्सव प्रदोष से वृष, सिंह लग्न तक कालरात्रि को मनावें। अमावस्या पूर्ण हो तो अमावस्या को मनावें, नहीं तो चतुर्दशी युत अमा. को मनावें। अमावस्या का विशेष महत्व है अमा नीशान्त में पितृतृप्ति हेतु दीपकश्राद्ध करने का होता है। ग्रहण हो तो सूतक व ग्रहणकाल को त्यागे

(3) महारात्रि(महाशिवरात्रि) - यह व्रत चतुर्दशी तिथि निशीथ व्यापिनी (अर्धरात्रि = सूर्यास्त+6घं.24मि.)में आवे या तृयोदशी न्यूनाधिक हो तो चतुर्दशी विद्धा हो तो उसी दिन की तिथि 14 में मनावे।

(4) होलिका रात्रि- दिन में, भद्रा में, प्रतिपदा तिथि में होलिका दहन नहीं करे। पूर्णिमा ब्रह्म मुहूर्त तक हो उस समय तक होलिका दहन करे। भद्रोपरांत पूर्णिमा के होते भद्रापुच्छ (भद्रा के तृतीय चरण अंत तीन घटी 1.12मिनट का समय) में जो होलिका दहन करते हैं परन्तु **असिते सर्पिणी ज्ञेया सिते विष्टिस्तु वृश्चिकी** भद्रा का डंक त्याज्य है यथा- **सर्पिण्यास्तु मुखं त्याज्यं वृश्चिक्याः पुच्छमेव च।।**'' त्याज्य है (मुहू.चिं.पीयूष धारा) तब राष्ट्र, ग्राम, उस स्थान ''**भद्रायां देशनाशनम्**'' विनाशक घटनायें घटती है। यह भद्रापुच्छ में तो कृष्ण पक्ष की भद्रा में व शुक्ला में वृश्चिकी भद्रा का डंक त्याज्य है। जो विशेष परिस्थिति पूर्णिमा अभाव न हो, में अशुभ को टाल के करने का निर्देश है। चंद्र ग्रहण काल को त्याग कर दहन करे। **रात्रौ भद्रावसाने तु होलिका दीपयते तदा**- रात को भद्रा की समाप्ति पर होलिका का दहन करें। □□

इस वर्ष के विवादास्पद व्रत पर्व का निर्णय-

(1) परशुराम जयंति-ता.19 अप्रेल 2026 वैशाख शुक्ला 2 परम् तृतीया सायं ''प्रदोष व्यापिनी'' ग्राह्या:।

(2) अक्षय तृतीया-ता.2 अप्रेल 2026 वैशाख शुक्ला 3(तृतीया) ''त्रिमुहूर्त व्यापिनी'' पूर्वान्हा ग्राह्य:।

(3) स्कन्द षष्ठी - पूर्व विद्धा ग्राह्या: ता.24 मार्च 2026ई.।

(4) विवस्वत् सप्तमी -ता.21.7.26ई.''पूर्व विद्धा द्विज श्रेष्ठ: कर्त्तव्या।

(5) कोकिला व्रतम्- ता.28.जुलाई 26ई. प्रदोष व्यापिनी आषाढ़ी पूर्णिमा को होता है। यदी दो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन होगा।

(6) सिद्धि विनायक व्रतं(गणेश चतुर्थी)- ता.14.9.26 यह व्रत मध्यान्ह व्यापिनी भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी के दिन किया जाता है। यदि तृतीया की घटी व चतुर्थी की घटि दोनों में यह मध्यान्ह व्यापिनी हो तो दूसरे दिन करें।

(7) महालक्ष्मीव्रत प्रारंभ:- ता.18.9.26 ई. को व्रत चंद्रोदय व्यापिनी भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को प्रारंभ होकर चंद्रोदय व्यापिनी आश्विन कृष्णा अष्टमी में पूर्ण होता है।

(8) राधाष्टमी- ता.19.9.26ई.को राधा जी का जन्म मध्यान्ह व्यापिनी अष्टमी में हुआ था अत: जिस दिन अष्टमी मध्यान्ह व्यापिनी हो उस दिन किया जाता है।

(9) महालय श्राद्ध निर्णय- श्राद्ध अन्तिम श्वांस परित्याग के समय जो तिथि अर्थात् मृत्यु के समय की तिथि में ही करना चाहिए। तारीख को नहीं करें। श्राद्ध करें, श्राद्ध भेलनें की गोठ जरुरी नहीं है।

(10) गोवर्धन पूजा निर्णय- ता.9.10.26ई.

''विशाषायाम् अमावस्या विशाखा प्रतिपद्यता।
आयु पुत्रं धनं हन्ति सुरभि पूजकां स्तथा।।'' अर्थात् कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को ही गोवर्धन, बलिपूजा होती है। द्वितीया में नहीं होती इस वर्ष में अमायुता प्रतिपदा में अमावस्या की समाप्ति पर ब्रह्ममुहूर्त में इसे कर लेना चाहिए। परन्तु यदि प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र आ जावे तब यह अमावस्या युता प्रतिपदा में स्वाति नक्षत्र में ही कर लेनी चाहिए। अगर स्वाति नक्षत्र में नहीं हो सके तो प्रतिपदा में विशाखा नक्षत्र का त्याग कर प्रतिपदा में गोवर्धन पूजा, बलिपूजा कर सकते हैं। प्रतिपदा की समाप्ति पर द्वितीया में नहीं करें क्योंकि चंद्रोदय हो जाता है। □□

पूज्य गुरुदेव



स्व. पं.भवानीशंकरजी द्विवेदी काणाणा

-: संवत्सरफल :-

ऊँ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानु शशी भूमि सुतो बुधश्च:।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शांतिकरा भवन्तुः।।

राजा बुध- बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं, गृहे तूर्य विवाह मंगलम्।
प्रकुर्वति दानदयां जनोपि, स्वस्थं सुभिक्षं धन धान्य संकुलम्।।१।।

उपराजा गुरु- गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले काम दुघाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते।२।।

मंत्री मंगल- अवनिजो ननु मंत्रिकतां गतो, भवति दस्युगदादि वेदना।
जनपदेषु जयं सुख संचयंन बहुगोषु पयो द्विजकर्मच ३।।

सस्येश शुक्र- शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां, मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियं।
गोधूम शालीक्षु धनं प्रियंगु, वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि।।४।।

धान्येश बुधः- बुध धान्याधिपे मेघा, जलं मुंचति वैभृशम्।
सैन्धवे लाट देशे च, माधवोल्पं च वर्षति।५।।

मेघेश चंद्र :- शशिनि तोयद पेयदि गो महिष्वज खरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवती धन धान्यवती धरा, विविध भोगवती ननुभामिनी।।६।।

रसेश सूर्यः- रसपतौ तरणी धरणौ तदा, विरस भागरताल्प पयोधरा।
वसन तैल धृत प्रियमानवाः, सुखे रसं न भुनक्ति महीपतिः।।७।।

नीरसेश गुरु- हरिद्रा पीत वस्तूनि, पीतवस्त्रादिकं चयत्।
नीरसेशो यदाजीवः, सर्वेषां प्रीति रुत्तमा।।८।।

फलेश चंद्रः- यदि विधुःफलपोद्रुमराशयः, फलयुतावलिभिःकुसुमैर्युताः।
द्विजमुखावर भोग समन्विताः, नृपातयो नयनाटन तत्पराः।।६।।

धनेश गुरुः- सुमनसांच गुरुर्द्रविणाधिपो, वणिज वृत्तिपराःसुख भाजनाः।
फलित पुष्पित भूमि रुहाः सदा, विविध द्रव्ययुता भुवि मानवाः।।१०।।

दुर्गेश चंद्रः- गढपतिःशश लांछन को यदा, नृपसु राज्य विलासितपौ रजाः।
बहु धनेक्षुज गो रास भोगिनो, नर वरावर वर्णित विग्रहाः।।११।।

सिद्धार्थ नाम संवत्सरः- सिद्धार्थ वत्सरे भूयो ज्ञान वैराग्ययुक् प्रजाः।
सकला वसुधा भाति बहु सस्यार्घ वृष्टिभिः।।१२।।

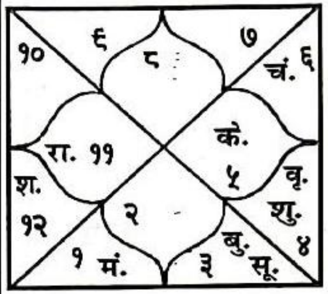
गुरुउदीयमान माघ वर्षः- माघे संपत्करोब्दःस्यात् सर्वभूत हितोदयः।
सम्यग् वर्षति पर्जन्यःसुभिक्षं च प्रजायते।१३।।

मेघ नाम कालः- रोगतो विकलताव पुष्पतांस्यान्मिथःकलहताक्षमाभृताम्।
काल नाम जलदोदयों यदा नैव वर्षति जलं वृषातदा।१४।।

रोहिणी निवास तटेः- "यदि विधि धिष्ण्यं पतति तटस्थम्।
शुभ जल वृष्टिर्धन कण वृद्धिः।।१६।।

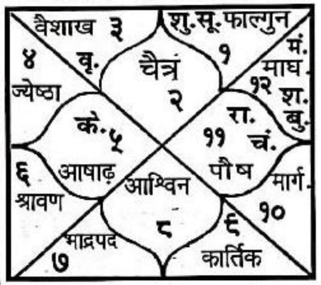
नाग नाम तक्षकः- तक्षकाभि नागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके।
तत्र मध्यम वृष्टिः स्याद्विग्रहा नृपतेर्मतिः।।१७।।

आद्रा प्रवेश लग्नः-संवत्२०८३ द्वि.ज्येष्ठ शुक्ला८ चंद्र ३२/२१ उ.फा.२०/५८ परं हस्त, व्यतिपात२०/४३परं वरियाण बवकर्णे। ता.२२.६.२६ई.। कन्याचंद्रः। प्रातः सूर्य २/६/१२/१३ ग.५६/५६आद्रायांरवि२६/१७,लग्न७/१०



यदि स्याद् अष्टमी तिथ्यामार्द्रा नक्षत्रगो रविः। सस्यानां वाससा मूल्यं स्वल्प वृष्टिर्न संशयः।।१।। अर्थात् अष्टमी को आद्रा हो तो अन्न, वस्त्रादि का मूल्य बढ़ जाय और वर्षा कम हो। शशिधर वारे स्मर हर धिष्ण्ये। दिन कर वेशेसतिहि सुभिक्षम्।।२।। सोमवार को आवे तो सुभिक्ष हो। हस्तनक्षत्रगे चंद्रे रौद्रनक्षगो यदि। सवितास्यात्तदा सर्वे सस्य सौख्य समन्विताः।।३।। हस्त नक्षत्र हो तो सब लोग धान्यों से संयुक्त रहे। वरीयान् वर्तमानश्चे द्रवे रार्द्रा प्रवेशने। अल्प वृष्ट्य खिलं धान्यं कंद मूलादि दुर्लभम्।।४।। वरीयान् मे हो कम वर्षा होने से कंद मूल फल धान्यादि दुर्लभ हो।

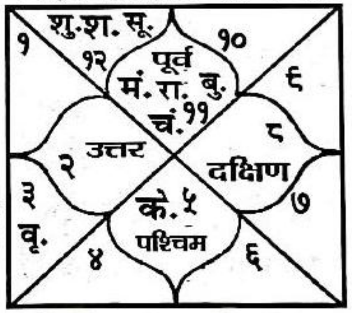
जगल्लग्नः मेषेऽर्क प्रवेशः-



संवत् २०८३ वैशाख कृ.१२ मंगल ३४/१२ शत्तभिषा १४/१३ शुक्ला१४/३, गरकर्णे। कुंभ चंद्र। ता.14.4.26ई.। सूर्य ११/२६/५४/१६ ग.५८/४६मेषेऽर्क ५/५३ लग्न १/११

फल- चैत्र मास में गर्मी, बादल। वैशाख में वर्षा। ज्येष्ठ में गर्मी, बीमारियां। आषाढ़ खण्डवृष्टि। श्रावण में अतिवृष्टि, गृहपातिनी वर्षा। भाद्रपद में सुभिक्ष, गर्मी। आश्विन गर्मी। कार्तिके सुभिक्ष। मार्गशीर्ष मध्यम। पौष, माघ, फागुण में प्रकृति प्रकोप, जनधन पीड़ित रहे।

वर्ष(संवत्सर)लग्नःचिचार



वर्ष लग्नः- वर्षान्त सं.२०८२ चैत्र कृष्णा ३० बुध ५६/३६ पू.भा.५२/५४शुभ५०/४ नागकर्णे। ता.18/19मार्च 2026ई.। मीन चंद्र। प्रातःसू.११/३/१५/६ग.५६/४६अमा इष्ट ५६/३६ ल.१०/६ कुंभे सुखानि पूर्वस्या मुदग्दुर्भिक्ष संभवः। हाहाकारः पश्चिमायां भवेद् धान्य महर्घता।।१।। कुंभ लग्न में वर्ष प्रवेश पूर्व में सुख, उत्तर में दुर्भिक्ष और पश्चिम में धान्य की महंगाई से हाहाकार हो। दक्षिणे विग्रहश्चैव मध्यदेशे महासुखम्।। दक्षिण में विग्रह मध्यदेश में सुख हो।ईशान वायव्य में सुभिक्ष।

लाभ खर्च (अष्टोत्तरी मतेन:)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृष्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	५	१४	२	११	१४	२	१४	५	८	११	११	८
खर्च	५	११	११	८	२	११	११	५	११	५	५	११
फल	लाभ	हानि	रोग	सुख	विजय	रोग	हानि	लाभ	सुख	विजय	विजय	सुख



देश विदेश की भविष्यवाणियाँ

(विशेषतः-विश्व परिपेक्ष्य में ये भविष्यवाणियाँ है। छत्रभंग का अभिप्राय- सत्ता, सत्ताधीश व बड़े नेता से संबधित जानें। राजा का अभिप्राय सत्ता पर बैठा नेता, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति व प्रख्यात व्यक्ति से जानें।सत्ता पर क्रूर योगों का फल जल्दी प्रभावी होता है जो इसमें राजनैतिक भविष्य दिया गया है। अच्छे बुरे योगों का फल "मौसम भविष्य" में पढ़ें)

शनि से- पश्चिमीय देशों में भारी विनाश : भारत की समृद्धि : यतो धर्म स्ततो जयः

इस पूरे वर्ष में शनि मीन(मत्स्य,मत्स्या अवतार) राशि पर चलेगा। जिससे जलज जीवों को कष्ट,समुद्रीय तूफान से विनाश,समुद्र में विलीन बड़े जहाजों,पनडुब्बियों का होना होगा। समुद्रीय युद्ध से समुद्र कोपायमान होवे। समुद्रीय गर्भ मे विनाशकों को विलीन कर देगा। राक्षसीय कृत्य करने वाले पापाचारियों का अंत करेगा। मत्स्या अवतार स्वरूप शनि देव पुण्यात्माओं को बचायेंगे। एवं च- **पृथ्वी वै कम्पयमात्रं प्रचलित पवनः कम्पते नागलोकः। सप्तद्विपेषु सिन्धो र्गिरिवर गहने सर्व वृक्षादि हानिः।। नाशः पृथ्वीपतीनां जनपद विलयो यान्ति मेघाः प्रणाशं। चक्रावर्तेः समस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे सूर्यपुत्रे।।१।।**(वर्ष प्रबोध) अर्थात् मीन शनि से पृथ्वी कम्पित रहे। प्रचण्ड पवन (तूफान) चले,पाताल लोक(अमेरिका) आदि में भूकम्प हो। सप्तद्विपों में,सिंधु तथा पर्वतों में उत्पात हो व सब वृक्षों में हानि हो। राजाओं का नाश हो। जनपद विलीन से मनुष्यों का नाश हो,मेघों का नाश (बादल फटे) और चक्रावात(पवन) से सारा जगत घूमे। एवं च- **कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः। शनिः करोतिदुर्भिक्षं राजां युद्धं परस्परम्।।२।।**(वर्ष प्रबोध) मीन शनि से दुर्भिक्ष और राजाओं में परस्पर युद्ध हो। **अर्क पुत्रो यदा मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्व नद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदाः।।३।।** (भविष्यफल भा.) मीन शनि से दारुण दुर्भिक्ष पढ़े और समुद्र तथा सब नदी सूख जावें और पशुओं का नाश हो। **मिथुने वा धनुर्मीने राशौ मन्दःसमाश्रितः। तदा भूपा विनश्यन्ति पृथ्वी शोणित पूरिताः।।४।।** (भवि.भा.) राजाओं का विनाश,पृथ्वी रक्त से पूरित होवे। **कै जु शनीचर मीन को,कैजु तुला को होय। राजा विग्रह प्रजा छय,विरला जीवै कोय।।५।।** (घाघ भड्डरी) **मीन शनीश्चर करता वास। सब देश का करता नाश! अथवा घन हुई परलो काल,सागर की जल तोड़े पाल।। पुर पट्टन दीसै जु जलंत, साधु लोक जग घने क्षयंत।। नदी नीर जावै तिरवंस, होइन बरषा परबत भ्रंस।। बोयो बीज सभी उड़ जाइ,चौपद की जग भूख खाइ।। बारह राशि शनिश्चर फिरै,कहै मेघजल करक जु लरै।।६।।** मेघमाल) **शतभिष पूर्वाभाद्रपद उत्तरा भाद्रपदानि। जो इन महि शनि आवहिं दक्षिण दिश में हो हानि।।सिंहलदद्रजु भीरथ मच्छ कह्यो बनवाइ। तापि महेश अरु किष्किंधा,अरु लंक मनिधार।। कह्यो त्रिकूटै देश ही, श्री पर्वत इक जान। देश ग्यारही दृष्टि इनि ए,दक्षन महि हान।।७।।**(मेघमाल) **मीन शनि संपूर्ण पश्चिम,उत्पात्र युद्ध को भोग। समुद्रीय तूफान भूकंप पवन,राज मरण जन रोग।।८।।** निष्कर्षतः मीन शनि के कारण संपूर्ण पश्चिमीय देश,सप्तद्विप क्षैत्र,सिंधु क्षैत्र,अमेरिका,चीन व कुंभ,मीन,मेष राशियों के देश साढ़े साती शनि पनोती में व सिंह,धनु राशि के देश शनि ढैया में होने से व इन्हिं राशियों के नेता,राजा उत्पात,सत्ता पलट युद्ध,भूकम्प,तूफान, रोग,मरण आदि से पीड़ित होंगे। मीन का शनि गुरु क्षैत्री होने से "स्थान वृद्धि करो शनि" के अनुसार मीन राशि व धनु राशि वाले भारत आदि की होने से विजय,मान सम्मान से वृद्धि सम्पन्नता के साथ अपना बचाव करेगा। इस वर्ष में मीनावतार शनि बीज को नष्ट होने नहीं देगा। गुणी जनों का बचाव भी करेगा। इसलिये तारणहार नारायण(मत्स्य भगवान) की आराधना,यज्ञ आदि से सुनेंगे रक्षा करेंगे। परमाणु प्रदूषण से बचायेंगे। पूरे विश्व में कहीं प्रकृति प्रकोप,भूकम्प,युद्ध से विनाश,जल प्रलय,दुकाल, रोगों से पीड़ित होंगे। राक्षसी कृत्य करनें वाले पापाचारी,आतंकवादी,जीव भक्षकों पर शनि कुपित हो विनाश करेगा। इन राक्षसों के षड्यंत्र की ऐसी स्थिति में **"यतो धर्म स्ततो जयः"** से ही बचाव होगा। **धर्मो रक्षति रक्षितः** धर्म से ही रक्षित हो सकेंगे।

गुरु से - वीर योद्धाओं का संहार : पृथ्वी पर प्रेतों का ताण्डव : भारत में सतयुग सनातन धर्म का प्रभाव

इस पूरे वर्ष में गुरु मिथुन(स्त्री पुरुष मैथुनी श्रृष्टि),कर्क (जलज उच्च राशि) व सिंह (सूर्य क्षैत्री गुरुज,मित्रभ राशि) इन तीन राशियों पर चलेगा तब- **अब्द मध्ये यदा जीवः क्रमाद् राशि त्रयं स्पृशेत्। तदा सुभट कोटीभिः प्रेत पूर्णा वसुंधरा।।१।।**(वर्ष प्रबोध) अर्थात् वर्ष के बीच में यदि गुरु तीन राशियों को स्पर्श करे तो अच्छे योद्धाओं की कोटी (क्वालीटी)। अर्थात् प्रभावशाली वीरों का नाश होता है तथा पृथ्वी प्रेतों से पूर्ण होती है। एवं च- **मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्। नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।२।।** वर्ष प्रवेश से ता.२५.५.२६ तक मिथुने गुरु से स्वल्प वर्षा,दारुण भय और रजाओं में विग्रह होता है। आगे कर्के गुरु ता.२४.१०.२६तक बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति। राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।३।। आगे ता.२४ अक्टुम्बर तक कर्के गुरु व पुनः ता.१०.२.२७ई. से वर्षान्त तक कर्के गुरु से वर्षा कम हो,राजाओं में विग्रह हो और दुर्भिक्ष पड़े। **यदसिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते। मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहु सस्या च मेदिनी।।४।।** सिंहे गुरु ता.२४ अक्टुम्बर से ता.८.२.२७ई. तक होने से वर्षा,खेतियां अच्छी, सुभिक्ष हो। वर्ष में गुरु नीर,जल,अमृत नाड़ियों पर होने से वर्षाप्रद है।

निष्कर्षतः- तीन राशि गुरु चले,मिथुन कर्क अरु सिंह। प्रेतपूर्ण हो वसुंधरा, सुभट मरे रण सिंह।।५।। फल घटित होवे इस वर्ष में मिथुन का गुरु व्याभिचारियों,बलात्कारियों,आतंकवादियों का व उनको प्रश्रय देनें वाले राजाओं लोगों का विनाश करेगा। भारत की धनु राशि का पति गुरु होने से कानून न्याय व्यवस्था कठोर होगी। आगे कर्कस्थ उच्च गुरु धार्मिक उच्च विचार धारा,उच्च शिक्षा व सनातन हिन्दु संस्कृति के प्रति विश्व के अन्य धर्मावलम्बी प्रभावित होंगे। अपनायेगें व अध्ययन करेंगे। सिंहस्थ गुरु अपने गुरु सूर्य के यहां जाकर पुनः अपनी उच्च कर्क राशि पर आकर पापाचारियों का विनाश,सत्तापलट करेंगे। विशेषतः- कलियुग में सतयुग कल्कि अंश का प्रादुर्भाव होगा। यथा- **यदा सूर्यश्च चंद्रश्च तथा तिष्य बृहस्पति। एक राशौ समेष्यन्ति प्रपत्स्यति तदा कृत्तम्।।६।।**(महा.पर्व.२/पृ.६२४) अर्थात् पुक्ष नक्षत्र पर सू.+वृ.+चं.आवे तक सतयुग (मत्स्य,कच्छप वराह,नृसिंहावतार)के समान कलियुग में कल्कि अंश का प्रादुर्भाव होवे पुक्ष गुरु रविचंद्रयुत,सतयुग आजात। **रवि गुरु चंद्र त्रिकोण में,कल्कि अंश प्रगटात।।७।।**जो पापियों का अंत करेगा। सतानत धर्म से भारत को सुदृढ़ करेगा। भारत से अकस्मात् उच्च स्थिति का लाभ,मजबूती प्रदान करेगी। भारत आर्थिक स्थिति से सुदृढ़,विश्वगुरु कहलायेगा।

राहु केतु से - पापियों का संहार : पाप का घड़ा फूटे : पलायन : जल विप्लव

कुंभ राहु भाण्ड तेज जो,पाप घड़ा दे फोड़। मकर राहु जलज मरे,दे कुंभ मकर घर छोड़।।१।। सिंह कर्क राशि पर,केत छुड़ावे खेत। जन पलायन बहु जंग हो,टूटे सारा हेत।।२।। अर्थात् इस वर्ष में कुंभ राहु व सिंह केतु ता.१७.११.२६ तक होने से पापाचारियों के पाप से पाप का घड़ा भर चुका है जो उनकी करतूतों से पाप घट फूटेगा,पापाचारियों का विनाश होगा। सभी प्रकार के बर्तन भी तेज होंगे। मिशाईलों का विस्फोट। परमाणु विकिर्णों का प्रभाव भी विनाशक रहेगा। अग्निकाण्ड, प्रदूषण, विशाक्त दवाईयों से जनधन पलायन करेगा। गर्भज संतानों में विकृति पैदा होगी। इस समय तक प्रदूषित वस्तुओं के खानपान से भी बचे। इसी समय तक सिंह केतु पलायन कारक है। अनेंको वीर युद्ध में वीरगति को प्राप्त होंगे। सिंहादि जानवरों की भी हत्यायें बढ़ेगी। आगे **मकरराहु व कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त चलेंगे। मकर राहु से जलज जीवों का मरण व समुद्रादि से बाहर आयेंगे। जलज प्रदूषण से भयभीत होंगे। कर्क केतु भी जलज राशि पर जीव जंतुओं का बढ़ना व संहार होता दिखेगा। युद्धोपद्रव होगा। मित्रतायें टूटेगी। मित्र शत्रु बनकर एक दूसरे को मारने का प्रयास करेंगे। वर्ष भर

राहु केतु जल व अमृत नाड़ियों पर होने से कहीं बादल फटेंगे। जलज जहाज समुद्र में डूबेंगे। बाढ़,अतिवृष्टि का भी ताण्डव,जल विप्लव होगा।

निष्कर्षतः-यह वर्ष कुंभ,मकर,सिंह कर्क राशियों के देशों,नगरों, मनुष्यों को उत्पिड़ित करेंगे। सच्ची नीति व्यवहार व कठिनाईयों में भी अडिग धर्मरक्षकों को ये ग्रह अकस्मात् राजयोगद भी रहेंगे।

चैत्र शुक्ल में- छत्रभंग : समुद्रीय विनाश : वैर विरोध बढ़े : पाप का घड़ा फूटे

(१) ता.२०.३.२६ को मीने चंद्रोदय रेवती नक्षत्र पर होने से **शत्तभिष पूर्वाषाढ़ श्लेष रेवती। भरणी ज्येष्ठा जान चंद्र जे उगमती। छत्र भंग इक मास जगत दुख पावही। होवें राज विनाश अन्न महिंगा वहीं।।१।।** एक मास तक यह फल घटित होगा। सत्ता पलट,राजा(नेता) का मरण होवे। (२) वर्ष प्रवेश से मीने सू.+श.की युति ता.५ अप्रेल तक **अर्क शौरी महायोगो महीनाशाय कल्पते।।२।।** पृथ्वी पर विनाशंक घटना होवे। समुद्रीय उत्पात,जहाजों,पनडुब्बियों का डूबना,पितापुत्र में व मैत्री राष्ट्रों में वैर विरोध बढ़े मुश्लिम देशों में परस्पर लड़ भिड़े विनाश होवे। जलज जीव पीड़ित होवे। (३) ता.५ अप्रेल तक कुंभे मं.+बु.+रा.युति **"त्रयोघ्नंनति नाराधिप।।३।।"** बड़े नेता,राजपुरुष का मरण होवे। कुंभे मं.+रा.युति से अग्निकाण्ड विष प्रदूषण से विनाश होवे। (४) ता.२५ मार्च को कुंभे बु. +रा.का ग्रहण बुद्धिमानियों का राजदूतों का विनाश व सरयू ,नेपाल, पूर्व सागर,स्त्रियों का राजा,योद्धा,पंडित और बालकों का नाश हो।

वैशाख में - रोहिण शकट भिन्न : वायुयान दुर्घटना : युद्धादि विनाश से वसुधा कपाल पूरित : भारी शोक व्याप्त

(१) इस मास में पांच गुरु पश्चिमे विग्रहं अर्थात् पश्चिमीय देशों में युद्धोपद्रव होवे। (२) ता.५ से ७ अप्रेल तक मीने सू.+मं.+श.युति **अर्कशौरी भौम शौरी महा विनाशाय कल्प्यते।।१।। बड़ी विनाशक घटना घटे। त्रयोघ्नंनति नराधिपं।।२।।** बड़े नेता,राजा का मरण होवे। (३) ता.७ से १४ अप्रेल तक मीने सू.+मं.+बु.+श.युति **चत्वारो राज्य नाशाय।।३।।** सत्ताभंग आदि घटे। आगे ता.१४ से १७ अप्रेल तक मीने चं.+मं.+बु. +श.युति **चतुर्ग्रह समायोगे दुर्भिक्षादि भयं भवेत्। महारोग भयं राष्ट्र क्षयो वृष्टि क्षयोऽपि च।।४।।** अर्थात् दुर्भिक्ष,महारोग,राष्ट्रक्षय,वृष्टिक्षय से जनता उत्पिड़िल रहे। **प्लावयंति महिम् सर्वा रुधिरेण जलेन वा।।५।।** कहीं पृथ्वी रुधिर से पूरिल,कहीं जल से पूरित होवे। (४) ता.१४ अप्रेल मेषेऽर्क मंगलवारी भारी गर्मी,अग्नि उपद्रव होवे। (५) ता.१८ अप्रेल चंद्रोदय शनिवारी व भरणी नक्षत्र पर होने से - **जे शशि ऊगे सोम शनि,एक अचंभो जोइ। छत्र परे दिन तीस महिं कै कण महिंगो होइ।।६।।** तीस दिन में फल घटित होवे। (६) मीने मं.+बु.+श.युति ता.१८ से २६ अप्रेल तक बड़े राजपुरुष का मरण। (७) ता.१८ अप्रेल से १२ मई तक आगे मिथुने गुरु पीछे वृषे शुक्र से **आगे गुरु पीछे भृगु सत्ता पलट हो जाय। वर्ण संकर लड़ भिड़ मरे,धर्मक्रांति आ जाय।।७।।** फल घटित होवे। तथा ब्राह्मण,ढोर ,देवस्थान,पूर्व दिशा में विनाश,गले में पीड़ा होवे।(८) मीन मं.+श.युति ता. २६ अप्रेल से १३ मई तक यमारयो पवन हुताशजं भयं अग्नि व पवन भय होवे। **शनैश्चर धरापुत्रा वेकस्थौ वृष्टि कारकौ। तदा च तावती वृष्टिर्यावति गृहपातिनी।।८।।** समुद्रीय तूफान से गृहपातिनी वृष्टि होवे। **मीन राशि शनि भौम युत,युद्ध तूफान गृहपात। अग्निकाण्ड यवन मरे,परमाणुं युद्ध प्रतिघात।।६।।**आदि फल विश्व में घटित होवे। ता.२६ अप्रेल से ता.७ मई तक शुक्र द्वारा रोहिणी शकट पर व शनि दृष्ट से ता.२ को १७ अंश परिमित **शकट भिन्न से प्राजापत्ये शकटे भिन्न कृत्वे व पातकं वसुधा। केशास्थि शकल बला कापालमिव व्रतं धत्ते।।१०।।**(वाराही) अर्थात् पृथ्वी कापालिक व्रत धारण करके केश अस्थियों के टुकड़ों को धारण करती है अर्थात् वायुयान आदी दुर्घटना से अनेंको का मरण या आतंकियों से या

अत्यंत मरी से या परमाणुं, मिशाईलों के विनाशक युद्ध से पृथ्वी मुण्ड से युक्त हो जाती है। पृथ्वी पर भारी शोक होता है।

प्र.ज्येष्ठ में – दो जेठ विग्रह : अमात्यों को भय : विश्व में भारत का वर्चस्व बढ़े।

(१) दो ज्येष्ठ होने से- **रोग पीड़ा भवेज्जयेष्ठे,यज्ञादिकं बहु।।१।।** (बृह.दै.) रोग पीड़ा होवे,यज्ञादि बहु होवे। **ज्येष्ठ द्वये नृपध्वंसो–** दो जेठ में राजध्वंस हो। द्वि ज्येष्ठे नृप विग्रहः।।२।। राज्य विग्रह हो। (२) ज्येष्ठ में पांच शनि, भूकंप,ईशान में भंग,अग्निकाण्ड,युद्धादि उपद्रव होवे। ता.२ मई १ शनिवारी ३० शनिवारी से छत्रभंग होवे। (३) ता.१२ से २५ मई तक मिथुने वृ.+शु.युति **गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।।३।।** मनुष्यों में परस्पर युद्ध उपद्रव होवे। **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभम्।।४।।** राजाओं में क्षोभ, शोक होवे। पुरोहिता स्तदाऽमात्याः प्राप्नुवन्ति महद् भयम्।।५।। पुरोहितों,अमात्यों (विदेश मंत्रियों) में बहुत भय होवे। (४) ता.१८ मई चंद्रोदय सोमवार छत्रभंग। (५) १५ से २८ मई तक वृषे बुधादित्य योग शिक्षितों का राजयोग बने। (६) ता.२५ मई से २४ अक्टुम्बर तक उच्च कर्के गुरु से सनातन धर्म व हिन्दुत्व का उच्चत्व बढ़े। विश्व का श्रेष्ठ धर्म, भारत का प्रजातंत्र घोषित हो। (७) ता.२१ जून तक **मेष भौम उच्च गुरु,मीन शनि गुरु दृष्ट। भारत सैन्य शक्ति बढ़े,सनातन धर्म परिपुष्ट।।६।।** फल घटित होवे। विश्व में भारत का वर्चस्व बढ़ेगा।

द्वि.ज्येष्ठ में– युद्धकर्ता का नाश : शांति समझौता : कालसर्प : खर्प्परयोग

(१) पांच सोम से शांति का वातावरण होवे। ता.७ से २१ जून तक कालसर्प योग– **ग्रह बैठत राहु केतु बीच,तब कालसर्प को जाँण। उलट फेर शासन हुये,होसी जन धन केरी हाँण।।१।।** फल घटे।(२) ता.७ जून से ३ जुलाई तक कर्के वृ.+शु.युति भौम दृष्ट व ता.१० जून को अंशात्मक युति से **देवगुरु के उच्च पर,दैत्य गुरु आ जात। शांति समझौता मैत्री सुं, भारत मित्र बढ़ जात।।२।।** अर्थात् दो विपरीत मानसिकता का मिलन इस समय में शांति समझौता मैत्री से भारत के मित्रदेश बढ़ेंगे। **शुक्रे बृहस्पति हते यायी श्रेष्ठो विनाशमुपयाति। ब्रह्मक्षत्र विरोधः।।३।।** (वाराही सं.) अर्थात् श्रेष्ठ यायी(युद्धकर्ता) विनाश को प्राप्त होता है। ब्राह्मणों व मंत्रियों में विरोध होता है। (३) ता.१५ जून अमा को **मिथुनेऽर्क से खर्प्परयोग** होने से **जिनवारा रवि संक्रमें तिनै अमावस होय। खप्पर हाथ लै जग भ्रमै भीख न घाले कोय।।४।।** फल घटित होगा। (४) ता.१७ जून को मोहर्रम बुधवारी होने से **जंगवीच मरि उमराव अग्नि जोर जगमाहि करंति,खलबलि परत सारी हिंद धरा।।५।।** हिन्दु भूमि भारत व नेपाल में युद्ध व उपद्रव से लोग पलायन करे। बड़े राजा(नेता) की मृत्यु होवे।

आषाढ़ में– शकटभिन्न व शुक्र ग्रहण से : दुर्घटनायें ज्यादा : नरसंहार : सत्तापलट

(१) इस मास में पांच मंगल– **करै उपद्रव भूमही,विरला जीवे कोय।।१।।** नरसंहार,अग्निकाण्ड युद्धोपद्रव होवे। (२) ता.१८ जुलाई से ता.४ दिसम्बर तक **मीने शनि वक्र– राजयुद्ध दुर्भिक्ष बहु,जग का करे विनाश।।२।।** फल घटे। (३) ता.३ से ३१ जुलाई २०२६ तक आगे सिंह शुक्र पीछे कर्के गुरु होने से **चक्रवात सिंह शुक्र में ,चक्र परिवर्तन होत। वर्ण संकर लड़ भिड़ मरे, भभके धर्मयुद्ध की जोत्।।३।।** अर्थात् प्रचंड वायु का चक्रवात,सत्ता परिवर्तन,वर्ण शंकर परस्पर लड़ कर मरे तथा धर्मयुद्ध भड़क जावे। (४) ता.६ से २५ जुलाई व १६ जुलाई को १७ अंश पर रोहिणी शकट भेदन से **दुर्घटना शकट जहाज की,विमान गिरे तब व्यौम। अत्यन्त मरी रुंडमुण्ड धरा,जब शकट भेद में भौम।।४।।** अर्थात् वाहन,जहाज,यान से दुर्घटनायें घटित हो पृथ्वी रुंडमुंड धारण करें व अत्यंत मरी से भी मरे। **मरकं करोति घोरं यदि भितवा रोहिर्णी याति।।५।। रोहिणी शकटे केतुभिन्द्यात्सौरोत्थ वा कुजः। तदा तदा जगत्सर्वे संक्षय**

यात्यऽसंशयः।।६।। (वृहद् दैवज्ञ) अर्थात् सारें संसार में जनधन क्षय की घटनायें घटित होवे। वैशाख में शुक्र द्वारा रोहिणी शकट भिन्न व आषाढ़ में मंगल द्वारा शकट भिन्न होने से भय आतंक होता है। गाय गौशाला,समुद्र का विनाश होता है व दक्षिण में भयंकर शोक होता है। (५) ता.३ से ३१ जुलाई तक सिंहे शु.+के. युति व ता.१० जुलाई को शुक्र ग्रहण से स्त्री शासकों,स्त्रियों,मंत्रियों को पीड़ा व काश्मीर,यौधेय,आर्यावर्त, शिवि देश भी अत्यन्त रोग व उपद्रवों से पीड़ित होवे।(६) कर्के गुरु अस्त प.ता.१५ जुलाई से ता.१४ अगस्त २०२६ तक होने से कर्के अस्त जो नृप भयं कुशलं सुभिक्षं।।७।। अर्थात् राजाओं में भय हो,कुशल हो,सुभिक्ष हो।

श्रावण में- पश्चिम में युद्ध : नेपाल,पूर्व सागर में विनाश : बलिष्ठ राजा (नेता) का नाश।

(१) इस मास में पांच गुरु पश्चिम युद्धोपद्रव होवे। (२) ता.१ से १७ अगस्त २०२६ तक कर्के सू.+बु.+वृ.युति व ता.१३ से १५ अगस्त सिंहे सू.+चं.+के.युति। **त्रयोघ्नंनति नराधिपम्**।।१।। राजा(नेता)का मरण। (३) ता.१० से १२ अगस्त कर्के सू.+चं.+बु.+वृ.युति **चत्वारो राज्य नाशायः**।।२।। राज्य में विनाशक घटना घटे। (४) ता.१४ अगस्त को **कर्के गुरु उदय से स्यात्कर्कटे जनमृति**।।३।। मनुष्यों का मरण होवे। (५) ता. २० अगस्त से ता.६सितम्बर तक सिंहे सू.+बु.+के.युति व ता.२२ अगस्त सू.+के.अंशात्म युति से बलिष्ठ राजा का या राजा के समान पुरुष का नाश हो। ता.२३ अगस्त को बु.+के.युति से बुध का ग्रहण **अन्तर्वेदीसरयूं नेपालं पूर्व सागरं शोणम्। स्त्री नृपयोध कुमारान् सह विद्वाद्भिर्बुधो हन्तिः**।।४।।(वाराहि सं.) अर्थात् बुध ग्रहण से अन्तर्वेदी, सरयू, नेपाल,पूर्वसागर और शोणदि देशों की स्त्रियें,राजा,योद्धा पंडित और बालकों का नाश होता है।

भाद्रपद में- कार्तिक तक चीन अमेरिका में विनाश : भूकम्प छत्रभंग

(१) भादवा में पाचं शनि,आसोज पांच रवि,कार्तिक पांच मंगल से- **फिरत चक्र ज्यों देश सब,मचै घनो संग्राम। रुंड मुंड सब जग दुखी,ताको फल भनि आम**।।१।। तीनों मासों में फल घटे व भूकम्प,ईशान में छत्रभंग, अग्निकाण्ड,अमेरिका,चीन आदि देशों में उपद्रव,विनाशक घटे। (२) सिंहे सू.+बु.+के.युति ता.६ से ११ सितम्बर २६ तक व कन्या सू.+बु.+शु. युति ता.१७,१८ सितम्बर से त्रयोघ्नन्ति नराधिपम् - राजा(नेता) का मरण हो। **रवि बुध भृगु इकरास पर,राजभंग उत्पात् धरणि द्वंद कहीं कंप सुं , घटना घटे विख्यात्**।।२।। फल घटित होवे। (३) ता.१२ सितम्बर कन्या चंद्रोदय शनिवारी से ३० दिन में छत्रभंग होवे। (४) ता.२१ सितम्बर से ता. १५ अक्टुम्बर तक शुक्र,शनि दो ग्रह वक्रसे- **यद्वो प्रतीप गौ खेटौ नृपं क्षोभयस्ता**।।३।। राजाओं में क्षोभ होवे।

आश्विन में- वर्ण संकर भयभीत : हिन्दुओं में विग्रह : विमानों का नाश : नया रुपया चले!

(१)इस मास में पांच रवि से **रोग घनो रवि पांच ते**।।१।। **करै उपद्रव भूमहि,विरला जीवै कोइ**।।२।। फल घटे। (२) कन्या सू.+शु.युति ता.२७ सितम्बर से ता.१८ अक्टुम्बर २६ तक **दिवि मध्ये यदा दृश्येच्छुक्र सूर्यपथास्थितः। सर्वभूत भयं कुर्याद् विशेषाद्वर्ण संकरम्**।।३।। अर्थात् विशेषकर वर्ण संकर भयभीत होवे। (३) कर्के चं.+मं.+वृ.युति ता.४ से ६ अक्टुम्बर व कन्या सू.+चं.+शु.युति ता.६ से ११ अक्टुम्बर तक **त्रयोघ्नंनति नराधिपम्**।।४।। राजा(नेता) का मरण होवे। (४)ता.१० को अमा.शनिवारी छत्रभंग। (५) ता.१२ चंद्रोदय सोमवारी छत्रभंग(६) बुध, शुक्र,शनि तीन ग्रह वक्र ता.१५ अक्टुम्बर से ता.७ नवंबर तक होने से **प्रतीपगा स्त्रय खेटा युद्ध दृष्टि भयप्रदाः**।।५।। युद्धोपद्रव से भयप्रद है। (७) ता.१७ से २८ नवंबर तक चिंत्रा राक्षस गण पर शुक्रास्त प.होने से

शुक्रास्त राक्षस गणे हिंदुदेशेषु विग्रहःखर्प्परे राजयुद्धानि मिश्र देशेऽन्न विग्रहः ।।६।। अर्थात् हिन्दुदेशों में विग्रह हो खर्प्पर राज्य में युद्ध और मिश्र देश में अन्न विग्रह हो। **यात्रपात्र विनाशोऽब्धौ फिरंगाणां च विग्रहः ।।७।।** समुद्र में जहाजों तथा विमानों का विनाश हो और फिरंगियों (अंग्रेजों यूरोपियों) में विग्रह हो। **विराट ढुंढ पांचाल सौराष्ट्रेषु रौरवम्। तथा राज्य परावर्त्तो मालवेषु जनक्षयः ।।८।।** वैराट, ढूंढाड़ पांचाल और सौराष्ट्र में कष्ट हो, राज्य परिवर्तन हो तथा मालवा में जनक्षय हो। **जीर्ण दुर्गे भयं भंगःपत्तनेऽन्न महर्घता। नव्य मुद्रा प्रकाशः स्याद् दक्षिणे सुख संपदाः ।।६।।** पुरानें किले टूट पड़ने का भय,दुर्भिक्ष हो। नया रुपया चले और दक्षिण में सुख संपदा हो।

कार्तिक में- दीपावली व देव दीपावली भारी : युद्धोपद्रव विनाश : बम्बगिरी

(१) इस मास में पांच मंगल से "**करै उपद्रव भूमहि,विरलों जीवै कोई।।१।।** फल घटित होवे। (२) ता.२८ अक्टुम्बर २६को कन्या हस्त देवगण पर शुक्रोदय पू. में होने से **कन्यायां नृप पीडनम्।।२।।** राजा को पीड़ा होवे। प्रजा को दुःख हो। (३) मीने चं.+मं.+वृ. ता.३१ अक्टुम्बर से ४ नवंबर व सिंहे चं.+वृ.+के ता.३ से ५ नवंबर व तुले सू.+चं.+बु.युति ७ से ६ नवंबर व सिंहे मं.+वृ.+के.युति १६,१७ नवम्बर तक में **त्रयोघ्ननंति नराधिपम्।।३।।** राजा(नेता) का मरण होवे। (४) ता.८ नवम्बर को दीपावली रवि+स्वाति+आयुष्य योग में होने से **यदि भवति कदाचित् कार्तिके नष्ट चंद्रे,रविकुज शनिवारे स्वातनाष्य योगैः। गगन चर पशुनां स्थावरं जंगमं वा,नरपति नरनाशौ गर्भिणी गर्भपातं।।४।।** अर्थात् भारी युद्धोपद्रव,बम्ब मिशाईल युद्ध व राजा का नाश होवे। (५) लाभ पंचमी शनिवारी ता.१४ नवम्बर व देवदीवाली १५मंगल+भरणी को ता.२४ नवम्बर को होने से **लाभ पंचमी शनिवार की,हाहाकार को योग। काती पूनम भरणी सुं दुर्भिक्ष रोग को भोग।।५।।** फल घटित होवे।

मार्गशीर्ष में- देश विडार : जनधनक्षय : छत्रभंग

(१) तुले बु.+शु.युति ता.२८,२६नवम्बर २६को व सिंहे मं.+वृ.युति ता.३० नवम्बर से ता.२७ दिसम्बर तक व ता.२६ को सिंहे मं.+वृ.की अंशात्मक युति व धने बुधादित्य योग ता.६ दिसम्बर से ता.६ जून २७ तक **द्वौ ग्रहो नृप संक्षोभ।।१।।** राजा(नेताओं) में क्षोभ होवे।(२) ता.८ दिसम्बर को अमा मंगली "**मार्ग अमा क्रूरवारी हुवे,होवे देश विडार।।२।।** देश में युद्धोपद्रव ,देश उझाड़ होवे। (३) ता.१६ दिसम्बर से धनेऽर्क मलमास प्रवेश से **मिगसर में मलमास रवि,धनेऽर्क आवंत। दुःख दुर्भिक्ष हो जगत में,नृप दुःख पावंत।।३।।** फल घटित होवे। (४) ता.२३ दिसम्बर मार्ग शुक्ला १५ क्षय से आगे चैत्र शुक्ला तक क्षय होने से **मार्ग सुदी सुं क्षय तिथि,लगते पांचों मासस,जन रक्षक जगदीश है,छत्रभंग को जांच।।४।।** जनधनक्षय विनाश,छत्रभंग होवे।

पौष में- पश्चिम में युद्ध : नेपाल पूर्व सागर व स्त्री राजा का नाश :

(१) इस मास में पांच गुरु से पश्चिम देशों में युद्धोपद्रव होवे। (२) सिंहे चं.+मं.+वृ.युति **त्रयोघ्ननन्ति नराधिपम्।।१।।** राजा(नेता) का मरण होवे। (३) सिंहे मं.+वृ.युति ता.२७ जनवरी २७ तक व मकरे बु.+रा.युति ६ जनवरी से ता.१४ जनवरी २७ तक व ता.२६ को तुले बु.+रा.से बुध ग्रहण होने से **द्वो ग्रहों नृप संक्षोभम्।।२।।** राजाओं में क्षोभ होवे। बुध के ग्रहण से अन्तर्वेदी,सरयू ,नूपाल,पूर्वसागर,शोणादि देशों की स्त्रियों,स्त्री राजा ,योद्धा,पंडित और बालकों का नाश होवे। (४) ता.१५ जून से ६फरवरी २७ तक मंगल,गुरु दो ग्रह वक्र होने से **नृपंक्षोभयस्तदा।।३।।** राजाओं में क्षोभ होवे।

माघ में- भूकम्प : अणुकंप : युद्धोपद्रव : राज पुरुष का मरण

(१) इस मास में पांच शनि व आगे रविभौम होने से **पांच शनि पांच रवि पांच भूमिजा जोय। छत्र टूटी धरणी पड़े माघादिक जब होय।।१।। पाप घट फूट सी,विस्फोट जंग भूकम्प। ईशान छत्रभंग हो,मासादिक अणुकंप।।२।।** आदि फल घटित होवे। (२) ता.६.२.२७ को अमा शनि व ता.२० फरवरी पूर्णिमा शनिवारी से **माघ अमावस पूर्णिमा रवि शनि मंगलवार। शस्त्र युद्ध राजा लड़े,रोग शोक अपार।।३।।** फल घटित होवे। (३) ता.७ को १ रविवारी से- **माघ अमा शनिवारी सुं, उदंगल होवे देश । सुदी एक रविवारी सुं,युद्धोपद्रव संदेश।।४।।** फल घटे। (४) ता.८ फरवरी को चंद्रोदय सोम व शत्तभिषा नक्षत्र में होने से **माघ सुदी एकम रवि,बहु झूंझे रणबंक। सोम शत्तभिष चंदा उदय,छत्रभंग आतंक।।५।। चंद्रोदय शशिवार को,शत्तभिष रिख के माय। माघ सुदी इणयोग सुं ,नृप मरण हो जाय।।६।** घटे। (५) ता.१२ फरवरी से ता.१ मार्च तक मंगल,बुध,गुरु तीन ग्रह वक्री से **प्रतीपगा स्त्रयः खेटा युद्ध दृष्टि भयप्रदाः।।७।।** युद्धोपद्रव से भय फैले। (६) ता.१३फरवरी को **कुंभेऽर्क** शनिवार व ता.२० को १५ शनिवार होने से **कुंभ संक्रांत शनिवार में,आतंक बढ़े अपार। रोपणी रोपण शनिवार में, होली उपद्रव रवि धार।।८।।** आतंक बढ़े उपद्रव होवे।

फागुण में- रोगोपद्रव : शिवताण्डव पृथ्वी पर विनाश : उल्कापात : छत्रभंगः

(१) इस मास में पांच रवि से अग्निकाण्ड,युद्धोपद्रव। **पांच रवि भय घणो, अग्नि उपद्रव रोग। फोड़ा फुंसी विसूचिका,छत्रभंग को भोग।।१।।** ता.२३.२.२७ को तृतीया मंगली व ता.२६ को छठ स्वाती से **फागुण वदी तीज मंगली,छत्र स्वाति संयोग। रणबंका रण लड़े पांच रवि को योग।।२।।** फल घटे। ता.२७ फरवरी से २४ मार्च तक मंगल,गुरु दो ग्रह वक्री **नृपं क्षोभयस्तदा** राजा(नेताओं) में क्षोभ होवे। (२)ता.६ मार्च २७ई. को महाशिवरात्रि शनिवारी व ता.२१ को होलिका रविवारी से **शिवरात शनिचरी,शिव ताण्डव करंत। उल्कापाति होलिका,हाहाकार परंत।।३।।** आकस्मिक घटनाओं से हाहाकार होवे व मरे। (३) कर्के मं.+वृ.+के.युति ता.२७ फरवरी से ६ अप्रेल तक मकरे चं.+शु.+रा.युति ता.३ से ६ मार्च तक कुंभे सू.+चं.+बु.युति ६ से २१ मार्च तक व कर्के चं.+मं.+वृ.+के. युति से **तीन ग्रहयुत राजा मरे,चतुग्रहयुत महारोग। रक्तरंजित पृथ्वी होवे, छत्रभंग दुःख भोग।।४।।** राजा(नेता) का मरण,छत्रभंग जनता दुखी होवे। (४) दिग्दाहयोग से उल्कापात- **सूर्यात् विधु पंच सप्तमस्यात् क्षोणी सुतो याति तथारि गेहे। दिगुदाहयोगो मुनिनाप्रदिष्टौ संजात उल्का पत्यादिकारी।।५।।** यह योग ता.१५ से १७ व ता.१६ से २१ मार्च को होने से दिग्दाह, उल्कापातादि विनाश घटना घटे। (५) ता.१५ मार्च से ३अप्रेल तक मीने सू.+श.युति से **अर्कशौरी महीनाशाय कल्प्यते** विनाशक घटना घटे। प्रेम टूटे।

चैत्र कृष्ण पक्ष में- छत्रभंग : प्रकृति का ताण्डव : विष प्रदूषणः

(१) इस मास में पांच मंगल व तिथि १,८,३० मंगली से - **मंगल विग्रह कलह कराइ।।१।। पांच मंगल अमंगल करे,रक्तपात उत्पात। छत्रभंग विस्फोट हो, जनता पर आघात।।२।।** रक्तपात,छत्रभंग विस्फोट होवे। **एकम आठम अमावसी मंगलवारी आय। चतुग्रही संयोग सुं,प्रकृति ताण्डव थाय।।३।।** विनाशक घटना घटे। **चैत अमावस रवि शनि मंगल,छत्रभंग वा देश उदंगल। पांच मंगल चैत में होय,हाहाकार करे सब कोय।।४।।** आपदा से जनता में हाहाकार होवे। (२) कालसर्प योग- **सभी ग्रह राह केत बिच,तब कालसर्प को योग। सत्ता पलट उत्पात हो,विष प्रदूषण रोग।।५।।** फल घटे। (३) ता.३ से ५ अप्रेल तक मीने सू.+बु.+श.युति से **त्रयोघ्ननंति नराधिपं।।६।।** राजा(नेता का मरण) (४) ता.५ से ७ अप्रेल को मीने सू.+चं.+बु.+श.युति से **एक राशौ यदायांति चत्वार पंच खेचरा। प्लावयंति महि सर्वा रुधिरेण जलेन वा।।७।।** पृथ्वी पर विनाशक घटना से रुधिर से आप्लावित होवे। □□□

मौसम व वर्षा की भविष्यवाणियाँ

(जहां इन्द्र मेहरबान हो, वहां वर्षत जलधार।
कुपित इन्द्र विप्लव करे, जहां छोड़े वहां कार।।1।।)

पूरे वर्ष में:- (1) शनिफल- शनि (काल सुगालकर्ता,दण्डाधिपति व वरुणेश) इस वर्ष में मीन राशि(मत्स्या अवतार) उभा.सौम्य नाड़ी नक्षत्र पर होने से समुद्रीय जल जन्तुओं में हलचल,उत्पिड़न,कहीं तीन दिन तक वर्षा की झड़ी से जलविप्लव,कहीं प्रचण्ड पवन, समुद्रीय तूफान व रोगोपद्रव,महामारी,भूकम्प होवे। एवं - **अर्क पुत्रों यदामीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्वनद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदाम्।।१।।** (अर्धप्रकाश) कहीं दारुण दुर्भिक्ष,समुद्र तथा नदी सूखे और पशुओं का विनाश होवे। **मीन शनीश्चर करता वास...सागर की जनल तोड़े पाल।।२।।** कहीं समुद्र अपनी तटीय सीमा उल्लंघन कर विनाश करेगा। मीना अवतार रूप शनि देव बचाव करेगा बीज नष्ट होने नहीं देगा। **स्थान वृद्धि करो शनि** - गुरु क्षैत्री शनि भारत की धनु राशि व मीन राशि के देशों पर मेहरबान भी रहेगा। बचाव करेगा। नारायण अवतार स्वरूप मीना अवतार शनि को यज्ञनानुष्ठानों से संतुष्ट करने पर दारुण काल से बचाव होगा। कहीं तीन दिन तक वर्षा की झड़ी से सस्योत्पत्ति अच्छी होगी।

निष्कर्षतः **धर्मोरक्षति रक्षकः** शनि देव धर्म की रक्षा करनें वालों की रक्षा करेगा। धर्महीनों का दारुण दुर्भिक्ष भोगना होगा।

(२) **गुरु फलम्-** गत वर्ष की भांति इस वर्ष में गुरु तीन राशियों मिथुन,कर्क,सिंह पर विचरण करेगा। जिससे पृथ्वी प्रेतपूर्णा वसुंधरा प्रेतों से पूर्ण होगी। मृतात्मा प्रेतों का उत्पात रहेगा। **गुरु मिथुन पुनर्वसु** नीर नाड़ी ६ दिन की जड़ी,कर्क गुरु पुक्ष जलनाड़ी पर १२ दिन झड़ी, आश्लेषा अमृत नाड़ी पर १८ दिन झड़ी सिंह मघा अमृत नाड़ी १८ दिन झड़ी होने से कहीं बादल फटेगा। अतिवृष्टि से जल विप्लव विनाश भी करेगा। वर्ष प्रबोधानुसार मिथुन गुरु ज्येष्ठ वर्ष ता.२५.५.२६ तक बालकों,घोड़ों को पीड़ा,खण्ड वृष्टि,चोरों से पीड़ा,पश्चिम सिंधु देश व वायव्य ,उत्तर दिशा में चित्र विचित्र वर्षा,रोग पीड़ा होवे। दक्षिण ईशान में सुभिक्ष **कर्क गुरु** ता.२५.५.२६ से ता.२४.१०.२६ तक व यही **कर्क गुरु आगे** ता.६.२.२७ से वर्ष पर्यन्त चलेगा। तब दक्षिण पूर्व में वर्षा हो। पश्चिम में सिंधु देश,वायव्य उत्तर दिशा में चौपायों का नाश,हरिणों को पीड़ा होवे। वर्षा ऋतु में बहुत वर्षा फसलें बहुत हो। **सिंह गुरु** ता.२३.१०.२६ से ६.२.२७ तक पृथ्वी जल से पूर्ण,ब्राह्मणों की पूजा,सत्पुरुषों का मान हो। रोग विवाद हो। सर्प बाधा हो,कार्तिक में सुकाल हो। **मिथुने च गुरुर्याति स्यल्प तोयं भविष्यति।।१।।** मिथुन गुरु में अल्पवर्षा होवे। **आदित्य पुष्याश्लेषा सु गुरु भागे प्रसंगिनी। अनावृष्टि भयं घोरं दुर्भिक्षं सर्व मण्डले।।२।।** कहीं घोर दुभ्रिक्ष होवे। **बृहस्पति कर्के स्वल्पं मेघ प्रवर्षति।।३।।** कहीं अल्पवर्षा,कहीं दुर्भिक्ष होवे। **यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं च जायते। मेघाश्च प्रबला स्तत्र बहु सस्या च मैदिनी।।४।।** अच्छी वर्षा सुभिक्षं,सस्य बहुत उपजे। ता.१५ जुलाई से ता.१४ अगस्त २०२६ **गुरु का अस्त** होना वर्षा अवरोधक भी है। निष्कर्षतः गुरु खण्ड वृष्टि व कहीं अति विनाशक वृष्टि से दुष्काल घोषित होगा। तथापि भारत की धनु राशि का पति उच्च गुरु अच्छी वर्षा से भारत को सुखी सम्पन्न करेगा।

चैत्र शुक्ल पक्षः- ता.२० मार्च को **चंद्रोदय** मीने चं+सू.+शु.+श.युति ता.१६,२० तक भारी गर्मी पीत वर्ण रोग फैले। वर्ष प्रवेश से ता.५ अप्रेल २६ तक कुंभे मं.+बु.+रा.प्रकृति प्रकोप,तूफान,बिजलीपात से विनाश। ता.२५ **कुंभे बुध** ग्रहण से प्रकृति प्रकोप। वर्ष प्रवेश से मीने सू.+श.युति ता.५ अप्रेल तक विश्व में प्रकृति प्रकोप,चीन में विनाशक घटना घटे,बड़े नेता का मरण होवे। ता.२६ मार्च को **भौमोदय** पू.टिड्डी,चूहों का प्रकोप। कहीं तूफान वर्षा,भारी गर्मी से राहत। शत्तभिषा ३ मार्गी बुध सेवकों को पीड़ा। शूद्रों को कष्ट रोग होवे। ता.२७ से २६ तक बादल,वर्षा। ता.३१ मार्च तक **कालसर्प** विष प्रदूषण। **रेवत्यां रवि** चतुष्पदो,जलज जीवों का विनाश। ता.३१ मार्च से २ अप्रेल तक बादल तूफान वर्षा। ता.१ अप्रेल को १५ बुधवारी मंगलाचार,बधावणां,उत्सव होवे। पूभायां बुध जनता सुखी।

वैशाख कृष्ण पक्षः- ता.२ से ७ अप्रेल तक तूफान,बादल वर्षा। ता.५ से ७ अप्रेल तक **मीने सू.+मं.+श.युति** से भारी विनाश घटना घटे। समुद्रीय विनाश होवे। ता.४ **भरण्यां शुक्र** यवनों को पीड़ा व शूद्र कार्यों वालों का नाश। ता.५ **मीने भौम** से जापान में अनिष्ट,जर्मनी के लिये शुभ। ता.७ से १४ अप्रेल तक **मीने सू.+मं.+बु.+श.**युति से प्रकृति प्रकोप,महारोग,तूफान के जल प्लावन से विनाश। ता.८ **शनि उदय** पू.जनता दुःखी,राज विग्रह पशुओं को कष्ट। **स्त्रिधा वृष्टिः शनिश्चरः** तूफान,बादल वर्षा। ता.६ से १६ अप्रेल तक उभा.पर मं.+बु.+श. युति व ता.१४ से १७ अप्रेल तक मीने चं.+मं.+बु.+श.युति से भारी प्रकृति प्रकोप,विनाश होवे। अप्रत्याशित घटे। ता.१७,१८ अप्रेल को मेष सू.+चं.+शु.युति बादल,तूफान। ता.१५ को मं.+श.की अंशात्मक युति भारी गर्मी अग्निकांड,गृहपातिनी घटना,तूफान से विनाश होवे। ता.१४ अप्रेल **मेषेऽर्क रविवारी** भारी गर्मी,हेजा आदि गर्मी जन्य बीमारियां होवे। ता.१५ **कृत्तिका शुक्र** प्रचंड पवन। ता.१५ से १७ बादल तूफान वर्षा।

वैशाख शुक्ल पक्षः- ता.१८.४.२०२६ई.को १ **शनिवारी** चंद्रोदय बड़े

राजपुरुष का मरण। **मीने मं.+बु.+श.युति** ता.१८ से २६ अप्रेल तक भारी गर्मी,अग्निकांड ,विमान,जहाज,दुर्घटना। **बुधोदय पू.**प्रबल वायु तूफान,बादल, वर्षा। **वृषे शुक्र** जनता में विग्रह,तूफान प्रबल वायु। ता.१८ अप्रेल से १२ मई तक आगे **मिथुन गुरु** पीछे **वृषे शुक्र** से हिन्दुराष्ट्र में व हिन्दुओं पर यवनों(मुस्लिमों) द्वारा उत्पात,धर्म परिवर्तन व वर्ण शंकरीय देशों में सत्ता परिवर्तन। ता.१६ **रेवत्यां बुध** गर्मी। ता.२१ को ५ मंगली युद्धोपद्रव। ता.२० से २५ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२१ को ५ क्षय जनता में अशांति। मीने मं.+श.युति ता.२६ अप्रेल से १३ मई तक तूफान,कहीं गृहपातिनी वर्षा होवे,कहीं दो मास तक वर्षा होवे फिर नहीं होवे। समुद्रीय विनाशक घटनायें होवे। शुक्र द्वारा रोहिणी शकट भिन्न ता.२६ अप्रेल से ५ मई तक विमान,जहाज आदि की दुर्घटना,आतंकी घात प्रतिघात घटे। पृथ्वी कपाल व्रत धारण करे अर्थात् रुण्ड मुंड से रक्त पूरित होवे। ता.२६ रेवत्यां भौम अच्छी वर्षा। मेषे बुध गर्मी। **रोहिण्यां शुक्र** शकट यान वाहनादि दुर्घना प्रजा नाश केरल ,कर्नाटक में अनिष्ट। ता.२७ भरण्यां रवि गर्मी,मनुष्यों को पीड़ा। ता.२७ से ३० तक तूफान बादल वर्षा।

प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः-ता.२ मई २०२६ को १ शनिवारी रोग पीड़ा। अमेरिका चीन में उपद्रव,छत्रभंग। अग्निकाण्ड,महामारी पड़े। ता.२ से ५ तक बादल, तूफान वर्षा। ता.७ **मृगे शुक्र** गर्मी,जनता सुखी। ता.१० **कृत्तिका बुध** जनता में ज्वर ज्यादा। ब्राह्मणों पीड़ा। विग्रह । ता.११ **कृत्तिका रवि** तांत्रिकों, कुम्हारों, नाई, ज्योतिषी, व्याकरणाचार्यों को कष्ट। **कृत्तिका एक झबूकड़ो ओगल सो गलियां**– इस दिन बादल बीज वर्षा हो तो वर्ष के दोष समाप्त हो जाते हैं। ता.१२ से १४मई तक **मीने** चं.+मं.+श.तूफान वर्षा। **उभा.२ शनि** राजपीड़ा उपद्रव,स्त्रियों को कष्ट। **वृषे बुध** युद्धोपद्रव,कलह। **मिथुने शु.+वृ.युति** ता.१२ से २५मई तक राहुदृष्ट से प्रकृति प्रकोप,कहीं तूफान से विनाश कहीं दुर्भिक्ष। ता.१२ से १६ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१३ **अश्वन्यां मेषे भौम** भारी गर्मी,अश्वों को पीड़ा। ता. १५ **वृषेऽर्क शुक्रवारी** जनता सुखी। ता.१६ अमा शनि से रोग ज्यादा,चोर अग्निभय,बहुत गर्मी,राजपलट,छत्रभंग होवे।

प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः– दो जेठ में रोग पीड़ा अधिक। यज्ञ दान ज्यादा होवे। ता. १७ मई २०२६ को **रोहिण्यां बुध** पवन प्रकोप। ता.१५ से २८ मई तक वृषे **सू.+बु.बुधादित्य योग** भारी गर्मी प्रकृति प्रकोप। ता.१८ को **अगस्तास्त** सोमवारी, सुभिक्ष। **आद्रायां शुक्र** वायु वेग के साथ वर्षा। सैनिकों को पीड़ा। बंगवासी, उत्कलवासी,चाण्डाल,पहाड़ी,व्यक्तियों और इक्षुमती तटवासियों को कष्ट। चंद्रोदय सोमवारी उग्र युद्ध मरण छत्रभंग होवे। ता.१८ से २० मई तक मिथुने चं.+वृ.+शु.युति से **गुरु शुक्र इक राशि महिं तीजो शशी जो आइ। घन बरसै सब जगत महिं मेघे दियो सुनाई।।१।।** वर्षा,तूफान,बादल। ता.२० से २२ बादल तूफान वर्षा। ता.२२ बुधोदय पू.वायु वेग अधिक। ता.२५ रोहिण्यां रवि सोमवारी सुभिक्ष साहुकार ,कृषक,योगी व यंत्र चालकों को कष्ट। **रोहिण रेली रुपियारी करे अदेली।।२।।** वर्षा हो तो शुभ। **रोहिण तपे,मृगसिर वाजे,आद्रा मेह अणचिन्त्या गाजे।।३।।** रोहिणी में तपे,मृगसिर में वायु चले तो आद्रा में अच्छी वर्षा होवे। ता. २५ से २७ तक बादल,तूफान वर्षा। ता.२५ **कर्के गुरु** नीर नाड़ी पर बादल वर्षा, बिजली पात। **मृगे बुध** वायुवेग,वर्षा अच्छी। ता.२० से २५ तक मिथुने वृ.+शु. युति **गुरु शुक्र दोऊ मिले,दस भादो कर देई। कै राजा जूझैं घने,के घन बहु वरसेई।।४।।** फल घटित होवे। ता.२८ **मिथुने बुध** वायु प्रकोप से वर्षा। मिथुने बु.+शु.युति ता.२८ मई से ७ जून तक होने से गर्मी(दहन) पवन प्रकोप तूफान के साथ वर्षा। बिजलीपात। **बुध शुक्रौ समीपस्थौ सजलां कुरुते महीं।।५।।** अच्छी वर्षा होवे। सूर्य के आगे बु.+शु.होने से **सूर्यस्य पुरतो गच्छेद् यदा शुक्रो बुधोऽपिवा। वर्षा काले न संदेहोस्तदा वृष्टिर्निरन्तरा।।६।।** निरन्तर अच्छी वर्षा होवे। ता.२६ पुनर्वसु शुक्र बालकों को पीड़ा। जनता में भय। ता.३०,३१ बादल तूफान वर्षा। ता.३१ **भरण्यां भौम** प्रचंड गर्मी,पवन। द्विजों को कष्ट। गाँवों में पीड़ा।

द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः– ता.१ जून २०२६को १ सोमवारी **जलमध्ये भवेत्पृथ्वी पारावारः समाकुलम्।।१।।** अच्छी वर्षा होवे। **आद्रायां बुध** ग्रहपात,पवन प्रकोप, वर्षा श्रेष्ठ। ता.१ से ६ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.७ को **कर्के शुक्र** बादल वर्षा। ता.७ जून से ३ जुलाई तक कर्के वृ.+शु.युति नीर,जल,अमृत नाड़ी में होने से व ता.१० जून को वृ.+शु.को अंशात्मक युति से **गुरु शुक्र एक राशि में नरा युद्ध भंजाण। दुकाल में भी वर्षे घणों निश्चय मन में जाँण।।२।।** अप्रत्याशित प्रकृति प्रकोप होवे। ता.८ **मृगे रवि** पशुओं में रोग,वायु चले। **मृगसिर वायन वाजिया, रोहिण तपे न जेठ गौरी वीणे काकरा,खड़ी खेजड़ा हेठ।।३।।** ता.८ से २२ जून तक दो दो दिन से पाया देखें,वायु चले तो शुभ। अमूझे(दोज) तो वह पाया खराब,उपद्रव होवे। यथा– **दो मूषा दो कातरा दो तीड़ी दो ताव। दो की दाजी जल हरे,दो विषधर दो वाय।।४।।** गिने किस की अधिकता मूषा,कातरा,तीड़ी, बुखार,वर्षा,विष,वायु का ज्ञान हो जाएगा। ता.७ से २१ तक **कालसर्प** से विषभय, प्रदूषण से पीड़ा होगी। ता.१० **पुक्षे शुक्र** धार्मिक लोगों को पीड़ा। जलनाड़ी में वर्षा। ता.१० से १२ तक वर्षा,कहीं महावर्षा। ता.१२ **पुनर्वसु बुध** बालकों को पीड़ा,नीरनाड़ी में वर्षा । **पुक्ष १ गुरु** जलनाड़ी बिजलीपात। ता.१५ को अमा सोमवती सुभिक्ष। मिथुनेऽर्क खर्परयोग से प्राकृतिक आपदा। **जिनवारा रवि संक्रमे तिनो अमावस होय। खप्पर हाथ लै जग भ्रमें भीख न घालें कोय।।५।।** भीख मांगे। ता.१५ से १७ जून तक मिथुने सू.+चं.+बु.गर्मी बादल वर्षा।

द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- ता.१५ जून २०२६ई.को १ चंद्र क्षय से जनता मे अशांति भय फैले। ता.१६ **चंद्रोदय** से चोरभय,रोगभय,होवे। ता.१७ को मोहर्रम बुधवारी से टिड्डी प्रकोप। हिन्दू भूमि में दहशत। युद्ध उपद्रव पलायन। बड़े राजपुरुष का मरण । ता.१७ से २३ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२० को वर्षा ऋतु प्रवेशः। ता.२२ को **आद्रायां रवि** संयोग चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहन खर उपवाहनकूकड़ कोरो (सूखा) पड़े। वर्षा ऋतु से **आद्रा रवि** में सर्वत्र मानसून का आगमन हो जाता है। आद्रा का वाहन कूकड़ा होने से कहीं पर वर्षा का अभाव (सूखा) रहेगा। ता.१७ से १६ जून तक कर्के वृ.+शु.+चं.युति से खण्डवृष्टि होगी। **वक्री बुध** जनता में भय होगा। **वृषे भौम** महामारी,चीन,जापान में राजनैतिक उथल पुथल,बंगाल में भय। प्रचंड, तूफान,बिजलीपात होगा। **आश्लेषा शुक्र** सर्पभय,कहीं वर्षा की विशेष कमी। कहीं अतिवृष्टि से विप्लव होवे। ता.७ से २१ तक **कालसर्प योग** विषभय,प्रदूषण बढ़े। ता.२५ **बुधास्त** प.राजाओं को पीड़ा। ता.२६ से २८ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२७ **पुक्ष २** गुरु कृषि उत्पादन कम। ता.२९ को १५ सोमवारी सुभिक्ष। **१५+मूल जेठी पूनम मूल हैं,वरसाले सुगाल। वर्षे तो वर्षा बहु,भादो आसो भाल।।१।।** बादल वर्षा बीज हो तो आगे सुभिक्ष।

आषाढ़ कृष्ण पक्षः- ता.३० जून २०२६ को १ मंगली अग्निकांड,भारी गर्मी, बिजलीपात। **आषाढ़ वदी की एकमे,जो मेघा वर्षन्त। दो मास वर्षे नहीं अवश्य काल पड़ंत।।१।**।वर्षा हो तो अशुभ,आगे दो मास तक नहीं वर्षे। ता.३ से ३१ जुलाई तक मघा सिंह शुक्र चलेगा। **सिंह शुक्र होय भवानी,चले पवन नहीं वर्षे पानी।।२।।** पवन प्रकोप ज्यादा होगा। इसका प्रभाव राजस्थान में विशेष होगा। शुक्र मघा अमृत,पू.फा.जल,उ.फा.नीरनाड़ी पर समुद्रीय चक्रवात तूफान से दक्षिण,उत्तर भारत में अतिवृष्टि से विनाश भी होगा। ता.२ से ८ तक तूफान बादल वर्षा। ता.४ **वक्री आद्रायां बुध** ग्रहपात,पवन प्रकोप,वर्षा। उभायां ४ शनि वर्षा, धान्य कम,राजपीड़ा। ता.६ से २० जुलाई तक **पुनर्वसु रवि** संयोग चं.चं. स्त्री.पु.वाहन मंडूक उपवाहन कच्छप बाढ़ आयेगी। **रोहिण्यां भौम ता.६ से २५** जुलाई तक व ता.१६ को मंगल १७ अंश पर शकट भिन्न करेगा। जिससे भयंकर पवन,प्रकोप,समुद्रीय तूफान,भारी गर्मी,बिजलीपात,अप्रत्याशित शकटों(वाहनों जल थल नभ) का विनाश से जनहानि होवे। **जलथल आकाश में,शकट भिन्न हो जात। भौम दृष्ट शनि देव सुं, विनाश जनधन अज्ञात।।३।।** फल घटे। ता.११ को कर्के बुधोदय खण्ड वृष्टि। १२ रोहिणी से कहीं भारी काल जनधन मरण। ता.१० से १४ **मार्गी बुध** जलज जीवों को कष्ट। अमा मंगली पुनर्वसु होने से **अमा आषाढ़ है मंगली,पुनर्वसु को देख। खण्डवृष्टि बिजली गिरे,काल गुगाल को लेख।।४।।** जमाना एक जैसा नहीं होगा।

आषाढ़ शुक्ल पक्षः- गुरु अस्त प.ला.१५ जुलाई से १४ अगस्त तक खण्डवृष्टि ,कहीं वर्षा नहीं। **पूफायां शुक्र** नीर नाड़ी में बादल,तूफान वर्षा चंद्रोदय कर्क राशि पर बादल वर्षा। ता.१५,१६बादल तूफान,वर्षा। ता.१७ **कर्केऽर्क** शुक्रवारी सुभिक्ष। ता.१८ वक्री शनि **स्त्रिधा वृष्टि शनैश्चरै व शनि वक्रे जनेः पीड़ा।।१।।** बादल वर्षा,जनता पीड़ित होवे। ता.१८ से २१ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२० **पुक्षे रवि** संयोग चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहन मूषक,उपवाहन हाथी बहु गर्मी। ता.२३ से २६ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.२५ **मृगे भौम** खेतियों को क्षति। ता.२६ जुलाई से १३ अगस्त तक **अंगारक योग** भारी गर्मी,अग्निभय,भूकम्प बिजलीपात। **मार्गी पुनर्वसु बुध** बालकों को पीड़ा। ता.२८,२६ तूफान बादल वर्षा। ता.२८ **उफायां शुक्र** कृषि को क्षति,चित्र विचित्र वर्षा। ता.२६ **पुक्ष४गुरु** कृषि उत्पादन कम। ता. २६ को १५बुधवारी **आषाढ़ सुदी पूनम होइ बुधवार। बालक बहु मरै,दोष शीतला धार।।२।।** अर्थात् शीतला आदि रोगों से बालक ज्यादा मरे।

श्रावण कृष्ण पक्षः- **कन्यायां शुक्र** ता.३१.७.२०२६ई.को होने से वर्षा अभाव। ता.३१ बादल,तूफान वर्षा। ता.१ अगस्त **कर्के बुध** खण्ड वृष्टिः। ता.१ से ४ तक तूफान बादल वर्षा। ता.३ **आश्लेषारवि** संयोग चं.चं.स्त्री.पु.जंबुक वाहन,डेडरों उपवाहन बहु वर्षा। ईशान में उपद्रव। **पुक्षे बुध** जनता में चिंता,शासन में भय। **मिथुने भौम** वर्षा कारक। ता.५ को ७ अश्वनी से **सावन वदी जो सप्तमी,अश्वनी रेल प्रकार नित प्रतिजग आनंद हुई,घर घर मंगलाचार।।१।।** नदी नाला बाढ़ आवे। ता.७ से ६ कहीं महावर्षा ता.८ को १०+रोहिणी से **सावन पहिले पक्ष में दशमी रोहिणी होय। महंगा नाज अरु अल्पजल विरला जीवे कोय।।२।।** फल घटित होवे। ता.६ से ११+मृगसिरा से **सावन वदी एकादशी मृगसिरा तो अणचिंत्यो काल पड़ंत।।३।।** अकस्मात् काल पड़ता है। ता.६ वक्री उभा शनि से दुर्भिक्ष,राज विग्रह,राजपीड़ा। तिथि १२ क्षया कार्तिक में छत्रभंग,नेता मरे। ता.१० से १२ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१० **हस्ते शुक्र** वर्षा अभाव,जनता में कष्ट व चित्रकारों को पीड़ा। ता.१० से २ तक कर्के सू.+चं.+बु.+वृ.चतुग्रही युति से प्रकृति प्रकोप से विनाश,जल व रक्त से पृथ्वी जल पूरित होवे।

श्रावण शुक्ल पक्षः- ता.१३ अगस्त २०२६ को **आद्रायां भौम** खण्ड वृष्टि, आश्लेषा गुरु जनता में कष्ट। **आश्लेषा बुध** महावर्षा। ता.१३ से २० तक आश्लेषा वृ.+बु.से तूफान बादल वर्षा। ता.१४ बुधास्त पू.वर्षा,पीड़ा। **कर्के गुरु उदय- उदये च गुरु वृष्टि।।१।।** अमृत नाड़ी पर होने से रुकी हई वर्षा शुरु। चंद्रोदय बादल वर्षा। ता.१५ से २२ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१७ अगस्त से

१७ सितम्बर तक सूर्य के आगे शुक्र पीछे गुरु से **सूर्याग्रे च यदा शुक्रस्तदा वृष्टि सुशोभना। वारिपूर्णा मही कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः।।२।।** पृथ्वी जल से पूरित होवे। ता.१७ से २० अगस्त तक कर्के बु.+वृ.युति से **बुध गुरु इक राशि महिं,आवति तऊ विचार। बरषा होवै बहुधनी अन्न घनो संसार।।३।।** वर्षा अन्न बहुत होवे। ता.१७ **मघायां सिंहेऽर्क** संयोग चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहन चातक उपवाहन हाथीबहुत गर्मी होवे। ता.२० **सिंहे बुध** बादल वर्षा। ता.२३ को ११+मूल होने से **श्रावण शुक्ला एकादशी,पड़े मूल जो आय। अकस्मात् पृथ्वी हिले,तब दुर्भिक्ष बताय।।४।।** भूकम्प,कहीं दुर्भिक्ष। ता.२५ को **चित्रायां बुध** पशुओं में रोग,गर्मी। ता.२७ **पूफायां बुध** दो देशों में युद्ध की संभावना। ता.२८ **आश्लेषा गुरु** जनता को कष्ट,दुर्भिक्ष।

भाद्रपद कृष्ण पक्षः- ता.२६ अगस्त २६ई. को १ **शनिवारी** परचक्र से जनता चक्रवत् घूमे,पलायन,वायु प्रकोप,भूकम्प आदि प्रकृति प्रकोप। ता.३१ को **पूफायां रवि** संयोग सू.सू.स्त्री.पु.वाहन खर,उपवाहन डेडरों भारी गर्मी वर्षा अच्छी होवे। ता.३०,३१ बादल वर्षा। ता.२६ से ३१ अगस्त तक **मीने** चं.+श.युति गुरु दृष्ट तूफान,बादल वर्षा। ता.३ सितम्बर **पुनर्वसु भौम** पशुओं में रोग। बादल वर्षा। ता.४ उफायां बुध बादल वर्षा। ता.६ को अगस्त्योदय रविवारी गर्मी,खेतियों का नाश,**रात्रौ उदय श्रेष्ठ। उगा अगस्त मेहमस्त।।१।।** अर्थात् अगस्त्योदय से वर्षा का पलायन होता है। **ऊगा अगस्त फूले बनकासा। अब छोड़ो बरखा की आस।।२।।** वर्षा की आशा कम हो जाती है। **अगस्त जी लंगोटी खोले तो धार न खण्डे।।३।।** अगस्त्योदय के दिन वर्षा हो तो अखण्ड वर्षा की झड़ी लगती है। ता.६ से १७ सितम्बर तक सिंह सूर्य के आगे कन्या पर बु.+शु.होने से **सूर्यस्य पुरतौ गच्छेद्यदा शुक्रो बुधोपि वा। वर्षा काले न संदेह स्तदा वृष्टिर्निरन्तरा।।४।।** अच्छी वर्षा होवे। ता.५ से ८ तक तूफान बादल वर्षा। इस समय में अग्नि भय, बिजलीपात भी होवे। ता.६ से १७ सितम्बर तक कन्या बु.+शु.युति से गर्मी व वर्षा होवे। **बुध शुक्र समीपस्थौ सजलां कुरुतें महीं।।५।।** पृथ्वी जल से पूर्ण होवे। ता.११ बादल वर्षा । **शुक्री अमावस भादवें,बादल फटता देख। बुध शुक्र युत कारणे,मही एकार्णव लेख।।६।।**

भाद्रपद शुक्ल पक्षः- ता.१२.६.२०२६ई को **हस्ते बुध** वर्षा श्रैष्ठ, सुभिक्ष, जनता सुखी। कन्या चंद्रोदय चोर भय,व्याधि। ता.१२ से १६ तक तूफान बादल वर्षा, फसलों को नुक्सान। ता.१४ **उफायां रवि** संयोग सू.सू.स्त्री.स्त्री.वाहन मेढक, उपवाहन हाथी बहुगर्मी। **आश्लेषा गुरु** जनता को कष्ट। ता.१७ को छठ अनुराधा से **भादवे जुग रेलसी,छत्र अनुराधा होय।।१।।** नदी नाला बहे। **भादों की छठ चांदनी,जो अनुराधा होय। ऊबड़ खाबड़ बोयदो,अन्न घणेरो होय।।२।।** धान बीज बो देवे अन्न खूब होगा। **कन्याऽर्क+बु.+शु.युति** ता.१७,१८ को कहीं कहीं वर्षा रुके। ता.१८ को बुधोदय पूर्वे **जे बुध ऊगे भादवें,दस भादौ कर देय।।३।।** कहीं अच्छी वर्षा होवे। **तुले शुक्र** दहन। ता.१६ **चित्रायां बुध** शिल्पियों को कष्ट। ता.१६ सितम्बर से २३ अक्टूम्बर तक कर्के मं.+वृ.युति **एक राशि गता येतौ धरा पुत्राङ्गिरा सुतौ। तरा मेधा न वर्षति वर्षा काले न संशयः।।४।।** फले घटे। परन्तु जल अमृत नाड़ी के कारण कहीं वर्षा के साथ बिजलीपात ,कड़कड़ाहट से नुक्सान होवे। काशी,कन्नोज,मथुरा में फसलों को नुक्सान। ता. २१ **तुले वक्री** शुक्र से जनता में विभ्रम पैदा होवे। ता.२१ सिलम्बर से ता.१५ अक्टूम्बर तक शुक्र शनि दो ग्रह वक्री से प्रकृति प्रकोप होवे। ता.२४ से २६ सितम्बर तुले बु.+शु. युति तूफान,बादल वर्षा। ता.२४ **तुले बुध** ज्वरादि रोग,वायु प्रकोप के साथ वर्षा। ता.२५ **पुक्षे भौम** रोगों का उपद्रव,शस्त्र चोर अग्निभय। नये नये उपद्रव होवे। ता.२६ **कन्यायां शुक्र** स्त्री व स्त्री शासकों को कष्ट रोगोपद्रव।

आश्विन कृष्ण पक्षः- ता.२७ सितम्बर २६ को १ रविवारी **परचक्र योग** से जनता का पलायन। रोग महामारी,राज्य भय से जनता परेशान। **हस्ते रवि** संयोग सू.+चं.स्त्री.पु.वाहन मूषक,उपवाहन हाथी बहुगर्मी। ता.२७,२८ बादल वर्षा। ता.२६ **स्वात्यां बुध** द्विजों को भय,पवन प्रकोप। तृतिया मंगलवारी अग्निभय,धन धान्य नाश। ता.२६ सितम्बर से ता.१८ अक्टुम्बर तक कन्या सू.+शु.युति से **वातश्च जायते दीर्घ।।१।।** अत्यंत वायु चले। कहीं फसले वायु मार ,मेहमार से नष्ट होगी। ता.१ अक्टुम्बर को वक्री उभा.२ शनि से वर्षा अभाव,उपद्रव,राज विग्रह होवे। ता.२ आश्लेषा ४ गुरु जनता में कष्ट। ता.२ से १० तक तूफान बादल वर्षा,प्रकृति प्रकोप। ता.४ से ६ अक्टुम्बर कर्के चं.+मं.+वृ.युति **भौम गुरु एक राश में तब कहीं न वर्षे मेह। चंदा जब तब आ मिले,जल थल एक करेह।।२।।** वर्षा तूफान से प्रकृति प्रकोप। ता.१० को अमा शनिवारी से **आसो अमा शनिवार सुं,छत्रभंग पशु रोग। चोर अग्निभय काल दुःख,बहु गर्मी को भोग।।३।। मास आसोजै मावसे जो होवै शनिवार। मध्यम समो बखानियें,तिसी मार फलधार।।४।। आश्विन वदी अमावस्या,जो आवे शनिवार। समयो होवे आकरो,जोशी करो विचार।।५।।** फल होगा।

आश्विन शुक्ल पक्षः- ता.११.१०.२०२६को **चित्रायां रवि** संयोग सू.सू.स्त्री. स्त्री. वाहन अश्व,उपवाहन हाथी बहुगर्मी। ज्वरादि रोग ज्यादा। ता.१२ चंद्रोदय सोमवारी विग्रह,छत्रभंग। ता.१३ को तृतीया मंगली अग्नि उपद्रव,भारी गर्मी। ता. १३ से १५ बादल वर्षा। ता.१५ अक्टु.से ७ नवं.तक बुध,शुक्र,शनि तीन ग्रह वक्री से पवन,दहन उपद्रव जनता भ्रमित। ता.१७ अक्टुम्बर से २८ अक्टु.तक कन्या

शुक्र अस्त से स्त्री शासकों,स्त्रियों पर घात। मरुस्थल,सिंधु देश में दुर्भिक्षकहीं मध्यम जमाना। पांचाल,सौराष्ट्र विराट,(ढुंढाण) ढुंढ में रौरव काल। ता.१८ **तुलाऽर्क** रविववारी भारी गर्मी,अग्नि उपद्रव गौ ब्राह्मणों को घात हाथियों का नाश। ता.१६ को बुधास्त प.पवन प्रकोप। **आश्लेषा भौम** टिड्डी आदि जीवों से कृषि को क्षति,विषैले जन्तुओं का प्रकोप। बिमारियों का प्रकोप। ता.२३ **मघा सिंहे गुरु** बादल वर्षा। रोग ज्यादा। ता.२३ से २५ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२४ **स्वात्यां रवि** संयोग सू.चं.स्त्री. पु.वाहन मेष उपवाहन हाथी बहुगर्मी।

कार्तिक कृष्ण पक्षः- ता.२७.१०.२६को १ मंगलवारी से युद्धोपद्रव,एक्सीडेंट अग्नि उपद्रव रोग,जनता चक्रवत भटके। वक्री **हस्ते शुक्र** जनता को कष्ट। ता. २८ को **शुक्रोदय** पू. सुखकारी कार्तिक मगसिर भला जगत महँ सुख करे।।१।। ता.३१ अक्टुम्बर से ३ नवम्बर तक तूफान बादल,वर्षा। ता.४ बुधोदय पूर्वे सुखकारी। ता.५ से ७ तक तूफान बादल वर्षा। ता.७ **विशाषा रवि** पूर्व व दक्षिण देशों व प्रदेशों में उपद्रव। **मार्गी बुध** राज विग्रह। ता.७ से १४ नबम्बर तक शुक्र, शनि वक्र अप्रत्याशित आपदा,प्रकृति प्रकोप। ता.८ को दीपावली रवि+स्वात आयुष्य योग छत्रभंग,युद्ध उपदव,रोग,भूकम्प आदि प्रजा सुखी। ता.६ बादल वर्षा से खराब योगों को शांत करता है।

कार्तिक शुक्ल पक्षः- ता.१०.११.२६ को १ मंगली वृश्चिके चंद्रोदय अग्निभय, लोगों को मानसिक स्थिति बिगड़े। ता.१० से १३ तक तूफान बादल वर्षा। ता.१४ को लाभ पंचमी शनिवारी **कार्तिक सुदी पंचमी जो होवै शनिवार। तो काल विख्यात हैं, होवे हाहाकार। चौपद बहु मरै सूखे खेती पंचम। जे अनुसरे।।१।। (मेघमाल) लाभ पंचमी शनिवार की,हाहाकार को योग। कार्तिक पूनम भरणी सुं दुर्भिक्ष रोग को भोग।।२।।** फल घटित होवे। ता.१६ **वृश्चिकेऽर्क** सोमवारी से कष्टों से बचाव। मघायां सिंहे भौम राजस्थान,गुजरात,मध्य भारत में साधारण वर्षा। रोग वृद्धि मवेशियों को कष्ट। जनता में असंतोष। पूर्वी प्रदेशों में सुभिक्ष। ता.१७ मार्गी **स्वात** ४ बुध द्विजों को दुख होवे। ता.१७ से ३० नवम्बर तक सिंह मं.+वृ.वर्षा अभाव। ता.१८ **मार्गी चित्रा शुक्र** पशुओं में रोग। गणित लिपि साहित्य पर घात। पल्लव सोराष्ट्र,कौशल का विनाश। कूपकार को पीड़ा। बिल्लीयों, व्यालों को पीड़ा। ता.२० **अनुराधा रवि** भक्तों को दुःख। ता.१६ से २१ तक तूफान बादल वर्षा। **विशाषायां बुध** कहीं दुर्भिक्ष। ता.२४ देव दीवाली मंगली अग्निउपद्रव,भारी गर्मी।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः- ता.२५.११.२०२६ को १ बुधवारी कृषि उत्पादन अच्छा, जनता सुखी। ता.२८ **तुले शुक्र** सुभिक्ष। ता.२६ **वृश्चिके बुध** पशुओं में रोग। तुले बु.+शु.युति ता.२८,२६वर्षा बादल। ता.३० नवम्बर से ८ दिसम्बर २६ तक तूफान बादल वर्षा। ता.३० नवम्बर से २७ दिसम्बर तक सिंहे मं.+वृ.युति कहीं वर्षा अभाव। ता.२ अनु.बुध जनता सुखी सुभिक्ष। ता.३ **ज्येष्ठा रवि** गुरुवारी जनता में मोद मंगल कार्य। ता.४ मार्गी शनि अतिवृष्टि से धान्य नष्ट। ता.७ बुधास्त पू.राजाओं को पीड़ा,पवन प्रकोप। ता.८ **स्वात्यां शुक्र** चोर भय,कई उपद्रव, सौराष्ट्र में हिंसा। दूत वणिक् नाविकों को परेशानियां,उत्पिड़न। **अमा मंगली मगसिर मावस क्रूर जु वार। अल्प मेह अरु देश विडार। महंगा होवे जगत अनाज। किरसाणों का बिगडें काज।।१।।** फल घटित होवे।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः- ता.६.१२.२०२६ई.को १ बुधवारी सुभिक्ष,वर्षा। ता.१० को चंद्रोदय रोगोपद्रव। ता.११ **ज्येष्ठायां बुध** घोड़ा आदि पशुओं में रोग। ता.१४ वक्री गुरु सुभिक्ष,क्षेम आरोग्य। ता.१६**मूलेधनेऽर्क** बुधवारी सुभिक्ष,कोटा में उपद्रव। ता.१६ मूले धने बुध पशुओं,बालकों को रोग,कष्ट। राजा प्रजा में विरोध। हाथियों का नाश। ता.१६ से २२ तक बादल,वर्षा। ता.२१ को उत्तरायण शिशिर(सर्दी ऋतु प्रवेश) ता.२३ **विशाषा शुक्र** व्यापारी वर्ग चिंतित,अवन्ति में,स्त्रि राज्यों, स्त्रियों का विनाश,महापीड़ा। १५ क्षया से **मार्ग सुदी सुं क्षय तिथि,लगते पांचो मास। जन रक्षक जगदीश हैं, छत्रभंग को जाँच।।१।।** तीन मास तक उपद्रव जनक्षय छत्रभंग होवे।

पौष कृष्ण पक्षः- ता.२४.१२.२६को १ गुरुवारी पश्चिम में उत्पात। जनता सुखी। ता.२५ **पूफायां भौम** प्रजा को पीड़ा,पशुओं को कष्ट। ता.२५ से ३१ तक तूफान बादल वर्षा,शीत प्रकोप। ता.२७ **पूषायां बुध** रोगादिसे जनता दुखी। ता. २६ **पूषायां रवि** सर्दी का प्रभाव बढ़े। ता.३० दिसम्बर से २३ जनवरी २०२७ तक सिंह मं.+वृ.ववर्षा अवरोध,दान पुण्य बढ़े। ता.२ जनवरी **वृश्चिके शुक्र** सुभिक्ष। ता.२ वक्री **मघा १ गुरु** जनता सुखी। ता.४ **उषायां बुध** कृषि उत्पादन अच्छा। बालक बहुत मरे रोग उपद्रव। ता.२ से ५ तक बादल वर्षा। ता.५ अनुराधा शुक्र पशुओं में रोग,भूकम्प,आक्रमणकर्ताओं का वध। ता.६**मकरे बुध** प्रदूषण बढ़े,विषभय। ता.७ बुधोदय प.वायु प्रकोप। अमा गुरुवारी **सोमो शुक्रो सुर गुरों पौष अमावस होय। घर घर होय बधावणां,दुखी न दीखे कोय।।१।।** जनता सुखी।

पौष शुक्ल पक्षः- ता.६.१.२७ को चंद्रोदय शनिवारी छत्रभंग,चोर,भय व्याधि उपद्रव। ता.११ को **उषायां रवि** सोमवारी सुभिक्ष। ता.१२ श्रवणे बुध कृषि को ओला वृष्टि,तुषार से क्षति। ता.१४ **मकरेऽर्क** गुरुवारी सुभिक्ष- **मकर संक्रांत शुभवारी सुं बहु उत्सव आमोद। पौष अमा शुभवारी की,मंगल मोद प्रमोद।।१।।** जनता आनंदित। ता.१५ जन.से ६फरवरी तक मंगल,गुरु वक्र से राजाओं, नेताओं में शोक संवेदना घटे। ८ क्षय से उपद्रव। ता.१७ **ज्येष्ठा शुक्र** से राज

विग्रह, पहाड़ी लोगों को कष्ट, क्षत्रियों को संताप। ता.१७ से २२ तक बादल, वर्षा,ओलापात। ता.१६ को धनेष्ठा १ राहु श्लेषा ३ केतु से नासिक, केरल के राजा का नाश। ता.२२ **धनेष्ठा बुध** गाय आदि पशुओं को कष्ट।

माघ कृष्ण पक्षः- ता.२३.१.२७ को **१ शनिवारी** छत्रभंग। अमेरिका चीन में उपद्रव,अग्निभय। आगे फागुण में पांच रवि,चैत्र में पांच रवि होने से उपद्रव कारक महिना है। ता.२३ जन.से ३ फरवरी तक बाढ़,तूफान,वर्षा,ओलावृष्टि, शीत प्रकोप,तूषार से फसलों को नुक्सान। ता.२४ **श्रवणे रवि** रविवारी को अग्नि प्रकोप। ता.२८ मार्गी **उभा३ शनि** राजपीड़ा। वक्री **मघायां भौम** फसलों में रोग, मवेशियों को कष्ट,जनला में असंतोष। ता.२६ को **७ स्वाति** से हिमगिरे, पवन, प्रकोप,शीत प्रकोप। मूले धने शुक्र कृषि को क्षति वैद्यों,डॉक्टरों को पीड़ा। ता.३० कुंभे बुध कुंभकारों को लाभ। ता.३ **धनेष्ठा बुध** से पशुओं को कष्ट ता.६ **धनेष्ठा रवि** शनिवारी से धनिकों का धन हरण,चोर बाजारियों को कष्ट। **वक्री बुध** जनता को संघर्ष। **अमा शनिवारी माघ अमावस रवि शनि मंगल। घनी बात अरु देश उदंगल।।१।।** उत्पात,वायु प्रकोप।

माघ शुक्ल पक्षः- ता.७.२.२०२७ को **१रवि** युद्धोपद्रव,अग्निभय। ता.८ को चंद्रोदय शत्तभिषा सोमवारी से राज विनाश,छत्रभंग उपद्रव। ता.६ वक्री आश्लेषा ४ **कर्के गुरु** राजाओं में अराजकाता,जनता को पीड़ा,रोगादि,राष्ट्रभंग उपद्रव होवे। पश्चिम सिंधु देश में चौपायों को पीड़ा। ता.१० **बुधास्त प.**अतिवायु, हिमपात से कृषि को क्षति। **पूषायां शुक्र** जलचरों को पीड़ा। ता.१२ फर. से १ मार्च तक मंगल,बुध,गुरु तीनों ग्रह वक्री से युद्धोपद्रव,भय,विनाश घटे। ता.१३ **कुंभेऽर्क** शनिवारी **माघ अमावस शनि पड़ी,कुंभ संक्रांत शनिवार। बहु उदंगल वायु घणी, रोग विग्रह संसार।।१।।** फल घटे। ता.१४ को **८+कृत्तिका** से **माघ सुदी आठों दिवस,जो कृत्तिका रिख होय। के फागुण रोली पड़े,के सावन महंगो होय।।२।।** फसलों को रोली,ओलावृष्टि से नुक्सान। ता.१५ से २० तक तूफान, बादल वर्षा। ता.१६ **शत्तभिषा रवि** शुक्रवारी शीत प्रकोप ता.२६ शुक्ला १४ क्षया उपद्रव। ता.२० को १५ शनिवारी रोपणी रोपण से अशांति। **माघ अमा पूनो रवि शनि मंगल। घी वात अरु देश उदंगल।।३।।** फल घटित होवे।

फाल्गुन कृष्ण पक्षः- ता.२१.२.२०२७ को **१ रविवारी** अग्नि उपद्रव,रोग वृद्धि, पांचाल तथा तीनों मालवें के पीड़ित,मर्दित,द्रोहित एवं अविश्वास के कारण विभेद उत्पन्न होवे। ता.२१ से २८ फरवरी व १ मार्च तक तूफान,बादल,वायु प्रकोप वर्षा होवे। ता.२४ को **मकरे शुक्र** समुद्रीय जीवियों को शुभ। ता.२६ को ६स्वाति दुःख,भय,दुर्भिक्ष,युद्धोपद्रव। **बुधोदय पू.**वायुवेग अधिक। ता.२७ **वक्री श्लेषा भौम** टिड्डी आदि से कृषि को क्षति,शस्त्रघात,धान्य नाश,विषैले जंतुओं का प्रकोप। बिमारी का प्रकोप। **कर्के भौम** काशी कन्नौज मथुरा में फसल खराव। ता. २७ फरवरी से २४ मार्च तक मंगल,गुरु दो ग्रह वक्र से शस्त्र शक्ति बढ़े, अवशिष्ट शत्रुओं का नाश। ता.२ मार्च **उभा४शनि** राजपीड़ा,वर्षा कम,धान्य कम होवे। ता.५ **पूभायां रवि** शुक्रवार सुभिक्ष। ता.६ को शिवरात शनिवारी से शिवजी ताण्डव कर पापाचारियों का नाश करे। ता.८ अमा.सोमवती सुभिक्ष।

फाल्गुन शुक्ल पक्षः- ता.६.३.२७ को १ मंगली अग्नि उपद्रव,रोग। मार्गी **धनेष्ठा** ४ बुध पशुओं में रोग। चंद्रोदय मीने समुद्रीय जीवों को भय, रोग, अग्नि काण्ड होवे। ता.१२ वक्री **श्लेषा ३ गुरु** जनता को कष्ट,अराजकता,रोग ज्यादा, राष्ट्रभंग हो। ता.१५ **मीनोऽर्क** सुभिक्ष। दिग्दाहयोग ता.१५ से १७ व ता.१६ से २१ मार्च तक में अग्नि उपद्रव,फसलों में दाहा(जलजावे) पड़े। ता.१५ मार्च से ३ अप्रेल तक मीने सू.+श.युति विश्वास से धोखा,घातपात,विनाशक घटे। समुद्रीय जीव मरे। **धनेष्ठा शुक्र** अपहरण कर धनिकों का धन हरण घातपात। ता.१५ को ८ क्षया से अशांति। ता.१६ शनि अस्त **स्त्रिधा वृष्टि शनैश्चरे।। १।।** तूफान वर्षा। ता.१६ से २२ तक तूफान वर्षा। ता.१६ से २२ तक तूफान बादल वर्षा। ता.१८ **उभायां रवि** गुरुवारी सुभिक्ष। **शत्तभिषा बुध** सेवकों को कष्ट,शूद्रों में रोग। फसल खराबी। ता.१४ कुंभे शुक्र बादल। होलिका दहन रविवारी. उल्कापात योग से अग्निकाण्ड,विवाद,वेर विरोध बढ़े। **रवि शनि मंगल होलिका,उल्कापाती योग। ताण्डब नर प्रकृति का,हाहाकार दुःख भोग।।२।।** ता.२१ मार्च से ३ अप्रेल तक कुंभे बु.+शु.युति जल अमृत नाड़ी में तूफान,बादल,वर्षा फसलों को नुक्सान।

चैत्र कृष्ण पक्षः- ता.२३.३.२७ को १मंगलवारी अग्निकाण्ड,उपद्रव,मारकाट। श्रवण ४ **राहु** श्लेषा २ केतु पंजाब में राजा(नेता) का नाश। ता.२४ **मार्गी भौम** महामारी आदि रोगों में वृद्धि। ता.२३ से २८ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२६ शत्तभिषा शिल्पियों की हिंसा। ता.२८ **पूभायां बुध** बादल वर्षा,जनता रोगों से दुखी। ता.३० रेवती **१ शनि** दहन,पृथ्वी पर हाहाकार,मध्यप्रदेश में सुभिक्ष। ता. ३१ **रेवती रवि** समुद्रीय जीवों को कष्ट। ता.१ अप्रेल **बुधास्त पू.**अतिवायु,हिमपात से कृषि वृक्षों को क्षति। ता.३ से ५ अप्रेल तक मीने सू.+बु.+श. युति समुद्र में गर्मी से,प्रदूषित वातावरण से जीवों को कष्ट। ता.२ से ५ अप्रेल तक मीने चं. +शु.युति वर्षा बादल तूफान। ता.५ से ६ अप्रेल मीने सू.+चं.+बु.+श.चतुग्रही युति जल विप्लव से मरण,रोगोपद्रव। राज्यनाश। ता.६**उषायां बुध** कृषि उत्पादन अच्छा। बालकों की रोगादि से मरण। **पूभायां बुध** धूर्त,दूतों,मालवानों में हिंसा। जनता को कष्ट। अमा **मंगली+रेवती** चंद्रोदय से **चैत अमा हो मंगली,रेवती चंद उगंत। दंगा फसाद विस्फोट हो,छत्रभंग करंत।।१।।** □□□

विक्रम संवत् २०८३ शकः १९४८ शुद्धः विवाह लग्न मुहूर्ताः

ध्यानाकर्षणः–

(१) **कात्यायनोक्त चतु नक्षत्र** अश्विनी,चित्रा ,श्रवण,धनेष्ठा। सर्वमान्य ज्योतिष ग्रंथों में नहीं होने से इन नक्षत्रों में विवाह स्पष्ट नहीं किये है। ये नक्षत्र वधू प्रवेश,वधू द्विरागमन मुहूर्तों में लिये गये है। वाग्दान(टीका चढ़ाना) मुहूर्त में कृत्तिका,चित्रा,श्रवण, धनेष्ठा तीनों पूर्वा को लिया गया है। **सीतोढा पूर्व फाल्गुन्यां नो लभे शमतो न सत्–** अर्थात् पूर्वाफाल्गुनि में सीताजी ब्याही गई उनको विवाह के बाद सुख नहीं मिला इस कारण पू.फा.को विवाह में शुभ नहीं माना है। इसी प्रकार पुक्ष नक्षत्र में ब्रह्माजी की शादी हुई थी प्रभावतःअति कामाशक्त हो पथ भ्रष्ट हुए थे इस कारण पुक्ष नक्षत्र ब्रह्मा से श्रापित हो गया सभी कार्यों में शुभ होनें पर भी विवाह में त्याज्य किया गया है यथा– **प्राचेतसः प्राह शुभं भगर्क्षे सीता तदूढा न सुखं सिषेवे। पुष्यस्तु पुष्य त्यतिकाम मेव प्रजापते राय स शाप मस्मात्।।१।।**(विवाह वृन्दावन) अर्थात् मुनि प्राचेतस ने विवाह में पूर्वाफाल्गुनि को शुभ माना है किन्तु सीताजी का विवाह इसमें होनें से वनवासादि के कारण सुखी नहीं होनें से विवाह में त्याज्य माना है। इसी प्रकार ब्रह्माजी का पुष्य में विवाह हुआ था और भगवान् शिव के विवाह के समय पार्वती के सौन्दर्य को देखकर ब्रह्मा विचलित हुए अतः पुक्ष ब्रह्मा से श्रापित होनें से विवाह में त्याज्य हो गया। **विवाहांग कार्य तैलादि लेपन** में भी **अश्वनी,चित्रा नक्षत्र** को त्याज्य किया गया है। राजाओं के खड्ग विवाह में भी इन नक्षत्रों को नहीं लिया गया है। **पुनर्भू विवाह** (स्त्रियों के पुनर्विवाह) में भी **श्रवण** नक्षत्र को ग्राह्य नहीं किया है। ऐतदर्थ कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी विवाह युक्ति संगत नहीं है। जो अपना वैवाहिक जीवन सुखमयं **पत्नीच्छन्दानुवर्तिनी–** पत्नी अपने अनुकूल **भार्यावशानुगा–** पत्नी अपने वशीभूत रहे,इस हेतु आचार्यों ने विवाह के लिये ग्यारह नक्षत्रों को अनुकूल माना है। इसी अनुकूल नक्षत्रों में हमने विवाह शुद्ध किये है।

(२) **चातुर्मास विष्णुशयन में विवाह निषेध हैः– उत्सवे वासुदेवस्य मंगलेनान्य मंगलम्**– अर्थात् विष्णुशयन में अन्य मंगल विवाहादि कार्य नहीं करनें चाहिये। अर्थात् कर्क,सिंह,कन्या,तुला संक्रांति में चातुर्मास के कारण विवाह योग्य नहीं माने है। धनु,मीन, संक्रांति व अधिकमास आदि मलमास होनें से विवाह में त्याज्य है। द्रोपदी का स्वयंवर अर्जुन से पौष शुक्ला ११ रोहिणी में हुआ परन्तु पाणिग्रहण माघ कृ.१ पुक्ष में युधिष्ठर से,आश्लेषा में भीम से, मघा में अर्जुन से,पूफा.में नकुल से,उफा. में सहदेव से हुआ था। फलतः प्रत्येक पाण्डव के साथ द्रोपदी को एक वर्ष रहना तय हुआ था जो दुखमय जीवन का प्रतीक रहा। **आषाढ़े धनधान्य भोग रहिता नष्टा प्रजा श्रावणे वेश्या भाद्रपदेश्विने च मरणं रोगार्तिदा कार्तिके। पौषे प्रेतवती वियोग बलहा चैत्रे मदोन्मानिनी,अन्येष्वेव विवाहिता सुतवती नारी समृद्धा भवेत्।।२।।** (राजमार्त्तण्ड) अर्थात् आषाढ़ (कर्क संक्रांति)में विवाह करनें पर धन धान्य भोग का अभाव सावन में संतान नाश,भादों में वेश्या, आश्विन में मरण,कार्तिक(तुला संक्रांति) में रोग पीड़ा,पौष में कन्या प्रेतिनी, वियोगिनी,बल नष्ट करनें वाली,चैत्र में मदोन्मत्त और इनसे बचे हुए मासों में विवाह करनें से कन्या पुत्रों से युक्त धन धान्य सुवर्णादि से युक्त होती है। परन्तु कार्तिकशुक्ला एकादशी से तुलसी विवाहादि दिन होनें से शास्त्रसम्मत शुभ है यथा– **दिवसाः पंच पूर्वहि निर्गमे पंच वासराः। कारयेल्लग्न मेतेषु धन धान्य युतो भवेत्।।३।।** अर्थात् कार्तिक पूर्णिमा से पांच दिन पहिले और पांच दिन बाद तक विवाह करनें से कन्या वर धन धान्य से युक्त होती है। इन दिनों में **"नात्र विष्टि कुलकादि चिंतयेत्–** अर्थात् भद्रा कुलिका का विचार नहीं करना। **कार्तिकी सकल दोष नाशिनी–** कार्तिकी पूर्णिमा के दिन विवाह करने पर समस्त दोषों का नाश होता है। इस दिन ४,८,१२वां चंद्र छोड़कर विवाह ग्राह्य है। इस दिन लग्न की शुद्धि का चिंतन करना आवश्यक नहीं है। **नैव लग्नविधि मत्र चिंतयेत्।** इन दिनों में गोधलिक समय प्रशस्त है **कुर्याद् गोधूलिकं लग्नं कार्तिक्यां दिन पंच च। इसी प्रकार क्षैत्र विशेष में–भृगौ सुकच्छे च तथा विवाहे बलक्षपक्षे नभसौ दशम्याम्–** अर्थात् कच्छ देश में भृगु पर्वत के तालाब के तट पर श्रावण **मास शुक्ल पक्ष की दशमी** के दिन विवाह शुभ होता है। ऐतदर्थ इनमें गोधूलिक लग्न ही ग्राह्य है। लग्न शुद्धि रेखादि की आवश्यकता नहीं है। इन दिनों के सिवाय कुलाचार, देशाचार का शास्त्रों में उल्लेख है कि– **सिंहस्थ गुरु** में गंगा का उत्तर तट व गोदावरी के दक्षिण में विवाह शुभ माना जाता है। **मकरस्थ नीच गुरु** में नर्मदा के पूर्व,शोण से उत्तर दक्षिण और गण्डकी के पश्चिम भाग को दोष रहित माना है। गोचरीय स्थिति में अन्यान्य देशों में अपनी अपनी मान्यतायें भी है। पुनर्विवाह विधवा विवाह,नाता प्रथा वाले लोग किसी बड़े दिन की आड़ में विवाह कर लेते हैं वे रेखादि लग्नशुद्धि नहीं देखते । **संकीर्ण जातेस्तु शुभावहानि–** संकीर्ण जातियों के लिये सब शुभ है। ये लोग**"यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न करणीयं न करणीयं"**के सिद्धान्त

को मानते हैं। परन्तु-**तद्देश दोषान्परि वर्जयन्ति मनीषिणो देवविदःप्रयोगात्।** अर्थात् विद्वान ज्योतिषी उनउन देश के दोषों का प्रयोग में त्याग करते हैं। एवं च- **शास्त्र शिष्टे विरुद्धस्तु धर्मत्याज्यो बुधैः सदा**- अर्थात् बुद्धिमान लोग शास्त्र एवं शिष्टाचार के विपरीत कार्यों का त्याग कर देते हैं। अतः- **महाजनो येन गतः स पंथाः**(महाभारत) अर्थात् पूर्वाचार्यों के मार्ग पर ही चलना युक्ति युक्त है। **सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते**(गीता) अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। अन्य भी वहीं प्रमाण मानते है। ऐतदर्थ- **चातुर्मास में विवाह शुद्धिकरण शास्त्रानुकूल नहीं है।**

(३) **गुरुरेकोपि केन्द्रस्थःशुक्रो वा यदि वा बुधः। हरेःस्मृतिर्यथा हन्ति तद्वद्दोषा न कालजाः।।४।। दोषाणां च शतं हंति बलवान्केंद्रगो बुधः। अपहायद्युनं शुक्रोद्विगुणं लक्षमंगिराः।।५।** अर्थात् केन्द्र में बुध सौ दोषों का और सातवें को छोड़ शेष केन्द्रों में बलवान् **शुक्र से दो सौ दोषों** का तथा बलवान् गुरु से लाखदोषों का विनाशक होता है। **ध्वजयोगः**-शुभग्रह लग्न में पापग्रह अष्टम में होनें से स्त्री पति को प्रिय होती है। **श्रीवत्सयोगः**-मंगल सूर्य ११वें, शनि६ठें, चंद्र२रें,६वें अन्यग्रह से यह उत्तम विवाह है। **आनन्दयोग**- कन्या लग्न, ३रें चंद्र,गुरु,५वें शुक्र से आनंद करता है। **अर्द्धचंद्रयोग**- ११वें सूर्य,६ठें मंगल, ३रेंशनि से कन्या पतिव्रता,सौभाग्यवति होती है। **गजाभिधयोग**- गुरु६वें,बुधलग्न में,शनि ११वें से कन्या पतिव्रता,धर्म,अर्थ की देने वाली होती है। **शंखयोग- शुभग्रह ४,६,१० वें हो तो सदा शुभ कारक है।**

(४) **अशुभयोग- चक्रयोग**- मेष से कन्या तक पापग्रह,तुला से मीन पर्यन्त अशुभ ग्रह हो तो इस योग में कन्या व्याभिचारिणी होती है। **वापीयोग**- संपूर्ण पापग्रह केंद्र में हो तो यह विवाह में अनिष्टप्रद है। **कोदंडयोग**- शुभग्रह १,१२वें व पापग्रह २रें हो तो अशुभ है।**कुठारयोग**- मंगल १२वें,शुक्र६ठें,शनि ४थे होनें से वंश का नाश करता है। **कर्मयोग**- १२वां सूर्य, २रां शुक्र,६ठें शनि,८वां चंद्र हो तो कन्या भिक्षा मांगती है। **मूसलयोग**- सूर्य लग्न में, शनि १२वें,चंद्र ८वें होनें से कन्या कुल का नाश करनें वाली होती है। **उपग्रहदोष** कुरुक्षेत्र,वाल्हिक देश में, **लत्तादोष,**सौराष्ट्र,मालव देश में,**पातदोष** बंग कलिंग में,**एकार्गल** कश्मीर में और **वेध दोष** संपूर्ण देश में त्याज्य है। वेधदोष- लग्न में शुभ ग्रह,लग्नेश लाभेश पर शुभग्रहों की दृष्टि वा शुभ ग्रहयुत वा शुभग्रहों की कालहोरा हो तो वेध दोष नहीं होता है। **क्रूरैरपि त्यजेत्पादं केचिद्रूचुर्महर्षयः** आदि प्रमाणों से विवाह लग्न शोधन किये हैं। अतः देशाचार कुलाचार का उपरोक्त के सिवाय अन्य प्रपंच मिथ्या है।

वैशाखशुक्लपक्षः

(मेषसूर्य,मिथुने गुरुः)

(१) २ सूर्य रोहिण्यां लग्न रात्रौ मीन,मेष रेखा १०।।।।।।।।।।**ता.19.4.2026ई.।वृषभे चंद्रः।** रात्रौ ब्रह्म मुहूर्ते मीन ४.३४ से ५.५८ बजे। मेष ५.५६ से ६.१२ बजे।उषः प्रशस्तः (रवियोग) (रात्रौ छवरीकाल अमान्यः)

(२) ३ चंद्र रोहिण्यां ल.१,३,४ अं.११ या.रेखा १०।।।।।।।।।। अग्रे ल.४ अं.११ उप. रेखा ६।।।।।ऽ।।।। **ता. 20.4.2026ई.। वृषभे चंद्रः।** प्रातः मेष ६.१३ से ७.३२ बजे। मिथुन ६.३० से ११.४३ बजे। कर्क ११.४४ से १२.४ बजे। रेखा ६ कर्क १२.५ से २.१ बजे। (रवियोग, दिवा छवरीकाल अमान्यः, अग्रे भद्राः)

(३) ४+५ मंगल मृगे दिवा ल.३,४अं.१७ या.रेखा ७।।।।ऽऽऽ।।दिवा ल. ४ अं.१७ उप. रेखा८।।।।।।ऽऽ।। वृषभ चंद्रः,ऽगोधूलि ल.७ रात्रौ ल. ६,१२ रेखा ६।।।।।।।ऽ।।**मिथुन चंद्रः ता.२१.४.२६ई.**।सुबह मिथुन ६.२६ से ११.३६बजे।कर्क ११.४०से १२.१४ बजे ।अग्रे रे.८ कर्क १२.१५ से १.५७ बजे तक। मिथुन चंद्रः अग्रे रे.६ सायं ऽगोधूलि तुला ६.३० से ८.४८ बजे। रात धनु ११.४ से १.१० बजे। मीन ४.२६से ५.५२बजे उषः प्रशस्तः। (मंगल दिने क्षयाति शान्त्यर्थ रक्त वस्तु :दानः)

(४) ६ शनि मघायां रात्रौ ल.६ रेखा ७।ऽ।।।ऽ।।ऽ। रात्रौ ल.११ रेखा ८।।।।।ऽ।।ऽ। **ता.25.4.2026 ई.। सिंह चंद्रः।** रात धनु १०.४८ से १२.५४ बजे। रात कुंभ २.४० से ४.६ बजे। (गणितेन क्रांत्याभाव मृत्युबांण, ज्वालामुखी त्याज्यः)

(५) १० सूर्य मघायां दिवा ल.२,३,४ रेखा ८।।।।।ऽ।।ऽ।अग्रे दिवा ल.४ अं.४उप. अं.२६या.रेखा ६।।।।।।।।ऽ। **ता.26.4. 26 ई.।सिंह चंद्रः** । सुबह वृषभ,मिथुन कर्क लग्न ७.६ से १.३० बजे तक। दिने कर्क ४.१० से ६.६ बजे तक। (अग्रे गणितेन क्रांति दोषः त्याज्यः)

(६) १२ मंगल उफायां रात्रौ ल.६,१० रेखा ७ऽ।।ऽ।।ऽ।।। **ता.28.4.2026ई. कन्या चंद्रः।** रात्रौ धनु ,मकर १०.३६ से २.२७ बजे तक। (रात्रौ छवरी काल.अमान्यः, हस्ते रे.७ऽऽ।ऽ।।।।।।लग्नाऽभावः)

(७) १३ बुध हस्ते दिवा ल.२,३,४ रेखा ७ऽऽ।ऽ।।।।।। रात्रौ ल.८ अं.२ उप. ,ल.६अं.१७या.रेखा ७ऽ।।ऽ।ऽ।।।।**ता. 29.4.2026ई.। कन्या चंदः।** सुबह वृषभ,मिथुन कर्क ६.५७ से १.२५ बजे तक। रात्रौ वृश्चिक ८.२५ से १०.३१ बजे। धनु १०.३२ से ११.३२ बजे तक (अग्रे नक्षत्रांतः)

(८) १५ शुक्र स्वात्यां दिवा ल.३,४ रेखा ८।।।ऽ।।।ऽ।। रात्रौ ल.८अं.११उप.६, ११ रेखा ७।।।ऽ।ऽ।ऽ।।**तारीख 1.5.26ई. ।तुले चंद्रः।** सुबह मिथुन,कर्क ८.४६ से

१.१८ बजे। रात्रौ वृश्चिक ६.० से १०.२४ बजे। धनु १०.२५ से १२.२८ बजे। कुंभ २.१४ से ३.४७ बजे। (अग्रे नक्षत्रांतः)

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(मेषेसूर्य,मिथुनेगुरु)

(९) २ सूर्य अनुराधायां दिवा ल.२,४ ऽगोधूलि ७अं. १६या.रेखा ८ऽ।।ऽ।।।।।। **ता.3.5.26ई.। वृश्चिक चंद्रः**। प्रातः वृषभ ६.४२ से ८.३७ बजे। दिने कर्क १०.४६ से १.१० बजे। गोधूलि सायं तुला ५.४२ से ६.५० बजे। (अग्रे मृत्युबांणः)

(१०) ४ मंगल मूले गोधूलि ल.७ रात्रौ ल.८ रेखा ७।।ऽ।ऽ।ऽ।। रात्रौ ल.१०,११,१ रेखा ८।।ऽ।।।ऽ।। **ता.5.5.26ई.। धनु चंद्रः**। रात वृश्चिक ७.५१ से १०.८ बजे। मकर कुंभ १२.१३ से ३.३१ बजे। रात्रौ मेष ४.५२ से ६.०० बजे।

(गोधूलिके छवरीकालः तुला लग्ने त्याज्यः)

(११) ५बुध मूले प्रातः ल.१,३ रेखा ८।।ऽ।।ऽ।।**ता. 6.5.26ई.। धनु चंद्रः**। प्रातः मेष ६.० से ६.३० बजे। मिथुन ८.२६ से १०.३६ बजे।

(१२) ५गुरु उषायां गोधूलि ल.७ रात्रौ ल.८,६ रेखा ८।।।।ऽ।।।ऽ रात्रौ ल.१०अं.५उप.अं.२१ या.रेखा ६।।।।।।।।ऽ धनु चंद्रः। अग्रे ल.११,१ **मकरे चंद्रः। ता.7.5.26ई.**।सायं गोधूलि तुला ७.१० से ७.४२ बजे। रात्रौ वृश्चिक,धनु ७.४३ से १२.४ बजे। मकर १२.२५ से १.१४ बजे। अग्रे मकरे चंद्रःरात्रौ कुंभ १.५० से ३.२३ बजे। मेष ४.४८ से ६.० बजेः उषः प्रशस्तः। (गुरु दिने गोधूलिके सूर्यास्त पूर्वे अर्धयाम दोष त्याज्यः)

(१३) ६ शुक्र उषायां प्रातः ल.१,२अं.२५ या.रेखा ६।।।।।।।।ऽ **ता.8.5.26ई.।मकरे चंद्रः**।प्रातः मेष ६.०० से ६.२१ बजे तक। वृषभ अं.२५या.प्रातः ६.२२ से ७.५० बजे तक। (अग्रे भद्राः)

(१४) १० मंगल उभायां रात्रौ ल.८,६, १०,११ रेखा ८।।ऽ।।ऽ।।। **ता.12.5.26ई.। मीन चंद्रः**। रात वृश्चिक से कुंभ ७.२४ से ३.४ बजे। (अग्रे मृत्युबांण, रात्रौ छवरीकाल अमान्यः शनि चर्णयुतिऽभावः)

(१५) १२+१३ गुरु रेवत्यां दिने ल.२ अं.१२ उपं.ल. ३,४ रेखा ६।।।।।ऽ।।।।**तारीख 14.5.2026ई.।मीने चंद्रः**।प्रातः वृषभ ६.५४ से ७.५४ बजे। मिथुन कर्क ७.५८ से ११.२७ बजे।

(गुरु दिने क्षया तिथि शांत्यर्थ पीत वस्तु दानं)

नोट-अग्रेअधिकमासत्याज्यः

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(मिथुनेसूर्य,कर्के गुरुउच्चस्थ)

(१६) ५ शुक्र मघायां दिने ल.७,८ ऽगोधूलि ६ रेखा ८।ऽऽ।।।।।।। रात्रौं ल.११,१,२ रेखा ७।ऽऽ।।ऽ।।।। **ता.19.6.26ई.।सिंहे चंद्रः**। दिने तुला वृश्चिक २.३६ से ७.१४ बजे। ऽगोधूलि सायं ७.१५ से ६.१५ बजे। रात्रौ कुंभ ११.४ से १२.३४ बजे। मेष वृषभ २.२ से ५.३० बजे तक। उषः प्रशस्तः।

(१७) ६ शनि मघायां दिवा ल.३,४,५ रेखा ७।ऽऽ।।ऽ।।।। **ता.20.6.26ई.। सिंहे चंद्रः**। प्रातः मिथुन,कर्क, सिंह ५.४६ से १२.१७ बजे तक।

(१८) ८चंद्र हस्ते रात्रौ ल.१०,१२,३ रेखा ७ऽ।।ऽ।।।ऽ।। **ता.22.6.26 ई.।कन्या चंद्रः**। रात मकर ६.४ से १०.५१ बजे। मीन १२.२३ से १.४६ बजे। मिथुन ५.२२ से ५.४६ बजे। (पूर्व ४६/०घं.या.हस्ते रे. ४ऽऽ।ऽ।ऽऽ।।ऽअल्पः)

(१९) ६ मंगल हस्ते दिवा ल.३,४,५ रेखा ७ऽ।।ऽ।।ऽ।। **ता.23.6.26ई.।कन्या चंद्रः**।प्रातः मिथुन से सिंह ५.५० से १२.५ बजे तक।

(२०) १० बुध स्वात्यां गोधूलि ल.६ रात्रौ ल.१०,१ रेखा ८।।ऽ।ऽ।।।। रात्रौ ल.३ रेखा ६।।ऽ।।।।।। **ता. 24.6.26ई.।तुले चंद्रः**।सायं गोधूलि धनु ६.५५ से ८.५५ बजे। रात्रौ मकर ८.५६ से १०.४३ बजे। रात मेष १.४२ से ३.१६ बजे। रात मिथुन ५.१४ से ५.५१ बजे।

(२१)११ गुरु स्वात्यां प्रातः ल.३ लं.४अं.१३ या. रेखा ६।।ऽ।।।।।। ता.२५.६.२०२६ई.। तुले चंद्रः। प्रातः मिथुन ५.५१ से ७.२३ बजे। कर्क ७.२४ से ८.२४ बजे लक(अग्रे भद्राः)

(२२) १३ शनि अनुराधायां दिवा ल.६रात्रौ ल.१० रेखा ८ऽ।।।ऽ।।।। ता.२७.६.२६ ई.। वृश्चिक चंद्रः। दिन को कन्या ११.५० से २.३ बजे। रात मकर ८.४४ से १०.३१ बजे।

(२३) १५ चंद्र मूले रात्रौ ल.१० अं.७ उप.,ल.१२,१,३ रेखा ७।।।।ऽ।ऽऽ। ता.२६.६.२०२६ई.। धनु चंद्रः। रात्रौ मकर ६.५ से १०.२४ बजे। मीन, मेष ११.५६ से २.५७ बजे। मिथुन ४.५५ से ५.५२बजे। (गणितेन क्रान्त्याऽभाव)

आषाढ़कृष्णपक्षः

(मिथुनेसूर्य,कर्के गुरुउच्चस्थ)

(२४) १ बुध उषायां दिने ल.४,५ रेखा ६।।।।।।।।ऽ। दिवा ल.६रेखा ६।।।।ऽ।।।। **ता.1.7.2026 ई.। धनु चंद्रः**।सुबह लग्न कर्क,सिंह अं.१८या.६.५६ से १२.५३ बजे तक। अग्रे मकरे चंद्रः दिवा लग्न कन्या अं.१६ उप. १२.५४ से १.५० बजे तक।

(२५) ६ चंद्र उभायां रात्रौ ल.१०,१,३ रेखा ६।।।।ऽ।।।। **ता.6.7.2026 ई.।मीने चंद्रः**।रात्रौ मकर ८.११ से ६.५५ बजे। मेष १२.५४ से २.३१ बजे। मिथुन ४.२६ से ५.५६ बजे। उषः प्रशस्तः। (भद्रा,मृत्युबांण,त्याज्य)

(२६) ७ मंगल रेवत्यां ऽगोधूलि धनु अं.४ उप.,रात्रौ ल.१०,१ रेखा ७ऽ।।।।।ऽ।ऽ **ता.7.7.2026 ई.। मीनेचंद्रः**।सायं ऽगोधूलि धनु ६.१८ से ८.६बजे।रात मकर ८.७ से ६.५१ बजे।रात मेष १२.५० से २.२७ बजे।(उभायां रे.६।।ऽ।।ऽऽ।।ऽअल्पःदिवा ल.६,८)
(२७) ८+६ बुध रेवत्यां प्रातः ल.४ रेखा ८ऽ।।।।।।ऽ।। **ता.8.7.2026ई. मीने चंद्रः**। प्रातः कर्क ६.३५ से ८.५३ बजे तक (बुधवारे क्षयतिथि शांति हरित वस्तुदान)
(२८) १२ शनि रोहिण्यां दिवा ल.४,६,८रेखा ७।ऽऽ।।ऽ।।।। रात्रौ ल.१०,१२,१ रेखा ८।।ऽ।। ऽ।।।। रात्रौ ल.३ रेखा ६।।।।।।ऽ।।।**ता.11.7.26ई.।वृषभ चंद्रः**।प्रातः कर्क ६.१६ से ८.४० बजे।कन्या १०.५७ से १.१० बजे। वृश्चिक ३.२६ से ५.४५ बजे। रात मकर ७.५१ से ६.३५ बजे।मीन मेष ११.६ से २.११ बजे।मिथुन ४.६ से ५.५८ बजे तक।उषः प्रशस्तः।
(२६) १३ सूर्य मृगे दिवा ल.३,४,६,८ अं.६ या.**वृषभ चंद्रः** रेखा ६।।।।।।ऽ।।।, अग्रे ऽगोधूलि ल.६ अं.१८ या. रेखा ६।।।।।।ऽ।।। **ता.12.7.2026ई.। मिथुने चंद्रः**।प्रातःमिथुन कर्क ५.५८ से ८.३६ बजे। दिने कन्या १०.५३ से १.६ बजे तक।वृश्चिक ३.२५ से ३.४६ बजे तक **वृषे चंद्रः**।अग्रे **मिथुने चंद्र** सायं ऽगोधूलि धनु ५.४२ से ६.५४ बजे।(अग्रे भद्राः)
नोट– **अग्रे गुरु अस्तः, कर्कादि संक्रांति चातुर्मास त्याज्यः सिंहस्थगुरुप्रवेशः।**

–सिंहस्थ (सिंहे)गुरुदोष परिहारः–

आगे इस वर्ष में गुरु अतिचारी होकर मघा के प्रथम व द्वितीय चरण में सिंह राशि पर चलेगा। जो मांगलिक विवाह, उपनयनादि शुभ कार्यो में त्याज्य है यथा– **सिंह राशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः। सर्व देशेष्वये त्याज्योदम्पत्योर्निधनप्रदाः।।1।।**(राजमार्तण्ड) सब देशों में त्याज्या का उल्लेख है।**सर्व सिंह गुरुर्वर्ज्यःकलिंगे गौड गुर्जरे।।2।।** अर्थात् कलिंग देश (उड़ीसा प्रांत) गौड़(बंगाल,कलकत्ता आदि)देश और गुर्जर(गुजरात देश में समस्त सिंह राशि का गुरु त्याज्य है) **त्याज्य क्षैत्र**– उत्तरा खंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, पं. बंगाल कलकत्ता, बंगाल की खाड़ी,पीली भीत,गाजीपुर जिला, छत्तिसगढ़,उड़ीसा ,महाराष्ट्र, तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश, द्वारका आदि **गंगा के दक्षिण भाग व गोदावरी, गोमती के उत्तरभाग के मध्य व क्षैत्र वालों के लिये निषिध त्याज्य है**।अर्थात् इन त्याज्य देशों को छोड़कर वहां के लोग विवाह उपनयनादि कार्य सम्पन्न करने के लिये परिहारक निम्न क्षेत्रों में जहां दोष नहीं लगता है वहां जा कर सम्पन्न करवा सकते हैं यथा–

देश भेद से गुरु परिहार–गंगा गोदान्तरं हित्वा शेषाङ्घ्रिषु न दोषकृत्।। (मुहूर्त चिंतामणी) अर्थात् गंगा और गोदावरी (दक्षिण गंगा,वृहद् गंगा) के बीच (मध्य) वाले देशों को छोड़ कर किसी भी देश में दोष नहीं है एवं च– **भागीरथ्युत्तरे कूले गौत्तम्या दक्षिणे तथा। विवाहो व्रतबन्धों वा सिंहस्थेज्ये न दुष्यति**(वसिष्ठ) अर्थात् भागीरथी (गंगा) के उत्तर वाले देशों में व गोमती (आदि गंगा,गोत्तमी) के दक्षिण देशों में सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं है। राजस्थान में सिंहस्थ का दोष नहीं यथा– **पुष्करारण्ये भागिरथ्यां पश्चिम दिक् भागे**– अर्थात् पुष्करारण्य क्षैत्र व गंगा के पश्चिमी भाग में लूणी नदी का क्षैत्र अजमेर,नागौर,राजसमंद, उदयपुर, सिरोही, जालौर, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, बीकानेर, अर्बुदारण्य माउण्ट आबु क्षेत्र सहित पूरे राजस्थान जयपुर,कोटा सहित अन्य प्रदेश गंगा गोदावरी के दोष क्षैत्र से बाहर हाने से। एवं च– **सिंहस्थ मध्ये यदि पितृ ऋक्षे भवेद् गुरु।स्याच्च तदा विवाह कृतेषु प्राप्नोति धनं च सौख्यं भाग्यं च पुत्रं पशु राज वृद्धिम्**(मणिमाला) अर्थात् पितृ नक्षत्र मघा में गुरु विवाहादि श्रैष्ठ है।''**सिंहस्थेज्ये न दुष्यति**''सिंहे गुरु का दोष नहीं लगता है। राजस्थान का भीनमाल क्षेत्र पूर्व में गुर्जर(गुजरात) की राजधानी रही है जो पूर्वाचार्यों के अनुसार गुजरात में होने से त्याज्य है। हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि गंगा के दक्षिण के ग्राह्य है।

भारत सरकार ने कन्याओं के विवाह की आयु १८ वर्ष निश्चित की है जो रजस्वला के कारण रोहिणी अवस्था है व पूर्ण वयस्क होनें पर कन्या का स्त्रैण भाव बना रहे। यथा समय विवाह करना ही शास्त्र धर्म है। वर्तमान समय की स्वच्छंद प्रेम लग्नादि वर्ण संकर संतान माता पिता भाई बंधु आदि किसी की नहीं होती। **लुप्त पिण्डोदक क्रियाः** होने से पितरों से श्रापित होकर विनाश को प्राप्त होती है। गीता के १३ वें अध्याय के अनुसार स्वजाति क्षेत्र(खेत) के ज्ञान से विवाह का किया गया बीज वपन अर्थात् हीरे की खान में हीरा ही पैदा होता है भारतीय संस्कृति का स्पष्ट निष्कर्ष है। निष्कर्षतः स्व स्व प्रदेशों के विद्वान् त्याज्य क्षैत्र को ध्यान में रखते हुये निम्न **सिंहस्थ गुरु** के शुद्ध विवाह लग्नानुसार समय व सावे (विवाह लग्न) देवे।

कार्तिकशुक्लपक्षः
(वृश्चिकसूर्य,सिंहेगुरु)

(३०) ११ शुक्र उभायां प्रातः ल.६ रेखा ७ऽऽऽ।।।।।।।रेवत्यां रात्रौ ल.६ रेखा ६ऽ।।।।।।।।।**ता.20.11. 2026ई.।मीने चंद्रः**। प्रातः धनु ६.७ से ११.११ बजे। रात कन्या २.१४ से ४.२७ बजे तक।
(३१) १२ शनि रेवत्यां दिवा ल.६,१ गोधूलि ल.२,रात्रौ

ल.३ रेखा ८ऽ।।।ऽ।।।। **ता.21.11.2026ई.। मीने चंद्रः** ।सुबह धनु ६.३ से ११.७ बजे। मेष ३.५० से ५.२४ बजे। गोधूलि वृषभ ५.२५ से ५.४२ बजे उप. (कुलिकः) रात मिथुन ७.१० से ६.२३ बजे। (शनि दिने सूर्यास्त परे कुलिकः त्याज्यः)

(३२) १५ मंगल रोहिण्यां रात्रौ ल.५,६ अं.१३या.रेखा ६।।।ऽ।।।।। रात्रौ ल.६ अं.१३उप.रात्रौ ल.८अं. ८या.रेखा ८।।।ऽऽ।।।। **ता.24.11.26 ई.। वृषभ चंद्रः** ।रात सिंह ११.४२ से १.५७ बजे। कन्या १.५८ से २.५४ बजे रेखा६। कन्या २.५५ से ३.११ बजे। वृश्चिक ६.३४ से ७.७ बजे रेखा ८।उषः प्रशस्तः।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(वृश्चिकसूर्य,सिंहेगुरु)

(३३) १ बुध रोहण्यां दिवा ल.८ अं.८ उप.११,१२,१ रेखा ८।।।ऽऽ।।।। रात्रौ ल.५,६ रेखा ७।।।ऽऽ ऽ।।। रात्रौ ल.८ अं.४ या.रेखा ६।।।ऽ।।।।। **ता. 25.11. 2026ई. ।वृषे चंद्रः** । प्रातः वृश्चिक ७.७ से ८. ४६ बजे। दिने कुंभ,मीन, मेष १२.३६ से ५.८ बजे। रात सिंह कन्या ११.३८ से ४.७ बजे। रात वृश्चिक ६. ३० से ७.७ बजे तक।

(३४) २ गुरु मृगे प्रातःल.८ रेखा ६।।।ऽ।।।।।वृषे चंद्रः। अग्रे दिवा ल.६ अं.४ उप.,दिवा ल.११,१२,१ गोधूलि ल.२ रात्रौ ल.५ रेखा १०।।।।।।।।।। **मिथुन चंद्रः ।ता.26. 11.2026ई.** । सुबह वृश्चिक ७.७ से ८. ४२ बजे। वृषे चंद्रः। अग्रे मिथुने चंद्रे दिवा धनु ६.०० से १०.४७ बजे। कुंभ मीन मेष १२.३२ से ५.४ बजे। गोधूलि वृषभ ५.४ से ७.१ बजे। सिंह ११.३४ से १.४६ बजे। (अग्रे भद्रा,मृत्युबांण त्याज्यः)

(३५) १०गुरु हस्ते रात्रौ ल.७,८अं.१७ या.रेखा ७।। ।ऽ।ऽ।ऽ।। **ता.3.12.26ई. ।कन्याचंद्रः** । रात्रौ तुला ३. ३६ से ५.५६ बजे। वृश्चिक ५.५७ से ७.१२ बजे। (भद्रात्याज्यः)

(३६) ११ शुक्र हस्त दिवा ल.८,६ रेखा ७।।ऽ।ऽ ।ऽ।। **ता.4.12.2026ई. ।कन्या चंद्रः** ।प्रातः वृश्चिक ७. १२ से ८.६ बजे। धनु ८.१० से १०.१३ बजे तक।

(३७) १२ शनि स्वात्यां दिवा ल.१ रात्रौ ल.३ रेखा ८।।ऽ।।ऽ।। **ता.5.12.2026ई. ।तुले चंद्रः** । रात मेष २.५३ से ४.३० बजे। मिथुन ६.२८से ८.४१ बजे। (अग्रे मृत्युबांणः)

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः (वृश्चिकेसूर्य,सिंहेगुरु)

(३८) १ गुरु मूले दिवा ल.११,१२,१ रेखा १०।।।।।।।।।। रात्रौ ल.५अं.१०या.रेखा ६।।।।ऽ।।।। **ता. 10.12.2026ई. ।धनु चंद्रः** । दिने कुंभ, मीन,मेष ११.३१ से ४.१० बजे। रात सिंह १०.४० से ११.२० बजे। (अग्रे नक्षत्रांत)

(३९) २ शुक्र उषायां रात्रौ ल.६ अं.१८ उप.,ल.७,८ रेखा ६।ऽ।।।।।।।। **ता.11.12.26ई. । धनुचंद्रः** । रात कन्या अं.१८ उप.२.० से ३.६ बजे। तुला वृश्चिक ३. ७ से ७.१८ बजे। (रात्रौ छवरी काल अमान्य)

(४०) ३ शनि उषायां दिवा ल.११,१२,१ ऽगोधूलि ल.२ रेखा ६।ऽ।।।।।।।। रात्रौ ल.६ रेखा ८।ऽ।।।ऽ।।।। **ता.12.12.2026ई. । मकरे चंद्रः** । दिवा कुंभ,मीन, मेष ११.२७ से ४.०२ बजे तक। ऽगोधूलि वृषभ ४.०३ से ५.४४बजे तक। (सूर्यास्त परे कुलिक त्याज्यः, रात्रौ दिवा छवरीकाल अमान्यः)

नोट–अग्रे धनाऽर्कमलमासत्याज्यः।

पौषशुक्लपक्षः (मकरेसूर्य,सिंहेगुरु)

(४१) १२ मंगल मृगे रात्रौ ल.७अं.११ उप.,ल.६रेखा ६।।।ऽ।।।।।। **ता.19.1.2027 ई. । मिथुने चंद्रः** । रात्रौ तुला १.२० से २.५३ बजे। धनु ५.११ से ७.१५ बजे। (सू.चर्णविधाऽभावः)

(४२) १३ बुध मृगे दिवा ल.११,१२ रेखा ६।।। ऽ।।।।।। **ता.20.1.2027ई. । मिथुने चंद्रः** । प्रातः कुंभ, मीन ८.५७से ११.५४ बजे।

माघकृष्णपक्षः

(मकरेसूर्य,सिंहगुरु)

(अन्यपंचांगमेंकर्के उच्चस्थगुरु)

(४३) २ सूर्य मघायां दिवा ल.११,१,२ गोधूलि ल.४ रेखा ६।।ऽ।।।।।।। **ता.24.1.2027ई. । सिंहे चंद्रः** । प्रातः कुंभ ८.४१ से १०.१० बजे। मेष,वृषभ ११.३६ से ३.६ बजे। सायं गोधूलि कर्क ५.२४ से ७.४१ बजे। (अग्रे मृत्युबांण, भद्रा)

(४४) ४ मंगल उफायां दिवा ल.१२,२ गोधूलि ल.४ रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। रात्रौ ल.६,७,८अं.२१ या.रेखा ७।।।ऽ।।ऽऽ।। **ता.26.1.2027 ई. ।कन्या चंद्रः** । सुबह मीन १०.२ से ११.३० बजे। वृषभ १.५ से ३.१ बजे। गोधूलि कर्क ५.१५ से ७.३३ बजे छवरीकाल आवश्यके। कन्या,तुला वृश्चिक ६.५० से ४.०बजे तक। (दिवा रात्रौ छवरीकाल अमान्यः)

(४५) ५ बुध हस्ते दिवा ल.१२,२ गोधूलि ल.४ रेखा ७।।।ऽ।।ऽऽ।। रात्रौ ल.६अं.२उप.,ल.७,८ रेखा ७।।।ऽ।ऽ।ऽ।। **ता.27.1.2027ई. ।कन्या चंद्रः** । दिने ६.५६ से ११.२६ बजे। वृषभ १.१ से २.५७ बजे। गोधूलि सायं कर्क ५.१२ से ७.२६ बजे। रात कन्या, तुला,वृश्चिक ६.५४ से ३.४० बजे तक।

(४६) ६ गुरु स्वात्यां ल.६ रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।। **ता. 28.1.27ई. ।तुलेचंद्रः** । रात धनु४.३६से६.३६ बजे

(४७) ७ शुक्र स्वात्यां दिवा ल.११,१ ऽगोधूलि ल.४ रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।।ता.29.1.27ई.।तुले चंद्रः। सुबह कुंभ ८.२१ से ९.५० बजे। मेष ११.१६ से १२.५२ बजे।सायं ऽगोधूलि कर्क ५.४ से ७.२१ बजे।

(अग्रे रे.६ ऽऽ।।ऽऽ।।।अल्पः)

(४८) ६ सूर्य अनु.दिवा ल.११,१२,२ रेखा६।।।।।।ऽ।। ऽगोधूलि ल.४ अं.१ उप.रेखा ८।।।।ऽ।ऽ।। ता.31.1.2027ई.।वृश्चिक चंदः।सुबह कुंभ मीन ८.१४ से ११.११ बजे। वृषभ १२.४६ से २.४२ बजे। सायं ऽगोधूलि कर्क ५.० से ७.१४ बजे।(अग्रे भद्राः)

(४९) ११ मंगल मूले दिवा ल.१ अं.६ उप.२८ अं.या. रेखा ८।।ऽ।।ऽ।।।ता.2.2.2027ई.।धनु चंद्रः। दिने मेष ११.३० से १२.३० बजे।

(अग्रे लग्नाऽभावः, मृत्युबांणः)

(५०) १३ गुरु उषायां,रात्री ल.६ अं.२४ उप.रेखा ६।।।।।।ऽ।।।ता.4.2.2027ई.।मकरे चंदः।रात्री धनु ५.३२ से ६.६ बजे।उषः प्रशस्तः।

(अग्रे लग्नाऽभावः)

माघशुक्लपक्षः

(मकरे सूर्यः,कर्के उच्चस्थगुरु)

(५१) ३ मंगल उभायां रात्री ल.६अं.१४ उप.ल.१० रेखा८।।ऽ।।ऽ।।।।ता.9.2.2027ई.।मीने चंदः। रात्री धनु ४.५० से ५.५० बजे। मकर ५.५१ से ७.२२ बजे।उषः प्रशस्तः।(रात्री छ्वरी काल अमान्यः)

(५२) ४ बुध उभायां प्रातः ल.१२,१अं.१८ या.रेखा ८।।ऽ।।ऽ।।।। रात्री ल.८अं.६या.रेखा ६।।ऽ।।।।।।। रेवत्यां रात्री ल.८अं.६उप.ल.६,१० रेखा ७।ऽ।।।।ऽऽ।।ता.10.2.27ई. ।मीन चंद्रः। सुबह मीन ६.२ से १०.२६ बजे। मेष १०.३० से ११.३० बजे। रात वृश्चिक १.२५ से १.४६ बजे। रात वृश्चिक १.५० से ३.४२ बजे। धनु मकर ३.४३ से ७.२२ बजे। उष प्रशस्तः। (दिवा रात्री छ्वरीकाल अमान्य)

(५३) ५ गुरु रेवत्यां दिवा ल.१२ रे.७।ऽ।।।।ऽऽ।। ता.11.2.2027ई.। मीने चंद्रः। सुबह मीन ८.५८ से १०.२५ बजे। (गुरु दृष्टः)

(कुंभेसूर्य,कर्के उच्चस्थगुरुः)

(५४) १० मंगल मृगे दिवा ल.१२ अं.१२ या. रेखा ६।।।।।ऽ।।।। वृषभे चंद्रः। अग्रे ल.१२,१,२ गोधूलि ल.५ रेखा १०।।।।।।।।।। मिथुने चंद्रः। ता.16.2.2027ई.।सुबह मीन ८.३८ से ९.१५ अग्रे ९.१६ से १०.५ बजे। मेष, वृषभ १०.६ से १.४० बजे। सायं गोधूलि सिंह ६.१३ से ८.२७ बजे।

(अग्रे नक्षत्रांत, लग्नाऽभावः)

(५५) १५ शनि मघायां रात्री ल.७,८,९, ११ रेखा ८।ऽ।।।।।ऽ।। ता.20.2.27ई .। सिंहे चंद्रः। रात तुला,वृश्चिक,धनु १०.२७ से ५.६ बजे। कुंभ ६.५२ से ७.१२ बजे उष प्रशस्तः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(कुंभेसूर्य,कर्कउच्चस्थ गुरु)

(५६) १ सूर्य मघायां प्रातः ल.११ रेखा ८।।ऽ।।।।ऽ।। दिवा ल.१ रेखा ७।।ऽ।।ऽ।ऽ।। ता.21.2.27ई.। सिंहे चंद्रः।प्रातः कुंभ ७.१३ से ८.१७ बजे। मेष ९.४६ से ११.२३ बजे।

(५७) २ चंद्र उफायां दिवा ल.३ रेखा ८ऽ।।ऽ।।।।। सिंहे चंद्रः। अग्रे गोधूलि ल.५अं.२उप.,रात्री ल.७,८, ९ रेखा ९ऽ।।।।।।।।। कन्या चंद्रः। ता.22.2.27ई.। दिने मिथुन १.१७ से ३.२६बजे। सायं गोधूलि सिंह ६.०से८.३ व तुला,वृश्चिक,धनु १०.१९से४.५८बजे

(५८) ५ गुरु स्वात्यां रात्री ल.८अं.१६उप., ल.१० रेखा ७।।।ऽ।।ऽऽ। ता.25.2.2027ई.। तुले चंदः। रात्री वृश्चिक १.४३ से २.४३ बजे। मकर ४.४८ से ६.३२ बजे।(पूर्व रे.६ ।।।ऽ।।।ऽऽऽ अल्पः।)

(५९) ७ शनि अनुराधायां ऽगोधूलि ल.५ रेखा ८ऽ।।।।।ऽ।।। रात्री ल.६अं.११ उप. रात्री ल.७ रेखा९ऽ।।।।।।।।। ता.27.2.2027ई.। वृश्चिक चंद्रः। सायं ऽगोधूलि सिंह ५.३० से ७.४४ बजे। रात कन्या ८.३० से १०.०बजे।तुला १०.० से १२.१७ बजे।

(६०) ८ सूर्य अनुराधायां प्रातः ल.११ रेखा ९ऽ।।।।।।।।। दिवा ल.१२,२ रेखा ८ऽ।।।।ऽ।।।।ता.28.2.2027ई.।वृश्चिके चंद्रः। प्रातः कुंभ ७.५ से ७.५१ बजे। मीन ७.५२ से ९.१९ बजे। वृषभ १०.५८ से १२.५४ बजे।

(६१) ९ चंद्र मूले ऽगोधूलि ल.५अं.१३ उप., रात्री ल.६,७,८अं.१०या. रेखा८।।।।।।ऽऽ।। रात्री ल.८ अं.१०उप.रेखा९।।।।।।।ऽ।। ता.1.3.2027ई.। धनु चंद्रः।सायं ऽगोधूलि ६.१५ से ७.३७ बजे।रात्री कन्या तुला वृश्चिक ७.३८ से १२.५० बजे। अग्रे रे.९ वृश्चिक १२.५१ से २.२७ बजे तक।

(६२) १० मंगल मूले दिवा ल.१२,१ रेखा ७।।।।।ऽऽऽ।।ता.2.3.27 ई.।धनु चंद्रः। सुबह मीन,मेष ७.४४ से १०.४९ बजे।(अग्रे भद्रा,व्यतिपात)

(६३) ११ बुध उषायां रात्री ल.१०अं.२८ या.रेखा ९।ऽ।।।।।।।।ता.3.3.27ई.।धनु चंद्रः। रात ४.४५ से ५.४५ बजे।(अग्रे लग्नाऽभावः)

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(कुंभेसूर्य,कर्कउच्चस्थगुरु)

(६४) १ मंगल उभायां रात्री ल.७,८,१० रेखा ८।।ऽ।।ऽ।।।।ता.9.3.2027ई.।मीने चंद्रः। रात तुला वृश्चिक ९.२१ से १.५५ बजे। मकर ४.१ से ५.४५बजे।उषः प्रशस्तः।

(६५) २ बुध रेवत्यां दिवा ल.२ रात्रौ ल. ६,८,६ रेखा १० ।।।।।।।।।। ता.10.3. 2027ई.।मीने चंद्रः।दिने वृषभ १०.१८ से १२.१० बजे।रात कन्या ७.२ से ६. १६ बजे। रात वृश्चिक धनु ११.३५ से ३.५६ बजे। (प्रातः उभा ल.११ रे. ६।।ऽ।।।।।।)

(६६) ३ गुरु रेवत्यां प्रातः ल.११ रेखा ६।।।।।ऽ।।।। ता.11.3.27ई.। मीने चंद्रः।प्रातः कुंभ ६.५६ से ७.७ बजे।

(६७) ६ सूर्य रोहिण्यां प्रातः ल.१२अं. ६ उप.ल.१,२ रेखा ८।।।।।ऽऽ।।। ऽगोधूलि ल.५ रात्रौ ल.६,८,१० रेखा ६।।।।।ऽ।।।।मृगे रात्रौ ल.११ अं.११ या. रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। ता.14.3.27 ई.।वृषे चंद्रः।प्रातः मीन,मेष,वृष ७.३५ से ११.५४ बजे।सायं ऽगोधूलि सिंह ४. २७ से ६.४५ बजे।रात कन्या ६.४६ से ६.० बजे। रात वृश्चिक ११.१६ से १.३५ बजे।मकर ३.४१ से ५.२५बजे।

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

अशुद्धःविवाह मुहूर्ताश्चः

वैशाखकृष्णपक्षः

(१) १३ बुध मृत्युबांणः।

(२) १४ गुरु मृत्युबांणः,वैधृत।

वैशाखशुक्लपक्षः

(३) ११ चंद्र उफायां रे.५ऽ।।ऽ।ऽऽ।ऽ।

(४) १४ गुरु स्वात्यां भद्राः।

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(५) ३ चंद्र अनु.मृत्युबांण

(६) ११ बुध मृत्युबांणः।

ज्येष्ठअधिकमलमास

(प्र.ज्येष्ठ कृ.30 शनि ता.16.5.26 ई.।द्वि. ज्येष्ठ कृ.30 चंद्र ता.15.6.26ई.तक।)

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(७) ७ सूर्य उफा.व्यतिपात,भद्राः।

(८) १२ शुक्र अनु.मृत्युबांणः।

(९) १४ सूर्य मूले भद्राः।

आषाढ़कृष्णपक्षः

(१०) २ गुरु उषायां वैधृत

सिंहस्थ गुरौ गंगा उत्तरे, गोदावरी दक्षिण त्याज्यः।

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(११) ७ चंद्र मघायां भद्रा,वैधृत।

(१२) ८ मंगल मघायां वैधृत

(१३) ६ बुध ऊफायां रे.५ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।रेखा अल्पः

(१४) १३ सूर्य स्वात मृत्युबांणः,भद्राः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(१५) १ बुध मूल ज्वालामुखी त्याज्यः

अग्रे धनुऽर्क मलमासः त्याज्यः

पौषशुक्लपक्षः

(१६) ११ चंद्र रोहिण्यां रे.६ऽ।।।ऽ।।ऽऽरेखा अल्पः।

माघकृष्णपक्षः

(१७) ३ चंद्र उफायां लग्नाऽभावः

(१८) १२ बुध मृत्युबांणः दग्धाः।

माघशुक्लपक्षः

(१९) ८ सूर्य रोहिण्यां मृत्युबांण,ज्वाला

(२०) ९ चंद्र रोहिण्यां वैधृत,मृत्युबांण ज्वालामुखी त्याज्यः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(२१) ३ मंगल उफा,हस्त,मृत्युबांण, भद्रा।

(२२) ४ बुध हस्त मुत्युबांण,नक्षत्रांत, दग्धा।

(२३) ६ शुक्र स्वात्यां रे.६।।ऽ।ऽ।ऽऽ। रेखा अल्पः।

(२४) ११ गुरु उषायां मृत्युबांणः

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(२५) ७ चंद्र मृगे होलाष्टक,भद्राः

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

यज्ञोपवीत मुहूर्ताः

उत्तरायणेप्रशस्तः

चैत्रशुक्लपक्षः(मिथुनेगुरु)

(मीनाऽर्कअतिप्रशस्तः)

(१) २ शुक्र रेवती ल.२,३अभि.

(२)८ गुरु आद्रा ल.२,३ऋग्

(३) ९ शुक्र पुन.ल.२,३अभि.

वैशाखकृष्णपक्षः(मिथुनेगुरु)

(४) १ गुरु हस्त ल.२,३,४अभि.

(५) ४ चंद्र अनु.ल.२,३,४अभि.

(६) ६ बुध मूल ल.१,३अभि.ऋग्

(७)७ गुरु पूफा.ल.१,३अभि.ऋग्

(८) ८ शुक्र उफा.ल.२,३अभि.।

वैशाखशुक्लपक्षः(मिथुनेगुरु)

(९) ३ चंद्र रोहिणी ल.२,३,४अभि.

(१०) ६ बुध आद्रा ल.२,३,४अभि. ऋग्

(११) ७ गुरु पुन.ल.२,३,४अभि.

(१२) ८ शुक्र पुक्ष.ल.४ अभि.

(१३) १३ बुध हस्त ल.२,३,४अभि.

(१४) १४ गुरु चित्रा ल.२,३,४अभि.

(१५) १५ शुक्र स्वात ल.४,६अभि.

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः(मिथुनेगुरु)

(१६) ५ बुध्न मूल ल.३,४ अभि.ऋग्

(१७) ५ गुरु पूषा.ल.३,४ अभि.ऋग्

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः(कर्कगुरु)

(१८) ४ गुरु पुक्ष ल.३,४ भद्रा पूर्ण

(१९) ५ शुक्र श्लेषा ल.३,४ऋग्

(अग्रे दक्षिणायने त्याज्यः)

नोट-अग्रेउत्तरायणेसिंहस्थगुरु गंगाकेउत्तरवगोदावरीकेदक्षिणेग्राह्य

पौषशुक्लपक्षः(सिंहेगुरु)

(२०) १३ बुध मृगे+आद्रा २,१अभि.

(२१) १५ शुक्र पुन+पुक्ष ल.१२,१,२ अभि.

माघकृष्णपक्षः(सिंहेगुरु)

(भागीरथ्याःउत्तरे गौतम्या दक्षिणे ग्राह्य)

(२२) ४ मंगल उफा.ल.१२,१,२ अभि.शाम

(२३) ५ बुध हस्त ल.१२,१,२अभि.

(२४) ७ शुक्र स्वात ल.११,१,२अभि

माघशुक्लपक्षः(कर्कगुरु)

(२५) ४ बुध उभा.ल.११(अग्रे भद्राः)
(२६)५गु.रेवती ल.११,१२(अग्रे मृत्यु)
(२७) ६ शुक्र अश्वनी ल.२,३
(२८) १२ गुरु पुन.ल.१२,१,२,३ अभि.

फाल्गुनकृष्णपक्ष(कर्कगुरु)

(२९) २ चंद्र उफा.१,२,३अभि.
(३०) ४ बुध चित्रा ल.२,३अभि.
(३१) ५ गुरु चि.+स्वा.ल.१,२,३अभि.
(३२) ६ शुक्र स्वा.ल.१,२अभि.
(३३) १२ शुक्र श्रव.ल.१,२अभि.

फाल्गुनशुक्लपक्षः(कर्कगुरु)

(३४) २ बुध रेवती ल.१,२ अभि.
(३५) ३ गुरु अश्व.ल.१,२अभि.
(३६) ६ सूर्य रोहि.ल.१,२अभि.

अग्रेहोलाष्टक

चैत्र कृष्णपक्षः(कर्कगुरु)

(३७) २ बुध चित्रा ल.१,३ अभि.
(३८) ९ बुध उषा.ल.१,३ अभि.
(३९) १० गुरु उषा.ल.१२,१अग्रे भद्राः

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्ताः

उत्तरायणेप्रशस्तः

वैशाखशुक्लपक्षः

(१)६ बुध आद्रा ल.१,२,३,४अभि.
(२) ७ गुरु पुन.ल.१,२,३,४अभि.
(३) ८ शुक्र पुक्ष.ल.४अभि.।
(४) १३ बुध हस्त ल.२,३,५पुत्रसुखद
(५) १४ गुरु चित्रा ल.२,३,४अभि.

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(६) ८ सूर्य धने.ल.२,३,४अभि.
(७) ९ चंद्र शत्तभिषा ल.२,३,४अभि.

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(८) ४ गुरु पुक्ष ल.३,४ पुत्र धनं (कलशाऽभावः)

(दक्षिणायनेजीर्णनिर्मितगृहप्रवेशः)

(९) ७ सूर्य पूफा.ल.४,६अभि.
(१०) १० बुध चित्रा ल.३,४
(११) ११ गुरु स्वात.ल.२,३ पुत्रधनं

आषाढ़ कृष्णपक्षः

(१२) १० गुरु अ.+भर. ल.४,५पुत्रधनं
(१३) १३ सूर्य मृग.ल.४,५,६अभि.

अग्रेगुरुअस्त श्रा.शु.2शुक्र या.

श्रावणशुक्लपक्षः

(शिवउपासकानांविशेष)

(१४) ८ गुरु अनु. ल.७,८,१० अभि. पुत्र धनं
(१५) ११ सूर्य मूल ल.५,६,७,१०अभि. वास्तु
(१६)१२ चंद्र पूषा.ल.५,६,७,१०अभि.
(१७) १३ बुध श्रव.ल.४,५,१०

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(लोकमतेनभरियाभादवाग्राह्य)

(शिवभक्तानांग्राह्य)

(१८) ६गुरु अनु.ल.६,७,८,९अभि. पुत्रधनं
(१९) १० चंद्र उषा ल.६,७,८,९अभि.
(२०) १२ बुध श्र.+ध.ल.६,७,८,१० पुत्रसुखं
(२१)१३गु.धने+श.ल.७,८,१० पुत्रधनं
(२२) १४ शुक्र शत्त ल.६,७धन धान्यदः

नोट-अग्रे श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(कुलदेवीउपासकानांग्राह्यः)

(२३) ६ शुक्र मूल ल.५,६ वास्तु धन धान्यदः(अग्रे मृत्युबांण)

नोट-अग्रे शुक्रास्तःआश्विन शु.7 शनि से कार्तिक कृ.3 बुधयावत्

कार्तिककृष्णपक्षः(स्कन्दपु.)

(मासानांकार्तिकःश्रेष्ठ)

(लोकमतेनदीपोत्सवनतूनगृहेशुभ)

सिंहस्थ गुरु- कलिंग,गौड़,गुर्जरे व गंगा गोदावरी मध्य भागे त्याज्यः। गंगा के उत्तर,गोदावरी(गोमती)दक्षिणेग्राह्यः।

(२४)८चंद्र पुक्ष+श्ले.ल.६,७,१० अभि
(२५) १० बुध पू.फा.ल.११,१२,१
(२६) १४ सूर्य स्वात ल.९,१०अभि. दीपोत्सव

कार्तिकशुक्लपक्षंः

(२७) ७ चंद्र श्रवण ल.८,९,१०अभि.
(२८) १० गुरु पू.भा.ल.८,९,१०अभि.
(२९) ११ शुक्र उभा.ल.८,९ धन धान्यदः

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(मासानांमार्गशीर्षोहं)

(३०) ९ बुध पू.फा.+उ.फा.ल.८,९,१
(३१) १० गुरु उ.फा.+ह.ल.८,९अभि.
(३२) ११ शुक्र ह.+चित्रा ल.८,९,११ अभि. धन धान्यदः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(३३) ५ चंद्र धने.ल.८,९,११अभि.

अग्रेधनेऽर्कमलमास

पौषशुक्लपक्षः(उत्तरायणे)

(३४) १३ बुध मृ.+आद्रा ल.१०,११,१२, २
(३५)१५शु.पुन.+पु.ल.१०,१२,१अभि

माघकृष्णपक्षः

(दृगपंचांगेकर्कगुरु)

(३६) ९ सूर्य अनु. ल.११,१२,२

माघशुक्लपक्षः(कर्कगुरु)

(३७) ६ शुक्र अश्व.ल.१,२,३अभि.
(३८) ११ बुध आद्रा ल.२,३ भद्रोपरांत
(३९) १२ गुरु पुन. ल.१२,१,२,३ अभि. पुत्रधनं

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(४०) १२ शुक्र श्रव.ल.१२,१,२अभि.

फाल्गुन शुक्ल पक्षः

(४१) ६ रवि रोहि.ल.१२,१,२अभि.

अग्रेहोलाष्टक,मीनाऽर्कः

नूतन गृह निमार्ण मुहूर्ताः

वैशाखशुक्लपक्षः

(मेषसूर्यशुभंभवेत्)

(१) ८ शुक्र पुक्ष ल.४अभि.(भद्रा मृ.बां. त्याज्यः)
(२) १० सूर्य मघा ल.२,३,४अभि.
(३) ११ चंद्रः पू.फा.ल.१ अग्रे भद्राः

(४) १३ बुध हस्त ल.२,३,४अभि. पुत्र सुखद
(५) १४ गुरु चित्रा ल.२,३,४अभि.
(६) १५ शुक्र स्वात ल.३,४ अभि.

प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः

(७) २ सूर्य अनु.ल.२,३,४अभि.
(८) ५ बुध मूल ल.१,३

नोट-अग्रे अधिक मलमास, मिथुनेऽर्कः मरणं ध्रुवं, आर्द्रासूर्ये भूमि रजस्वला, गुरुअस्त

श्रावणशुक्लपक्षः

सिंहे सूर्य भृत्यविवर्धनम्

(९) ८ गुरु अनु.ल.७अं.५उप.ल. १० पुत्रधनं
(१०) १३ बुध श्रवण ल.४,५,७
(११) १४ गुरु धने.ल.४,५पुत्रधनं अग्रेभद्रा

भाद्रपद कृष्णपक्षः

(१२) २ सूर्य उ.भा.ल.५,७,६

अग्रेकन्यासूर्येरोगं, श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षःशुक्रास्तत्याज्यः

कार्तिक कृष्णपक्षः

(तुलासूर्येसौख्यं)

नोट-सिंहस्थसूर्ये गंगा उत्तरे गोदावरी दक्षिणेग्राह्यः।सिंहस्थगुरुकलिंगगौड़, गुर्जरेवगंगागोदावरीमध्यत्याज्यः।

(१३)४गुरु रोहि.ल.८अं.२उप.ल.६

कार्तिकशुक्लपक्षः

(वृश्चिकसूर्ये धनविवर्धनम्)

(१४)७ चंद्र श्रवण ल.८,९,१०,१
(१५) १० गुरु पू.भा.ल.८,९,१
(१६)११शुक्र उ.भा.ल.८,९धनधान्य

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः

(१७) १ बुध रोहि.ल.८,९,१२,१
(१८) २ गुरु मृग.ल.८,९,११ अभि. १२,१

नोट-अग्रे धनुसंक्रांतिमलमास

पौषशुक्लपक्षः

(मकरेसूर्य धनागमं)

(सिंहस्थगुरुग्राह्यक्षैत्रेशुभ)

(१९) १३ बुध मृगे.ल.११,१२,२
(२०) १५ शुक्र पुन.+पुक्ष ल.१२, १,२ अभि.

माघकृष्णपक्षः

(दृक्पंचांगेकर्केगुरु)

(२१) २ सूर्य मघा ल.११,१ अभि.२

माघशुक्लपक्षः(कर्कगुरु)

(कुंभेसूर्यरत्नलाभः)

(२२) १२ गुरु पुन.+पुक्ष.ल.१२,१, २ अभि. ३,४ पुत्रधनं

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(कुंभेसूर्यरत्नलाभ)

(२३) २ चंद्रः पू.फा.+उ.फा.१,२ अभि.३
(२४) ४ बुध ह.+चि.ल.१,३
(२५) ५ गुरु चित्रा ल.११,१२ पुत्रधनं

फाल्गुनशुक्लपक्षेऽभाव मीनाऽर्कमलमासः

दैवप्रतिष्ठामुहूर्ताः

उत्तरायणेसर्वदेवानां

चैत्रशुक्लपक्षः

(वासंतनवरात्रै देवीप्रतिष्ठाः)

(१) १ गुरु उ.भा.ल.१,२,३अभि.
(२) २ शुक्र रेवती ल.१२,१,२,३ धन धान्यदः।
(३) ८ गुरु पुन. ल.६
(४) ९ शुक्र पुन.+पुक्ष. ल.१२,१,२ ,३ अभि. धन धान्यदः।

वैशाखशुक्लपक्षः

(५) ३ चंद्र रोहिणी ल.१,२,३,४अभि
(६) ६ बुध आद्रा ल.१,२,३,४ अभि. शिव
(७) ७ गुरु पुन. ल.१,२,३,४ अभि. गंगा
(८) ८ शुक्र पुक्ष.ल.४अभि.
(९) १३ बुध हस्त ल.२,३,४नृसिंह
(१०) १५ शुक्र स्वात ल.१,२,४ अभि. कूर्म ,बुद्धः

प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः

(११) ५ बुध मूल ल.१,२,३,४ अभि. देवी
(१२) ६ शुक्र उ.षा.ल.१,२अग्रे भद्रा

अग्रेअधिकमलमास

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(१३) ४ गुरु पुक्षः ल.३,४अग्रे भद्रा

दक्षिणायनेउग्रदेवानां

(१४) १० बुध चित्रा ल.३,४,८

आषाढ़ कृष्णपक्षः

(१५) १ बुध उ.भा.ल.४,५
(१६) ३ शुक्र ध.ल.६अभि.८

अग्रे गुरु अस्त आषाढ़ शु.१ से श्रा. शु.२ तक।

श्रावणशुक्लपक्षः

(शिवशिवांशदेवानांग्राह्य)

(१७) ५चंद्र चित्रा ल.५,७,९,१०नाग
(१८) ८ गुरु अनु.ल.९,१०पुत्रधनदः
(१९) १३ बुध श्रवण ल.७,९,१०
(२०) १४ गुरु धने.ल.४,५पुत्रधनदः

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(शिवशिवांशदेवानांग्राह्य)

(२१) ३ चंद्र चित्रा ल.७,८,९,१० अभि.
(२२) ६ गुरु अनु. ल.७,८,९,१० अभि.पुत्र धनदः सूर्यदेव।
(२३) १० चंद्र उषा ल.७,८,९,१० दशावतार।
(२४) १२ बुध श्र.+ध.ल.७,८,१० वामन पुत्र सुखदः
(२५) १३ गुरु ध.+श.ल.७,८,९, १० अभि.पुत्रधनं
(२६) १४ शुक्र शत्त ल.७ अनंत धन धान्यदः

अग्रेश्राद्धःपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(देवीदैव्यांशः,शारदीयनवरात्रि)

(२७) २ चंद्र स्वात ल.६,७,८,९

अभि.१०
(२८) ४ बुध अनु.ल.६,७ अग्रे भद्रा:
नोट-अग्रे शुक्रास्त प.आश्विन शु.7 शनिसे कार्तिक कृ.3 बुध यावत् सिंहस्थ गुरुगंगा उत्तरे, गोदावरी

कार्तिकशुक्लपक्ष(दक्षिणेग्राह्यः)

(२९) ३ गुरु मूल ल.१

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(३०) १ बुध रोहि.ल.८,९,१

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(३१) १ गुरु मूल ल.११,१२ अभि.।
(३२) ५ चंद्र धने. ल.९, ११, १२ अभि. १नाग

अग्रे धनेऽर्कमलमास

पौषशुक्लपक्षः

(मकरसूर्य उत्तरायणे सर्वदेवानां)

(३३) १३ बुध मृग.ल.१०,११
(३४) १५ शुक्र पुक्ष ल.१२,१अभि.२ शाकंभरी

माघकृष्णपक्षः

(३५) ५ बुध हस्त ल.१२,२

माघशुक्लपक्षः

(गुप्तनवरात्र, कर्क गुरु सर्वत्र शुभ)

(३६) ४ बुध उभा.ल.१०,११
(३७)५गुरु रेव. ल.९,१०,११पुत्रधनं
(३८) १२ गुरु पुन.+पुक्ष ल.१२,१, २,३,४ शाकंभरी

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(३९) ५ गुरु चित्रा+स्वा.ल.१,२
अभि. ४ पुत्र धनद
(४०)६शुक्र स्वा.ल.११,१,२अभि.४

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(४१) ३ गुरु रे.+अश्व. ल.११,१,२ अभि.४ पुत्र धनदः

अग्रेहोलाष्टक,
मीनाऽर्कमलमासः

त्रिपिण्डी(पितृकर्म)मुहूर्ताः

उत्तरायणेप्रशस्त

वैशाखशुक्लपक्षः

(१) ३ चंद्र रोहिणी
(२) ६ बुध आद्रा
(३) ७ गुरु पुन.
(४) १० सूर्य मघा पितृस्थापना
(५) १३ बुध हस्त पुत्र सुखद
(६) १४ गुरु चित्रा

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(७) ५ बुध मूल

नोट-अग्रे ज्येष्ठ अधिकमासः

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्ष

(८) ४ गुरु पुक्ष पुत्र धनं (भद्रापूर्व)

दक्षिणायनेऽपिग्राह्य

(९) १० बुध चित्रा

आषाढ़ कृष्णपक्षः

(१०) १० गुरु अश्वनी पुत्रधनं
(११) १३ सूर्य मृग

(अग्रेगुरुअस्तः)

श्रावणशुक्लपक्षः

(१२) ८ गुरु अनु.पुत्रधनं
(१३) १३ बुध श्रवण

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(१४) १३ बुध श्लेषा पुत्र सुखद
(१५) १४ गुरु मघा पुत्रधनं

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(१६) २ सूर्य हस्त
(१७) ३ चंद्र चित्रा
(१८) १२ बुध श्र.पुत्र सुखद
(१९) १३ गुरु धने.पुत्र धनं

आश्विनकृष्णपक्षः

नोट-महालय श्राद्ध पक्ष में पितृ तिथि को पितृशांति श्राद्ध करें, तारीख में नहीं

आश्विनशुक्लपक्षः

(२०) २ चंद्र स्वात
नोट-पूर्णिमा से पितृशांति हेतु एक मास तक आकाशदीपदान रखें।

अग्रेशुक्रास्तःत्याज्यः

कार्तिक कृष्णपक्षः

(सिंहस्थे पितृकर्म पुण्यदःनासिक कुंभ में विशेषपुण्यदः

(२१) ४ गुरु रो.+मृग.
(२२) ७ सूर्य पुन.+पुक्ष
(२३) ८ चंद्र पुक्ष.+श्लेषा
(२४)१२शु.धनतेरस यमाय दीपदान
(२५)१३ शनि नरकचौदस दीपदानं
(२६) १४ सूर्य दीपावली दीपदान ब्रह्ममुहूर्त दीपक श्राद्ध करें।

नोट- तुला से वृश्चिक संक्रांति तक पितृ शांति व पितृ प्रसन्नार्थ घर में मंदिर में दीपमालिका जलाशय पर दीपदान करें।

कार्तिकशुक्लपक्षः

(२७) ७ चंद्र श्रावण

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(२८) १ बुध रोहिणी
(२९) २ गुरु मृग.

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(३०) १ गुरु मूल

अग्रे धनेऽर्कमलमास

पौषशुक्ला(मकरेऽर्क)

(३१) १३ बुध मृग+आद्रा
(३२) १४ गुरु आद्रा +पुन
(३३) १५ शुक्र पुक्ष माघ स्नान

माघकृष्णपक्षः

(३४) ५ बुध हस्त

माघशुक्लपक्षः

(३५) १२ गुरु पुन.पुत्र धनद

फाल्गुन कृष्ण पक्षः

(३६) १ सूर्य मघा
(३७) ४ बुध चित्रा
(३८) ५ गुरु चि.स्वा.पुत्रधनद

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(३९) ३ गुरु अश्व.पुत्रधनद
(४०) ६ सूर्य रोहिणी

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

गृह व मंदिर छिबणा पाट मुहूर्तः

(तलघट,छिब्बणा,पाट,भट्ट्,कुंभ,ध्वजा,ईडा,आमलचार,शुक्लाक आदि रखने का मुहूर्त)

मीनाऽर्कमलमास

वैशाखशुक्लपक्षः

(उभायां भौमपुत्रसुखद)

(१) २ सूर्य भ.कृ.ल.२,३,४अभि.
(२) ३ चंद्र रोहि.ल.२,३,४अभि.
(३) ६ बुध आद्रा ल.२,३
(४) ७ गुरु पुन.ल.२,३,४अभि.
(५) ८ शुक्र पुक्ष.ल.४ अभि.
(६) १० सूर्य मघा ल.२,३,४अभि.

प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः

(रेवत्या भौमसौख्यप्रद)

(७) ५ बुध मूल ल.३,४ अभि.
(८) ५ गुरु पू.षा.ल.३,४ अभि.
(९) ८ सूर्य धने.ल.२,३
(१०) ९ चंद्र शत्त ल.२,३

अग्रे अधिक मलमास

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(भरण्यां भौमपुत्रसुखद)

(११) ४ गुरु पुक्ष ल.३,४
(कृत्तिका भौम धन पुत्र सुखद)
(१२) ५ शुक्र श्लेषा,मघा ल.३,४,७
(१३) ७ सूर्य पूफा.,उफा.ल.३,४,७
(१४) १० बुध चि.ल.३,४,७

आषाढ़ कृष्णपक्षः

(१५) ३ शुक्र श्र.,धने.ल.४,६,९
(१६) ५ सूर्य श.,पूभा.ल.३,८,९

(रोहिण्यां भौमसौख्यद)

(१७) १० गुरु अश्व+भ.ल.४,५
(१८) ११ शुक्र भ.,कृ.ल.४,५,८

अग्रे गुरु अस्तप.

श्रावणशुक्लपक्षः

(आद्रा भौम,धनपुत्र सुखं)

(१९) ५ चंद्र चित्रा ल.५,७,१०

भाद्रपद कृष्णपक्षः

(२०) २सूर्य उभा.ल.७,१०
(२१) ६ बुध भर.ल.७,१०

(पुनर्वसु भौम,सौख्यप्रद)

(२२) ७ गुरु कृत्ति.ल.१०
(२३) ८ शुक्र रोहि.ल.५,६,१२

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(पुनर्वसु भौमपुत्र सुखद)

(२४) २ सूर्य हस्त ल.६,७,१०
(२५) ६ गुरु अनु.ल.६,७,९
(२६) १४ शुक्र पूभा.ल.८,१०

अग्रे श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(पुक्षे भौमधनपुत्र सुखद)

(२७) २ चंद्र स्वात ल.६,७,८,१०
(२८) ४ बुध अनु.ल.६,७

अग्रे शुक्रास्त

कार्तिक कृष्णपक्षः

(आश्लेषा भौम, सौख्यद)

(२९) ५ शुक्र मृग.+आद्रा ल.६,७,१
(३०)७सूर्य पुन.+पुक्ष ल.७,८,१०,१

कार्तिकशुक्लपक्षः

(३१) ३ गुरु मूल ल.१

(मघायां भौमसौख्यप्रद)

(३२) १४ चंद्र भरणी ल.९,११,१

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः

(३३) १ बुध रोहिणी ल.८,१
(३४) २ गुरु मृग ल.८,९,११,१
(३५) ११ शुक्र हस्त ल.८,९

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(३६) १ गुरु मूल ल.९,११,१
(३७) २ शुक्र पूषा ल.९,११,१

अग्रे धनेऽर्कमलमासः

पौषशुक्लपक्ष

(पूफायां भौम,सौख्यप्रद)

(३८) ११ चंद्र कृ.ल.१ अभि.
(३९) १३ बुध मृग.,आद्रा ल.२,३
(४०) १५ शुक्र पुक्ष.,श्ले.ल.१,२,३

माघशुक्लपक्षः

(मघायां भौम,सौख्यप्रद)

(४१)११ बुध आद्रा ल.३
(४२) १२ गुरु पुन.ल.१२,१,३

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(४३)५ गुरु चि.,स्वा.ल.१,३
(४४) ६ शुक्र स्वा.वि.ल.१,३

(आश्लेषा भौम, धनपुत्रसुखद)

(४५) ८ सूर्य अनु.ल.१२,२

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(आश्लेषा भौमसौख्यप्रद)

(४६) ३ गुरु अश्व ल.१२,१,२
(४७) ४ शुक्र भर.ल.३,५
(४८) ६ सूर्य रोहि.ल.१२,१,२

अग्रे होलाष्टक

मीनाऽर्कमलमासः

□□

चूला (भट्टी, बॉयलर)स्थापना मुहूर्तः-

(१) **चुल्ली चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ६ पीठ सुख, १० मस्तक मृत्यु, १८बाहु बहुत सुख भोग, २३ उदर गर्भनाश, २५भुज योगद, २७ चरण नाशक।

नक्षत्र- रोहिणी, पुक्ष, उत्तरा ३, अश्व, आद्रा, पूर्वा३ नक्षत्र। इनके अलावा चूली चक्रे चंद्रबली नक्षत्र ग्राह्य। अग्निबाँण, मृत्युबांण आदि अशुभ योग त्याज्यः रवियोग, सिद्धियोगादि शुभ योग ग्राह्यः।

वैशाखशुक्लपक्षः

(मेषस्थसूर्य)

(१) ३ चंद्र रोहिणी ल.२,३,४अभि.
(२) ६ बुध आद्रा ल.२,३,६
(३) ११ चंद्र पूफा. ल.१ अग्रे भद्रा
(४) १३ बुध हस्त ल.२,३ पुत्र सुखद
(५) १४ गुरु चित्रा ल.२,३,४अभि.
(६) १५ शुक्र स्वात ल.२,३,४अभि.

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(७) ५ बुध मूल ल.३,४ अभि.

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(८) ४ गुरु पुक्ष ल.४,६ अभि.पुत्रधनं

आषाढ़कृष्णपक्षः

(९) १ बुध उषा.ल.४
(१०) २ गुरु श्रव.ल.८ पुत्रधनं
(११) १० गुरु अश्व.ल.३,४पुत्रधनं

अग्रेगुरुअस्त

श्रावणशुकलपक्षः

(१२) १२ चंद्र पू.षा.ल.४,५,७,१०
(१३) १४ गुरु धने.ल.४,५पुत्र धनं

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(१४) २ सूर्य हस्त ल.७,६ अभि.१०
(१५) ३ चंद्र चित्रा ल.७,६अभि.१०
(१६) १२ बुध धने.ल.७,८,१० पुत्र सुख
(१७) १३ गुरु धने.+शत्त.ल.७,८,१० पुत्रधनं
(१८)१४ शुक्र श.+पूभा.ल.८,१० धनधान्यदः

अग्रे श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(१९) २ चंद्र स्वाल ल.७,१०

कार्तिककृष्णपक्षः

(शुक्रोदयपूर्वे)

(२०) ५ शुक्र मृग.ल.७
(२१) १० बुध पू.फा.ल.११,१

कार्तिकशुक्लपक्षः

(२२) ३गुरु मूल ल.१२

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(२३) १ बुध रोहि.ल.८,१२,१
(२४) २ गुरु मृग.ल.९,११अभि.१२

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(२५) १ गुरु मूल ल.११,१२अभि.१
(२६) २ शुक्र पूषा.ल.११,१२अभि.१
(२७) ४ सूर्य श्रवण ल.२
(२८) ५ चंद्र धने.ल.६,१२अभि.१,२

अग्रे धनेऽर्कमलमासः

पौषशुक्लपक्षः

(२९) १३ बुध मृग+आदा ल.११,१२,२
(३०) १४ गुरु पुन.ल.३,४
(३१) १५ शुक्र पुक्ष.ल.१ अभि.२

माघशुक्लपक्षः

(कर्कस्थगुरुसर्वत्रग्राह्य)

(३२)४ बुध उभा.ल.६,११,१२
(३३) ५ गुरु रेवती ल.१२,१अभि.पुत्र धनं
(३४)६ शुक्र अश्व ल.३
(३५) १२ गुरु पुन.+पुक्ष ल.१२,१,२ अभि. ३ पुत्रधनं

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(३६) २ चंद्र पू.फा.+उ.फा. ल.१२,१,२ अभि.३
(३७)४ बुध चि.ल.३,५
(३८) ५ गुरु चि.ल.१ पुत्रधनं
(३९) १२ शुक्र श्रवण ल.१२,१,२अभि.

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(४०) २ बुध उभा.रे.ल.१२,१,३
(४१) ३ गुरु रेवती+अश्व ल.१२,१,२ अभि.३ पुत्रधनं

अग्रेमीनाऽर्क

मलमासः □□

पंछी शकुनम्



चौंच दुःख पाखां मरण, कंठामिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछधन, मस्तक पावेराज।।1।।
शुभलक्षण पावा परे, घर में मंगलाचार।
अंगुलिधरों विचारि कर, पंछीशकुन विचार।।2।।

जलाशय निर्माण मुहूर्तः(कुआ,नाड़ी,तालाब,टांका,बोरिंग आदि)–

वैशाखशुक्लपक्षः

(मेषेसूर्य बहुजला लक्ष्मीप्राप्ति)

(१) ३ चंद्र रोहि.ल.२,३,४अभि.अ. बहुजलं

(२) ७ गुरु पुन.ल.२,३,४अभि.नै. शुद्ध जलं

(३) ८ शुक्र पुक्ष.ल.४अभि.नै.शुद्ध जल (भद्रा मृत्युबांण त्याज्यः)

(४) १४गुरु चित्रा ल.२,३,४अभ.उ. स्थिरजल

(५) १५ शुक्र स्वात ल.३,४अभि.उ. स्थिरजल

प्र.ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(६) ५ गुरु पू.षा.ल.१,३,४अभि.म. पूर्णजलं

(७) ६ शुक्र उ.षा.ल.१,२म.पूर्णजल (अग्रेभद्रा)

(८) ८ सूर्य धने.ल.१,२,३वा.अमृत जलं

(९) ९ चंद्र शत्त.ल.१,२,३वा.अमृत जलं

नोट–अग्रे ज्येष्ठ अधिक मलमास

द्वि.ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(मिथुनसूर्ये बहुजलंलक्ष्मीप्राप्ति)

(१०) ४ गुरु पुक्ष.ल.३,४ अ.बहुजलं पुत्रधनं

(११) ७ सूर्य पू.फा.ल.३,४,५अभि.नै. शुद्ध जल (अग्रे व्यतिपात),

(१२) १० बुध चि.ल.३,४प.स्वादु जल

आषाढ़कृष्णपक्षः

(१३) ३ शुक्र श्र.,धने.ल.६ अभि.म. पूर्णजलं

(१४) ५सूर्य शत्त ल.३ म.पूर्ण जलं

(१५) १० गुरु अश्व,ल.३,४वा.अमृत जलं

(१६) १३ सूर्य मृग.ल.३,४,६अभि.वा. अमृत जलं

अग्रे गुरुअस्त

श्रावणशुक्लपक्षः

(१७) १३ बुध श्र.ल.७,१० उ.स्थिरजलं

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(१८) २ सूर्य उ.भा.,ल.६,१० म. पूर्णजल धनधान्य

(१९) ७ गुरु कृ.ल.१० म.पूर्ण जलं पुत्र धनधान्यद

(२०) ८ शुक्र रोहि.ल.५,१०म.पूर्णजलं धनधान्यद

(२१) १३ बुध श्लेषा ल.५,६ वा.अमृत जलं पुत्र सुखद

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(२२) २ सूर्य ह.चि.ल.७,१०अमृत बहुजलं

(२३) ३ चंद्र चि.,स्वा.ल.६,७,१०अ. बहुजलं

(२४) ९ सूर्य पू.षा.ल.६,७,प.स्वादुजलं

(२५) १० चंद्र उ.षा.ल.६,७,१० प. स्वादुजलं

(२६) १३ गुरु शत्त.ल.८,१०उ.स्थिर जल पुत्रधनं

(२७) १४ शुक्र श.,पू.भा.ल.८,१०उ. स्थिर जल धन धान्यदः।

अग्रे श्राद्धपक्षः,शुक्रास्तः

कार्तिककृष्णपक्षः

सिंहस्थ गुरु वर्ज्य क्षैत्रे त्याज्यः

(२८) ५ शुक्र मृग.+आद्रा ल.६,१२म. पूर्णजलं

(२९) ७ रवि पुक्ष ल.८,१२ म.पूर्ण जलं

कार्तिकशुक्लपक्षः

(३०) १० गुरु पू.भा.ल.९म.स्वादुजलं

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(३१) ६ बुध पू.फा.+उ.फा. ल.८,९,१ वा.अमृतजलं

(३२) १० गुरु उफा.ह.ल.८,९ वा अमृत जलं अग्रे भद्रा

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(३३) २ शुक्र पू.षा.ल.११,१ अ.बहुजलं

(३४) ७ बुध श.+पू.भा.ल.९,११,१नै. शुद्धजलं

अग्रे भद्रा,मीनाऽर्कमलमास

पौषशुक्लपक्षः

(३६) १४ गुरु पुन.ल.३ स्थिर जल

माघकृष्णपक्षः

(३७) ५ बुध हस्त ल.१२,२म.पूर्ण

(३८) ७ शुक्र स्वा.ल.११,१ अभि.२म. पूर्णजल

माघशुक्लपक्षः

(कर्के गुरु सर्वक्षैत्रे ग्राह्य)

(३९) ४ बुध उ.भा.११अ.बहुजलं (अग्रेभद्रा)

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(४०) ५ गुरु चि.+स्वा.ल.१,२,४म. पूर्णजल,पुत्र धनदः

(४१) ६ शुक्र स्वा.ल.१म. पूर्ण जलं

(४२) १२ शुक्र श्र.ल.१,२ अभि.वा अमृत जलं

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(४३) २ बुध रेव.ल.१,अ.बहु जलं

(४४) ३ गुरु रे.+अश्व.ल.१२,१,२ अ. बहुजलं पुत्र धनद

अग्रेहोलाष्टक

मीनाऽर्कमलमासः

कृषि कार्ये बीज वपनं (बीज बोनें) का मुहूर्तः-

(१) **राहु चक्र**- राहु भाद्दिनभं ३ कीड़े,३कज्जलता, १२ अधिक अन्न वृद्धिः,४ धान्यऽभावः, ५ ईति भय। (नागकर्ण श्रैष्ठः) (२) **नक्षत्रः**- रो.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,श्लेषा,पूफा.उत्तरा३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मूल.,पूषा.,पूफा. श्रैष्ठः। अश्व.,कृ.,मृ.,पुन,ध.,रे.,मध्यम। (३) **तिथि**- ३,५,७,८,११,१२,१३,१५ श्रैष्ठः। २,४,६,१० मध्यम। **वार**- चंद्र,बुध,गुरु,शुक्र **कालेबीज**- शनि+श.+मध्यान्ह। **लालबीज**- मृग+लग्नस्थ गुरु। **मूंग आदि चित्रान्न** चित्रा+ गुरु+लग्न चंद्र व ल.९,१२। (४) **श्रैष्ठ लग्नः**- वृषभ,मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन (ग्रहवली लग्न विशेषतः)

चैत्र शुक्लपक्षः(राहुशत्तभिषा)

(१)५ चंद्र कृत्तिका ल.१,२,३
(२) ८गुरु आद्रा ल.१,२,३
(३) ९ शुक्र पुन.ल.१,२,३
(४) १० शनि पुक्ष.ल.१,२,३
(५) १३ चंद्र मघा.ल.१,२,३

वैशाख कृष्णपक्षः

(६) १ गुरु हस्त ल.२,३४
(७) २ शनि स्वात ल.१,३,४

वैशाख शुक्लपक्षः

(८) २ सूर्य कृत्ति.ल.२,३,४
(९) ३ चंद्र रोहि.ल.२,३,४
(१०) ६ बुध आद्रा ल.२,३,४
(११) ७ गुरु पुन.ल.२,३,४
(१२) ८ शुक्र पुक्ष.ल.२,३,४
(१३) १० सूर्य मघा.ल.२,३,४
(१४) १३ बुध हस्त ल.२,३,४
(१५) १४ गुरु चित्रा ल.२,३,४

प्र.ज्येष्ठशुक्ला(अधिकमासेऽपि)

(१६) २ चंद्र रोहिणी ल.२,३,४
(१७) ४ बुध पुन.ल.७
(१८) ५ गुरु पुन+पुक्ष ल.२,३,४,६,७
(१९)६शु. पुक्ष.+श्ले.ल.१,३,४,६,७
(२०) ९ सूर्य पू.फा.ल.३,४,६,७
(२१) ९ चंद्र उ.फा. ल.२,३,४,६,७
(२२) १२ गुरु चित्रा ल.३

द्वि.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः

(२२) १३ शनि कृत्ति.ल.३,४

द्वि.ज्येष्ठ शुक्लपक्षः

(२३) ४गुरु पुन.ल.२,३,४
(२४) ५ शुक्र श्ले.ल.२,३,४
(२५) ६ शनि म.+पू.फा.ल.२,४,७,८
(२६)७सू.पू.फा.+उ.फा.ल.२,४,७,८
(२७) ८ चंद्र हस्त ल.८,१०
(२८) १० बुध चित्रा ल.३,४,७

आषाढ़ कृष्णपक्षः

(२९) ११ शुक्र कृत्ति.ल.४,६,१०
(३०)१२ शनि रोहि.ल.४,६,८
(३१) १३ सूर्य मृग.ल.४,६,८

आषाढ़ शुक्लपक्षः(राहुधनेष्ठा)

(३२) २ गुरु श्ले.ल.६,८
(३३) ५ सूर्य उ.फा.ल.८
(३४) ६ चंद्र हस्त ल.४,६,८

श्रावण कृष्णपक्षः

(३५)७ बुध भर.ल.१०
(३६) ८ गुरु भर.ल.४
(३७) ९ शुक्र कृ.+रो.ल.६,७,१०
(३८) १० शनि रो.+कृ.ल.६,७,१०
(३९)१३ चंद्र आद्रा+पुन.ल.६,७,१०

श्रावण शुक्लपक्षः

(४०) १ गुरु मघा ल.४,५,६,७
(४१) २ शुक्र पू.फा.ल.४,५,६,७
(४२)३ शनि उ.फा.ल.४,५,६

भाद्रपद कृष्णपक्षः

(४३) ६ बुध भ.ल.४,५,७,१०
(४४) ७ गुरु कृ.ल.१०
(४५) ८ शुक्र रो.ल.४,५,६,१०
(४६) ९ शनि मृ.ल.४,५,६,७
(४७) १३ बुध श्ले.ल.४,५

भाद्रपद शुक्लपक्षः-

(४८) १ शनि उफा.ह.ल.६,७,१०
(४९) २ सूर्य ह.ल.६,७

अग्रे श्राद्धपक्षः

कार्तिक कृष्णपक्षः

(५०) ४ गुरु रो.+मृ.ल.९,१०,१२
(५१) ५ शुक्र मृ.+आ.ल.७,९,१०,१२
(५२) ६ शनि आ.+पुन.ल.७,९,१२
(५३) ७ सूर्य पु.+पुक्ष ल.७,८,१०,१२
(५४) ८ चंद्र पु.+श्ले. ल.७,८,१०,१२
(५५) १० बुध पू.फा.ल.११,१२

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः

(५६) १ बुध रो.ल.८,१२,१,२
(५७) २ गुरु मृ.ल.८,९,११,१२,१
(५८) ४शनि पुन.ल.९,११,१२,१
(५९) ५ सूर्य पुक्ष ल.७,८
(६०) ९ बुध पू.फा.ल.७,८,९,१
(६१) १० गुरु उ.फा.ल.८,९
(६२) ११ शुक्र ह.ल.८,९

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः

(६३) ११ सूर्य भ.ल.२,३
(६४) १२ चंद्र भ.+कृ.ल.९,११,१

पौष कृष्णपक्षः

(६५) १ गुरु आद्रा ल.९,११,१२,१
(६६) २ शुक्र पुन.ल.९,११,१२,१
(६७) ४ सूर्य श्ले.ल.१,२
(६८) ५ चंद्र मघा ल.९,११,१
(६९) ७ बुध उफा.ल.९,१०,१
(७०) ८ गुरु हस्त ल.९,१०,१

पौष शुक्लपक्षः

(७१) १० सूर्य भ.ल.१२,१,२
(७२) ११ चंद्र कृत्ति.ल.११,१२,१
(७३) १३ बुध मृ.+आद्रा ल.११,१२,२
(७४) १५ शुक्र पुन+पुक्ष.ल.१२,१,२

माघ कृष्णपक्षः

(७५) १ शनि श्ले.ल.१२,२
(७६) २ सूर्य मघा ल.११,१,२
(७७) ५ बुध हस्त ल.१२,२

माघ शुक्लपक्षः

(७८) ७ शनि भ.ल.११,१२,१
(७९) ११ बुध आ.+पु.ल.३,४
(८०) १२ गुरु पुन.+पुक्ष ल.१२,१,३,४

फाल्गुन कृष्णपक्षः

(८१) १ सूर्य म.+पू.फा.ल.१,२,४
(८२) २ चंद्र पू.फा.+उफा.ल.१,२,४

श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त:



।। ऊँ गं गणपतये नमः।। ।। श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।। ।। ह्रीं सरस्वत्यैनमः।।

卐 **सनातन विधि से बहि लेखन:–** प्रथम् स्वस्तिक बनावें, फिर काली स्वरुप कलम दवात् ,लक्ष्मी स्वरूप सिक्के,आभूषण व सरस्वती स्वरूप बहियों की पूजन करें। **बही में लिखें:–** श्री कुबेरजी रो भण्डार भरपूर छैः। बहु लक्ष लाभ , बहु शुभ सुख ,बहु ऋद्धि सिद्धि , श्री महालक्ष्मी रो भण्डार भरपूर छैः।

जैन विधि से बही लेखन:– श्री गौतम स्वामी री ऋद्धिः, शाल भद्रजी री बुद्धिः, केवल्यनाथ जी रो सौभाग्य, बाहुबल जी रो बल,भरत चक्रवर्ती जी री पदवी, कुबेर जी रो भण्डार भरपूर छैः।श्री महावीर जी रो भण्डार भरपूर छैः।।

बही खाते निर्माण व लानें का मुहूर्त:–(१) आश्विन शु.६शुक्र रवियोग ता.१६. १०.२६ई. लाभ ८.८ से ९.३३,९.३४ से१०.५८, शुभ १२.२५ से १.४९ बजे।(२) आश्विन शुक्ला १० बुध रवियोग ता.२१.१०.२६ई.लाभ ६.४२ से ८.७ अमृत ८.८ से ९.३२,शुभ १०.५८ से १२.०० बजे,लाभ ४.३१ से ६.२ बजे तक। (३)कार्तिक कृष्णा ६ शनि पुनर्वसु ता.३१.१०.२६ई. शुभ ८.१४ से ९.३६ लाभ १.४५ से ३.७अमृत ३.८ से ४.३० बजे। (४) कार्तिक कृ.७ रविपुक्ष ता.१.११.२६लाभ ९.३७ से १०.४९ अमृत ११.० से १२.२२ शुभ १. ४५ से ३.७ बजे तक।

धन त्रयोदशी कुबेर पूजन:– कार्तिक कृ.पक्षः१२ शुक्रवार धनतेरस ता.६.११.२६ई. लाभ८.१७से ९.३८अमृत९.३९से ११.०शुभ१२.२३से१.४४सायं वृषभ ६.२४से८.२०बजे।

दीपावली:–कार्तिक कृष्णा १४ रविवार ता.८.११.२०२६ई.लाभ ९.४२ से ११.४ अमृत ११.५ से १२.२७ शुभ १.५० से ३.१२ बजे तक।

रात्रौ श्रीमहालक्ष्मी पूजन:– गोधूलि मेष सायं ४.४१ से ६.१५बजे,वृषभ ६.१६ से ८. १२ बजे, गृहबली मिथुन ८.१३ से १०.२६ सायं शुभ ५.५८ से ७.३५ अमृत ७.३६ से ९. १२सिंह १२.४५ से ३.००लाभ २.५ से ३.४१प्रातःशुभ ५.१९ से ६.५६ बजे तक।

श्री रोकड़ मिलान नये कार्यारंभ:–(१)कार्तिक कृ.३० चंद्र ता.९.११.२६ई.रात्रौ वृश्चिक चंद्र अमृत६.५६से ८.१७शुभ ९.४०से ११.००बजे लाभ ३.५ से ४.२६ अमृत ४. २७ से ५.४९ बजे। (२) कार्तिक शु.२ बुध ता.११.११.२६ई.। लाभ ६.५८ से ८.१९ अमृत ८.२० से ११.१ बजे तक। (३) कार्तिक शुक्ला ५ शनि लाभ पंचमी ता.१४.११.२०२६ई. शुभ ८.२० से ९.४० लाभ १.४३ से ३.३ अमृत ३.४ से ४.२४ तक।

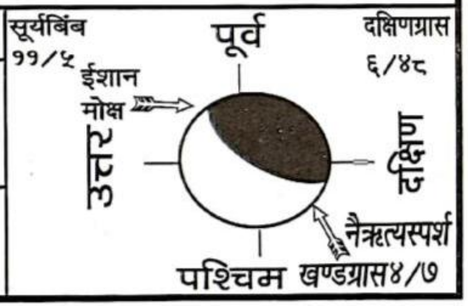
ग्रहण विवरण

(1)ता.12.8.26ई. श्रावण कृष्णा 30 बुध सूर्य ग्रहण विश्व में कहीं नहीं दिखेगा।
(2)ता.28.8.26ई.श्रावण शु.15 शुक्र चंद्रग्रहण विश्व में कहीं नहीं दिखेगा।
(3)ता.11.9.26ई. भाद्रपद कृष्णा 30 शुक्र सूर्यग्रहण विश्व में कहीं नहीं दिखेगा।
(4)ता.22.1.27 ई. पौष शु.15 शुक्रवार चंद्र ग्रहण विश्व में कहीं नहीं दिखेगा।

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

संवत्२०८३ माघ कृष्णा ३० शनिवार ता.६.२.२०२७ई.।

समय	स्पर्श	मध्य	मोक्षः	पर्वः
घटी	३०	३४	३६	६
पल	४७	२६	४८	१
घंटा	१९	२१	२२	२
मिन.	४३	११	७	२४



(1)यह खण्डग्रास सूर्य ग्रहण भारत में दिखायी नहीं देगा।
(2)इसका स्पर्श रात 7.43 बजे मोक्ष रात 10.7 बजे होगा। ग्रहण 2.24 घंटा तक रहेगा।
(3)जहां दिखेगा वहां सूतक 12 घंटे पहिले अर्थात् प्रातः 7.43 को लग जायेगा व मोक्ष रात 10.7 बजे होगा तब सूतक मुक्ति होगी।
(4)यह ग्रहण रात्रि को 7.43 बजे स्पर्श होने से भारत में दिखाई नहीं देगा। भारत में पश्चिमीय देशों में सूर्यास्त 7.43के बाद जहां भी होगा वहां ग्रस्तास्त सूर्य दिखेगा तथा यूरोपीय देशों में जहां सूर्योदय 7.43 के पहिले होगा वहां खण्डग्रास सूर्य ग्रहण दिखेगा।
(5)ग्रहण मकर राशि (धनेष्ठा) पर होने से मकर राशि वालों को घातक। धनु राशि को धनप्राप्ति। वृश्चिक को धनलाभ। तुला कष्ट पीड़ा। कन्या चिंता। सिंह को सुखद। कर्क स्त्री कष्ट। मिथुन मृत्युवत् कष्ट। वृषभ मान हानि। मेष लाभप्रद। मीन लाभप्रद। कुंभ खर्चप्रद है।

आवश्यक मुहूर्ता:–

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षत्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
१.विद्यारंभ	अश्व.,रो ६,पू ३,उ ३,ह ३,मू,अनु,रे	३,५,६,१०, ११,१२	सू.बु.गु. शु.	शुभ	रवियोग:–सूर्याभाद् ४.६.९.१०.१३.२० (अभिजित रहित)
२.वापीकूप तड़ागारंभ	रो.,म.,पुक्ष,म.,ह.,पूषा.,उ ३,अनु.,ध.,शत्त., रेव.,मेष वृष मिथुन के सूर्य में कुँआ खोदे तो जल बहुत लक्ष्मी प्राप्ति। सिंहस्थ सूर्य व कार्तिक मास में आरंभ करें तो थोड़ा जल निकले बाकी के मासों में थोड़ा जल आवे तो विपत्ति आवे।	शुभ चंद्रमा मकर के उत्तरार्द्ध में मीन या कर्क में शुभ	शुभ	२.४.१० ११.१२. लग्न में बुध या गुरु १० वें शुक्र	तड़ाग चक्र:–सुर्यभाद् दिनभं २ पू.जलशोष,४ अ. बहुजल.,६द.जलनाश,८नै.जलशुद्ध, १० प.स्वादुज १२वा.जलशोष १४ उ.स्थिर जल, १६ ई.कुत्सिजल,२१ म.पूर्णजल,२७ वा. अमृतजल। वापी कूप चक्रे:– रोहिणीभाद् दिनभं ३म. शीघ्रजल,६पू. नास्ति जल,९ अ.मध्यमजल,१२ द.जलनाश १५ नै बहुजल, १८ प.अमृतजल, २१ वा. क्षारजल,२४ उ. जल, २७ ई. मध्यम जल (नक्षत्र २७ अभिजित रहित) जलाशये खात:– सूर्य संक्राति १०.११.१२.अग्नि,७.८.९.नैऋ.,४.५.६.वाय.,१.२.३.ईशानेखातदधात्।
३.दुकान करण	अश्व,रो.,मृ.,पुष्य.,उ.३.,ह.,चि.,अनु.,रे. (मित्र ध्रुव क्षिप्र संज्ञा नक्षत्र में)	शुभ रिक्तामंगल त्याज्य	सू.चं.बु. वृ.शु. श.	शुभ चं.शु.ल. में कुंभ त्याज्य	हाटक चक्रे:– सूर्यभाद् दिनभं २आसन सुख, ५ विक्रय नाश, ९ अ.अर्थनाश, १३ नै सुख, १६ मुख महाश्रेष्ठ,२० वाय,चोरभय,२४ई.सर्व–हानि,२८ म.शुभप्रद (नक्षत्र २८ अभिजित सहित) वारफल:– गुरु सूर्ये सर्वकार्य,शुक्रे पूर्णे मनोरथे:। स्थिरता रविपुत्रेण,ऐतेवारा शुभप्रदा:।।१।।
४.गृहारम्भ	रो.,मृ.,पुक्ष.,हस्त.,चि.,स्वा.,उ. ३. ,अनु.,ध., श.,रे., (सूर्य मिथुन कन्या धन मीन वर्जित) **आद्रासूर्ये भूमिरजस्वला** शुक्ला सर्वा प्रशस्ता कृष्णा१२ यावत् बली चंद्र १.४.९.१०.,सुप्ता नींव देने में शुभ:। **वास्तुस्वरुपेणखननं–** भाद्र,अश्वि.कार्तिक मास में उत्तर में कुक्षि। मार्ग,पौष,माघ में पूर्वे कुक्षि फाल्गुन चैत्र वैशाख में दक्षिणे कुक्षि। ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण में पश्चिममें कुक्षि है। कुक्षि के स्थान पर प्रथम खोदनें से स्त्री पुत्र रत्न और धन धान्य की वृद्धि होती है।	१. २. ३. ५. ६. ७. ८. १०. ११.१२. १३.१५.	चं. बु. वृ. शु. श.	शुभ २. ३. ५. ६. ८. ९. ११. १२.	**अष्टमी शनिंवारंण भौम वारेण पंचमी। द्वितीया भुगुवारेण धरा भवति रजस्वला।।१।।** मृत्युबाण:–सूर्य अंश २८.१९.१०.१.शनिवारयुत। अग्निबाण:–सूर्य अंश २०.२.११.२९(मंगलवार)त्याज्य:। **गेहारंभेत्स चक्र:–** सूर्यभाद् ३ अग्निदाह,७ शून्यमसत्, ११ स्थिरता, १४ लक्ष्मीप्राप्ति, १८ लाभ शुभ, २१ स्वामिनाश,२५ निर्धनता,२८ पीड़असत् (नक्षत्र २८ अभिजित सहित) **गेहारेभेखात:**–सूर्यसंक्राति ५.६.७.अग्ने,२.३.४.नैऋ.,११.१२.१.वाय.,८.९.१०.,ईशानेख्रातंदधात। **जमीन सूती:**–सूर्य दिन ५.७.९.१०.१५.२१.२४. सूर्य गतांश,के चिद् सूर्य भाद् दिनभं,के चिद् हिन्दी तारीखें **पुत्रधन प्राप्ति:**–पुक्ष उ.३रो.मृ.श्रृ.श्ले.पू.षा.नक्षत्र पर गुरु हो ओर गुरुवार हो तो गृहारंभ करने से पुत्रधनं प्राप्ति **धनधान्यदायक:**–विषा.अश्व.चि.धन.शत्त.आद्रा में से किसी पर शुक्र हो ओर शुक्रवार हो तो गृहारंभ से धनधान्यदायक **अग्निभय,पुत्र पीड़ा:**–ह.पुक्ष.रे.म.पू.षा.मूलनक्षत्र में मंगल हो और मंगलवार हो तो गृहारंभे अग्निभय,पुत्रपीड़ा **पुत्र सुख:**–रो.अश्व.उ.फा.चि.ह. पर बुध और बुधवार हो तो पुत्र सुख। **राक्षस भूतयुक्त:–** पू. भ.उ.भा.ज्यै. अनु. रे. स्वा. भरणी पर शनि और शनिवार में घर राक्षस भूत युक्त हो
५.द्वारशाखा	रे.,अनु.,पुक्ष.,ज्ये.,ह.,अश्वि.,चि.,स्वा., **तिथि एकादशीश्रेष्ठा: त्रयोदशी व सिद्धिदा:।** **पंचमी धनदा प्रोक्तारिप्सीनाग शुभप्रदा:।।१।।** **प्रतिपश्चन कर्तव्या कृत्वा दु:खमवाप्नुयात्।** **द्वितीया रोगवाग्नेया: चतुर्थी भंगकारिणी।।२।।** **कुलक्षयं तथा षष्ठी: दशमी धन नाशनी।** **विरोधं च अमापूर्णा: द्वारशाषाविरोपणं।।३।।**	नन्दा जया पूर्णा	मंगल शनि वार त्याज्य		**द्वारशाखाचक्र:**–सूर्यभाद्दिनभं ४ शि.श्री प्राप्ति:,१२ उद्वसनं २० शा.सौख्यम्,२३गृहनाशख,२७सौख्यम् **वच्चनिवास:**–सूर्यसंक्राति ६.७.८.पूर्वेच्च,९.१०.११.दक्षिण,१२.१.२.पश्चिम,३.४.५.उत्तरेवच्च सन्मुखवच्चत्याज्य: **त्रिमासिक राहु निवास:**–मार्गशीर्ष पौष माघ में पूर्व,फाल्गुन चैत्र वैशाख में दक्षिण,ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण में पश्चिमे,भाद्रपद आश्विन कार्तिक में उत्तरेराहु,सन्मुखराहु में द्वारशाखात्याज्य: **तिथिभेद से द्वारनिषेध:**–पूर्णिमा से कृष्णा८तिथि तक पूर्वमुख अशुभ,कृष्ण ९से १४ तिथि तक उत्तरमुख अशुभ, आमवस से शुक्ला८तिथि तक पश्चिममुख अशुभ,शुक्ला ९से १४तिथि तक दक्षिणमुख अशुभ **संक्राति से गृहमुख:–** सूर्य संक्राति ४.५.१०.११. पश्चिम धरमुख श्रेष्ठ:, १.२.७.८. उत्तरदक्षिण घरमुख श्रेष्ठ:शेष सूर्यत्याज्य:

♣ आवश्यक मुहूर्ताः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षात्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
६.गृह प्रवेश	रो.मृ.पुक्ष उ.३चि.स्वा.अनु.ध.श.पू.फा.रे. रवित्तरायणश्रेष्ठः। धन मीन रवित्याज्य(पू.भा.उ.भा.ज्ये.अनु.स्वा.भर.शनिवार युक्तः रक्षोभूतयुतगृहम्) **नन्दायां दक्षिण द्वारं भद्रायां पश्चिमामखम्। जयाया मुत्तरं द्वारं पूर्णायां पूर्वतो विशेत्॥**	नंदा जया पूर्णा	चं.बु. वृ.शु. श. (रवि, मंगल त्याज्य:)	शुभ चर लग्न त्याज्य	**सूर्य संक्राति अंशः**—२८,१९.१०.१. (शनिवार) मृत्युवाण त्याज्यः॥ **गृह प्रवेशचक्रः**—सूर्यभार्दिनभं १अग्निदाह,५उद्वसनं,९धनं,१३ लक्ष्मी,१७ वैरं,२१ नाशः,२४स्थिरता,२७स्थिरता। **तिथिः**—१.६.११.में दक्षिणमुद्वार घर में प्रवेश श्रेष्ठः,२.७.१२. में पश्चिममुख घर में प्रवेश श्रेष्ठः। ३.८.१३ में उत्तराभिमुख घर में प्रवेश शुभ,५.१०.१५. में पूर्वाभिमुख घर में प्रवेश शुभः॥ **वामरविः**— सूर्य ८.९.१०.११.१२.वें स्थान में हो तो पूर्वाभिमुख द्वार के घर में शुभ,५.६.७.८.९.में हो तो दक्षिणाभिमुख में,२.३.४.५.६.में पश्चिमाभिमुख ११.१२.१.२.३.में उत्तराभिमुख सूर्य में प्रवेश शुभ
७.वास्तु शांति	रो., अश्व., मृ., पुन., पुक्ष., उ ३., ह., चि., स्वा., अनु., मू., अभि., श्र., ध., श., रे.,	नंदा भद्रा जया पूर्णा	चं. बु. वृ. शु. श.	शुभ	**अग्नि वासः**— शुक्ल प्रतिपदात् तिथि+सूर्या दिवार +१÷४= शेष ०, ३ अग्निवास पृथ्वी पर सुख, १ आकाश प्राणहानि २ पाताल धन हानि कारक। **ग्रहमुखे होमाहुतिः**— सूर्यभाद्दिनभं ३ सूर्यमुखे नेष्ट, ६ बुधे श्रेष्ठ, ९ शुक्रे श्रेष्ठ, १२ शनि नेष्ट, १५ चंद्रे श्रेष्ठ, १८ मंगल नेष्ट, २१ गुरु श्रेष्ठ, २४ राहु नेष्ट, २७ केतु नेष्टः॥
८. जलाशय रामतड़ागप्रतिष्ठा	अश्व.,रो.,मृग.,पुन.,पुक्ष.ह्र.,चि.,स्वा., अनु.,श्र.,ध.,श.,उ.३.,रे उत्तरायणे शुक्ल पक्षः (विष्टव्यतिपात त्याज्यः) अग्रदेवता दक्षिणायने वैशाख, ज्येष्ठ, फाल्गुन चैत्र, माघ में विष्णु के सिवाय अन्य देवताओं की प्रतिष्ठा होती है।	२,३,५,६, ७,८, १०, ११, १२, १३, १५	कुजशनि त्याज्य	शुभ	(१) **सूर्य की प्रतिष्ठा** सिंह लग्न में,**ब्रह्मा** की ११,**विष्णु** ६,**महादेव** ३,**देवी** की द्विस्भाव लग्न में **क्षुद्र देवताओं** की चरलग्न में और स्थिर लग्न में सब देवताओं की प्रतिष्ठा प्रशस्त है। चंद्रादि आठ ग्रहों को पुष्य में गणेश यक्ष सर्प भूत आदि की रेवती में और जिन (बुधदेव) की श्रवण नक्षत्र में स्थापना शुभ है। (२) **विष्णु की प्रतिष्ठा** चैत्र, आश्विन, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ़,पौष में होती है। श्रावण और भाद्रपदमें **लिंग की स्थापना** उत्तम है। माघ आश्विन में **देवी प्रतिष्ठा** सब कामनाओं को देने वाली व श्रेष्ठ है। (३) श्रवण कृतिकादिविशाखा तक तिथि १२ में **विष्णु प्रतिष्ठा शुभ,चतुर्थी में गणेश। नवमी,मूल में देवी,शिव आद्रा में,सूर्य हस्त में शुभ** सभी देवताओं की अपने अपने नक्षत्र में प्रतिष्ठा शुभ व मंगलदायक है।
९.संधि	मूल,आद्रा,अभि.,शत यह कुलाकुल संज्ञा है।	२, ६, १०	बुध	शुभ	इसमें युद्ध की इच्छा करने वाले राजाओं में(व्यक्तियों में)परस्पर संधि होवे। पंच पंचायति में नारदा वास देखें
१०.स्थाई की जय	चि.,वि.,ज्ये.,पू.,षा.,श्र.,पू.,भा,अश्वि,कृति, मृग.,पुक्ष.,मघा.,पू.फा.,नक्षत्र कुल संज्ञा है।	४, १८, १२, १४,	मं. शु.	शुभ	इसमें स्थायी की जय होवे। अर्थात् जिस पर दूसरे नें चढ़ाई की है और अपने स्थान पर जो बैठा है उसीकी विजय हावे
११.यायी की जय	भर.,रो.,पुन.,आश्ले,हस्त.,स्वा.,अनु.,धनि., रेव.,उत्तरा ३., यह अकुल संज्ञा है।	१,३,५,७, ९,११,१३, १५,३०	सू. चं. वृ. शं.	शुभ	इनकी अकुल संज्ञा है। इसमें यायी की विजय होवे। अर्थात् आक्रमणकर्ता की विजय होती है। **नारद वासः— शुक्लादि तिथ्यां गतवासराद्या, नवैर्युक्ता रामहृताव शेषः ।१॥ एकै भवेद्देवपुरी निवासं स नारदो भूमि वशेद्वितीये। पाताल लोकेवशे त्रतीये यत्रस्थितो तत्र भवंतियुद्धं ॥२॥ (पंच पंचायती में नारदवास देखें**
१२.यज्ञोपवीत	अश्व., ह.३, मृग., श्रव., धनि., पुन., पुक्ष., रेव., गर्भ सहित ८ वें वर्ष, ११ वें वर्ष, १२ वें वर्ष शुभ। माद्यादि पांच मास, गुरु व चंद्र शुद्धि आवश्यक है।	१६,११,५ १०,१५,३, ८, १३	मं. वृ. शु. बु.	२, ७, ९, १२ शुभ	**ऋग्वेदीयः**— ह.३,आश्ले,आर्द्रा.,श्र.,पू.३,मूल ऋग्वेदीय,धन मीन,लग्न गुरुवार शुभ है। **यजुर्वेदीयः**— रे,पुन.,री.,पुक्ष.,मृ.,अनु.,उ.३,ह.,वृष.,तुला लग्न शुक्रवार शुभ है। मरणन्च भौमे मंगलवार त्याज्य। **सामवेदीयः**— पुक्ष.,उ.३,र.;ध.,ज्ये.,ह.,अश्व.,मेष.,वृश्चिक लग्न मंगलवार शुभ है। **अथर्वेदीयः**— चि.,पुन.,स्वा.,अनु.,मृ.,ध.,ह.,श्र.,अश्व.,मिथुन,कन्या बुधवार शुभ है।
१३.गर्भाधान	मृग.,रो.,उ.३,ह.,स्वा.,श्रव.,धनि.,शत.,अनु, व्यतिपात, वैधृति त्याज्य, माता पिता का श्राद्ध दिन (मृ., रे., स्वा., अश्व., रो., में शीघ्र गर्भधारण होता है)	शुभ	शुभ (रवि मं. शनि त्याज्य)	शुभ	**मघा स्वाती च रेवत्यै उत्तराषाढ़ा मृगसिरे। स्त्री संगम न कर्तव्यं कर्त्तव्यं च कुलक्षय। रेवती च मघामूलं ज्येष्ठाऽश्लेषा तथैव च।अश्वनी ऋतुकालंच नारीणां वर्जयेत्सदा ॥२॥** रजोदर्शन के बाद चौथी रात के निषेके में अल्पायु पुत्र,पांचवी रात में कन्या, ६ में वंशकर्ता पुत्र, ७ वें में वन्ध्या स्त्री, ८ में पुत्र, ९ वीं में सुन्दर कन्या, १० वीं में प्रभावशाली पुत्र, ११ वीं में कुरुप कन्या, १२ वीं में श्रीमान् पुत्र, १३ वीं में पापिनी कन्या, १४ वीं धर्मात्मा पुत्र, १५ वीं में लक्ष्मीवती कन्या, १६ वीं में धर्मात्मा व सर्वज्ञ पुत्र उत्पन्न होते है। स्वरशास्त्र के अनुसार– डावें पछवाड़े(करवट) शयन कर जिमणा स्वर लेवें।

आवश्यक मुहूर्ताः–

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षात्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
२४. जळ पूजन	श्रवण १,पुन,पुक्ष मृग.,हस्त.,मूल,अनुराधा दिन २१में शुभ (गूरु शुक्र अस्त चैत्र अधिक मास में पूजा नहीं करनी)	शुभ	शुभ	शुभ	नंदायां पुत्र जननी भद्रायां पुत्र नाशनी। जयापूर्णा च संपत्ति रिक्ता संताप कारणी।।१।। शनि आदीते मंगले जो जुहारे जलमाया। ऋषि दुर्वासा इस भेणेपुत्र विहूणी थाय।।२।। नामकरण मूहुर्तः–जन्माशौच के अनतं में ब्राह्मण ११ वें दिन,क्षत्रिय १३वें दिन,वैश्य १६वें दिन,शूद्र १मास में शुद्ध होवे
२५.चौलकर्म झडूला	अश्व.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,ह,चि,स्वा.ज्ये.,श्र., ध.,श.,रे.,वर्ष २,३,५ रवि उत्तरायण	शुभ	शुभ	शुभ	कर्णवेध मुहूर्तः–अश्व,म८, पु २,अनु,अभि,श्र,ध,रे,सूर्य चंद्र चंद्रबल। शुद्ध लग्न विषम वर्ष ६,७,८ में हरिशयन वजर्यम् रिक्ता,अमा,तिथि वर्ज्य। शुक्रवार में श्रेष्ठ।
२६.चूड़ा पहनाना	अश्व.,हस्त चित्रा.,स्वाती.,दिशा.,अन., धनि, रे,(रोह,उ.३पुन.,पुक्ष नैष्टः)चंद्रबल आवश्यक	शुभ	सू. बु. वृ. शु.	शुभ	चुड़ीचक्रः–सूर्यभाद्दिनभं ३ सूर्य नेष्ट, ८ मंगल नेष्ट, ११ शुक्र श्रेष्ठ, १३ राहु नेष्ट, २० बुध श्रैष्ठ, २२ शनि नेष्ट, २३गुरु श्रेष्ठ, २६ चंद्र श्रेष्ठ, २७ केतु नेष्ट।
२७ चूल्हा स्थापन	रो., पुक्ष, उ.३, अश्वि, आद्रा, पूर्वा ३	शुभ	चं.बु.वृ.	शुभ	चुल्ली चक्रः–सूर्यभाद्दिनभं ६पीठ सुख,१० मस्त,मृत्यु १८ बहुसुख भोग,२३ गर्भनाश,२५ भुजभोगद् २७ चरणनाशक।
२८.जैन दीक्षा	मृ.,पुन.,पुक्ष.,अश्व.,अनु.,ह.,श्र.,रे.,रो,श.उ.३,अभि.स्वा, कार्तिक,मार्ग,माघ,फाल्गुन,वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ़मासशुभ	१,२,५,७ ११, १३	सूं.चं.बु. वृ.श.	शुभ	सूर्य संक्राति मेष , वृषभ , मिथुन, मकर, कुंभ, शुभ। ज्येष्ठे ज्येष्ठ मासं त्याज्यः, बाल वृद्धः, गुरुं शुक्र ओर अस्त गुरु में दीक्षा नेष्ट। यमघंट,वज्र,मूशलादि योग त्याज्य।
२९. वाहनखरीदना चौपगा,पशु	अश्व, श्र, ध, पुन, पुक्ष, ह, चि, स्वा, श, रे,मृ , रिक्तातिथित्याज्यः। मघा मरे पूर्वाचौरे,उत्तरा खोडो जाण इभ भणे रे जांषिया चौपगो घर मत आण।।	शुभ	शुभ	शुभ	मृत्युबाण संक्रातिः– अंश २८, १९,१०,१शनि, अंश ८,१७,२६रवि रोगबाण। अंश २०,२,११,२९ मंगलवार में अग्निबाण त्याज्य।। गाय मंगल,भैंस। बुध,मंगल,ऊंठ। शनि,मंगल,घोड़ा रवि,मंगल,शनि,बैल बुध,मंगल, बकरी। भेड़। शुक्र। गधा शुक्रवार नेष्ट। उत्तरात् विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसुः। नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत् पशुन्।।१।।

।। यात्रा प्रवास हेतु श्री गोरखनाथ जी कृत गोरखपतड़ा ।।

पो	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	फलश्रुति	प्रहर१	प्रहर२	प्रहर३	प्रहर४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुख,विवाद का अभाव,यात्रा योग सुखद,सुविधा गति	अर्थसिद्धि	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय, विवाद,मानसिक दुःख,वृथागमन कुयोग कार्य	महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिन्ता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	सिद्धि,अर्थलाभ, विजय,मेल मिलाप सम्पर्क रमसाधना,	अर्थलाभ	राजपद	सूख	विनाश	द्रव्य	दुःख	इष्टप्राप्ति	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	परन्तु प्रतिफल नेष्ट नहीं,मद्यमकार्य योग वस्तु लाभ,	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहित	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	संकट की निवृत्ति, मेल–मिलाप, कार्य सिद्धि चिन्ता,	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	विवाद,मानसिक पतन,वियोग,सफलता न्यून कार्य लाभ,	संकट	क्लेश	मित्र	अर्थप्राप्ति	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	मेल मिलाप सम्पर्क, कार्य साध्ना सिद्ध योग कुयोग,	विलम्ब	अर्थप्राप्ति	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कार्य हानि, विवाद, व्यवहार मिलाप की न्यूनता	०	०	०	०	०	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थ–लाभ,कार्य योग सफलता,यात्रा प्रवास सुखद	अर्थ	बहुभय	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	यात्रा प्रवास योग,किन्तु श्रम साधना विशेष,कार्यें	शीघ्रलाभ	सम्पूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	विलम्ब मानसिक कष्ट,विवाद,भय,परन्तु परिणाम नेष्ट	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लाभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	नहीं सुख–सुविधा,मेल–मिलाप,सार्थक गति,कार्य सुयोग	मरण	अर्थ	सुख	कुशल	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

तीज और तेरस,चौथ और चौदस,पांचम और पूनम,इनका फल एक है। कृष्णा चौदस तथा अमावस का निषेध है।

(1) यात्रा में वर्ज्य नक्षत्र दिशाः– हस्त नक्षत्र में उत्तर दिशा में,चित्रा नक्षत्र में दक्षिण दिशा में रोहिणी नक्षत्र में पूर्व दिशा में,श्रवण नक्षत्र में पश्चिम दिशा में यात्रा करने से मृत्युव्रत घातक है।

(२) यात्रा में वर्ज्य मासानुगत तिथिः– जेठ की १,आषाढ की २,श्रावण ३,भाद्रपद ४,आश्विन ५,कार्तिक ६,मार्ग ७,पौष ८,माघ ९,फाल्गुन १०,चैत्र ११,वैशाख की १२तिथि गोरखपतड़े से यात्रा में वर्जित है।

(३) यात्रा समय के शुभ शकुनः– रवि तांबूल मयंक दर्पण,धोणा चावौ धरणी नंदन। बुध गुड़ दही गुरुवारै,राई चावौ शुक्रवारे। जो शनिवार वडंगा चावै,सकल काम सिद्ध कर घर आवै।।१।।

।। अथ खात(पाया या शिलान्यास)चक्रम्।।

सूर्य	विवाहे	देवालये	गेहारंभे	जलाशये	दिशा
सूर्य	२ ३ ४	१२ १ २	५ ६ ७	१० ११ १२	अग्नि खात
सूर्य	११ १२ १	९ १० ११	२ ३ ४	७ ८ ९	नैऋत्ये खात
सूर्य	८ ९ १०	६ ७ ८	११ १२ १	४ ५ ६	वायव्ये खात
सूर्य	५ ६ ७	३ ४ ५	८ ९ १०	१ २ ३	ईशाने खात

चैत्र शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण ३३७से ३५०तक)

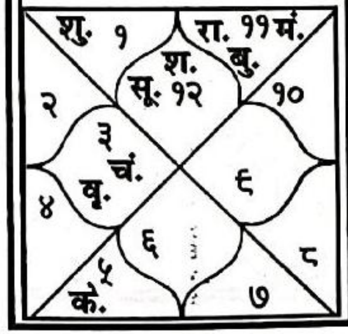
दिनाँक १९मार्च से ०१ अप्रेल २०२६ई.तक। वसन्त ऋतु। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिण/उत्तरगोलेः। (चैत्र शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

गण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	अं.	मा.दि.	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
३३७	१९	छत्रः	१	वृ.	५३	५	उ	५१	३	शु	४४	२५	किं	२४	५०	२६/५५	६/४६	६/४५	५	२९	मीन	११ ४ १४ ४०	५९ ४३
३३८	२०	श्रीवत्सः	२	शु.	४८	४४	रे	४८	१९	ब्र	३८	४	बा	२०	५४	३०/०	४५	४५	६	३०	मेष ४६/१९	११ ५ १४ २१	५९ ४१
३३९	२१	सौम्यः	३	श.	४३	४२	अ	४५	७	ऐं	३१	१०	ते	१६	१३	४	४३	४५	७	१	मेष	११ ६ १४ ०	५९ ३९
३४०	२२	कालः	४	सू.	३८	१२	भ	४१	१५	वै	२३	५१	व	१०	५७	८	४२	४६	८	२	वृषभ ५५/१४	११ ७ १३ ३७	५९ ३७
३४१	२३	सुस्थिरः	५	चं.	३२	१८	कृ	३७	१२	वि	१६	१५	ब	५	१५	१२	४२	४६	९	३	वृषभ	११ ८ १३ १३	५९ ३६
३४२	२४	मातंग	६	मं.	२६	२२	रो	३३	६	प्री	८	३१	तै	२६	२२	१६	४०	४६	१०	४	वृषभ	११ ९ १२ ४६	५९ ३४
३४३	२५	अमृत	७	बु.	२०	३२	मृ	२९	६	आ	०/५१	५३/२६	व	२०	३२	२०	३९	४७	११	५	मिथुन १/७	११ १० १२ १६	५९ ३०
३४४	२६	कांणः	८	वृ.	१५	०	आ	२५	३३	शो	४६	११	ब	१५	०	२४	३८	४८	१२	६	मिथुन	११ ११ ११ ४४	५९ २८
३४५	२७	लुंबक	९	शु.	९	५७	पु	२२	२६	अ	३९	३१	को	९	५७	२८	३६	४८	१३	७	कर्क ९/१५	११ १२ ११ १०	५९ २६
३४६	२८	मैत्रः	१०	श.	५	३४	पु	२०	८	सु	३३	३०	ग	५	३४	३१	३६	४८	१४	८	कर्क	११ १३ १० ३२	५९ २३
३४७	२९	वज्र	११	सू.	२	१	श्ले	१८	५१	धृ	२८	१२	वि	२	१	३५	३५	४९	१५	९	सिंह १९/५१	११ १४ ९ ५२	५९ २१
०	०	०	१२	सू.	५९	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
३४८	३०	ध्वांक्षः	१३	चं.	५८	७	म	१९	१८	शू	२३	४५	कौ	२८	४८	३९	३४	५०	१६	१०	सिंह	११ १५ ९ १२	५९ २०
३४९	३१	धूम्रा	१४	मं.	५७	५९	पू	१९	५	गं	२०	१५	ग	२८	३	४३	३३	५१	१७	११	कन्या ३४/३५	११ १६ ८ २८	५९ १९
३५०	१	प्रवर्धमान	१५	बु.	५९	१०	उ	२१	८	वृ	१७	४५	वि	२८	३५	४७	३२	५१	१८	१२	कन्या	११ १७ ७ ४२	५९ १६

मेषेभानुः४२/३७,रविउत्तरगोलेमहाविषुवदिने दिन-रात,बराबर वासंत A
पंचक४६/१९या चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,
सव्वालमु.१०मीठीईद.,अरुंधतीव्रत,सौभाग्यशयनव्रत,शिवशक्तिपू.,B
भ.१०/५७उप.३६/१२या. B मत्स्यजयन्ती गणगौरी३,मन्वादि,मनोरथ३व्रतं.,
पूभायांभौम १०/२ग.४६/१२ कल्पादि,श्रीपंचमी,नाग५,हयव्रत,डोलोत्सव
अश्वन्यांमेषेशुक्र३४/१ग.७३/३५ पद्मकयोग,स्कन्दषष्ठीव्र.
भ.२०/३२उप.४७/४६या.अशोककलिकाप्राशनं,
भौमोदयपू.२१/५१मार्गीशत्तभिषा३बुध४७/४५ग.६७/३६श्रीदुर्गाष्टमी,भवान्युत्पत्ति, C
श्रीरामनवमीसर्वे. C नवपदओलीजैन,स्वामीनारायणजयं.,अशोकाष्टमी
भ.३३/४७उप., नवरात्रपारणा,विजया१०,कामदा११व्रत स्मार्ता
भ. २/१ या.कामदा११व्रतवैष्णवा,लक्ष्मीकान्तदोलोत्सवहरिदमनोत्सव, D
A नवरात्रारंभघटस्थापनसंवत्सरारंभ, चेटीचंडझूलेलाल जयं.,कल्पादि.
प्रदोष महावीरजयन्तिजैन.नवपदओलीपूर्णजैन,अनंग१३ D शक्रआदित्य१२व्रतं
भ.५७/५९उप., रेवत्यांरवि३१/५४ शिवपूजन, F पूर्णिमापुण्यवैशाखस्नानप्रारंभ
भ.२८/३५या.,पूभायांबुध४३/३७ग.१०३/४,अप्रेल३०दिन,बैंकवार्षिकलेखाबंदी,E
E पूर्णिमाव्रतं,मन्वादि, हनुमानजयं.,संतपीपाजयं,चित्रान्नदानं, F

गोचर ग्रहाः

मंगल,बुध उदय पूर्वे
शनि अस्त पश्चिमे



चैत्र शुक्ला ८ गुरु
गण ३४४ ,इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० २२ १० ५२	१० १३ ७ १८	२ २२ ४१ ५३	० १ ४५ २७	११ ४ ४० ३	१० १२ ३२ ३५	४ १२ ३२ ३५
४६ १२	१५ ५७	४ ५५	७३ ३५	७ ५	३ ११	३ ११
पूभा१	शत२	पुन.१	अश्व१	उभा१	शत२	मघा४
नीर	जल	नीर	पवन	सौम्य	जल	अमृत

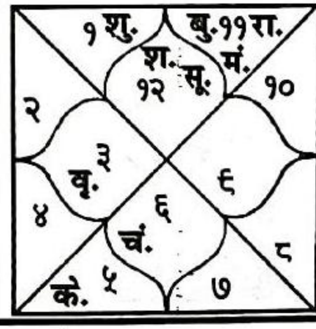
बल बुद्धि बुध पांच सुं,जनता में संतोष। सुख सुभिक्ष हो जगत में,कहीं कहीं उपजे रोष।।१।। शत्तभिष पूर्वाषाढ़ श्लेष रेवती,भरणी ज्येष्ठा जान चंद जे उगमती। छत्रभंग इकमास जगत दुख पावही,होवे राजविना शअन्न महंगा वही।।२।। चार ग्रह युति चैत में,कालसर्प संयोग। सत्ता पलट उत्पात हो,बढ़े विष प्रदूषण रोग।।३।। चैत सुदी जो पूर्णिमा,सोम गुरां बुधवार। घर घर होय बधावणां,निपजे वर्ष अपार।।४।। चमकी भली न चैत की, वूठो भलो न जेठ। रूठो भलो न राजवी,तूठो भलो न सेठ।।५।। देणों भलो न बाप को,बटी भली न एक। पेडो भलो न कोश को,ईश्वर राखे टेक।।६।। पान झड़े भू पर पड़े,वृक्ष नगन हो जाय। तो निश्चय ही जानियें चोखो जमानो आय।।७।। केर बैर पीलूं पके,नीब आम पक जाय। दूध दही रसकस घणों,कार्तिक साख सवाय।।८।।

चैत्र शुक्ला १५ बुध
गण ३५० इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० २६ ४८ ६	१० १९ १० ५९	२ २३ ११ २५	० ६ ७ ३	११ ५ २२ ३६	१० १२ १३ ३०	४ १२ १३ ३०
४६ १२	६७ २६	४ ५५	७३ ३५	७ ५	३ ११	३ ११
पूभा३	शत४	पुन.१	अश्व३	उभा१	शत.२	मघा४
नीर	जल	नीर	पवन	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

मंगल,बुध उदय पूर्वे
शनि अस्त पश्चिमे



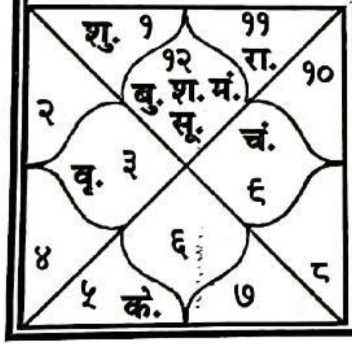
वैशाख कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८३ शालिवाहन शकः१९४७/४८ (लघुगण३५१ से१तक)

दि.२ अप्रेल से १७ अप्रेल २०२६ ई. तक।
वसन्तऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः।
(चैत्र कृष्ण पक्षःगुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १९	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	दि.अं.	मध्यम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३५१	२	राक्षस	१	वृ.	६०	०	ह	२४	२५	ध्रु	१६	१८	बा	३०	२२	३०/५१	६/३१	६/५१	१९	१३	तुला ५६/३६	११ १८ ७ ३५	५९ १४	मार्गीपुनर्वसु२गुरु ४४/३२ग.६/१३
३५२	३	मूसल	१	शु.	१	३५	चि	२८	५३	व्या	१५	४४	कौ	१	३५	५५	२९	५१	२०	१४	तुला	११ १९ ६ ४५	५९ १४	
३५३	४	सिद्धिः	२	श.	५	९	स्वा	३४	१९	ह	१६	२	ग	५	९	५९	२८	५२	२१	१५	तुला	११ २० ५ १२	५९ १०	भ.३७/२३उप.,भरण्यांशुक्र २६/१२ग.७३/२०
३५४	५	उत्पात	३	सू.	९	३७	वि	४०	२७	व	१६	५७	वि	९	३७	३१/३	२७	५३	२२	१६	वृश्चि.२४/५	११ २१ ४ १८	५९ ६	भ.६/३७या.,मीनेभौम ६/१०,बिच्छुड़ा २४/५उप.संकट चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/९ बजे A
३५५	६	मानसः	४	चं.	१४	१६	अ	४६	५४	सि	१८	१५	बा	१४	१६	७	२७	५३	२३	१७	वृश्चिक	११ २२ ३ १८	५९ ४	A अनसूयाजं.
३५६	७	मुद्गरः	५	मं.	१९	२५	ज्ये	५३	२१	व्य	१९	४६	तै	१९	२५	११	२५	५३	२४	१८	धनु ५३/३९	११ २३ २ १८	५९ ३	मीनेबुध ३३/५४,बिच्छुड़ा ५३/३९या.
३५७	८	ध्वजः	६	बु.	२४	२२	मू	५९	२२	व	२१	७	व	२४	२२	१५	२४	५४	२५	१९	धनु	११ २४ १ १६	५९ ०	भ.२४/२२उप.५६/३५या.,शनिउदयपूर्वे २/३०
३५८	९	प्रजापति	७	वृ.	२८	४८	पू	६०	०	प	२३	३	ब	२८	४८	१९	२३	५५	२६	२०	धनु	११ २५ ० १२	५८ ५७	उभायांभौम २६/५३ग.४७/८ उभायांबुध ३६/१९ग.६२/९ शीतलापू.,बुढ़ाबासोड़ा,
३५९	१०	प्रवर्धमान	८	शु.	३२	१८	पू	४	३७	शि	२२	१८	बा	०	३३	२३	२२	५६	२७	२१	मकर ३०/४०	११ २५ ५९ ५	५८ ५५	
३६०	११	राक्षस	९	श.	३४	४०	उ	८	५०	सि	२१	४५	तै	३	२९	२७	२२	५६	२८	२२	मकर	११ २६ ५७ ५६	५८ ५३	उभा२शनि ५४/३७ग.६/२९
३६१	१२	गद	१०	सू.	३५	४८	श्र	११	५३	सा	२०	११	व	५	१४	३०	२०	५६	२९	२३	कुंभ ४२/४६	११ २७ ५६ ४६	५८ ५०	भ.५/१४उप.३५/४९या.,पंचक ४२/४६उप.
३६२	१३	शुभ	११	चं.	३५	३७	ध	१३	४०	शु	१७	३७	ब	५	४२	३४	१९	५७	३०	२४	कुंभ	११ २८ ५५ ३१	५८ ४८	वरूथिनी११व्रतंसर्वे,श्रीवल्लभचार्य जय.
३६३	१४	मृत्यु	१२	मं.	३४	१२	श	१४	१३	शु	१४	३	कौ	४	५४	३८	१८	५८	३१	२५	मीन ५६/४५	११ २९ ५४ १६	५८ ४६	अश्वन्यांमेषेरवि ५५/३,डॉ.अम्बेडकरजयं.
३६४	१५	पद्म	१३	बु.	३१	३६	पू	१३	३६	ब्र	९	३१	ग	२	५४	४२	१८	५८	१	२६	मीन	० ० ५२ ५७	५८ ४२	भ.३१/३६उप.५९/४८या.,कृत्तिकायांशुक्र २०/३७ग.७२/३६प्रदोष,सेनजयंति
३६५	१६	छत्रः	१४	वृ.	२८	०	उ	११	५८	ऐं	४/९	५७/४९	श	२८	०	४६	१७	५९	२	२७	मीन	० १ ५१ ३३	५८ ४०	शकः१९४८प्रवेशः,गणप्रवेशःशु.२६/२० ।५३/२४ऽब्दप ५/१९ ।३४/१५
१	१७	श्रीवत्सः	३०	शु.	२३	४१	रे	९	३३	वि	५१	९	ना	२३	४१	५०	१५	५९	३	२८	मेष ६/३३	० २ ५० ११	५८ ३९	पंचक ६/३३या. पितृकार्येऽमाः, हालीअमावस,देवकार्येऽमाः,

गोचर ग्रहाः

मंगल,बुध व शनि उदय पूर्वे



वैशाख कृष्णा ८ शुक्र
गण ३५९ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ३ ४४ २७	११ ४ २ ०	२ २४ ५ ८	० २० ८ ३	११ ९ २६ २७	१० ११ ४४ ५३	४ ११ ४४ ५३
४७ ८	८२ ९	६ १३	७३ २०	७ ५	३ ११	३ ११
उभा१	उभा१	पुन.२	भर.३	उभा२	शत२	मघा४
सौम्य	सौम्य	नीर	प्रचंड	सौम्य	जल	अमृत

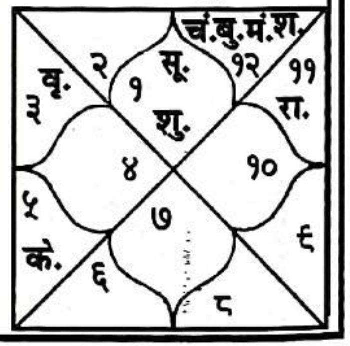
वैशाख कृष्णा १२मंगल मेषेऽर्कः प्रवेशः। वारात्४ दुर्भिक्षः,नक्षत्रात् ४ दुर्भिक्षः,वार नाम महोदरी,चौर सुखी । नक्षत्र नाम महोदरी,चौर सुखी। संक्रांति काल पूर्वाण्हे विप्र राजा सुखी। दक्षिणे मुख,वायव्य दृष्टिःपश्चिमे गमनं। तैतिल कर्णे सूती,मंदी। वाहन गर्दभ,उपवाहन मीढ़ा,सुभिक्षः। पाण्डुर वस्त्र,दण्डायुध,कांस्य पात्र,पक्वान्न भोजन, माटीलेपन,पक्षी जाति,केतकी पुष्प,मूंगा भूषण,भूर्जपत्र,युवावस्था,उत्तर मुख, डमरु वाद्य, हास्यावस्था। हस्ते कृष्णफल,मृत्युदायी। संक्रांति निवास तटे,रजक(धोबी) गृहे,सुभिक्ष। मुहूर्ता १५तेजी। संक्रांति पुण्यं प्रथम प्रहरे स्वदिने पुण्यकाल। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पश्चिमे।

वैशाख कृष्णा ३० शुक्र
गण १ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ९ १४ २८	११ १३ ३७ ७	२ २४ ४८ ४०	० २८ ४० २०	११ ७ १२ ४८	१० ११ २२ ३७	४ ११ २२ ३७
४७ ८	८२ ९	६ १३	७२ ३६	६ २६	३ ११	३ ११
उभा२	उभा४	पुन.२	कृत्ति१	उभा२	शत२	मघा४
सौम्य	सौम्य	नीर	प्रचंड	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

मंगल,बुध व शनि उदय पूर्वे



वैशाख शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण २से१५तक)

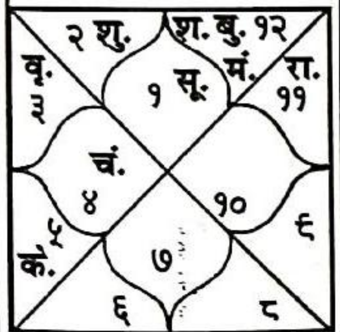
	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	छं. दि.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२	१८	सौम्यः	१	श.	१८	३१	अ	३	२३	प्री	४४	०	ब	१८	३१	३१/५४	६/१४	७/०	४	२६	मेष	० ३ ४८ ४५	५८ ३७
३	१९	कालः	२	सू.	१२	५१	भ	२/४०	५८/४०	आ	३६	३२	कौ	१२	५१	५८	१३	१	५	१	वृषभ १६/४०	० ४ ४७ १८	५८ ३५
४	२०	प्रवर्धमान	३	चं.	६	५५	रो	५४	३४	सौ	२८	५५	ग	६	५५	३२/१	१३	१	६	२	वृषभ	० ५ ४५ ५०	५८ ३३
५	२१	राक्षस	४	मं.	०	५१	मृ	५०	३५	शो	२१	१८	वि	०	५१	४	११	१	७	३	मिथुन २२/३४	० ६ ४४ ३६	५८ ३०
०	०	०	५	मं.	५४	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
६	२२	मूसल	६	बु.	४९	१३	आ	४६	५१	अ	१३	४९	कौ	२२	२३	७	११	१	८	४	मिथुन	० ७ ४२ ४४	५८ २७
७	२३	सिद्धिः	७	बृ.	४४	२	पु	४३	३९	सु	३/३८	५५/५५	ग	१६	३७	११	१०	२	९	५	कर्क २९/२७	० ८ ४१ ७	५८ २४
८	२४	उत्पात	८	शु.	३९	३१	पु	४१	७	शू	५३	४५	वि	११	४९	१४	९	३	१०	६	कर्क	० ९ ३९ २९	५८ २२
९	२५	मानसः	९	श.	३५	५३	श्ले	३९	२६	गं	४८	२०	बा	७	४२	१७	९	३	११	७	सिंह ३६/२६	० १० ३७ ४७	५८ २०
१०	२६	मुद्गर	१०	सू.	३३	११	म	३८	४७	वृ	४३	४५	तै	४	३२	२०	७	२	१२	८	सिंह	० ११ ३६ ५	५८ १८
११	२७	ध्वजः	११	चं.	३१	४०	पू	३९	१८	ध्रु	४०	५	व	२	२५	२३	६	४	१३	९	कन्या ५४/४४	० १२ ३४ २०	५८ १७
१२	२८	प्रजापति	१२	मं.	३१	२३	उ	४१	३	व्या	३७	२६	ब	१	३१	२६	६	४	१४	१०	कन्या	० १३ ३२ ३५	५८ १५
१३	२९	आनंद	१३	बु.	३२	२४	ह	४४	४	ह	३५	४६	कौ	१	५३	२९	५	५	१५	११	कन्या	० १४ ३० ४४	५८ १३
१४	३०	चर	१४	बृ.	३४	४१	चि	४८	१५	व	३५	९	ग	३	३२	३२	५	५	१६	१२	तुला १६/९	० १५ २८ ५४	५८ १०
१५	१	गदः	१५	शु.	३८	५	स्वा	५३	२९	सि	३५	२१	वि	६	२३	३९	४	६	१७	१३	तुला	० १६ २७ १	५८ ८

दि.१८ अप्रेल से १ मई २०२६ ई.तक।
वसंत/ग्रीष्म ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः।
卐 (वैशाख शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

- बुधास्तपू.१४/११, वृषेशुक्र ५/४७ चंद्रोदयमु.१५तेजी
- वृषेभानुः ४/५६ ग्रीष्मऋतुप्रारंभ, रेवत्यांबुध १३/३३ ग. ११४/५१ जिल्कादमु.११, A
- भ. ३३/५३ उप., कल्पादि, अक्षयतृतीया
- भ. ०/५१ या. आद्यशंकराचार्य जयं.
- Aपरशुरामजयंति उत्सव(प्रदोष व्यापिनी)
- श्रीरामानुजंजयं.,
- भ. ४४/२ उप., गंगोत्पत्तिसप्तमी मध्यान्व्यापिनी
- भ. ११/४६ या.
- ज्वालामुखी ३५/५३ उप. ३६/२६ या., सीतानवमी
- रेवत्यांभौम २६/५७ ग. ४५/३८, अश्वन्यांमेषेबुध २१/२७ ग ११५/४७, रोहिण्यांशुक्र २१/१७ ग. ७२/१७
- भ. २/२५ उप. ३१/४० या., भरण्यांरवि ४७/१ मोहिनी११व्रतंसर्वे
- प्रदोष
- भ. ३४/४१ उप., नृसिंह१४जयंति प्रदोष व्यापिनी
- भ. ६/२३ या., मई३१दिन, कूर्मोत्पत्ति, पूर्णिमाव्रतंपुण्यं, वैशाखस्नानपूर्ण, B
- Bबुद्धजयं., यमायजलान्न, कुंभदानम्

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे
मंगल, शनि, शुक्र उदय



वैशाख शुक्ला ८ शुक्र
गण ८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ १४ ४४ ३०	११ २५ ४८ २१	२ २५ ३२ १३	१ ७ ८ ५४	११ ७ ५७ ५६	१० ११ ० २२	४ ११ ० २२
४७ ८	११४ ५१	६ १३	७२ ३९	६ २६	३ ११	३ ११
उभा.४	रेव.३	पुन.२	कृत्ति.४	उभा.२	शत.२	मघा.४
सौम्य	दहन	नीर	प्रचंड	सौम्य	जल	अमृत

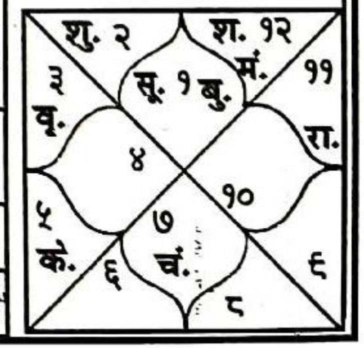
पश्चिम में विग्रह हो, पांच गुरु में देख। शस्त्र विद्या बल बढ़े, चाणक्य नीति को पेख।१।। रवि शनि मंगलवार दिन, संक्रांत पलटे जोय। दुख दुर्भिक्ष तेजी घणी, उसी मास में होय।।२।। वैशाख अमा को रेवती, सुभिक्ष करंति देख। आखतीज को रोहिणी, शुभ सुगाल को लेख।।३।। चंदा ऊगो शनि भरणी में, छत्रभंग करंत। भौम पंचमी क्षया तिथि, युद्धोपद्रव लड़ंत।।४।। रोहिणी शकट भृगुजी करे, भिन्न राज संसार। भौम शनि युत कारणे, होत बड़ो संहार।।५।। चैत अरु वैशाख में, सब फूले वनराय। राजा प्रजा गोधन सुखी, सुखिया मंगल गाय।।६। आषो वृक्ष फूले फले, आषो अफल रहाय। उण दिशा में माघजी, फले तो फूले कोरा में कोरो जाय।।७।। कम फूलो हो करवरों, फल सूंखा फल हाण। भेद बताऊं माघ जी, रूखो सुं पहिचांण।।८।।

वैशाख शुक्ला१५ शुक्र
गण १५, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ २० ७ ४२	० ९ १६ ५०	२ २६ १५ ४५	१ १५ ३५ ४६	११ ८ ४३ ३	१० १० ३८ ६	४ १० ३८ ६
४५ ३८	११५ ४७	६ १३	७२ १७	६ २६	३ ११	३ ११
रेव.२	अश्व.२	पुन.२	रोहि.२	उभा.२	शत.२	मघा.४
दहन	पवन	नीर	पवन	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे
मंगल, शनि, शुक्र उदय



प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८३ शालिवाहन शकः१९४८(लघुगण१६से३०तक)

दि.२ मई से १६ मई २०२६ई.तक।

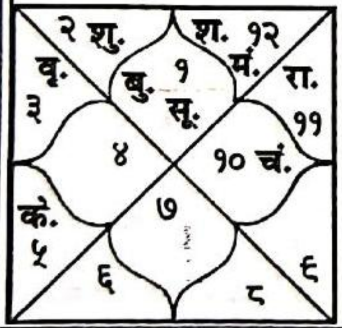
ग्रीष्म ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः।

(वैशाख कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१६	२	शुभः	१	श.	४२	२४	वि	५६	२६	व्य	३६	१४	बा	१०	१४	३२/३६	६/३	७/७	१८	१४	वृश्चि ४२/५६	० १७ २८ ८	५८ ६	बिच्छुड़ा ४२/५६ उप.जिनवरव्रतारंभ
१७	३	मृत्युः	२	सू.	४७	१६	अ	६०	०	व	३७	३४	तै	१४	५१	४२	२	८	१६	१५	वृश्चिक	० १८ २३ ११	५८ ४	भरण्यांबुध ६/० ग.१०१/३६ श्रीनारदजयं.वीणावादनं
१८	४	मानसः	३	चं.	५२	२४	अ	५	५५	प	३६	७	व	१६	५१	४५	१	७	२०	१६	वृश्चिक	० १९ २१ १३	५८ २	भ.१६/५१उप.५२/२४या.,पुनर्वसु३गुरु४३/४४ग.६/४२
१९	५	मुद्गर	४	मं.	५७	२१	ज्ये	१२	२३	शि	४०	३४	ब	२४	५२	४८	०	८	२१	१७	धनु १२/२३	० २० १९ १२	५७ ५९	बिच्छुड़ा १२/२३या.चतुर्थीव्रतंचंद्रोदय ६/१५बजे,
२०	६	ध्वजः	५	बु.	६०	०	मू	१८	३२	सि	४१	३८	कौ	२६	३२	५१	०	८	२२	१८	धनु	० २१ १७ ६	५७ ५७	भुवनेश्वरी पाटोत्सव(गोंडल)
२१	७	प्रजापति	५	बृ.	१	४३	पू	२४	०	सा	४२	५	तै	१	४३	५४	५/५६	६	२३	१९	मकर ४०/७	० २२ १५ ३	५७ ५६	मृगेशुक्र २५/४० ग ७२/१ टेगोरजयंति
२२	८	आनंदः	६	शु.	५	११	उ	२८	२६	शु	४१	४३	व	५	११	५८	५८	१०	२४	२०	मकर	० २३ १२ ५८	५७ ५५	भ.५/११उप.३६/३१या.
२३	९	सुस्थिरः	७	श.	७	३१	श्र	३१	४६	शु	४०	२४	ब	७	३१	३३/१	५८	१०	२५	२१	मकर	० २४ १० ४९	५७ ५१	A शत्तभिषा१राहु,मघा३केतु ५६/३२
२४	१०	मातंगः	८	सू.	८	३७	ध	३३	३४	ब्र	३८	७	कौ	८	३७	४	५७	११	२६	२२	कुंभ २/४१	० २५ ८ ३७	५७ ५०	कृत्तिकायांबुध ५८/८ ग.१२३/७, पंचक २/४१ उप. कालाष्टमी,
२५	११	अमृतः	९	चं.	८	२५	श	३४	४३	ऐं	३४	४८	ग	८	२५	७	५७	११	२७	२३	कुंभ	० २६ ६ २६	५७ ४८	भ.३७/४१उप.,कृत्तिकायांरवि ३४/५१ श्रीदादूदयालपुण्यं
२६	१२	काण	१०	मं.	६	५८	पू	३३	२२	वै	३०	३२	वि	६	५८	१०	५६	१२	२८	२४	मीन १६/४२	० २७ ४ ११	५७ ४६	भ.६/५८या.,उभायां३शनि ५६/४ग.३/४८,वृषेबुध ३४/३६,मिथुनेशुक्र ५६/३५, A
२७	१३	लुंबक	११	बु.	४	२१	उ	३२	२७	वि	२५	२६	बा	४	२१	१३	५५	१३	२९	२५	मीन	० २८ १ ५२	५७ ४४	अश्वन्यांमेषेभौम ५६/३५ग.४५/२३अपरा११व्रतं सर्वे,
२८	१४	मैत्र	१२	बृ.	०	४२	रे	३०	३६	प्री	१९	३२	तै	०	४२	१३	५५	१३	३०	२६	मेष ३०/३६	० २८ ५८ ३८	५७ ४२	भ.५६/१३उप.,पंचक ३०/३६या.,प्रदोष त्रिविक्रमपूजागोमेषफल,वटसावित्रीव्रतप्रा.मरु
०	०	०	१३	बृ.	५६	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	B उत्तरभारतीय,अधिकमास(मलमास)प्रारंभ
२९	१५	वज्र	१४	शु.	५१	३	अ	२७	३२	आ	१३	१	वि	२३	३८	१६	५५	१३	३१	२७	मेष	० २९ ५७ १८	५७ ४०	भ.२३/३८या.,वृषेऽर्कः २/४८
३०	१६	ध्वांक्ष	३०	श.	४५	२३	भ	२३	५५	सौ	६/१	५६/४१	च	१८	१३	१६	५४	१४	१	२८	वृषभ ३७/५५	१ ० ५४ ५७	५७ ३८	दैवपितृकार्येऽमा,भावुकाअमा.,शनिजयं,वटसावित्रीव्रतपारणा B

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे,
मंगल,शुक्र,शनि उदय



प्र.ज्येष्ठ कृष्णा ८ सूर्य
गण २४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	२	१	११	१०	४
२६	२५	२७	२६	९	१०	१०
५८	१	२६	२५	४१	९	९
२६	३०	३३	३८	४	२६	२६
४५	१०१	९	७२	६	३	३
३८	३६	४२	१	२६	११	११
रेव.४	भर.४	पुन.३	मृग.१	उभा२	शत२	मघा.४
दहन	प्रचंड	नीर	दहन	सौम्य	जल	अमृत

प्र.ज्येष्ठ कृष्णा१४शुक्र वृषेऽर्कःप्रवेशः। वारात् ४दुर्भिक्षः,नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्ष। वारनाम मिश्रा,पशुसुखी। नक्षत्रनाम ध्वांक्षी वैश्यसुखी। संक्रांति काल पूर्वाण्हे,विप्रराजा सुखी। पूर्वमुख,नैऋत्त दृष्टि,दक्षिणे गमनं। विष्टी कर्णे बैठी,तेजी। अश्व वाहन,सिंह उपवाहन,स्थैर्य। धूम्र वस्त्र,कुत्ता आयुध,ताम्रपात्र,चित्रान्न भोजन,हलिद्रा लेपन,क्षत्रिय जाति,कमल पुष्प,गुंजा भूषण,नीली कंचुकी,वृद्धाऽवस्था,ईशान मुख, रसना वाद्य,भक्तियुक्ता। हस्ते रक्त फल,प्रजासुखी। संक्रांति निवा संधि,वैश्यगृहे,खण्ड वृष्टि तेजी। मुहूर्ता३०स्थिरता। संक्रांति पुण्यं, स्वदिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्सनिवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पश्चिमे।

प्र.ज्येष्ठ कृष्णा ३० शनि
गण ३०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	२	२	११	१०	४
१	६	२८	३	१०	९	९
३१	५६	२७	३७	११	५०	५०
४८	२७	४८	४५	३६	२४	२४
४५	१२३	९	७२	३	३	३
२२	७	४२	१	४८	११	११
अश्व१	कृत्ति४	पुन.३	मृग.४	उभा३	शत१	मघा३
पवन	प्रचंड	नीर	दहन	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे,

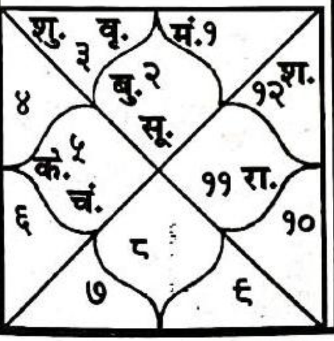


प्र.ज्येष्ठ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण३१से४५तक)

卐 दिनांक १७ मई से ३१ मई २०२६ई.तक। 卐
ग्रीष्मऋतु। रविर्देवता उत्तरायनेः,उत्तरगोलेः।
(प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः(पुरुषोत्तममास)गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३१	१७	धूम्रा	१	सू.	३९	२२	कृ	१९	५७	अ	५१	८	किं.	१२	२२	३३/३३	५/५३	७/१५	२	२९	वृषभ	१ १ ५२ ३३	५७ ३७	रोहिण्यांबुध२७/५८ग.१०४/२८,अधिकमास(पुरुषोत्तममासः)प्रारंभ
३२	१८	प्रवर्धमान	२	चं.	३३	१३	रो	१५	५१	सु	४३	३२	बा	६	१७	२६	५३	१५	३	३०	मिथुन४३/४६	१ २ ५० ९	५७ ३५	अगस्ताऽस्तः५५/४४,आद्रायांशुक्र३१/४६ग.७०/४५ चंद्रदर्शन मु.३०स्थिरता
३३	१९	राक्षसः	३	मं.	२७	१०	मृ	११	४७	धृ	३६	४	तै	०	११	२९	५२	१६	४	१	मिथुन	१ ३ ४७ ४१	५७ ३५	भ.५४/५७उप.,जिल्हेज१२,
३४	२०	मूसल	४	बु.	२१	२४	आ	७	५६	शू	२८	५१	वि	२१	२४	३२	५१	१७	५	२	कर्क५०/२७	१ ४ ४५ १४	५७ ३३	भ.२१/२४या.,मिथुनेभानुः११/१२
३५	२१	सिद्धिः	५	वृ.	१६	११	पु	४	३७	गं	२२	३	बा	१६	११	३३	५१	१७	६	३	कर्क	१ ५ ४२ ४४	५७ ३२	बुधोदयपू.५६/११
३६	२२	उत्पात	६	शु.	११	३२	पु	१/४२	५६/५७	वृ	१५	४६	तै	११	३२	३५	५१	१७	७	४	सिंह५६/५७	१ ६ ४० १२	५७ ३१	
३७	२३	पद्मः	७	श.	७	४४	म	५९	४	ध्रु	१०	१३	व	७	४४	३६	५१	१७	८	५	सिंह	१ ७ ३७ ३९	५७ २९	भ.७/४४उप.३६/२०या.
३८	२४	छत्रः	८	सू.	४	५६	पू	५९	१७	व्या	५	२९	ब	४	५६	३७	५१	१७	९	६	सिंह	१ ८ ३५ ४	५७ २६	
३९	२५	श्रीवत्सः	९	चं.	३	१६	उ	६०	०	ह	१/४०	५६/५९	कौ	३	१६	३९	५१	१८	१०	७	कन्या१४/३८	१ ९ ३२ २९	५७ २५	रोहिण्यांरवि२/४६,पुनर्वसु४कर्केगुरु२६/३३ग.११/१६,मृगेबुध७/२६ग.१०५/३३
४०	२६	प्रजापति	१०	मं.	२	५२	उ	०	४३	सि	५७	१	ग	२	५२	४०	५१	१९	११	८	कन्या	१ १० २९ ५२	५७ २३	भ.३३/१८उप.,
४१	२७	आनंद	११	बु.	३	४४	ह	३	२५	व्य	५६	१२	वि	३	४४	४१	५१	१९	१२	९	तुला३५/३२	१ ११ २७ १२	५७ २१	भ.३/४४या.,कमला११व्रतसर्वे,हज्जत्यौहारमुस.,
४२	२८	चरः	१२	वृ.	५	५१	चि	७	२०	व	५६	१५	बा	५	५१	४३	५०	२०	१३	१०	तुला	१ १२ २४ ३०	५७ २०	मिथुनेबुध४४/४६,प्रदोष,बकराईद,हजेअकबर,
४३	२९	गदः	१३	शु.	६	८	स्वा	१२	१९	प	५७	३	तै	६	८	४४	५०	२०	१४	११	तुला	१ १३ २१ ५१	५७ १९	पुनर्वसुशुक्र५०/८ग.६६/४१
४४	३०	शुभः	१४	श.	१३	१९	वि	१८	१०	शि	५८	२८	व	१३	१९	४५	५०	२०	१५	१२	वृश्चि१/४२	१ १४ १९ ९	५७ १७	भ.१३/१९उप.४५/४४या.,बिच्छुड़ा१/४२उप.
४५	३१	मृत्युः	१५	सू.	१८	८	अ	२४	३०	सि	६०	०	ब	१८	८	४७	५०	२०	१६	१३	वृश्चिक	१ १५ १६ २५	५७ १६	भरण्यांभौम३६/३७ग.४५/४,पूर्णिमाव्रत

गोचर ग्रहाः
अगस्तास्त
बुधोदय पूर्वे



प्र.ज्येष्ठ शुक्ला ८ सूर्य
गण ३८, इष्टः ०/०

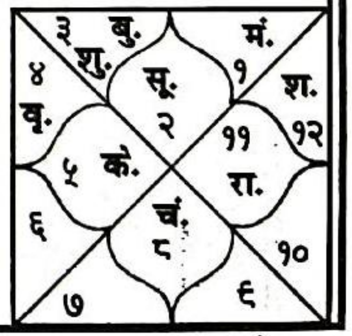
मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	२	२	११	१०	४
७	२१	२९	१३	१०	९	९
३४	२२	४५	७	४२	२४	२४
४८	३४	२९	३	७	५८	५८
४५	१०४	९	७०	३	३	३
२२	२८	४२	७५	४८	११	११
अश्वि.३	रोहि.४	पुन.३	आर्द्रा.२	शत.२	शत.१	मघा.३
पवन	पवन	नीर	सौम्य	जल	जल	अमृत

पांच शनि भूकंप हो,ईशान देश में भंग। अग्निकाण्ड हो जगत में, बहु तेजी बहु जंग।।१।। दोय जेठ नृपनाश हो,राजभंग उत्पात। अति तपन गर्मी घणी,जल विप्लव हो जात।।२।। जेठ वदी पड़वा अमा,शनिवार को देख। छत्रभंग अरु रोग बहु,इण में मीन न मेष।।३।। नृप मरे दो जेठ में,राज पलट हो जात। काल में अधिक मास सुं,रोग कष्ट उत्पात।।४।। जेठ अमा शनिवार सुं,छत्रभंग पशु रोग। चोर अग्नि भय काल दुःख,बहु गर्मी को भोग।।५।। पहली वर्षा रविवार को, दुर्भिक्ष देश में जान। शुभ वार सुभिक्ष हो ,भौम वायु शनि वर्षा से हान।।६।। उमस कादमी गर्मी घणी,चिपचिपो होवे अंग। कींडी ज्यूं छिटका भरे, वर्षे मेघ अथंग।।७।। कलशे पाणी गरम जल,चिड़ियां नावे धूर। चीटी ले अंडा चली,तां दिन वर्षा पूर।।८।।

प्र.ज्येष्ठ शुक्ला १५सूर्य
गण ४५, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	३	२	११	१०	४
१२	३	१	२१	११	९	९
५२	४०	२	२१	८	२	२
२७	१४	२१	८	४७	४२	४२
४५	१०५	११	६९	३	३	३
२२	३३	१९	४१	४८	११	११
अश्वि.४	मृग.३	पुन.४	पुन.१	उभा.३	शत.१	मघा.३
पवन	दहन	नीर	नीर	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः
अगस्तास्त
बुधोदय पूर्वे



द्वि.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८(लघुगण४६से६०तक)

दि.१ जून से १५जून २०२६ई.तक। ग्रीष्म ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः। (प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः(पुरुषोत्तममास)गुजरात महाराष्ट्रैः)

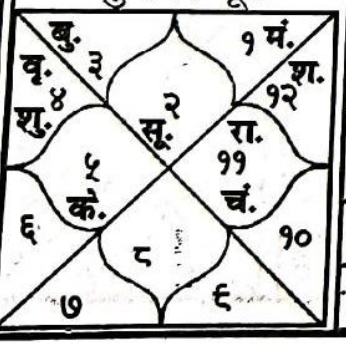
	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हिं. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
४६	१	पद्मः	१	चं.	२३	८	ज्ये	३१	५	सि	०	१	कौ	२३	८	३३/४८	५/४६	७/२१	१७	१४	धनु ३१/५	१ १६ १३ ४०	५७ १५	आद्रायांबुध ४३/१० ग. ७७/३२, बिच्छुड़ा ३१/५ या., जून३०दिन,
४७	२	छत्रः	२	मं.	२८	०	मू	३७	१९	सा	१	३३	ग	२८	०	४९	४९	२१	१८	१५	धनु	१ १७ १० ५५	५७ १३	
४८	३	श्रीवत्सः	३	बु.	३२	२०	पू	४२	५६	शु	२	४६	व	०	१०	५१	५०	२२	१९	१६	मकर ५६/६	१ १८ ८ ६	५७ १२	भ.०/१० उप.३२/३० या., चतुर्थीव्रतंचंद्रोदय ६/२४ बजे
४९	४	सौम्यः	४	वृ.	३५	४५	उ	४७	३८	शु	३	२६	ब	४	२	५२	५०	२२	२०	१७	मकर	१ १९ ५ २०	५७ ११	
५०	५	धूम्राः	५	शु.	३८	५	श्र	५१	१२	ब्र	३	१८	कौ	६	५५	५३	४९	२३	२१	१८	मकर	१ २० २ ३१	५७ १०	पर्यावरण दिवस
५१	६	प्रवर्धमान	६	श.	३९	१०	ध	५३	३३	ऐं	२/१६	५६/५४	ग	८	३७	५३	४९	२३	२२	१९	कुंभ २२/२२	१ २० ५९ ४२	५७ ९	भ.३६/१० उप., पंचक २२/२२ उप.
५२	७	राक्षस	७	सू.	३८	५६	श	५४	३८	वि	५६	५१	वि	९	३	५५	४९	२३	२३	२०	कुंभ	१ २१ ५६ ५१	५७ ८	भ.६/३ या., कर्केशुक्र ३६/४५
५३	८	मूसल	८	चं.	३७	२९	पू	५४	३०	प्री	५२	५०	बा	८	१२	५६	४९	२३	२४	२१	मीन ३६/३२	१ २२ ५३ ५७	५७ ७	मृगेरवि २७/२२
५४	९	सिद्धि	९	मं.	३४	५१	उ	५३	१८	आ	४७	५४	तै	६	१०	५७	५०	२४	२५	२२	मीन	१ २३ ५१ ५	५७ ६	
५५	१०	उत्पातः	१०	बु.	३१	११	रे	५१	७	सौ	४२	११	व	३	१	५९	४९	२४	२६	२३	मेष ५१/७	१ २४ ४८ ९	५७ ५	भ.३/३ उप.३१/११ या., पुष्येशुक्र १८/५० ग ६८/७, पंचक ५१/७ या.
५६	११	मानसः	११	वृ.	२६	४०	अ	४८	१०	शो	३५	४८	बा	२६	४०	३४/०	४९	२५	२७	२४	मेष	१ २५ ४५ १४	५७ ४	कमला११व्रतंसर्वे
५७	१२	मुद्गर	१२	शु.	२१	२८	भ	४४	३९	अ	२८	५२	तै	२१	२८	१	४९	२५	२८	२५	वृषभ ५८/४०	१ २६ ४२ १७	५७ ३	पुनर्वसुबुध १/१० ग ३५/४५, पुष्य१गुरु ६/१२ ग.१२/२२, प्रदोष
५८	१३	ध्वजः	१३	श.	१५	४५	कृ	४०	४४	सु	२१	३२	व	१५	४५	३	४९	२६	२९	२६	वृषभ	१ २७ ३९ २२	५७ २	भ.१५/४५ उप.४२/४५ या., मासिकशिवरात्रिव्रत
५९	१४	प्रजापति	१४	सू.	९	४५	रो	३६	३७	धृ	१४	१	श	९	४५	४	४९	२७	३०	२७	वृषभ	१ २८ ३६ २४	५७ १	पितृकार्येऽमा
६०	१५	आनंदः	३०	चं.	३	३१	मृ	३२	३०	शू	६/२६	५६/५५	ना	३	३१	५	४९	२७	३१	२८	मिथुन ४/३३	१ २९ ३३ २४	५७ ०	मिथुनेऽर्कः २७/५६, देवकार्येऽमां, सोमवतीअमा., अधिकमास(मलमास) A

A समाप्त,करिदिन,गंगादशहराव्रत प्रां.,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त

बुधोदय पूर्वे



द्वि.ज्येष्ठ कृष्णा ८ चंद्र गण ५३, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	३	३	११	१०	४
१८	१४	२	०	११	८	८
५३	४८	३२	३८	३६	३७	३७
१५	१७	५७	३६	१५	१६	१६
४५	७७	११	६६	३	३	३
४	३२	१९	४१	४८	११	११
भर.२	आद्रा२	पुन.४	पुन.४	उभा३	शत१	मघा३
प्रचंड	सौम्य	नीर	नीर	सौम्य	जल	अमृत

द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः३० चंद्र मिथुनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ४दुर्भिक्षः। नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्षः। वारनाम ध्वांक्षी,वैश्य सुखी। नक्षत्रनाम मंदाकिनी ,नृपसुखी। संक्रांति काल प्रदोषे,पिशाच सुखी। पश्चिमे मुख,अग्निकोणे दृष्टि,उत्तरे गमनं। किस्तुघ्न कर्णे खड़ी तेजी। कुकुट वाहन,वराह उपवाहन,मृत्यु। मेघवर्ण वस्त्र,बाण आयुध,काष्ठ पात्र,शर्करा भोजन, कपूर लेपन,अन्त्यज जाति,जया पुष्प,स्वर्ण भूषण,पांडुर कंचुकी,सन्यास अवस्था,दशोदिशा मुख,शुरभी वाद्य,कर्कशा विरूपिणी अवस्था। हस्ते श्वेत फल,सुखी। संक्रांति निवास तटे,रजक(धोबी)गृहे सुभिक्ष,मंदी। मुहूर्ता३०स्थिरता। संक्रांति पुण्यं,स्वदिने तृतीययामे पुण्यकालः। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पश्चिमे।

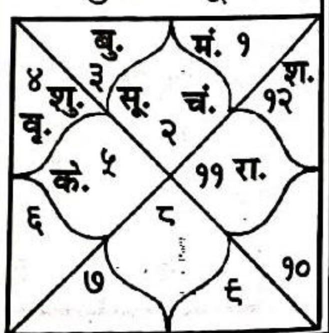
द्वि.ज्येष्ठ कृष्णा३०/१चंद्र गण ६०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	३	३	११	१०	४
२४	२२	३	८	१२	८	८
८	१	५५	३६	५	१५	१५
५०	२	१२	७	५५	०	०
४५	४०	१२	६८	३	३	३
४	३६	२२	७	४८	११	११
भर.४	पुन.१	पुष्य.१	पुष्य.२	उभा३	शत१	मघा३
दहन	नीर	जल	जल	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त

बुधोदय पूर्वे



द्वि.ज्येष्ठ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण६१से७४तक)

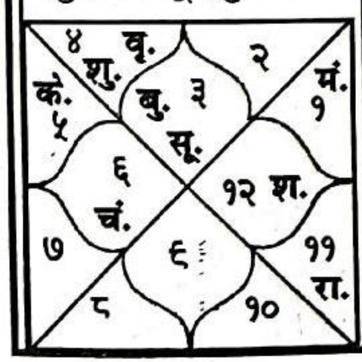
दि.१६ जून से २९ जून २०२६ई. तक। ग्रीष्म/वर्षाऋतु। रविर्देवता उत्तरा/दक्षिणायने,उत्तरगोलेः। (द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
०	०	०	१	चं.	५७	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
६१	१६	चर	२	मं.	५१	३५	आ	२८	३७	वृ	५१	३९	बा	२४	३०	३४ ७	५ ४६	७ २७	१	२९	मिथुन	२ ० ३० २५	५६ ५९	चंद्रोदयमु.४५मंदी
६२	१७	गदः	३	बु.	४६	१२	पु	२५	७	ध्रु	४४	४५	तै	१८	५३	८	४८	२८	२	१	कर्क १०/५६	२ १ २७ २४	५६ ५८	मोहोर्रम१सन१४४८ महाराणाप्रतापजयंति४८६वीं,रंभाव्रतं,अशून्यशयनव्रतप्रां.
६३	१८	शुभः	४	वृ.	४१	३१	पु	२२	१४	व्या	३८	२२	व	१३	५१	९	४८	२८	३	२	कर्क	२ २ २४ २३	५६ ५८	भ.१३/५१उप.४१/३१या.,कृत्तिकायांभौम २१/९ग.४४/९
६४	१९	मृत्यु	५	शु.	३७	३९	श्ले	२०	७	ह	३२	३८	ब	९	३३	१०	४८	२८	४	३	सिंह २०/७	२ ३ २१ २२	५६ ५८	
६५	२०	पद्मः	६	श.	३४	४१	म	१८	५७	व	२७	४४	कौ	६	८	१२	४९	२९	५	४	सिंह	२ ४ १८ १९	५६ ५७	कर्केभानुः४०/३५,रविदक्षिणायने वर्षाऋतुप्रा.,बड़ादिन अरण्यषष्ठी,
६६	२१	छत्रः	७	सू.	३२	५४	पू	१८	५४	सि	२३	४४	ग	३	४७	१०	४९	२९	६	५	कन्या ३४/१२	२ ५ १५ १७	५६ ५६	भ.३३/५४उप., Aवक्रीबुध३६/११बु.३२/२७।५/७ ग३५/४२,वृषेभौम४३/१३,आश्लेषायांशुक्र३/२८ग.६८/१ B
६७	२२	श्रीवत्स	८	चं.	३२	२१	उ	२०	५८	व्य	२०	४३	वि	२	३८	९	४९	२९	७	६	कन्या	२ ६ १२ १३	५६ ५६	भ.२/३८या.,आर्द्रायांरवि३६/१७,सं.चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहनखर,उपवाहनकूकड़कोरो A
६८	२३	सौम्यः	९	मं.	३३	६	ह	२२	२७	व	१८	४१	बा	२	४३	८	४९	२९	८	७	तुला ५४/१६	२ ७ ९ ९	५६ ५६	B दुर्गाष्टमी धूमावतीजयंति,
६९	२४	कालः	१०	बु.	३५	४	चि	२६	६	प	१७	४०	तै	४	५	७	५१	२९	९	८	तुला	२ ८ ६ ६	५६ ५५	गंगादशहराव्रतंपूर्ण,
७०	२५	सुस्थिर	११	वृ.	३८	१३	स्वा	३०	५१	शि	१७	३३	व	६	३८	५	५१	२९	१०	९	तुला	२ ९ ३ १	५६ ५५	भ.६/३८उप.३६/१३या.,बुधास्तप.४४/११ निर्जला११व्रतंसर्वे,भीम११,
७१	२६	मातंग	१२	शु.	४२	१९	वि	३६	३०	सि	१८	१७	ब	१०	१६	५	५१	२९	११	१०	वृश्चि २०/५	२ ९ ५९ ५७	५६ ५५	वरुणआदित्य१२व्रतं,ताजिया
७२	२७	अमृत	१३	श.	४७	३	अ	४२	४५	सा	१९	३१	कौ	१४	४१	४	५१	२९	१२	११	वृश्चिक	२ १० ५६ ५३	५६ ५५	प्रदोष वटसावित्रीव्रतपूर्णःदाक्षियगुर्जरे,
७३	२८	काणः	१४	सू.	५२	०	ज्ये	४९	१३	शु	२१	४	ग	१९	३१	३	५१	२९	१३	१२	धनु ४९/१३	२ ११ ५३ ४८	५६ ५४	भ.५२/०उप.,पुक्षरगुरु१६/३३ग.१२/५२
७४	२९	लुंबक	१५	चं.	५६	५१	मू	५५	३२	शु	२२	३९	वि	२४	२९	१	५२	२८	१४	१३	धनु	२ १२ ५० ४२	५६ ५४	भ.२४/२९या. कबीरजयं., मन्वादि,पूर्णिमाव्रतं,दानव्रतपुण्यं

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त

बुधोदय पूर्वे,बुध वक्र



द्वि.ज्येष्ठ शुक्ला ८ चंद्र गण ६७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २६ २० ५३	२ २६ ४५ २२	३ ५ २१ ५१	३ १६ ३६ ४	११ १२ ३२ ३४	१० ७ ५२ ४४	४ ७ ५२ ४४
४४ ६	४० ३६	१२ २२	६८ ७	३ ४८	३ ११	३ ११
कृत्ति१	पुन.३	पुष्क.१	पुष्क.४	उभा.३	शत्त१	मघा३
प्रचंड	नीर	जल	जल	सौम्य	जल	अमृत

पांच सोम इण मास में,जनता में संतोष। धन धान्य हो मोकलां,बढ़े राज को कोष।।१।। जेठ वदी एकम अमा,पूर्णिमा सोम के वार। जल मग्न पृथ्वी हुवे,धान्य होत अपार।।२।। जेठ पूनम मूल दिन,घण बादल घण बीज। तब श्रावण वर्षे चहुं,सखियों खेलो तीज।।३।। रोहिण तपे मृगसिर वाजे,आद्रा मेह अणचिंत्या गाजे।।४।। मृगसिर वाय न वाजिया ,रोहिण तपे न जेठ। गोरी वीणे कांकरा खड़ी,खेजड़ा हेठ।।५।। आंकां गेहूं नींब तिल,जालो जाड़ी ग्वार। सोंगर बाजर नींपजे,केरों कपास अपार।।६।। कहे फोग सुंण मांघजी,पीपल फलिया तोय। मोठ बाजरा कम नींपजे,अड़क नाज कछु होय।।७।। ऊंट कंटालो रींगणी,शंखा वली हो फूल। मां बिछाड़े दीकरा,गाय बाछड़ा भूल।।८।।

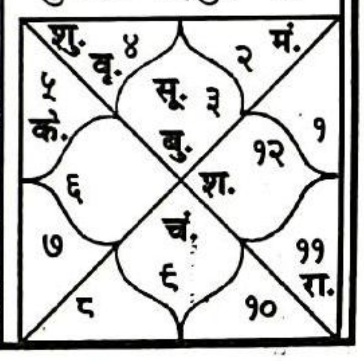
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ला १५चंद्र गण ७४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ ४ २९ ४१	२ २३ ११ ५०	३ ६ ४८ ५३	३ २४ ३२ १३	११ १२ ५९ १४	१० ७ ३० २९	४ ७ ३० २९
४४ ६	३५ ४८ +	१२ ५२	६८ १	३ ४८	३ ११	३ ११
कृत्ति३	पुन.१	पुष्क.३	श्ले.३	उभा.३	शत्त१	मघा३
प्रचंड	नीर	जल	अमृत	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त

बुधास्त प.,बुध वक्र



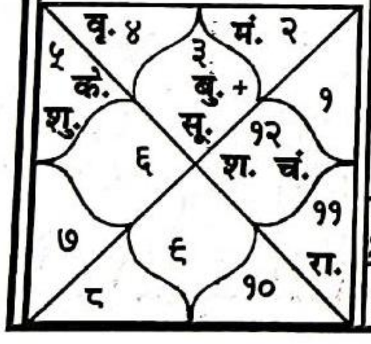
आषाढ़ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण ७५से८९)

दिनांक ३० जून से १४ जुलाई २०२६ई. तक।
वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने,उत्तरगोलेः।
(द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मध्यम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
७५	३०	मैत्रः	१	मं.	६०	०	पू	६०	०	ब्र	२३	५६	बा	२९	०	३४/०	५/५२	७/२८	१५	१४	धनु	२ १३ ४७ ३६	५६ ५४	वटसावित्रीव्रतपारणा दक्षिण गुर्जरे
७६	१	श्रीवत्सः	१	बु.	१	६	पू	१	१९	ऐं	२४	४४	कौ	१	६	३३/५६	५३	२९	१६	१५	मकर १७/३२	२ १४ ४४ ३२	५६ ५४	जुलाई३१दिन
७७	२	सौम्यः	२	वृ.	४	३६	उ	६	१४	वै	२४	५०	ग	४	३६	५७	५४	२९	१७	१६	मकर	२ १५ ४१ २६	५६ ५४	भ.३५/० उप.,
७८	३	धूम्राः	३	शु.	६	२५	श्र	१०	३	वि	२३	५७	वि	६	२५	५६	५५	२९	१८	१७	कुंभ ४१/२२	२ १६ ३८ २१	५६ ५४	भ.६/२५ या.,मघायांसिंहेशुक्र ४६/६ ग.६७/४ पंचक ४१/२२ उप. चतुर्थीव्रतंचंद्रोदय ६/३१ बजे
७९	४	प्रवर्धमान	४	श.	८	२	ध	१२	४१	प्री	२२	६	बा	८	२	५५	५५	२९	१९	१८	कुंभ	२ १७ ३५ १५	५६ ५४	वक्रीआद्रायांबुध २१/२२ ग.३६/५७,उभायां४शनि २६/४३ ग.५/३७
८०	५	राक्षसः	५	सू.	७	५३	श	१४	३	आ	१९	१९	तै	७	५३	५३	५५	२९	२०	१९	मीन ५९/८	२ १८ ३२ १०	५६ ५४	B उपवाहनकच्छपबाढ़। रोहिण्यांभौम २६/१३ ग.४२/४०
८१	६	मूसल	६	चं.	६	२८	पू	१४	१०	सौ	१५	२४	व	६	२८	५२	५६	२८	२१	२०	मीन	२ १९ २९ ३	५६ ५४	भ.६/२८ उप.३५/१० या.,पुनर्वसुरवि ३२/३८,सं.चं.चं.स्त्री.पु.वाहन मंडूक B
८२	७	सिद्धिः	७	मं.	३	५२	उ	१३	११	शो	१०	३९	ब	३	५२	५१	५६	२८	२२	२१	मीन	२ २० २५ ५८	५६ ५४	
८३	८	उत्पात	८	बु.	०	१३	रे	११	७	अ	५/३	५६/४६	कौ	०	१३	४९	५६	२८	२३	२२	मेष ११/७	२ २१ २३ ५३	५६ ५४	पंचक ११/७ या.,कालाष्टमी,श्रीरामदासपुण्य,मेलाखेडापारामधाम,
०	०	०	९	बु.	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
८४	९	मानसः	१०	वृ.	५०	३३	अ	८	१९	धृ	५१	५६	व	२३	६	४८	५६	२८	२४	२३	मेष	२ २२ १९ ४७	५६ ५४	भ.२३/६ उप.५०/३३ या.,
८५	१०	मुद्गर	११	शु.	४४	२९	भ	४	५४	शू	४४	४४	ब	१७	३१	४७	५७	२७	२५	२४	वृषभ १६/४६	२ २३ १६ ४१	५६ ५४	योगिनी११व्रतंस्मार्ता
८६	११	ध्वजः	१२	श.	३८	४७	कृ	१/२	५६/५६	गं	३७	१३	कौ	११	३८	४५	५८	२८	२६	२५	वृषभ	२ २४ १३ ३५	५६ ५४	बुधोदयपू.२६/११,योगिनी११व्रतवैष्णवा।
८७	१२	सौम्यः	१३	सू.	३२	३५	मृ	५२	४७	वृ	२९	३७	ग	५	४१	४४	५८	२८	२७	२६	मिथुन २४/५१	२ २५ १० ३१	५६ ५४	भ.३२/३५ उप.५६/३२ या.,प्रदोष,
८८	१३	कालः	१४	चं.	२६	२८	आ	४८	२८	ध्रु	२२	६	श	२६	२८	४३	५८	२८	२८	२७	मिथुन	२ २६ ७ २८	५६ ५५	पुक्ष३गुरु ५०/० ग १३/७ C पश्चिमदेशीय दैवपितृकार्येऽमास्नानदाने,वट
८९	१४	सुस्थिरः	३०	मं.	२०	३३	पु	४५	११	व्या	१४	४१	ना	२०	३३	४१	५९	२७	२९	२८	कर्क ३१/०	२ २७ ४ २४	५६ ५५	मार्गीबुध ४४/११ बु.२/१३।५/१४ ग.३७/६,धनेष्ठा४राहुमघा२केतु ५२/३७ सावित्रीव्रत C

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः
बुधास्त प.,बुध वक्र



आषाढ़कृ.८/९बुधवार
गण ८३, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ ११ ४ ३३	२ १७ ३४ २३	३ ८ ४४ ४३	४ ४ ४० २७	११ १३ ५१ १४	१० ७ १ ५१	४ ७ १ ५१
४२ ४०	३९ ५७ +	१२ ५२	६७ ४	८ ४७	३ ११	३ ११
रोहि.१	आद्रा४	पुष्य.२	मघा२	उभा४	शत१	मघा३
पवन	सौम्य	जल	अमृत	सौम्य	जल	अमृत

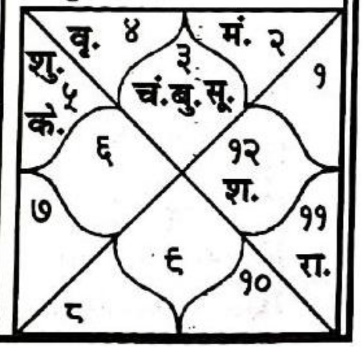
पांच मंगल अमंगल करे,रक्तपात उत्पात। छत्रभंग विस्फोट हो, जनता पर आघात।।१।। सिंह शुक्र होय भवानी,चले पवन नहीं वर्षे पानी।।२।। आगे रवि पीछे चले,मंगल जो आषाढ़। तो वरसै अनमोल ही,भूमि आनन्दे बाढ़।।३।। आद्रा अमावस आषाढ़ को, अथवा पुनर्वसु जोय। कहीं वर्षा कहीं काल हैं,कहीं जमानो होय।४। आषाढ़ वदी की एकमें,जो मेघा वर्षन्त। दो मास वर्षे नहीं,अवश्य काल पड़ंत।।५।। भौम रोहिणी चले,शकट भिन्न आषाढ़। अंधड़ तूफान गर्मी घणी,राज प्रजा में राड़।।६।। सुदी आषढ़ी बीज गुरु, नवमी गुरु वर्षन्त। ग्यारस शनि सुद आषाढ़ सुं,कठइक काल पडंत।।७।। शनि रवि मंगलो देव शयन करंत। पूनो बुध में शीतला, बालक कहु मरंत।।८।।

आषाढ़ कृष्णा३० मंगल
गण ८९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१ १५ २० ३९	२ १३ ३४ ३५	३ १० २ ०	४ ११ २२ ५२	११ १४ ४३ ५९	१० ६ ४२ ४७	४ ६ ४२ ४७
४२ ४०	३९ ५७ +	१३ ७	६७ ४	८ ४७	३ ११	३ ११
रोहि२	आद्रा३	पुष्य.३	मघा४	उभा४	शत१	मघा३
पवन	सौम्य	जल	अमृत	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,बुधोदय पू.
बुधवक्र रात्रौ मार्गी



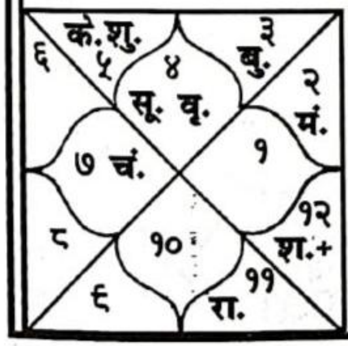
आषाढ़ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण ९०से१०४)

दिनांक १५ जुलाई से २९ जुलाई २०२६ई.तक। वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तरगोलेः। (आषाढ़ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
९०	१५	मातंगः	१	बु.	१५	१८	पु	४२	८	ह	७	४५	ब	१५	१८	३३/४०	५/५६	७/२७	३०	२९	कर्क	२ २८ १ २०	५६ ५६	गुरुअस्तपं.४/१३ पूफायांशुक्र४४/४७ग.६४/४१ चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,गुप्तनवरात्रारंभः
९१	१६	अमृतः	२	बृ.	१०	२१	श्लो	३९	४७	व	१/१४	५५/२६	कौ	१०	२१	४०	५६	२७	३१	१	सिंह ३६/४७	२ २८ ५८ १७	५६ ५६	श्रीजगदीशरथयात्रा ,सफर२,
९२	१७	काणः	३	शु.	६	२२	म	३८	२३	व्य	५०	१९	ग	६	२२	३९	५६	२७	३२	२	सिंह	२ २९ ५५ १३	५६ ५७	भ.३४/५२ उप.,कर्केऽर्कः ५/२
९३	१८	लुंबकः	४	श.	३	२३	पू	३८	२	व	४६	८	वि	३	२३	३७	६/१	२७	१	३	कन्या ५३/१४	३ ० ५२ ९	५६ ५७	भ.३/२३ या.,वक्रीशनि१६/१४ श.११/१५।२१/५६ ग.५/३७ द्वारकाधीश पाटोत्सव
९४	१९	मैत्रः	५	सू.	१	३०	उ	३८	५३	प	४२	५६	बा	१	३०	३६	१	२७	२	४	कन्या	३ १ ४९ ९	५६ ५८	स्कन्दषष्ठीव्रत,मध्यान्हव्यापिनी,कुमारषष्ठी पूर्वविद्धा
९५	२०	वज्रः	६	चं.	०	५१	ह	४०	५९	शि	४०	४४	तै	०	५१	३५	१	२७	३	५	कन्या	३ २ ४६ ८	५६ ५८	पुक्षेरवि३५/४०,सं.चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहनमूषक,उपवाहनहाथी बहुगर्मी।A
९६	२१	ध्वांक्षः	७	मं.	१	३०	चि	४४	१९	सि	३९	२७	व	१	३०	३३	१	२७	४	६	तुला १२/३९	३ ३ ४३ ७	५६ ५८	भ.१/३०उप.३२/३८या., A विवस्वत्सप्तमी पूर्वविद्धा
९७	२२	धूम्राः	८	बु.	३	२५	स्वा	४८	४९	सा	३९	१४	ब	३	२५	३२	२	२६	५	७	तुला	३ ४ ४० ७	५६ ५९	सिंहेभानुः१७/३० भड्डलीनवमी(सूनम),गिरिजापूजा
९८	२३	प्रवर्धमान	९	बृ.	६	३०	वि	५४	१६	शु	३९	४७	कौ	६	३०	२९	२	२६	६	८	वृश्चि ३७/५४	३ ५ ३७ ६	५७ ०	बिच्छुड़ा३७/५४उप.,तिलकजयं. Bव्रतंसर्वे,चातुर्मास,प्रारंभ
९९	२४	राक्षसः	१०	शु.	१०	३३	अ	६०	०	शु	४०	५५	ग	१०	३३	२६	३	२५	७	९	वृश्चिक	३ ६ ३४ ८	५७ ०१	भ.४२/५१ उप., आशा१०व्रतं,मन्वादि,गुप्तनवरात्रपूर्ण पारणा
१००	२५	अमृतः	११	श.	१५	९	अ	०	२४	ब्र	४२	२१	वि	१५	९	२३	३	२५	८	१०	वृश्चिक	३ ७ ३१ ११	५७ २	भ.१५/९ या.,मृगेभौम१३/४८ग४१/४७,मार्गीपुर्नवसुबुध५५/१ग.६६/१३ देवशयनी११ B
१०१	२६	काणः	१२	सु.	२०	११	ज्ये	६	५०	ऐं	४४	२	बा	२०	११	१९	४	२४	९	११	धनु ६/५०	३ ८ २८ १४	५७ ३	बिच्छुड़ा६/५० या.,प्रदोष,भगआदित्य१२व्रतं,गोपद्मव्रतं,हरिवासराऽभाव
१०२	२७	लुंबक	१३	चं.	२५	३	मू	१३	१२	वै	४५	१३	तै	२५	३	१६	५	२३	१०	१२	धनु	३ ९ २५ १८	५७ ४	
१०३	२८	मैत्रः	१४	मं.	२९	२०	पू	१९	७	वि	४६	५	व	२९	२०	१३	५	२३	११	१३	मकर ३५/३३	३ १० २२ २३	५७ ५	भ.२६/२० उप.,उफायांशुक्र६/४२ग.५/११ जैनचातुर्मासप्रा.
१०४	२९	वज्रः	१५	बु.	३२	५२	उ	२४	१४	प्री	४६	१४	वि	१	६	१०	६	२२	१२	१४	मकर	३ ११ १९ २९	५७ ६	भ. १/६ या.,पुक्ष४गुरु४/४६ग.१३/१६ मन्वादि,गुरुपूर्णिमा,व्यासपूजा,सायंपवन C
																								C परीक्षण,शिवशयनोत्सव,कोकिलाव्रतं,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,बुधमार्गी उदय गुरु अस्त प.,वक्रीशनि



आषाढ़ शुक्ला ८ बुध गण ९७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	३	४	११	१०	४
२१	१७	११	२०	१५	६	६
२	३४	४७	४	१	१७	१७
७	३९	२	३५	१८	२०	२०
४२	३७	१३	६४	५	३	३
४०	६	७	४१	३७	११	११
	मा.			+		
रोहि४	आर्द्रा४	पुष्य३	पूफा३	उभा४	धनि४	मघा२
पवन	सौम्य	जल	जल	सौम्य	अमृत	अमृत

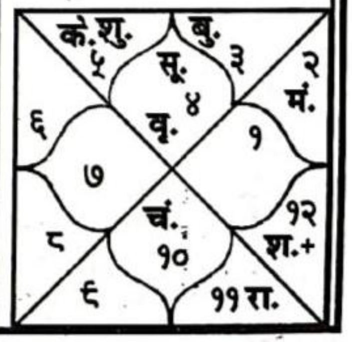
आषाढ़ शुक्लपक्षः३शुक्र कर्केऽर्क प्रवेशः। वारात् ५दुर्भिक्षः। नक्षत्रात् ६ खर्प्परयोग,उपद्रवः। वारनाम मिश्रा,पशुसुखी। नक्षत्र नाम घोरा, शूद्रसुखी। संक्रांति काल पूर्वाण्हे,विप्रराजा सुखी। पूर्वे मुख,नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। गरकर्णे बैठी,सम। हस्ती वाहन,गर्दभ उपवाहन, श्रीप्राप्ति फल। रक्तवस्त्र,धनुष आयुध,लोहपात्र,पय भोजन,गौरोचन लेपन,मृगजाति,बिल्वपुष्प,मुकुट भूषण,श्वेत कंचुकी,प्रौढ़ा अवस्था, वायव्य मुख,पद्मवाद्य,दुर्मुखी अवस्था। हस्ते कृष्णफल मृत्युदायी। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे,सुभिक्ष,मंदी। मुहूर्ता३०स्थिरता। संक्रांति पुण्य स्व दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पश्चिमे।

आषाढ शुक्ला १५ बुध गण १०४ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	३	४	११	१०	४
२५	२४	१३	२७	१४	५	५
५७	३५	१८	३१	२१	५५	५५
३२	३	५८	४१	५७	४	४
४१	८९	१३	५८	५	३	३
४७	१३	७	११	३७	११	११
	मा.			+		
मृग१	पुन.२	पुष्य.३	उफा१	उभा४	धनि.४	मघा२
दहन	नीर	जल	नीर	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,वक्री शनि गुरु अस्त पश्चिमे



श्रावण कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः १९४८ (लघुगण १०५से११८)

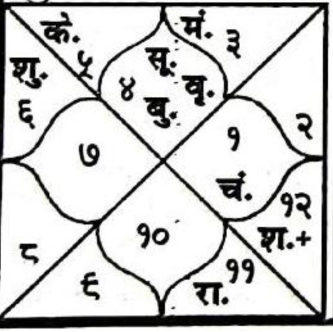
दिनांक ३० जुलाई से १२ अगस्त २०२६ई.तक। वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, उत्तरगोलेः। (आषाढ़ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१०५	३०	ध्वजः	१	वृ.	३५	१९	श्र	२८	२०	आ	४५	३१	बा	४	५	३३/७	६/७	७/२१	१३	१५	कुंभ ४६/६६	३ १२ १६ ३९	५७ ७	पंचक४६/६६उप.,हिंडोलाप्रा.,
१०६	३१	प्रजापतिः	२	शु.	३६	३२	ध	३१	१२	सौ	४३	५१	तै	५	५५	४	७	२१	१४	१६	कुंभ	३ १३ १३ ४६	५७ ८	कन्यायांशुक्र ३२/५६ अशून्यशयनव्रत२प्रा.चंद्रोदयव्यापिनी
१०७	१	आनंदः	३	श.	३६	२२	श	३२	५१	शो	४१	९	व	६	२७	१	८	२०	१५	१७	कुंभ	३ १४ १० ५४	५७ ९	भ.२६/७उप.३६/३या.,कर्केबुध३६/३,अगस्त३१दिन,
१०८	२	चरः	४	सू.	३५	७	पू	३३	१४	अ	३७	२७	ब	५	४४	३२/५८	८	२०	१६	१८	मीन १८/८	३ १५ ८ ३	५७ १०	चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय६/२६बजे।
१०९	३	गदः	५	चं.	३२	३७	उ	३२	३०	सु	३२	५०	कौ	३	५२	५४	९	१९	१७	१९	मीन	३ १६ ५ १२	५७ ११	आश्लेषारवि३६/२८,सू.चं.चं.स्त्री.पु.वाहनजंबुक,उपवाहनडेडरो बहुवर्षाA
११०	४	शुभः	६	मं.	२९	४	रे	३०	४५	धृ	२७	२१	ग	०	५०	५१	१०	१८	१८	२०	मेष ३०/४५	३ १७ २ २८	५७ १२	भ.२६/४उप.६६/५०या.,पंचक३०/४५या.
१११	५	मृत्युः	७	बु.	२४	३६	अ	२८	८	शू	२१	११	ब	२४	३६	५१	१०	१८	१९	२१	मेष	३ १७ ५९ ४०	५७ १३	Aपुक्षेबुध५३/१ग८६/१,मिथुनेभौम४७/५१नागपंचमी(मरु.),
११२	६	पद्मः	८	वृ.	१९	२६	भ	२४	५०	गं	१४	२६	कौ	१९	२६	४८	१०	१८	२०	२२	वृषभ ३५/५३	३ १८ ५६ ५४	५७ १५	
११३	७	छत्रः	९	शु	१३	४५	कृ	२१	३	वृ	७/१५	५६/४६	ग	१३	४५	४५	११	१७	२१	२३	वृषभ	३ १९ ५४ १०	५७ १६	भ.४०/४४उप.,
११४	८	श्रीवत्सः	१०	श.	७	४३	रो	१६	५६	व्या	५२	९	वि	७	४३	४२	१२	१६	२२	२४	मिथुन ४४/५४	३ २० ५१ २७	५७ १७	भ.७/४३या.,दशामाता व्रतं,
११५	९	सौम्यः	११	सू.	१	३२	मृ	१२	५०	ह	४४	२९	बा	१	३२	३९	१२	१६	२३	२५	मिथुन	३ २१ ४८ ४६	५७ १९	वक्रीउभा३शनि१/१६ग३/४४ कामिका११व्रतंसर्वे।
०	०	०	१२	सू.	५५	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
११६	१०	कालः	१३	चं.	४९	३५	आ	८	४७	व	३७	५	ग	२२	३१	३६	१२	१४	२४	२६	कर्क ५०/५६	३ २२ ४६ ६	५७ २०	भ.४६/३५उप.,हस्तेशुक्र५१/३५ग५३/६प्रदोष
११७	११	सुस्थिरः	१४	मं.	४४	८	पु	५	४	सि	२९	५६	वि	१६	५२	३२	१३	१३	२५	२७	कर्क	३ २३ ४३ २७	५७ २१	भ.१६/५२या.,
११८	१२	मातंगः	३०	बु.	३६	२०	पु	१/५२	५६/२०	व्य	२३	२२	च	११	४४	२६	१३	१३	२६	२८	सिंह ५६/२०	३ २४ ४० ४९	५७ २३	दैवकार्येऽमा.,हरियालीअमावस,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त,शनिवक्र

गुरु अस्त पश्चिमे



श्रावण कृष्णा ८ गुरु
गण ११२, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ १ ३१ ५२	३ ६ २२ २	३ १५ ५ ८	५ ५ १७ १२	११ १३ ३६ ५८	१० ५ २९ ३८	४ ५ २९ ३८
४१ ४७	८६ १	१३ १६	५८ ११	५ ३७ +	३ ११	३ ११
मृग.३	पुष्य.१	पुष्य.४	उफा.३	उभा.४	धनि.४	मघा.२
दहन	जल	जल	नीर	सौम्य	अमृत	अमृत

महिमा बढ़े गुरुदेव की,पांच गुरु के वार। कहीं चाणक्य कहीं द्रोण है ,कहीं कृष्ण गुरु साकार।।१।। वद सावन दस रोहिणी,तब विरला जीवे कोय। सुदी ग्यारस मूल सूं,भूकम्पन तब होय।।२।। अश्वनी कृत्ति चित्रिका,स्वाति विशाखा मेघ। ओगुण सारा गले,फट जावे तब मेघ। ।३।। सावन वदी जो सप्तमी,अश्वनी रेल करंत। हो एकादशी मृगसिरा ,अणचिंत्यों काल पड़तं।।४।। श्रावण शुक्ला सप्तमी,स्वातो ऊगे सूर। डूंगर ऊपर घर करो,नदियों चलसी पूर।।५।। सावन सुदी दशमी शनि, सिंह संक्रांत में देख। बहु वर्षे धन धान्य हो,इण में मीन न मेष।।६।। सावण में सुरयो भलौ,भादरवे पुरवाई। आसोजे पश्चिम पवन,कार्तिक साख सवाई।।७।। उत्तरादी आंधी दिखे,पूरब उत्तर वाय। न्युत्या जीमै पावणां,बरस्या बिन न जाय।।८।। उत्तरादी कांठल दिखे, दक्षिण वाजै वाय। पण ऊफणंता दूध ज्यूं ,आई घटा उड़ाय।।८।।

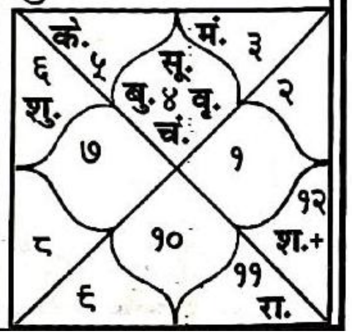
श्रावण कृष्णा ३० बुध
गण ११८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ ५ ४२ ३८	३ १४ ५८ ६	३ १६ २६ ४७	५ ११ ० १८	११ १३ ८ ५०	१० ५ १० ३३	४ ५ १० ३३
४१ ४७	८६ १	१३ १६	५२ ५३	३ ४४ +	३ ११	३ ११
मृग.४	पुष्य.४	पुष्य.४	हस्त.१	उभा.३	धनि.४	मघा.२
दहन	जल	जल	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त,शनिवक्र

गुरु अस्त पश्चिमे



श्रावण शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण ११९से१३४)

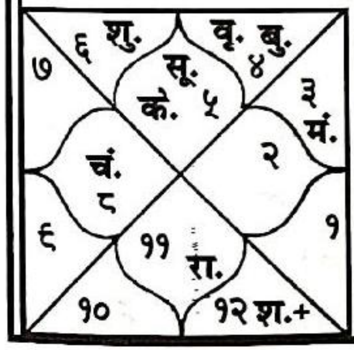
	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
११९	१३	मूसल	१.	वृ.	३५	२०	म	५७	४२	व	१७	२०	किं	७	२०	३२/२६	६/१४	७/१२	२७	२९	सिंह	३ २५ ३८ १३	५७ २५
१२०	१४	सिद्धिः	२.	शु.	३२	१७	पू	५७	४	प	१२	५	बा	३	४८	२३	१४	१२	२८	३०	सिंह	३ २६ ३५ ३८	५७ २६
१२१	१५	उत्पातः	३.	श.	३०	२५	उ	५७	३९	शि	७	४०	तै	१	२१	२०	१४	१०	२९	१	कन्या १२/१२	३ २७ ३३ ४	५७ २७
१२२	१६	मानसः	४.	सू.	२९	४५	ह	५९	२७	सि	४	१४	व	०	५	१७	१५	९	३०	२	कन्या	३ २८ ३० ३१	५७ २८
१२३	१७	मुद्गर	५.	चं.	३०	२२	चि	६०	०	सा	१	४७	ब	०	३	१४	१५	९	३१	३	तुला ३०/५९	३ २९ २८ ३	५७ ३१
१२४	१८	ध्वांक्षः	६.	मं.	३२	१६	चि	२	३१	शु	०/२०	५६/२२	कौ	१	१९	११	१६	८	१	४	तुला	४ ० २५ ३६	५७ ३२
१२५	१९	धूम्राः	७.	बु.	३५	२२	स्वा	६	४६	ब्र	६०	०	ग	३	४९	७	१७	७	२	५	वृश्चि. ५५/४१	४ १ २३ ८	५७ ३३
१२६	२०	प्रवर्षमान	८.	वृ.	३९	२५	वि	१२	०	ब्र	०	१३	वि	७	२४	४	१७	७	३	६	वृश्चिक	४ २ २० ४४	५७ ३५
१२७	२१	राक्षसः	९.	शु.	४४	८	अ	१८	०	ऐं	१	१३	बा	११	४६	०	१७	५	४	७	वृश्चिक	४ ३ १८ २०	५७ ३७
१२८	२२	मूसल	१०	श.	४९	९	ज्ये	२४	२५	वै	२	३४	तै	१६	३८	३१/५८	१७	५	५	८	धनु २४/२५	४ ४ १५ ५७	५७ ३८
१२९	२३	सिद्धिः	११	सू.	५४	६	मू	३०	५०	वि	४	६	व	२१	३७	५४	१८	४	६	९	धनु	४ ५ १३ ३५	५७ ४०
१३०	२४	उत्पात	१२	चं.	५८	३४	पू	३६	५२	प्री	५	२६	ब	२६	२०	५०	१८	२	७	१०	मकर ५३/१२	४ ६ ११ १८	५७ ४२
१३१	२५	मानस	१३	मं.	६०	०	उ	४२	१३	आ	६	२७	कौ	३०	२४	४६	१९	१	८	११	मकर	४ ७ ८ ५८	५७ ४४
१३२	२६	छत्रः	१३	बु.	२	१४	श्र	४६	३४	सौ	६	४७	तै	२	१४	४२	२०	०	९	१२	मकर	४ ८ ६ ४४	५७ ४६
१३३	२७	श्रीवत्सः	१४	वृ.	४	४८	ध	४९	४४	शो	६	१३	व	४	४८	३८	२०	०	१०	१३	कुंभ १८/९	४ ९ ४ ३१	५७ ४८
१३४	२८	सौम्यः	१५	शु.	६	७	श	५१	४०	अ	४	४२	ब	६	७	३४	२१	६/५६	११	१४	कुंभ	४ १० २ १८	५७ ५०

दिनांक १३ अगस्त से २८ अगस्त २०२६ ई.तक। वर्षा/शरदऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:,उत्तरगोलेः।
(श्रावण शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

आद्रायांभौम३२/२०ग३३/३५,आश्लेषायांगुरु५६/४४ग१२/४१,आश्लेषायांबुध११/२ग१०६/४६A
बुधास्तपू.५६/११,गुरुउदय४६/१३ चंद्रोदयमु.३०स्थिरता, Aनक्तव्रतारंभः
स्वतंत्रतादि.८०वां,रविलावल३मुस.सुकृत३व्रत,श्रावणीतीज,मधुश्रवा B
भ.०/५ उप.३६/४५या.,वरदचतुर्थी,दुर्वागणपतिव्रतं,मंचावासाव्रतप्रा., C
मघायांसिंहेऽर्कः३३/१६,सं.चं.सू.स्त्री.स्त्री.वाहनचातक,उपवाहनहाथी बहुगर्मी D
श्रीकल्किजयंति,वर्ण६,ऋग्वेदीय ,मंगलागौरीव्रतं Bतृतीयागुर्जर,स्वर्णगौरी३व्रतं,
भ.३५/२३ उप.,बिच्छुड़ा५५/४१उप.शीतलासप्तमी पूजनं,गोस्वामी तुलसीदासजयं.
भ.७/२४या.,मघायांसिंहेबुध३६/१६ग१०६/१७ दुर्गाष्टमी,
Dनाग५,नागदंष्ट्व्रतं,रोटकव्रत, F राठौड़३८६वींचतुर्दशीजन्मः।
बिच्छुड़ा४२/२३या.कन्यायांभानुः२४/२५,शिरदऋतुप्रारंभः
भ.२१/३७उप.५४/६या.,पवित्रा११व्रतं स्मार्ता Cहस्तउपाकर्म वीरपुली
पवित्रा११व्रतं वैष्णवा, त्वष्टाआदित्य१२व्रतं,पवित्रारोपणं, E
चित्रायांशुक्र५६/१२ग१२/४४ प्रदोष, E दधिव्रतंप्रा.(दधिभक्षणत्यागःभाद्र.शु.१२तक)
बारहवफात Gनारियल१५,वेदारंभश्रावणीउपाकर्मयजु,ऋग्,अथर्व.,रक्षाबंधन
भ.४/४८उप.३५/२६या.,पूफायांबुध४७/३१ग१०७/५१ पंचक१८/६उप.वीरदुर्गादास F
आश्लेषा२गुरु५४/३७ग१२/१२ पूर्णिमाव्रतं, हयग्रीवजयं.तैत्तरीय,अमरनाथयात्रा, G

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे,गुरुउदय
अगस्तास्त,शनिवक्री



श्रावण शुक्ला ८ गुरु
गण १२६, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ १० ५६ ५२	३ २९ ८ १२	३ १८ ६ ५७	५ १८ ३ २३	११ १२ ३८ ५१	१० ४ ४५ ७	४ ४ ४५ ७
३८ ४५	१०६ ४६	१२ ४१	५२ ५३	३ ४४ +	३ ११	३ ११
आर्द्रा२	श्ले.४	श्ले.१	हस्त३	उभा३	धनि.४	मघा२
सौम्य	अमृत	अमृत	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

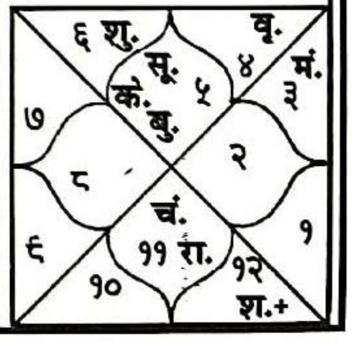
श्रावण शुक्ला५चंद्र सिंहेऽर्क प्रवेशः। वारात् ४ दुर्भिक्षः। नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्षः। वारनाम ध्वांक्षी,वैश्य सुखी। नक्षत्र नाम मंदाकिनी,नृपसुखी। संक्रांति काल प्रदोषेः,पिशाच सुखी। पश्चिमे मुख,अग्निकोणे दृष्टिः, उत्तरे गमनं। बालव कर्णे बैठी,समफल। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन, भय। पीतवस्त्र,गदा आयुध,चांदी पात्र,खीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी,कुमारी अवस्था,दक्षिण मुख, भेरीवाद्य,भोगाऽवस्था। हस्ते पीतफल,लक्ष्मी प्राप्तिः। संक्रांति निवासः पर्वते,कुंभकार गृहे,अल्पवर्षा,दुष्काल। मुहूर्ता३०स्थिरता। संक्रांति पुण्यं स्वदिने तृतीय यामे पुण्यकालः। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पश्चिमे।

श्रावण शुक्ल.१५ शुक्र
गण १३४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ १६ ६ ५६	४ १३ ४२ २६	३ १९ ४८ २८	५ २३ ५४ ४४	११ १२ ८ ५३	१० ४ १९ ४०	४ ४ १९ ४०
३८ ४५	१०७ ५१	१२ ४१	१७ १५	३ ४४ +	३ ११	३ ११
आर्द्रा३	पूफा१	श्ले.१	चित्रा२	उभा३	धनि.४	मघा२
सौम्य	जल	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,बुधास्तपू.
गुरुउदय,शनि वक्री



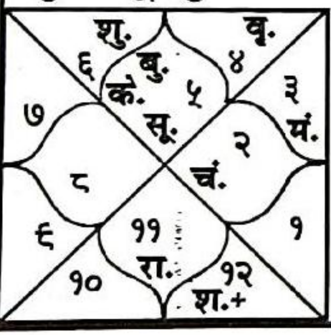
भाद्रपद कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः १९४८(लघुगण १३५से१४८)

दिनांक २९ अगस्त से ११ सितम्बर २०२६ई.तक। शरदऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, उत्तरगोलेः। (श्रावण कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१३५	२९	काल	१	श.	६	११	पू	५२	२१	सु	३/११	४८/४०	कौ	६	११	३१/३०	६/२१	६/५८	१२	१५	मीन ३७/१०	४ ११ ० ११	५७ ५१	Aपंचक५/१७या.,बहुलाचौथचंद्रोदय ६ बजे,संकटचतुर्थीव्र,कज्जली३,चतुर्थीयुक्ता
१३६	३०	सुस्थिरः	२	सू.	५	१	उ	५१	५२	शू	५४	११	ग	५	१	३०	२१	५८	१३	१६	मीन	४ ११ ५८ ३	५७ ५४	भ.३३/४६उप.,
१३७	३१	मातंगः	३	चं.	२	३७	रे	५०	१७	गं	४८	५१	वि	२	३७	२७	२२	५६	१४	१७	मेष ५०/१७	४ १२ ५६ ५६	५७ ५६	भ.२/३७या.,पूफायांरवि२४/५५,सं.सू.सू.स्त्री.पु.वाहनखर,उपवाहनडेडरोंबहुवर्षाA
०	०	०	४	चं.	५९	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
१३८	१	अमृत	५	मं.	५४	४९	अ	४७	५०	वृ	४२	४७	कौ	२९	५९	२३	२१	५५	१५	१८	मेष	४ १३ ५३ ५३	५७ ५७	ज्वालामुखी४७/५०उप.५४/४६या.,सितम्बर३०दिन,नागपंचमी,
१३९	२	काणः	६	बु.	४९	४५	भ	४४	४१	ध्रु	३६	७	ग	२२	१७	१९	२२	५४	१६	१९	वृषभ ५६/४६	४ १४ ५१ ५०	५७ ५८	भ.४६/४५उप., चंद्रषष्ठी(ऊबछठ)चंद्रोदय१०/३८बजे हलधर६
१४०	३	लुंबक	७	वृ.	४४	९	कृ	४१	१	व्या	२८	५८	वि	१९	५७	१५	२३	५३	१७	२०	वृषभ	४ १५ ४९ ५०	५७ ५९	भ.१६/५७या.,पुनर्वसुभौम ०/४४ग३५/५९,श्रीकृष्णजन्माष्टमीरोहिणीयुतचंद्रादय१२/११बजे
१४१	४	मैत्र	८	शु.	३८	१२	रो	३६	५९	ह	२१	३०	बा	११	१०	११	२४	५२	१८	२१	वृषभ	४ १६ ४७ ५२	५८ १	उफायांबुध१२/३२ग१००/५५ श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतवैष्णवा चंद्रोदय१२/५७बजे,मन्वादि
१४२	५	वज्र	९	श.	३२	५	मृ	३२	५०	व	१३	५३	तै	५	८	७	२४	५०	१९	२२	मिथुन ४/५४	४ १७ ४५ ५६	५८ ४	भ.५९/५उप.,सिंहस्थसूर्ये,गोगा९,शिक्षक दिवस
१४३	६	ध्वांक्षः	१०	सू.	२६	५	आ	२८	४३	सि	६/१०	४८/४०	वि	२६	५	३	२४	५०	२०	२३	मिथुन	४ १८ ४४ ३	५८ ६	भ.२९/५या.,अगस्त्योदयः४३/४३,कन्यायांबुध११/२५
१४४	७	धूम्राः	११	चं.	२०	१५	पु	२४	५७	व	५१	२७	बा	२०	१५	३०/५९	२५	४९	२१	२४	कर्क १०/५३	४ १९ ४२ १०	५८ ८	अजा११ व्रतंसर्वे
१४५	८	प्रवर्धमान	१२	मं.	१४	५०	पु	२१	३६	प	४४	४२	तै	१४	५०	५५	२५	४७	२२	२५	कर्क	४ २० ४० २०	५८ १०	वछबारस,वत्सपूजन,प्रदोष,पर्युषणपर्व प्रा.जैनचतुर्थीपक्षे
१४६	९	राक्षस	१३	बु.	१०	२	श्ले	१८	५४	शि	३८	३०	व	१०	२	५१	२६	४६	२३	२६	सिंह १८/५४	४ २१ ३८ ३२	५८ १३	भ.१०/२उप.३८/२या.,जैनपर्यूषणपर्वप्रा.पंचमीपक्षे
१४७	१०	मूसल	१४	वृ.	६	१	म	१७	२	सि	३३	२	श	६	१	४७	२७	४५	२४	२७	सिंह	४ २२ ३६ ४७	५८ १५	कुशाग्रहणीअमा.६/१ उप.पिठोरी३०सायं, अन्वाधान,पितृकार्येऽमा.,
१४८	११	सिद्धिः	३०	शु.	२	४०	पू	१६	११	सा	२८	२४	ना	२	४०	४३	२६	४४	२५	२८	कन्या ३१/१५	४ २३ ३५ ५	५८ १६	दैवकार्येऽमा,श्रीशक्तिपूजा,मातृ३०,कुशाग्रहणीअमा २/४० या.,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त,शनिवक्र बुधास्तपूर्वे,गुरु उदय



भाद्रपद कृष्णा.८ शुक्र गण १४१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २० ३५ ३२	४ २६ १७ २९	३ २१ १४ २०	५ २५ ५५ ३४	११ ११ ४२ ३९	१० ३ ५७ २४	४ ३ ५७ २४
३५ ५९	१०७ ५१	१२ १२	१७ १५	३ ४४ +	३ ११	३ ११
पुन.१	पूफा.४	श्ले.२	चित्रा१	उभा.३	धनि.४	मघा१
नीर	जल	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

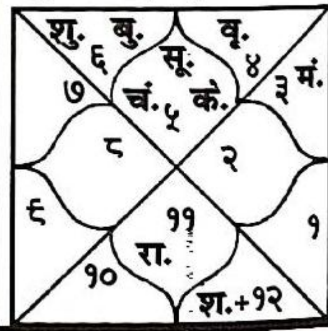
शेष फण कंपन करें,पाताल लोक भूकंप। पांच शनि विस्फोट हो, ईशान में हड़कंप।।१।। शुक्री अमावस भादवे,बादल फटता देख। बुध शुक्रयुत कारणे,मही एकार्णव लेख।।२।। भादरवे जुग रेलसी छठे अनुराधा होय। उबड़ खाबड़ बोय दो,अन्न घणेरों होय।।३।। ऊगा अगस्त मेह मस्त,पर धार खण्डत न होय। बुध उदय भादो हुवे,दस भादवों तब जोय।।४।। चौथ चंद्र चित्रा पड़ो,भादों सुदी सुभिक्ष। वर्षे तो बहु बाढ़ नद,छठ अनुराधा रिक्ष।।५।। भादो शनि आशोज रवि,कार्तिक मंगल पांच। फिरत चक्र ज्यों देश सब ,जग में हाहाकार।।६।। मकोड़ा निकले घणां,धरती लागे लेंण। कहीं वर्षा कहीं काल है,बढ़े देणदारों की लेण।।७।। उद्दई ऊठै घणीं,कंसारी चमचाय। रातूं बोले चिपकली,इन्द्र महोत्सव थाय।।८।।

भाद्रपद कृष्णा३० शुक्र गण १४८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २४ ४७ ३०	५ ८ ५ २९	३ २२ ३९ ४८	५ २७ ५६ २३	११ ११ १९ २५	१० ३ ३५ ९	४ ३ ३५ ९
३५ ५९	१०० ५५	१२ १२	१७ १५	३ ४४ +	३ ११	३ ११
पुन.२	उफा४	श्ले.२	चित्रा२	उभा.३	धनि.४	मघा१
नीर	नीर	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

अगस्त्योदयः,शनिवक्र बुधास्तपूर्वे,गुरु उदय



भाद्रपद शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८(लघुगण १४९से१६३)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१४९	१२	उत्पात	१.	श.	०	४७	उ	१६	२८	शु	२४	४२	ब	०	४७	३०/३६	६/२७	६/४३	२६	२९	कन्या	४ २४ ३३ २२	५८ १८
१५०	१३	मानसः	२.	सू.	०	१०	ह	१७	५८	शु	२१	५९	कौ	०	१०	३५	२८	४२	२७	१	तुला ४६/२१	४ २५ ३१ ४३	५८ २३
१५१	१४	मुद्गर	३.	चं.	०	५०	चि	२०	४४	ब्र	२०	१७	ग	०	५०	३१	२८	४०	२८	२	तुला	४ २६ ३० ८	५८ २४
१५२	१५	ध्वजः	४.	मं.	२	४७	स्वा	२४	४३	ऐं	१९	३३	वि	२	४७	२८	२८	४०	२९	३	तुला	४ २७ २८ ३२	५८ २५
१५३	१६	प्रजापति	५.	बु.	५	५४	वि	२९	४५	वै	१९	१७	बा	५	५४	२४	२९	३९	३०	४	वृश्चि १३/२६	४ २८ २७ २	५८ २७
१५४	१७	आनंदः	६.	वृ.	१०	१	अ	३५	३६	वि	२०	३	तै	१०	१	२०	२९	३७	३१	५	वृश्चिक	४ २९ २५ २७	५८ ३०
१५५	१८	चरः	७.	शु.	१४	४८	ज्ये	४१	५७	प्री	२१	१८	व	१४	४८	१६	३०	३६	१	६	धनु ४१/५७	५ ० २३ ५९	५८ ३३
१५६	१९	गदः	८.	श.	१९	५३	मू	४८	२४	आ	२२	४५	ब	१९	५३	१२	३१	३५	२	७	धनु	५ १ २२ ३४	५८ ३५
१५७	२०	शुभः	९.	सू.	२४	५६	पू	५४	३४	सौ	२४	७	कौ	२४	५६	८	३१	३४	३	८	धनु	५ २ २१ १०	५८ ३७
१५८	२१	मृत्यु	१०	चं.	२९	३१	उ	६०	०	शो	२५	८	ग	२९	३१	४	३१	३३	४	९	मकर १०/५६	५ ३ १९ ४९	५८ ३९
१५९	२२	मानसः	११	मं.	३३	१७	उ	०	५	अ	२५	३२	व	१	२४	०	३२	३२	५	१०	मकर	५ ४ १८ २९	५८ ४०
१६०	२३	छत्रः	१२	बु.	३५	५९	श्र	४	४१	सु	२५	८	ब	४	३८	२६/५६	३२	३०	६	११	कुंभ ३६/२५	५ ५ १७ १३	५८ ४२
१६१	२४	श्रीवत्स	१३	वृ.	३७	२८	ध	८	९	धृ	२३	४८	कौ	६	४३	५२	३३	२९	७	१२	कुंभ	५ ६ १५ ५७	५८ ४६
१६२	२५	सौम्य	१४	शु.	३७	३८	श	१०	२२	शू	२१	२८	ग	७	३३	४८	३३	२८	८	१३	मीन ५६/६	५ ७ १४ ४५	५८ ४८
१६३	२६	कालः	१५	श.	३६	३४	पू	११	२१	गं	१७	५७	वि	७	६	४४	३३	२७	९	१४	मीन	५ ८ १३ ३५	५८ ५०

दिनांक १२सितम्बर से २६ सितम्बर २०२६ई.तक।
शरद्ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तर/दक्षिणगोलेः।
(भाद्रपद शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

हस्तेबुध५६ग १०४/१२ चंद्रोदयमु.३०स्थिरता A हस्तरक्षाबंधन सामवेदीउपाकर्म,
श्रीरामदेवबाबारी२, रविलाखरमा.४मुस.,वराहजयं.,नक्तव्रतोद्यापन A
भ.३१/४८उप.,उफायांरवि१०/८सं.सू.सू.स्त्री.स्त्री.वाहनमेंडक,उपवाहनहाथी, B
भ.२/४७या.,धनेष्ठा३राहुमघा१केतु जैनसंवत्सरी पर्व,ऋषिपंचमी,अंगीराजंय., D
बिच्छुड़ा१३/२६ उप. ललिता६व्रतं, संवत्सरीपूर्ण(जैन),पंचमीपक्षे
कन्यायांऽर्कः३६/२५ सूर्यषष्ठी,स्कन्ददर्शनं, बलदेवव्रतं, D गर्गजयं.,दिगंबरपर्युषणपर्वप्रा.
भ.१४/४८उप.४७/२१या.,बुधोदयप.०/४६,तुलेशुक्र६/४०,बिच्छुड़ा४१/५७या महालक्ष्मीव्रतं.प्रा. E
चित्रायांबुध४/४३ग८१/७,कर्केभौम४०/५२, राधा८, दूर्वाष्टमी,गौरीगणपतिपू.,
नवमीव्रतं, B बहुगर्मी। आश्लेषा३गुरु१७/२६ग११/१४,मन्वादि, सिद्धिविनायकव्रत C
वक्रीशुक्र३/३६शु.५/३१।०/८ ग१३/४४ दशावताव्र.,तेजा१०,खेजड़लीब.दि.२९६वां,महालक्ष्मीव्रतपूर्ण
भ.१/२४उप.३३/३८या.,तुलेभानुः३८/५८,रविदक्षिणगोले,दिन-रातबराबर पद्मा११व्रतंसर्वे F
पंचक३६/२५उप. मौनव्रत्ता रंभः,श्रवण१२व्र.,वामनजयं E भागवतसप्ताहप्रा.
तुलेबुध४४/३३ प्रदोष C हरितालिकाव्र.हस्तिगौरीव्र.,राष्ट्रभाषादिवस
भ.३७/३८ उप.,पुक्षेभौम१४/११ ग३३/२६ अनन्त१४व्रतं F भागवतागोत्रिरात्रव्र.,देवझूलनी
भ.७/६ या.,कन्यायांशुक्र३१/४० पूर्णिमाश्राद्धः,प्रोष्ठपदी१५,फूलडोलचार G
G कोजागिरीव्रत.कुमारीणांसंध्यापू.,महालयश्राद्धारंभःप्रा.

गोचर ग्रहाः

बुधोदय पूर्वे,शनिवक्र
अगस्त्योदय



भाद्रपद शुक्ला८ शनि
गण १५६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	६	११	१०	४
२९	२१	२४	०	१०	३	३
३५	५५	१२	१४	४६	९	९
२९	२५	५७	२६	२७	४२	४२
३५	१०४	११	१७	३	३	३
५९	१२	१४	१५	४४ +	११	११
पुन.३	हस्त४	श्ले.३	चित्रा३	उभा३	धनि.३	मघा१
नीर	सौम्य	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

भाद्रपद शुक्लपक्षः६गुरु कन्यायांऽर्क प्रवेशः। वारात्४दुर्भिक्षः। नक्षत्रात्४दुर्भिक्षः। वार नाम मंदा,द्विजसुखी। नक्षत्रनाम मंदाकिनी,नृप सुखी। संक्रांति कालः,सायं राक्षस सुखीः। उत्तर मुख,अग्निकोणे दृष्टि,पूर्वे गमनं। गर कर्णे बैठी,सम। हस्तीवाहन,गर्दभ उपवाहन,श्रीप्राप्ति। रक्त वस्त्र,धनुष आयुध,लोहपात्र,पय भोजन,गौरोचन लेपन,मृगजाति, बिल्वपुष्प,मुकुट भूषण,श्वेत कंचुकी,प्रौढ़ा अवस्था,वायव्य मुख,पद्मवाद्य,दुर्मखी अवस्था। हस्ते रक्तफल,प्रजादुखी। संक्रांति निवास समुद्रे, मालाकार गृहे,सुभिक्ष। मुहूर्ता ३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं स्वदिने तृतीय यामे पुण्यकाल। वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पश्चिमे।

भाद्रपद शुक्ला १५ शनि
गण १६३, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	६	११	१०	४
३	१	२५	०	१०	२	२
४५	४१	३१	४	२०	४७	४७
३२	५९	४१	३६	१३	२७	२७
३३	८१	११	१२	३	३	३
२६	७	१४	४४ +	४४ +	११	११
पुन.४	चित्रा३	श्ले.३	चित्रा३	उभा३	धनि.३	मघा१
नीर	दहन	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

बुधोदयप.,शुक्रवक्री
अगस्त्योदय,शनिवक्री



आश्विन कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८(लघुगण १६४ से१७७)

दिनांक २७ सितम्बर से १०अक्टूम्बर २०२६ई.तक।

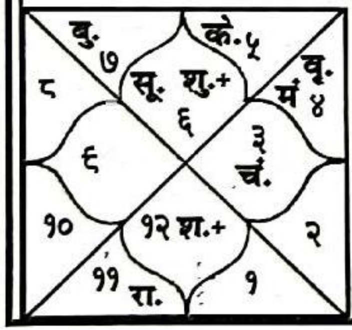
शरदृतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिण गोलेः। (भाद्रपद कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१६४	२७	सुस्थिर	१	सू.	३४	१६	उ	११	६	वृ	१३	४६	बा	५	२५	३६ ४०	६ ३४	६ २६	१०	१५	मीन	५ ९ १२ २८	५८ ५३	हस्तेरवि ४६ २५ सं.सू.चं.स्त्री.पु.वाहनमूषक,उपवाहनहाथीबहुगर्मी। प्रतिपदाश्राद्ध
१६५	२८	मातंग	२	चं.	३०	५५	रे	६	५४	ध्रु	८	३७	तै	२	३५	३६	३५	२५	११	१६	मेष ६ ५४	५ १० ११ २३	५८ ५५	भ.४७ ५६ उप.,पंचक ६ ५४या. द्वितीयाश्राद्ध A ,अंगारक४व्रतं चंद्रोदय ८ ५ बजे
१६६	२९	अमृत	३	मं.	२६	४०	अ	७	३८	व्या	२ ४०	५६ ४	वि	२६	४०	३२	३५	२३	१२	१७	मेष	५ ११ १० २०	५८ ५७	भ.३६ ४०या.,स्वात्यांबुध ४० २४ग. ४४ २१ तृतीयाश्राद्ध भरणीनक्षत्रेश्राद्धगयाश्राद्धवत् A
१६७	३०	काण	४	बु.	२१	४१	भ	४	३८	व	४८	५७	बा	२१	४१	२६	३५	२३	१३	१८	वृषभ १५ ४४	५ १२ ९ १९	५९ ०	चतुर्थीश्राद्ध,बैंकअर्द्धलेखाबंदी
१६८	१	तुंबक	५	वृ.	१६	११	कृ	१ ४	५७ ६	सि	४१	३०	तै	१६	११	२५	३५	२१	१४	१९	वृषभ	५ १३ ८ २२	५९ २	वक्रीउभा२शनि २३ ३६ ग ९ ४० पंचमीश्राद्ध १६ ११या.परं,अक्टू.३१दिन,षष्ठीश्राद्ध,चंद्रषष्ठी
१६९	२	मानस	६	शु.	१०	१६	मृ	५२	५८	व्य	३३	५६	व	१०	१६	२१	३६	२०	१५	२०	मिथुन ३५ २	५ १४ ७ ३५	५९ ४	भ. १० १६उप. ३७ ३३या.,आश्लेषा४गुरु ४ १७ग ६ ७ सप्तमीश्राद्ध १० १६उप. B
१७०	३	मुद्गर	७	श.	४	२७	आ	४८	५१	व	२६	६	ब	४	२७	१७	३७	१९	१६	२१	मिथुन	५ १५ ६ ३०	५९ ६	अष्टमीश्राद्धः ४ २७उप. महालक्ष्मीव्रतं चंद्रोदय ११ ५७बजेपूर्ण,अशोकाष्टमी,C
०	०	०	८	श.	५८	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	B दशरथललिताव्रतं,गांधी व शास्त्रीजयंति
१७१	४	ध्वज	९	सू.	५२	३२	पु	४४	५८	प	१८	२६	तै	२५	२४	१३	३६	१८	१७	२२	कर्क ३० ५६	५ १६ ५ ३७	५९ १०	मातुनवमीश्राद्ध,सौभाग्यमातृनवमी C सूर्यसप्तमी
१७२	५	प्रजापति	१०	चं.	४७	१२	पु	४१	२६	शि	११	७	व	१९	५२	६	३७	१७	१८	२३	कर्क	५ १७ ४ ५०	५९ १२	भ. १६ ५२उप. ४७ १२या.,ज्वालामुखी ४१ २६उप. ४७ १२या.,दशमीश्राद्ध
१७३	६	आनंद	११	मं.	४२	२६	श्ले	३८	३८	सि	४ ६	५७ ४४	ब	१४	५०	५	३८	१६	१९	२४	सिंह ३३ ५८	५ १८ ४ ३	५९ १४	एकादशीश्राद्ध,इन्दिरा११व्रतंस्मार्ता
१७४	७	चरः	१२	बु.	३८	३३	म	३६	३३	शु	५१	५७	कौ	१०	३१	१	३८	१४	२०	२५	सिंह	५ १९ ३ १८	५९ १६	सन्यासिनांमहालय,द्वादशीश्राद्ध,निम्बार्क१२व्रतं
१७५	८	गद	१३	वृ.	३५	३६	पू	३५	२७	शु	४७	२	ग	७	४	३६ ५७	३६	१३	२१	२६	कन्या ४६ ५७	५ २० २ ३५	५९ १९	भ. ३५ ३६ उप.,प्रदोष, कलियुगादि१३गोदानफल त्रयोदशीश्राद्ध,वायुसेनादिवस
१७६	९	शुभ	१४	शु.	३३	४३	उ	३३	२७	ब्र	४३	१	वि	४	४०	५३	३६	१३	२२	२७	कन्या	५ २१ १ ५५	५९ २१	भ. ४ ४०या., दुर्घटनाशस्त्रादिक अपमृत्यु,१४श्राद्धं
१७७	१०	मृत्यु	३०	श.	३२	५२	ह	३६	३६	ऐं	४०	०	च	३	१७	४६	४०	१२	२३	२८	कन्या	५ २२ १ १७	५९ २३	देवपितृकार्ये ऽमा,सर्वपितृश्राद्धं अज्ञाततिथिश्राद्धः, D

D संध्यापूजनपूर्ण,अमाहस्त गजच्छायापुण्यदः।

गोचर ग्रहाः

शनि वक्र,शुक्रवक्र
बुधोदय पूर्वे



आश्विन कृ.७+८ शनि गण १७०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ७ ३६ ३७	६ ६ ७ ३४	३ २६ ४८ २८	५ २८ ३५ २१	११ ६ ५७ ४३	१० २ २५ ११	४ २ २५ ११
३३ २६	४४ २१	६ ७	१२ ४४ +	१ २५ +	३ ११	३ ११
पुष्य२	स्वा.१	श्ले.४	चित्रा२	उभा२	धने.३	मघा२
जल	पवन	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

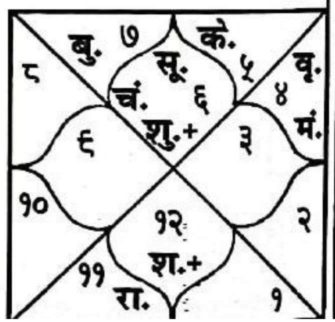
दुर्भिक्ष छत्रभंग भय,रविवार हो पांच। भ्रष्टाचार आतंक बढ़े,बाहुबली घर जांच।।१।। आसोज वद सुदी तीज,मंगलवारी देख। अग्निकाण्ड कण तेज हो,इण में मीन न मेख।।२।। अमा शनि आसोज की,खण्ड वृष्टि उत्पात। तुला संक्रांति रविवार की,गो ब्राह्मण पर घात।।३।। माखण ठरियों माट,छिणछिण आयो छाछ पर। गई मेघ की आश,वृद्ध हुआ मेघ माघजी।।४।। घोघिड़ा दर दपटे नहीं,मतवाला फिरता जोय। निश्चय दुर्भिक्ष जानिये,जोशी कहै सब कोय।।५।। कुत्ता रोवें अस्त समय,विघ्न नगर में होय। रोवे घर सम्मुखे,रोग शोक तब जोय।।६।। बादला रेणवासी रहे,उग्या अर्क जलहल घणा। माघियां पंडित कूड़ा पतड़ा रे,धन वर्षे एता गुणा।।७।। अर्ध बिम्ब आकाश में,इन्द्र धनुष को जोय। ग्वाल कहे सुन माघजी,अन्न न मोले कोय।।८।।

आश्विन कृष्णा३० शनि गण १७७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ११ ३३ ४२	६ १४ १८ ६	३ २७ ५२ १८	५ २७ ६ ७	११ ६ ४७ ४४	१० २ २ ५५	४ २ २ ५५
३३ २६	४४ २१	६ ७	१२ ४४ +	१ २५ +	३ ११	३ ११
पुष्य.३	स्वा.३	श्ले.४	चित्रा२	उभा३	धने.३	मघा१
जल	पवन	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शनि वक्र,शुक्रवक्र
बुधोदय पूर्वे



आश्विन शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८(लघुगण१७८ से १९३)

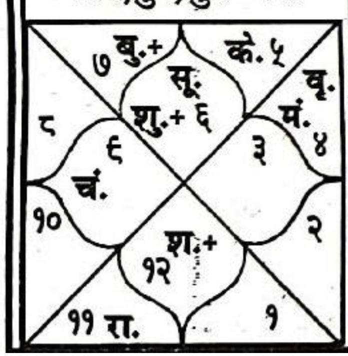
	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	सौं.	मध्यस्तान	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१७८	११	पद्म	१.	सू.	३३	३५	चि	३९	९	वै	३७	४६	किं	३	१३	३६/४५	६/४०	६/१०	२४	२६	तुला ७/५४	[illegible]	[illegible]
१७९	१२	छत्र	२.	चं.	३५	४०	स्वा	४२	५१	वि	३६	४३	बा	४	३७	४१	४१	६	२५	३०	तुला	[illegible]	[illegible]
१८०	१३	श्रीवत्स	३.	मं.	३८	५२	वि	४७	४०	प्री	३६	३१	तै	७	१६	४१	४१	६	२६	१	वृश्चि ३१/२७	[illegible]	[illegible]
१८१	१४	सौम्य	४.	बु.	४३	४	अ	५३	२१	आ	३७	४	व	१०	५८	३७	४१	६	२७	२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१८२	१५	काल	५.	वृ.	४७	५६	ज्ये	५९	३६	सौ	३८	९	ब	१५	३०	३३	४१	७	२८	३	धनु ५६/३६	[illegible]	[illegible]
१८३	१६	सुस्थिर	६.	शु.	५३	६	मू	६०	०	शो	३९	२६	कौ	२०	३१	३०	४२	६	२९	४	धनु	[illegible]	[illegible]
१८४	१७	मातंग	७.	श.	५८	१४	मू	६	३	अ	४०	४७	ग	२५	४०	२६	४३	५	३०	५	धनु	[illegible]	[illegible]
१८५	१८	अमृत	८.	सू.	६०	०	पू	१२	२०	सु	४१	५१	वि	३०	३४	२२	४४	४	३१	६	मकर ३६/४५	[illegible]	[illegible]
१८६	१९	मृत्यु	८.	चं.	२	५४	उ	१८	२	धृ	४२	२२	ब	२	५४	१८	४४	४	१	७	मकर	[illegible]	[illegible]
१८७	२०	लुंबक	९.	मं.	६	४६	श्र	२२	५२	शू	४२	८	कौ	६	४६	१४	४५	३	२	८	कुंभ ४४/४४	[illegible]	[illegible]
१८८	२१	मैत्र	१०.	बु.	९	३५	ध	२६	३७	गं	४०	५९	ग	९	३५	१०	४६	२	३	९	कुंभ	[illegible]	[illegible]
१८९	२२	वज्र	११.	वृ.	११	७	श	२९	८	वृ	३८	५१	वि	११	७	९	४७	५/५६	४	१०	कुंभ	[illegible]	[illegible]
१९०	२३	ध्वांक्ष	१२.	शु.	११	२१	पू	३०	२४	ध्रु	३५	४२	बा	११	२१	२	४७	५६	५	११	मीन १५/५	[illegible]	[illegible]
१९१	२४	धूम्रा	१३.	श.	१०	२१	उ	३०	२६	व्या	३१	३५	तै	१०	२१	३७/५६	४७	५६	६	१२	मीन	[illegible]	[illegible]
१९२	२५	प्रवर्धमान	१४.	सू.	८	७	रे	२९	२४	ह	२६	३३	व	८	७	५६	४७	५७	७	१३	मेष २६/२४	[illegible]	[illegible]
१९३	२६	राक्षसः	१५.	चं.	४	५०	अ	२७	२०	व	२०	४३	ब	४	५०	५३	४७	५७	८	१४	मेष	[illegible]	[illegible]

दिनांक ११अक्टूम्बर से २६ अक्टूम्बर २०२६ई.तक।
शरद्/हेमंत ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिणगोलेः।
(आश्विन शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

चित्रायांरवि १६/२८ सं.सू.सू.स्त्री.स्त्री.वाहनअश्व,उपवाहन हाथी बहुगर्मी।A
चंद्रोदयमु.१५तेजी, A शारदीयनवरात्रप्रारंभ,चि.+वै.अभिजिते,घटस्थापन B
स्वात्यां४बुध ११/५३ ग ५५/२६,बिच्छुड़ा ३१/२७उप,जमादिलावल५मु.
भ.१०/५८ उप.४३/४ या., B श्रीअग्रसेनजयं.५१४७वी,मातामह(नाना) F
वक्रीबुध ५६/११ बु.६/१७।२५/१५ ग ५५/२६,बिच्छुड़ा ५६/३६ या.उपांगललिता५व्रतंमध्यान्हे।
वक्रीस्वात्यां३बुध ४८/७ ग ६/२० F पार्वणश्राद्ध, अश्वनिराजनप्रा.
भ.५६/१४ उप., शुक्रास्तप.५/२,सरस्वतीअव्हानमूलभे C अवतार,आकाशदीपदानं
भ.३०/३४ या.,तुलेऽर्कः२/१६ सरस्वतीपूजनपूषाभे,होमाष्टमी, शस्त्रास्त्रपू.,भद्रकाली C
बुधास्तप.१४/११,आश्लेषायांभौम ६/३२ ग ३६/४३ दुर्गा९,उषाभेबलीदा,अश्वनिराजनपूर्ण,मन्वादि
पंचक ५४/४४ उप. विजया१०,शमीपूजा,सीमोलंघनं,मन्वादि,बौद्धावतार१०सायं, D
भ.४०/२१ उप., D नवरात्रपारणा,राजपट्टाभिषेक,सरस्वतीश्रवणप्र.च.विसर्जन
भ.११/७ या.,वृश्चिकेभानुः६/५०,हेमंतऋतुप्रारंभ पापांकुशा११व्रतंसर्वे
मघा१सिंहेगुरु ५५/५४ ग ६/७ प्रदोष E व्रतं,तिलतेल आकाशदीप१मास
स्वात्यांरवि ४३/२८ सं.सू.चं.स्त्री.पु.वाहनमेष,उपवाहनहाथी बहुगर्मी,संयुक्तराष्ट्रदिवस
भ.६/७ उप.३६/२६ या.,पंचक ३६/२४ या. कोजागिरी१५.चंद्रोदयव्यापिनी,शरद१५ E
कार्तिकस्नानप्रा,नवान्न भक्षणं,अश्वयुजीकर्म,वाल्मीकीजयं.

गोचर ग्रहाः

शुक्रास्तप.,बुधोदयपू.
शनि,बुध,शुक्र वक्री



आश्विन शुक्ला८ सूर्य
गण १८५ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	३	५	११	१०	४
१६	१६	२९	२५	९	१	१
१	३६	५	२४	३६	३७	३७
१४	४८	१७	७	१९	२९	२९
३३	२	९	१२	१	३	३
२६	४०	७	४४	२५	११	११
	+		+	+		
पुष्य.४	स्वा.३	पूफा.४	चित्रा१	उभा३	धनि.३	मघा१
जल	पवन	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

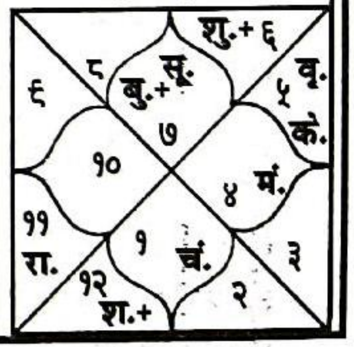
आश्विन शुक्ला ८सूर्य तुलेऽर्क प्रवेशः। वारात् ४ दुर्भिक्षः,नक्षत्रात् ४दुर्भिक्षः। वार नाम घोरा,शूद्र सुखी। नक्षत्रनाम घोरा,शूद्र सुखी। संक्रांति काल पूर्वाण्हे,विप्रराजा सुखी। पूर्वेमुख नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। विष्टी कर्णे बैठी,तेजी,अश्व वाहन,सिंह उपवाहन,स्थैर्य। धूम्रवस्त्र,कुन्धा आयुध,ताम्र पात्र,चित्रान्न भोजन,हलिद्रा लेपन, क्षत्रियजाति,कमल पुष्प,गुंजा आयुध,नीची कंचुकी,वृद्धा अवस्था, ईशान मुख,रसना वाद्य,भक्तियुता अवस्था। हस्ते पीतफल,लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास संधि ,वैश्यगृहे खंड वृष्टि,तेजी। मुहूर्ता३० स्थिरता। संक्रांति पुण्य प्रथम प्रहरे स्थिरता। वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे। अग्रे शुक्रास्त पश्चिमे।

आश्विन शु.१५ चंद्रवार
गण १९३ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	५	११	१०	४
१९	१६	०	२३	९	१	१
५६	१५	१२	४२	२४	१२	१२
२९	२३	१५	८	५४	२	२
२८	२	६	१२	१	३	३
४३	४०	७	४४	२५	११	११
	+		+	+		
पुष्य.१	स्वा.३	मघा१	चित्रा१	उभा२	धनि.३	मघा१
अमृत	पवन	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शुक्रास्तप.,बुधास्तप.
शनि,बुध,शुक्र वक्री



कार्तिक कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण १९४से२०७)

दिनांक २७ अक्टूम्बर से ९ नवम्बर २०२६ई.तक। हेमंतऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिणगोलेः। (आश्विन कृष्णपक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

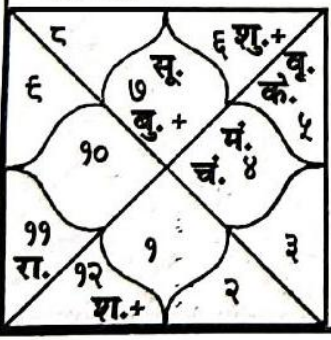
लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१९४	२७	मूसल	१.	मं.	०	३९	ध	२४	२९	सि	१४	१३	कौ	०	३९	३७/४९	६/४८	५/५६	९	१५	वृषभ ३३/३६	६ ८ ५६ ३१	६० १	वक्रीहस्तेशुक्र ४४/१० ग ३६/१६
०	०	०	२.	मं.	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
१९५	२८	सिद्धि	३.	बु.	५०	१९	कृ	२१	०	व्य	७/१०	४५/३९	व	२३	२	४६	४९	५५	१०	१६	वृषभ	६ ९ ५६ ३४	६० ३	भ.२३/३ उप.४९/१९ या., शुक्रोदयपू.२०/५२,
१९६	२९	उत्पात	४.	बृ.	४४	३२	रो	१७	६	प	५२	१	ब	१७	२५	४३	४९	५५	११	१७	मिथुन ४५/२	६ १० ५६ ३७	६० ६	करवाचौथ चंद्रोदय २९/६ बजे,दशरथललिताव्रतं,
१९७	३०	मानस	५.	शु.	३८	३५	मृ	१२	५	शि	४४	१४	कौ	११	३३	४०	५०	५४	१२	१८	मिथुन	६ ११ ५६ ४५	६० ८	A नासिक त्रंबकेश्वर सिंहस्थ कुंभ मेला
१९८	३१	मुद्गर	६.	श.	३२	३५	आ	८	४९	सि	३६	३०	ग	५	३२	३७	५१	५३	१३	१९	कर्क ५०/४९	६ १२ ५६ ५४	६० १०	भ.३२/५ उप.४९/६ या., सायंप्रकयोग,तीर्थस्नानेपुण्यद A
१९९	१	ध्वज	७.	सू.	२६	५६	पु	४	५०	सा	२९	३	ब	२६	५६	३४	५१	५३	१४	२०	कर्क	६ १३ ५७ ६	६० १२	रात्रौकालाष्टमी,नवम्बर३०दिन
२००	२	प्रजापति	८.	चं.	२१	४२	पु	१/१४	४५/१२	शु	२१	५३	कौ	२१	४२	३१	५२	५२	१५	२१	सिंह ५५/१२	६ १४ ५७ १९	६० १४	अहाई८,
२०१	३	काल	९.	मं.	१७	६	म	५५	५४	शु	१५	१३	ग	१७	६	२८	५२	५२	१६	२२	सिंह	६ १५ ५७ ३२	६० १७	भ.४५/११ उप.,
२०२	४	सुस्थिर	१०.	बु.	१३	१६	पू	५४	३३	ब्र	९	१३	वि	१३	१६	२४	५३	५१	१७	२३	सिंह	६ १६ ५७ ५२	६० १९	भ.१३/१९ या.,बुधोदयपू.४२/२८
२०३	५	मातंग	११.	बृ.	१०	२३	उ	५४	१५	ऐं	३/५८	५६/३९	बा	१०	२३	२१	५४	५०	१८	२४	कन्या ६/२८	६ १७ ५८ १३	६० २०	रमा११व्रतसर्वे,गोवत्स१२प्रदोषे व्यापिनी,
२०४	६	अमृत	१२.	शु.	८	४१	ह	५५	१०	वि	५५	५३	तै	८	४१	१८	५४	५०	१९	२५	कन्या	६ १८ ५८ ३३	६० २२	प्रदोष, धनतेरस,यमायदीपदानं,धनवन्तरीजयं.,गोत्रिरात्रव्रत दीपावलीतक।
२०५	७	काण	१३.	श.	८	११	चि	५७	१९	प्री	५३	२५	व	८	११	१५	५५	४९	२०	२६	तुला ३६/१४	६ १९ ५८ ५७	६० २५	भ.५/५५ उप.३६/१५ या.,विशाखायांरवि १/३,मार्गीबुध ४७/४८ बु ६/५५।४०/४० ग २६/१० रूप१४,नरक१४
२०६	८	लुंबक	१४.	सू.	८	५८	स्वा	६०	०	आ	५१	५७	श	८	५८	१२	५६	४८	२१	२७	तुला	६ २० ५९ २३	६० २६	दीपावली,कुबेरपूजा, कमलाज,महालक्ष्मीपूजनं कालरात्रि
२०७	९	छत्र	३०.	चं.	१०	५१	स्वा	०	४५	सौ	५१	२६	ना	१०	५१	९	५६	४८	२२	२८	वृश्चि ४९/९	६ २१ ५९ ५०	६० २८	बिच्छुड़ा ४९/९ उप.देवपितृकार्येऽमा, महावीरस्वा. A



A निर्वाण,बलीपूजासायंव्यापिनी,गोवर्धन पूजा ४/५ या.स्वाति

गोचर ग्रहाः

शुक्रोदयपू.,बुधास्तपू.
बुध,शुक्र,शनि वक्र



कार्तिक कृष्णा८ चंद्र गण २००, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	५	११	१०	४
२३	१५	०	२२	६	०	०
१७	५६	५५	३४	१४	४६	४६
३२	३८	८	२०	५४	४७	४७
२८	२	६	८	१	३	३
४३	४०	७	४०	२५	११	११
	+		+	+		
श्ले.२	स्वा.३	मघा.१	हस्त४	उभा२	धने.३	मघा१
अमृत	पवन	अमृत	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

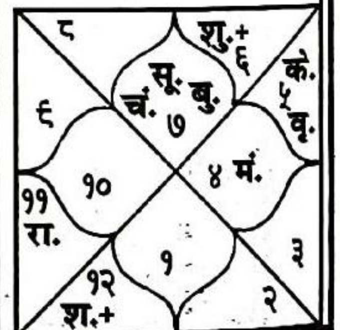
पांच मंगल उदंगल घणों,उग्र प्रदर्शन देख। भय उपजे जन व्यापार में, लिखे विधाता लेख।।१।। दीपावली को देखे जोशी,रवि शनि भौमवार जो होसी। स्वाति नखत अरु आयुष योग,काल पड़े अरु नासे लोग ।।२।। चंद्रोदय मंगलवार को,छत्रभंग को जांण।। लाभ पंचमी शनि वार की,होसी जग में हांण।।३।। कृत्तिका कार्तिक पूर्णिमा,बादल बिजली देख। वरशाले वर्षा घणी,इण में मीन न मेख।।४।। जगमग दीप मालिका जोय,निश्चय रात सुहानी होय। कार्तिक पूनम निर्मल चंद,बहुत अन्न जनमन आनंद।।५।। कार्तिक तेरस मावस,चौदस पूनम देख। पवन चले दीपक बुझे। दुर्भिक्ष दुःख को लेख।।६।। दीप मालिका रोशनी,मन उमंग हर्षाय। ऋषि अंगिरा इम कहें,वर्ष सवायो जाय।।७।। फूले सारों वनराय,पात वसंत। झाड़ियां निपजें सातों अनाज,कहे फोगसी माघसों।।८।।

कार्तिक कृष्णा३० चंद्र गण २०७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	५	११	१०	४
२६	१५	१	२१	६	०	०
३८	४७	३८	३३	४	२७	२७
३६	१२	१	३७	५५	३१	३१
२८	६	६	८	१	३	३
४३	२०	७	४०	२५	११	११
	मा		+	+		
श्ले.३	स्वा.३	मघा१	हस्त४	उभा३	धने.३	मघा१
अमृत	पवन	अमृत	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शुक्रोदयपू.,बुधोदयपू.
बुधमार्गी,शुक्र व शनि वक्र



कार्तिक शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः १९४८(लघुगण २०८ से२२२)

दिनांक १०नवम्बर से २४ नवम्बर २०२६ ई.तक।

हेमन्तऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिणगोलेः।

(कार्तिक शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	सौ.दि.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२०८	१०	श्रीवत्स	१.	मं.	१४	१०	वि	५	१८	शो	५१	४२	ब	१४	१०	२७/६	६/५७	५/४७	२३	२९	वृश्चिक	६ २३ ० १९	६० ३०
२०९	११	सौम्य	२.	बु.	१८	२७	अ	१०	४७	अ	५२	३५	कौ	१८	२७	२	५८	४६	२४	१	वृश्चिक	६ २४ ० ५०	६० ३१
२१०	१२	काल	३.	बृ.	२३	२३	ज्ये	१६	५५	सु	५३	४१	ग	२३	२३	२६/५९	५८	४६	२५	२	धनु १६/५५	६ २५ १ २२	६० ३२
२११	१३	सुस्थिर	४.	शु.	२८	४३	मू	२२	५७	धृ	५५	५	वि	२८	४३	५६	५८	४६	२६	३	धनु	६ २६ १ ५६	६० ३४
२१२	१४	मातंग	५.	श.	३३	५४	पू	२९	४७	शू	५६	११	ब	१	१८	५३	५९	४५	२७	४	मकर ४६/१४	६ २७ २ ३५	६० ३६
२१३	१५	अमृत	६.	सू.	३८	३५	उ	३५	३७	गं	५६	५०	कौ	६	१४	५०	७/०	४४	२८	५	मकर	६ २८ ३ १४	६० ३८
२१४	१६	सिद्धि	७.	चं.	४२	२६	श्र	४०	३९	वृ	५६	४६	ग	१०	३०	४७	१	४३	२९	६	मकर	६ २९ ३ ५४	६० ३९
२१५	१७	उत्पात	८.	मं.	४५	१३	ध	४४	३७	ध्रु	५५	५१	वि	१३	५०	४४	२	४४	१	७	कुंभ १२/३८	७ ० ४ ३६	६० ४२
२१६	१८	मानस	९.	बु.	४६	४७	श	४७	२३	व्या	५३	५६	बा	१६	०	४१	३	४३	२	८	कुंभ	७ १ ५ १९	६० ४३
२१७	१९	मुद्गर	१०.	बृ.	४७	१	पू	४८	५४	ह	५१	२	तै	१६	५४	३७	४	४२	३	९	मीन ३३/३१	७ २ ६ ५	६० ४५
२१८	२०	ध्वज	११.	शु.	४६	०	उ	४९	११	व	४७	८	व	१६	३०	३४	५	४३	४	१०	मीन	७ ३ ६ ५०	६० ४६
२१९	२१	प्रजापति	१२.	श.	४३	४६	रे	४८	३७	सि	४२	१६	ब	१४	५३	३१	६	४२	५	११	मेष ४८/३७	७ ४ ७ ४०	६० ४७
२२०	२२	आनंद	१३.	सू.	४०	३१	अ	४६	४५	व्य	३६	४०	कौ	१२	१३	२८	८	४२	६	१२	मेष	७ ५ ८ ३०	६० ४९
२२१	२३	चरः	१४.	चं.	३६	२०	भ	४४	३	व	३०	१७	ग	८	२५	२७	७	४१	७	१३	वृषभ ५५/१२	७ ६ ९ २२	६० ५०
२२२	२४	गदः	१५.	मं.	३१	२३	कृ	४०	४२	प	२३	२०	वि	३	५२	२५	७	४१	८	१४	वृषभ	७ ७ १० १५	६० ५१

चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,कार्तिकनववर्ष व्यापारी सं.२०८३ प्रा.,गोवर्धनपूजा, A

यम२,भाई२,यमुनास्नान,चित्रगुप्तपू.,जमादिलाखर६मु.

भ.५६/३ उप.,बिच्छुड़ा१६/५५ या. चतुर्थीव्रतं दुर्वागणपतिव्रतं,मन्वावासाव्रतपूर्ण

भ.३६/४३या., B पंचमी,ज्ञानपंचमीजैन,बालदिवसनेहरुजयं.

मार्गीशुक्र२१/२४ शु.५/२०।४७/६ग३६/१६ लाभपंचमी,सौभाग्यपंचमी,पाण्डव B

सूर्यषष्ठी डालाछठ C गोपाष्टमीसायंव्यापिनी,चौमासीअष्टाप्रा.जैन

भ.४२/२६उप.,वृश्चिकेऽर्कः५५/३८,मघायांसिंहेभौम४०/०ग २०/८,कल्पादि,सहस्त्रार्जुनजयंति

भ.१३/५०या,मार्गीस्वात४बुध१८/४२ग६३/३५,मकरेधनेष्ठा२राहुकर्केश्लेषा४केतु३/३६,पंचक१२/३८उप C

मार्गीचित्राशुक्र४७/२६ग४०/२१ अक्षय९,कुष्मांड९त्रेतायुगादि, रंगनाथजयं.,आंवलानम्

A विषा.५/१८ उप.१४/१० या.अन्नकूट

भ.१६/३०उप.४६/०या.,अनुराधायांरवि१३/० विशाषायांबुध२७/२४ग६७/४ देवप्रबोधिनी११ D

धनेभानुः४८/७,पंचक४५/३७या.मन्वादि,निम्बार्क११व्रतं हरिवासररेवतीच.चर्णे,

प्रदोष, D व्रतंस्मार्ता,तुलसीविवाह,चातुर्मासपूर्ण,कालिदासजयं.

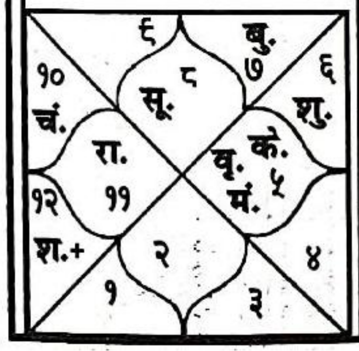
भ.३६/२० उप.,वैकुण्ठ१४मध्यरात्रौव्यापिनी,जैनचौमासी

भ.३/५२ या.,देवदीवाली,तुलसीविवाहपूर्ण,दीपदानं कार्तिकस्नानपू.,नानकजं. E

E पुष्करस्नानमेला,मन्वादि,पूर्णिमाव्रत

गोचर ग्रहाः

बुध,शुक्रमार्गी
शनि वक्र,बुधोदयपू.



कार्तिक शुक्ला८ मंगल
गण २१५ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ० १९ ५५	६ १६ ३८ २	४ २ २७ १	५ २२ २३ १	११ ८ ५३ ३०	१० ० २ ५	४ ० २ ५
२० ८	६ २० मा	६ ७	३६ १६ मा	१ २५ +	३ ११	३ ११
मघा१	स्वा.३	मघा१	हस्त४	उभा२	धनि.३	मघा१
अमृत	पवन	अमृत	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

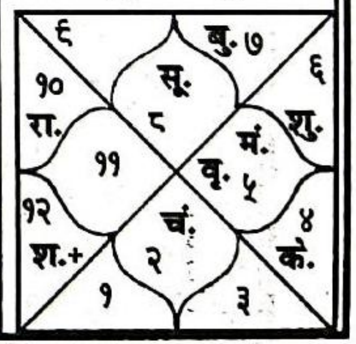
कार्तिक शुक्ला ७ चंद्र वृश्चिकेऽर्कःप्रवेश। वारात् २ सुभिक्षं। नक्षत्रात् ४ दुर्भिक्ष। वार नाम ध्वांक्षी,वैश्य सुखी। नक्षत्र नाम महोदरी,चौर सुखी। संक्रांति काल प्रत्यूषे,पशुपालक सुखी। पश्चिमेमुख अग्निकोणे दृष्टि उत्तरे गमनं,विष्टी कर्णे बैठी तेजी। अश्व वाहन,सिंह उपवाहन,स्थैर्य। धूम्र वस्त्र ,कुंता आयुध,ताम्र पात्र,चित्रान्न भोजन,हलिद्रा लेपन,क्षत्रिय जाति,कमल पुष्प,गुजा भूषण,नीली कंचुकी,वृद्धा अवस्था,ईशान मुख,रसना वाद्य, भक्तियुता। हस्ते कृष्ण फल,मृत्युदायी। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे,सुभिक्ष मंदी। मुहूर्ता ३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास पूर्वे,त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

कार्तिक शुक्ला१५ मंगल
गण २२२, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २ ४० ५७	६ २३ ५७ ३८	४ ३ ९ ५४	५ २६ ५० १२	११ ८ ४३ ३१	९ २९ ३९ ४९	३ २९ ३९ ४९
२० ८	६७ ४	६ ७	४० २१ मा.	१ २५ +	३ ११	३ ११
मघा१	विशा२	मघा१	चित्रा२	उभा२	धनि.२	श्ले.४
अमृत	प्रचंड	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शुक्रोदय व बुधोदयपूर्वे
शनिवक्र,बुध व शुक्रमार्गी



मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८(लघुगण २२३से२३६)

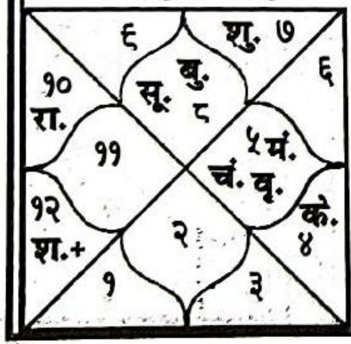
दिनांक २५ नवम्बर से ८दिसम्बर २०२६ ई.तक। हेमन्त ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:, दक्षिणगोले:। (कार्तिक कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति	
२२३	२५	शुभ	१.	बु.	२६	०	रो	३६	५२	शि	५	५६	कौ	२६	०	२६/२४	७/७	४५/४१	६	१५	वृषभ	७	८	११	९	६० ५३	मघा२गुरु ३६ ग६ पुष्करस्नान दान महत्पुण्य
२२४	२६	मृत्यु	२.	बृ.	२०	१४	मृ	३२	४७	सि	८	१४	ग	२०	१४	२३	८	४२	१०	१६	मिथुन ४/४६	७	९	१२	८	६० ५५	भ.४७/१७ उप.,
२२५	२७	पद्म	३.	शु.	१४	२०	आ	२८	३६	सा	०/२३	५२/३३	वि	१४	२०	२१	९	४१	११	१७	मिथुन	७	१०	१३	६	६० ५६	भ.१४/२० या., सौभाग्यसुन्दरी३ व्रतं, चतुर्थीव्रतं १६बजे।
२२६	२८	छत्र	४.	श.	८	३०	पु	२४	३५	शु	४४	५७	बा	८	३०	२०	१०	४२	१२	१८	कर्क १०/३५	७	११	१४	५	६० ५७	तुलेशुक्र ४२/१०
२२७	२९	श्रीवत्सः	५.	सू.	२	५५	पु	२०	५२	ब्र	३७	३५	तै	२	५५	१९	१०	४२	१३	१९	कर्क	७	१२	१५	५	६० ५९	भ.५७/४६ उप., वृश्चिकेबुध २४/०
०	०	०	६.	सू.	५७	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	
२२८	३०	सौम्य	७.	चं.	५३	११	श्ले	१७	४२	ऐं	३०	४२	वि	२५	२६	१७	११	४१	१४	२०	सिंह १७/४२	७	१३	१६	७	६१ ०	भ.३५/२६ या.,
२२९	१	काल	८.	मं.	४६	२८	म	१५	१३	वै	२४	१५	बा	२१	१९	१६	१२	४२	१५	२१	सिंह	७	१४	१७	९	६१ १	दिसम्बर३१दिन, श्रीकालभैरवाष्टमी
२३०	२	सुस्थिर	९.	बु.	४६	४५	पू	१३	३६	वि	१८	४०	तै	१८	६	१५	१२	४२	१६	२२	कन्यां २८/२३	७	१५	१८	१३	६१ ३	अनुराधायांबुध २३/३ ग ५३/३०
२३१	३	मातंग	१०.	बृ.	४५	९	उ	१२	३७	प्री	१३	५५	व	१५	५७	१३	१२	४२	१७	२३	कन्या	७	१६	१९	१९	६१ ४	भ.१५/५७ उप. ४५/९ या., ज्येष्ठायांरवि ३/२०
२३२	४	अमृतः	११.	शु.	४४	४७	ह	१३	४५	आ	१०	५	ब	१४	५८	१२	१४	४२	१८	२४	तुला ४४/४२	७	१७	२०	२५	६१ ५	मार्गीशनि ४६/१४ श ११/८ १६/४ ग ९/४० उत्पत्ति११व्रतंस्मार्ता, वैतरणीव्रतं, नौजलसेनादिवस
२३३	५	काण	१२.	श.	४५	४४	चि	१५	४०	सौ	७	१८	कौ	१५	१५	११	१४	४२	१९	२५	तुला	७	१८	२१	३१	६१ ६	उत्पत्ति११व्रतं निम्बार्का
२३४	६	लुंबक	१३.	सू.	४८	०	स्वा	१८	४८	शो	५	२६	ग	१६	१२	९	१४	४२	२०	२६	तुला	७	१९	२२	३९	६१ ७	भ.४८/० उप., प्रदोष,
२३५	७	मैत्र	१४.	चं.	५१	२४	वि	२३	७	अ	४	३६	वि	१९	४२	८	१५	४३	२१	२७	वृश्चि ७/२	७	२०	२३	५०	६१ ८	भ.१६/४३ या., बुधास्तपू.४२/४८ बिच्छुड़ा ७/२ उप
२३६	८	वज्रः	३०.	मं	५५	३९	अ	२८	२५	सु	४	३६	च	२३	३१	७	१६	४३	२२	२८	वृश्चिक	७	२१	२५	१	६१ ९	स्वात्यांशुक्र ३६/६ ग ५३/२ देवकार्येऽमा पितृकार्येऽमा वस्या, गौरी B

B तपोव्रतं, पुंसवनव्रतंउद्यापन

गोचर ग्रहाः

शुक्र व बुधोदयपू.वक्रीशनि
मार्गी शुक्र,मार्गीबुध



मार्गशीर्ष कृष्णा८ मंगल
गण २२९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ५ २ ०	७ १ ४७ १९	४ ३ ४८ १५	६ १ ३२ ४२	११ ८ ३३ ३२	६ २६ १७ ३४	३ २६ १७ ३४
२० ८	६७ ४	५ १९	४० २१	१ २५ +	३ ११	३ ११
मघा२	विशा४	मघा२	चित्रा३	उभा२	धने.२	श्ले.४
अमृत	प्रचंड	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

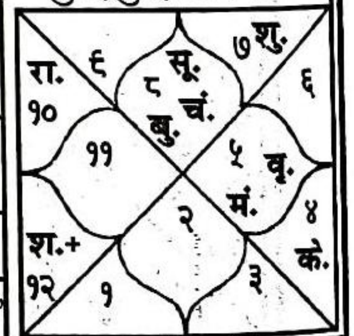
बुद्धि बढ़े बुध पांच सुं,विद्या बढ़े अथाय। व्यापार घणों हो चहुं, सत्ता साख सवाय।।१।। मार्ग वदी आवे घटा,बिज्जु समेती जोई। तो सावन बरसे भलो,साख सवाई होई।।२।। मार्ग अंधारी तीज को,आद्रा पुनर्वसु देख। राजा प्रजा जन मन सुखी,धान्य सस्ता अवरेख।।३।। मार्ग अमा रवि भौम शनि,देशभंग उत्पात। महंगाई की मारसुं,जन जन में संताप।।४।। मार्ग सुदी सुं क्षय तिथि,लगते पांचों मास जन रक्षक जगदीश हैं,छत्रभंग को जाँच।।५।। बीज गाज हो बादला,मिगसर पौष अरुमाघ। गर्भ गले छ मास में,नद नाला लांघ।।६।। फसल पात जाला पड़े,फल फूलन में कीट। झोलो लागे साख में,समयो दिखे धीट।।७।। पत्तों में गड़ गुंबड़ा, फल कांणा व्है खार। भाग्य मिले तिल बाजरा,रोगी होवे ज्वार।।८।।

मार्गशीर्ष कृष्णा३० मंगल
गण २३६, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ७ २३ ३	७ ११ ८ ५७	४ ४ २५ १२	६ ६ १५ १३	११ ८ ३३ २३	६ २८ ५५ १८	३ २८ ५५ १८
२० ८	८३ ३०	५ १९	४० २१	१ ४० मा	३ ११	३ ११
मघा३	अनु.३	मघा२	चित्रा४	उभा२	धने.२	श्ले.४
अमृत	प्रचंड	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शुक्रोदयपूर्वे,बुधास्तपूर्वे
शुक्र,बुध,शनिमार्गी



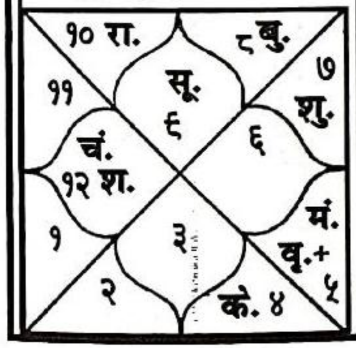
मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण २३७से२५१)

दिनांक ९दिसम्बर से २३ दिसम्बर २०२६ई.तक।
हेमन्त/शिशिरऋतुः। रविर्देवता दक्षिणा/उत्तरायने,दक्षिणगोलेः
(मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२३७	९	ध्वांक्षः	१.	बु.	६०	०	ज्ये	३४	२७	धृ	५	१६	किं	२७	४३	२६/५	७/१७	५/४३	२३	२६	धनु ३४/२७	७ २१ २६ १२	६१ १०	बिच्छुड़ा ३४/२७ या.,ज्वालामुखी ३४/२७ उप.
२३८	१०	धूम्राः	१.	वृ.	०	४७	मू	४०	५१	शू	६	२३	ब	०	४७	४	१७	४३	२४	३०	धनु	७ २३ २७ २६	६१ ११	ज्वालामुखी ४०/४७ या.,चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,पुंसवनव्रतप्रा.वर्षपर्यन्त
२३९	११	प्रवर्धमान	२.	शु.	६	३	पू	४७	१५	गं	७	४१	कौ	६	३	३	१८	४४	२५	१	धनु	७ २४ २८ ३६	६१ १२	ज्येष्ठायांबुध ५७/६१ ग १०४/१७ रज्जवमा.७मुस.
२४०	१२	राक्षस	३.	श.	११	१५	उ	५३	१४	वृ	८	५१	ग	११	१५	१	२०	४४	२६	२	मकर ३/४४	७ २५ २९ ५२	६१ १३	भ.४३/३८ उप.,
२४१	१३	गदः	४.	सू.	१६	१	श्र	५८	२८	ध्रु	६	३४	वि	१६	१	०	२०	४४	२७	३	मकर	७ २६ ३१ ८	६१ १४	भ.१६/१ या., A नागपंचमी दक्षिण
२४२	१४	शुभ	५.	चं.	१९	५०	ध	६०	०	व्या	६	४४	बा	१९	५०	२५/५६	२०	४४	२८	४	कुंभ ३०/३५	७ २७ ३२ २५	६१ १५	वक्रीगुरु ४६/१० वृ.४/५।१/१३ ग ४/६ पंचक ३०/३५ उप.,श्रीपंचमीव्रत श्रीरामविवाहोत्सव, A
२४३	१५	उत्पात	६.	मं.	२२	३५	ध	२	४३	ह	६	४	तै	२२	३५	५७	२२	४४	२९	५	कुंभ	७ २८ ३३ ४०	६१ १६	नरसीमेहताजयं.,स्कंदषष्ठी चंपाषष्ठी,
२४४	१६	मानसः	७.	बु.	२४	३	श	५	४६	व	७	२८	व	२४	३	५६	२२	४४	३०	६	मीन ५२/७	७ २९ ३४ ५६	६१ १७	भ.२४/३ उप.५४/६ या.,मूलेधने ऽर्कः २४/२६,मित्रसप्तमी,
२४५	१७	मुद्गर	८.	वृ.	२४	१५	पू	७	३४	सि	४	५३	ब	२४	१५	५३	२३	४६	१	७	मीन	८ ० ३६ १८	६१ १८	C अयोध्याश्रीरामजन्मभूमि मुक्तिदिवस३३वां प्रदोष,अनंगनबदेश्वर१३, D
२४६	१८	ध्वजः	९.	शु.	२३	१०	उ	८	८	व्य	१/१६	५६/४३	कौ	२३	१०	५२	२५	४५	२	८	मीन	८ १ ३७ ३७	६१ १८	कल्पादि D श्रीत्रिपुरभैरवजयं.,सौम्यवारी१३यमायव्रतदानं
२४७	१९	प्रजापति	१०.	श.	२०	५४	रे	७	३४	प	५१	२०	ग	२०	५४	५१	२५	४५	३	९	मेष ७/३४	८ २ ३८ ५५	६१ १८	भ.४६/१४ उप.,मूलेधनेबुध ३८/४ ग १०१/४ पंचक ७/३४ या.
२४८	२०	आनंदः	११.	सू.	१७	३५	अ	५	५६	शि	४५	७	वि	१७	३५	४९	२६	४६	४	१०	मेष	८ ३ ४० १६	६१ १९	भ.१७/३५ या.,मोक्षदा११सर्वे,गीताजयंती,
२४९	२१	चर	१२.	चं.	१३	२३	भ	३	२५	सि	३८	१८	बा	१३	२३	४८	२६	४६	५	११	वृषभ १७/३६	८ ४ ४१ ३८	६१ २०	मकरेभानु १४/२३,रविउत्तरायणे शिशिरऋतुप्रारंभछोटादिन C
२५०	२२	गदः	१३.	मं.	८	३०	कृ	०/११	५६/२८	सा	३०	५९	तै	८	३०	४९	२७	४७	६	१२	वृषभ	८ ५ ४३ ०	६१ २०	शिव१४व्रतंप्रा.,किसानदिवस
२५१	२३	अमृत	१४.	बु.	३	२	मृ	५२	२४	शु	२३	२०	व	३	२	५१	२७	४७	७	१३	मिथुन २४/२६	८ ६ ४४ २२	६१ २०	भ.३/२ उप.२६/११ या.,विशाखायांशुक्र ४१/२४ ग ६१/३१ पूर्णिमाव्रतंपुण्यंच E
०	०	०	१५.	बु.	५५	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	० ० ० ०	० ०	E बहुचराजीनोमेलो गुज.,दत्तजयंति१५प्रदोष व्यापिनी.

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे,वक्री गुरु
शुक्र,बुध,शनिमार्गी



मार्गशीर्ष शु.८ गुरुवार
गण २४५ , इष्टः ०/०

	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	४ १० २४ २४	७ २५ २५ १३	४ ४ ४६ ५६	६ १४ ४ ५६	११ ८ ४८ २०	६ २८ २६ ४१	३ २८ २६ ४१
	२० ८	१०४ १७	५ ६ +	५३ ३	१ ४०	३ ११	३ ११
	मघा४	ज्ये.३	मघार	स्वा.२	उभा२	धने.२	श्ले.४
	अमृत	पवन	अमृत	पवन	सौम्य	अमृत	अमृत

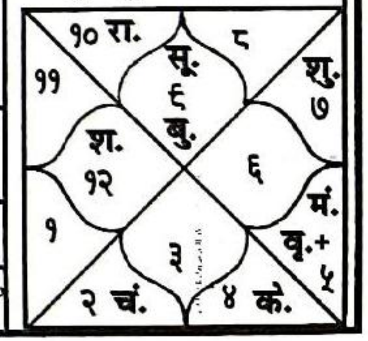
मार्गशीर्ष शुक्ला ७ बुध धनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ सुभिक्षः। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष। वार नाम मन्दाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम घोरा,शूद्र सुखी। संक्रांति काल अपराण्हे,शूद्र सुखी। दक्षिणे मुख, ईशान दृष्टि पश्चिमे गमनं, विष्टी कर्णे बैठी,तेजी। अश्ववाहन, सिंह उपवाहन,स्थैर्य। धूम्र वस्त्र,कुन्ता आयुध,ताम्र पात्र,चित्रान्न भोजन,हलिद्रा लेपन,क्षत्रिय जाति,कमल पुष्प,गुंजा भूषण,नीली कंचुकी,वृद्धा अवस्था,ईशान मुख,रसना वाद्य,भक्तियुता अवस्था हस्ते कृष्णफल,मृत्युदायी। संक्रांति निवास तटे,रजक(धोबी)गृहे सुभिक्षः। मुहूर्ता ३०स्थिरता। संक्रांति पुण्यं स्वदिने द्वितीय यामे पुण्यकाल। वत्सनिवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदयपूर्वे

मार्गशीर्ष शु.१४/१५बुध
गण २५१ , इष्टः ०/०

	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	४ १२ २५ १८	८ ५ ४० ६	४ ४ १६ ५	६ १६ २३ २४	११ ८ ५८ ३३	६ २८ १७ ३६	३ २८ १७ ३६
	२० ८	१०१ ४	५ ६ +	५३ ३	१ ४०	३ ११	३ ११
	मघा४	मूल२	मघार	स्वा.४	उभा२	धने.२	श्ले.४
	अमृत	दहन	अमृत	पवन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

वक्र गुरु,बुधास्त पूर्वे
शुक्र,बुध,शनिमार्गी



पौष कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण २५२से२६६)

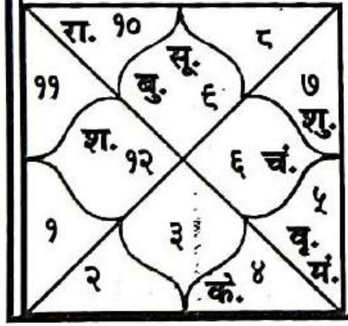
दि.२४ दिसम्बर से ७ जनवरी २०२७ ई.तक। शिशिरऋतुः।रविर्देवता उत्तरायनें,दक्षिणगोलेः। (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२५२	२४	काण	१.	वृ.	५१	२७	आ	४८	१४	शु	१५	३०	बा	२३	२३	२५/५२	७/२८	५/४८	८	१४	मिथुन	८ ७ ४५ ४४	६१ २१	
२५३	२५	तुंबक	२.	शु.	४५	४०	पु	४४	६	ब्र	७/४०	५६/५४	तै	१८	३३	५३	२८	५०	९	१५	कर्क ३०/१०	८ ८ ४७ ६	६१ २१	पूफायांभौम४२/४६ग२३/४०,ईसाजन्म क्रिसमस डे
२५४	२६	मैत्रः	३.	श.	४०	१०	पु	४०	२२	वै	५२	७	व	१२	५५	५५	२८	५०	१०	१६	कर्क	८ ९ ४८ २७	६१ २१	भ.१२/५५उप.४०/१०या.,
२५५	२७	वज्र	४.	सू.	३५	२	श्ले	३७	२	वि	४५	१	ब	७	३६	५६	२९	५१	११	१७	सिंह ३७/२	८ १० ४९ ५१	६१ २२	पूषायांबुध३३/५७ग१००/५५ **चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय५/३१ बजे**
२५६	२८	ध्वांक्ष	५.	चं.	३०	३७	म	३४	२३	प्री	३८	२८	कौ	२	४६	५७	२९	५१	१२	१८	सिंह	८ ११ ५१ १४	६१ २२	
२५७	२९	धूम्राः	६.	मं.	२७	२	पू	३२	३५	आ	३२	३६	व	२७	२	५९	२९	५३	१३	१९	कन्या ४७/२३	८ १२ ५२ ३७	६१ २२	भ.२७/२उप.५४/४५या.,पूषायांरवि२६/४७
२५८	३०	प्रवर्धमान	७.	बु.	२४	२७	उ	३१	४८	सौ	२७	३४	ब	२४	२७	२६/०	२९	५३	१४	२०	कन्या	८ १३ ५४ ०	६१ २२	
२५९	३१	राक्षस	८.	वृ.	२३	०	ह	३२	१०	शो	२३	२६	कौ	२३	०	१	३०	५४	१५	२१	कन्या	८ १४ ५२ २२	६१ २३	**कालाष्टमी,अष्टकाश्राद्ध,रुक्मणीअष्टमी,,मध्यरात्रौ ईस्वीनववर्ष प्रवेशः**
२६०	१	मूसल	९.	शु.	२२	४७	चि	३३	४६	अ	२०	१७	ग	२२	४७	३	२९	५५	१६	२२	तुला २/५८	८ १५ ५६ ४७	६१ २३	भ.५३/५०उप.,जनवरी२०२७दिन३१
२६१	२	सिद्धि	१०.	श.	२३	५४	स्वा	३६	३७	सु	१८	८	वि	२३	५४	४	२९	५५	१७	२३	तुला	८ १६ ५८ १०	६१ २३	भ.२३/५४या.,वृश्चिकेशुक्र२८/६ **पौष१०नाकोड़ामेला श्रीपार्श्वनाथजयं.,**
२६२	३	उत्पात	११.	सू.	२६	१८	वि	४०	४०	धृ	१६	५८	बा	२६	१८	५	३०	५६	१८	२४	वृश्चि. २४/३६	८ १७ ५९ ३४	६१ २३	वक्रीमघा१गुरु२६/३०ग५/२०बिच्छुड़ा३४/३६उप.,सफला११व्रतंसर्वे
२६३	४	मानस	१२.	चं.	२६	४६	अ	४५	४६	शू	१६	४१	तै	२६	४६	७	३०	५७	१९	२५	वृश्चिक	८ १९ ० ५८	६१ २३	उषायांबुध२६/३३ग१००/१४ सुरूपद्वादशी,
२६४	५	मुद्गर	१३.	मं.	३४	१६	ज्ये	५१	४०	गं	१७	१०	ग	२	२	८	३०	५८	२०	२६	धनु ५१/४०	८ २० २ २१	६१ २३	भ.३४/१६उप.,अनुराधायांशुक्र४३/४३ग६५/१७बिच्छुड़ा५१/४०या.प्रदोष
२६५	६	ध्वजः	१४.	बु.	३६	२१	मू	५८	१	वृ	१८	५	वि	६	४६	९	३०	५८	२१	२७	धनु	८ २१ ३ ४५	६१ २३	भ.४६/४६या.मकरेबुध२६/१६
२६६	७	प्रजापति	३०.	वृ.	४४	३७	पू	६०	०	ध्रु	१६	२१	च	११	५६	११	३१	५९	२२	२८	धनु	८ २२ ५ ८	६१ २३	बुधोदयप.२६/११ दैवपितृकार्येऽमा,पावागढ़यात्रागुजरात

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे

गुरु वक्री,मार्गी शनि



पौष कृष्णा ८ गुरु
गण २५९ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	४	६	११	६	३
१४	१६	३	२७	६	२७	२७
४२	८	३७	२८	११	४२	४२
५१	१६	५३	२६	५८	६	६
१५/४०	१००/५५	५/६ +	६१/२१	१/४०	३/११	३/११
पूफा१	पूषा२	मघा२	विशा३	उभा२	धने.२	श्ले.४
जल	सौम्य	अमृत	प्रचंड	सौम्य	अमृत	अमृत

कृष्णं वंदे जगद्गुरु,पांच गुरु के वार। कहीं चाणक्य कहीं द्रोण है,हो कृष्णनीति साकार।।१।। सोमा शुक्रो सुर गुरां,पौष अमावस देख घर –घर होय बधांवणा,इणमें मीन न मेख।।२।। पौष अमा शुभवारी सुं, मंगल मोद प्रमोद। मकर संक्रांत शुभवार की,बहु उत्सव आमोद।३।। पौष में बिजली गरजाई,बादर अथवा पूरब वाई। गर्भ सुलच्छन आछा जान,वर्षे सावन बहु घनजान।।४।। पौष अंधरी सप्तमी,बिन जल बादर जोय। श्रावण सुदी पूनो वर्षे,आद्रा जल थलपूर्ण जोय।।५।। पौष वदी जो सप्तमी,अंबर बिजली देख। वर्षे सावन पूर्णिमा,इण में मीन न मेष।।६।। पौष वदी दशमी दिवस,बादल चमके बीज। तो वरसे भर भादवों,सखियों खेलो तीज।।७।। पौष उजाली सप्तमी, आठम नवमी गाज। गर्भ होयगो मानलों,सफल होय सब काज।।८।।

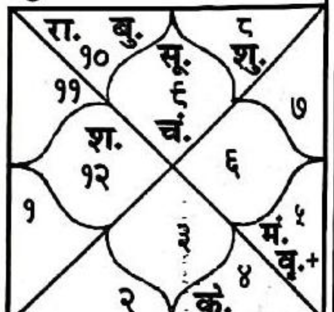
पौष कृष्णा३० मंगल
गण २६६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	७	११	६	३
१६	०	३	४	६	२७	२७
३२	५३	१	४२	२३	१६	१६
३४	१	६	५६	४३	५४	५४
१५/४०	१००/१४	५/२० +	६५/१७	१/४०	३/११	३/११
पूफा१	उषा१	मघा१	अनु.१	उभा२	धने.२	श्ले.४
जल	नीर	अमृत	प्रचंड	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

वक्री गुरु

बुधोदय पश्चिमे रात्रौ,



पौष शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण२६७से२८१)

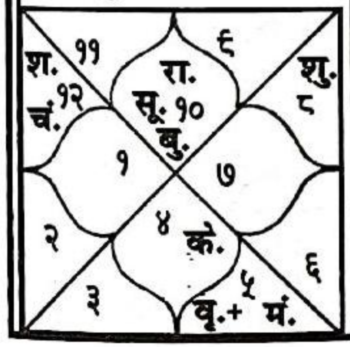
	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हिं. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२६७	८	प्रवर्धमान	१.	शु.	४६	४७	पू	४	२६	व्या	२०	३६	किं	१७	१२	२६/१२	७/३१	५/५६	२३	२९	मकर २०/५७	८ २३ ६ ३३	६१ २२
२६८	९	राक्षस	२.	श.	५४	२४	उ	१०	३३	ह	२१	३३	बा	२२	५	१३	३१	६/१	२४	३०	मकर	८ २४ ७ ५६	६१ २२
२६९	१०	गदः	३.	सू.	५८	७	श्र	१५	५६	व	२१	५६	तै	२६	१५	१५	३१	१	२५	१	कुंभ ४५/१४	८ २५ ९ १६	६१ २१
२७०	११	शुभ	४.	चं.	६०	०	ध	२०	२६	सि	२१	३५	व	२६	२६	१६	३१	१	२६	२	कुंभ	८ २६ १० ४०	६१ २१
२७१	१२	मृत्यु	४.	मं.	०	४५	श	२३	५०	व्य	२०	१३	वि	०	४५	१७	३२	२	२७	३	कुंभ	८ २७ १२ २	६१ २१
२७२	१३	पद्म	५.	बु.	२	१०	पू	२५	५५	व	१८	१	बा	२	१०	१९	३२	३	२८	४	मीन १०/२४	८ २८ १३ २३	६१ २०
२७३	१४	छत्रः	६.	वृ.	२	१३	उ	२६	४६	प	१४	४५	तै	२	१३	२०	३१	४	२९	५	मीन	८ २९ १४ ४४	६१ २०
२७४	१५	श्रीवत्स	७.	शु.	१	२	रे	२६	४६	शि	१०	३१	व	१	२	२१	३२	४	१	६	मेष ३६/४६	९ ० १६ ६	६१ २०
०	०	०	८.	शु.	५८	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
२७५	१६	सौम्य	९.	श.	५५	१६	अ	२५	२३	सि	५/२२	५६/२६	बा	२६	५८	२३	३१	५	२	७	मेष	९ १ १७ २६	६१ १९
२७६	१७	काल	१०.	सू.	५०	५७	भ	२३	५	शु	५२	४६	तै	२३	६	२५	३२	६	३	८	वृषभ ३७/१६	९ २ १८ ४७	६१ १८
२७७	१८	सुस्थिर	११.	चं.	४५	५६	कृ	२०	२	शु	४५	४३	व	१८	२८	२८	३२	८	४	९	वृषभ	९ ३ २० ५	६१ १८
२७८	१९	मातंग	१२.	मं.	४०	३५	रो	१६	२६	ब्र	३८	१०	ब	१३	१७	२८	३२	८	५	१०	मिथुन ४४/२७	९ ४ २१ २५	६१ १८
२७९	२०	अमृत	१३.	बु.	३४	५१	मृ	१२	२६	ऐं	३०	२२	कौ	७	४३	३१	३२	८	६	११	मिथुन	९ ५ २२ ४२	६१ १७
२८०	२१	काण	१४.	वृ.	२८	५६	आ	८	२१	वै	२२	१७	ग	१	५५	३४	३१	९	७	१२	कर्क ५०/१७	९ ६ २४ ०	६१ १६
२८१	२२	लुंबकः	१५.	शु.	२३	१३	पु	४	१६	वि	१४	२६	ब	२३	१३	३७	३१	९	८	१३	कर्क	९ ७ २५ १६	६१ १७

दिनांक ८ जनवरी से २२जनवरी २०२७ ई.तक।
शिशिरऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनें:,दक्षिणगोले:।
卐 (पौष शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रे:)

- (२६८) चंद्रोदयमु.३०स्थिरता स्नानआरोग्यव्रत२,
- (२६९) पंचक ४६/१४ उप.सावानमास८मुस.
- (२७०) भ.२६/२६ उप.,उषायांरवि ४६/३२
- (२७१) भ.४५/० या.,श्रवणेबुध २७/३३ ग ६३/११
- (२७२) Aसिंहजय.,शाकंभरीनवरात्रारंभ:राजेन्द्रसुरीश्वरजीजन्मएवं निर्वाणदिन.,थलसेनादि.
- (२७३) मकरेऽर्क: ४४/१५ मकरसंक्रांतिपुण्य,मलमासपूर्ण,
- (२७४) भ. १/२ उप. ३६/५१ या.,वक्रीभौम ३/३४ मं ४/१८ ३३/१६ ग ३३/४०,पंचक ३६/४६ या.गुरुगोविन्द A
- (२७६) ज्येष्ठायांशुक्र ५६/५४ ग ६५/१३
- (२७७) भ.१६/२६ उप. ४५/५६ या.,पुत्रदा११व्रतंस्मार्ता,मन्वादि
- (२७८) कुंभेभानु: ३४/१६ धनेष्ठा१राहुश्लेषा३केतु ३२/३० पुत्रदा११व्रतंनिम्बार्का,मन्वादि,
- (२७९) प्रदोष
- (२८०) भ.२६/५६ उप. ५६/२६ या.,
- (२८१) धनेष्ठायांबुध ४/२३ ग ४५/१२ माघस्नान प्रा.,शाकंभरीनवरात्रपूर्ण,पौषीपूर्णिमासर्वे.

गोचर ग्रहा:

गुरु वक्र,
बुधोदय प.



पौष शुक्ला७+८ शुक्र
गण २७४, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १८ ३७ ५८	६ १३ ३१ ३५	४ २ १८ २४	७ १३ २५ १६	११ ६ ३७ ८	६ २६ ५४ २७	३ २६ ५४ २७
१५ ४०	८३ ११	५ २० +	६५ १७	१ ४०	३ ११	३ ११
पूफा२	श्रव.२	मघा१	अनु.४	उभा२	धने.२	श्ले.४
जल	अमृत	अमृत	प्रचंड	सौम्य	अमृत	अमृत

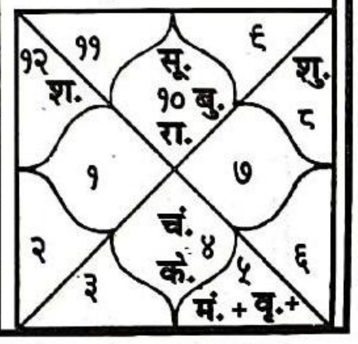
पौष शुक्ला ६गुरु मकरेऽर्कःप्रवेशः।वारात् २ सुभिक्ष। नक्षत्रात् ३ सुभिक्षः। वार नाम मंदा,नृपसुखी। नक्षत्र नाम मंदा,नृपसुखी। संक्रांति काल अर्धरात्रौ,राक्षस सुखी। उत्तरे मुख,अग्निकोंणे दृष्टि, पूर्वे गमनं। वणिज कर्णे खड़ी,तेजी। महिषी वाहन,ऊंट उपवाहन क्लेश। श्याम वस्त्र,तोमर आयुध,पीतल पात्र,दधि भोजन,आंवला लेपन,विप्रजाति,अर्कपुष्प,मणि भूषण,श्वेत कंचुकी,प्रगल्भा अवस्था अग्निमुख,ढोलवाद्य,ज्वरोचित अवस्था। हस्ते पीतफल,लक्ष्मीप्राप्ति। संक्रांति निवास पर्वते,कुंभकार गृहे,अल्पवर्षा(दुष्काल) मुहूर्ता३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे।

पौष शुक्ला १५ शुक्र
गण २८१, इष्ट: ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १५ ५३ ५४	६ २३ १३ ५६	४ १ ४० ५६	७ २१ १४ ६	११ ६ ४८ ५३	६ २६ ३२ १२	३ २६ ३२ १२
२३ ४० +	८३ ११	५ २० +	६८ १३	१ ४०	३ ११	३ ११
पूफा१	श्रव.४	मघा१	ज्ये.२	उभा२	धने.१	श्ले.३
जल	अमृत	अमृत	पवन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहा:

गुरु व मंगलवक्र
बुधोदय प.



माघ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण २८२से२९६)

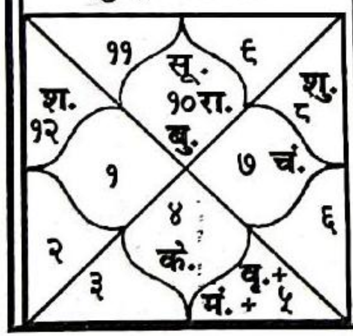
दिनांक २३ जनवरी से ६फरवरी २०२७ ई. तक।
शिशिर ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, दक्षिणगोलेः।
(पौष कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२८२	२३	मैत्र	१.	श.	१७	३६	पु	०/२५	५७/०	प्री	६/५४	४६/४०	कौ	१७	३६	२६/४१	७/३०	६/१०	९	१४	सिंह ५७/०	९ ८ २६ ३१	६१ १५	अभिजितरवि १६/४४ शब्बेबरात
२८३	२४	मुद्गरः	२.	सू.	१२	३६	म	५४	१३	सौ	५३	०	ग	१२	३६	४४	३०	१२	१०	१५	सिंह	९ ९ २७ ४५	६१ १४	भ.४०/२८ उप.,श्रवणेरवि ३१/३५ **A**चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय८/४८बजे तिलकुटी४,गौरी४
२८४	२५	ध्वजः	३.	चं.	८	१८	पू	५२	१३	शो	४६	५६	वि	८	१८	४७	३०	१२	११	१६	सिंह	९ १० २८ ५९	६१ १३	भ.८/१८ या.,अभिजितनिर्गतोरवि ३३/३४ सौभाग्यसुन्दरीव्रतं, **A**
२८५	२६	प्रजापति	४.	मं.	४	४८	उ	५१	१४	अ	४१	३७	बा	४	४८	५०	२९	१३	१२	१७	कन्या ६/५८	९ ११ ३० १२	६१ १२	श्रीरामनन्द जयंति,गणतंत्रदिवस७८वां
२८६	२७	आनंद	५.	बु.	२	१८	ह	५१	२०	सु	३७	११	तै	२	१८	५३	२८	१४	१३	१८	कन्या	९ १२ ३१ २३	६१ ११	
२८७	२८	चर	६.	बृ.	०	५७	चि	५२	४१	धृ	३३	४४	व	०	५७	५६	२८	१६	१४	१९	तुला २२/०	९ १३ ३२ ३३	६१ १०	भ.०/५७उप.३०/५५या.,मार्गीउभा३शनि ३६/५७ग ६/३ ,वक्रीमघायांभौम ३०/०ग ३६/३०
२८८	२९	गद	७.	शु.	०	५२	स्वा	५५	१७	शू	३१	१७	ब	०	५२	५९	२८	१६	१५	२०	तुला	९ १४ ३३ ४४	६१ ९	मूलेधनेशुक्र ४२/२५ग ६८/१० स्वामीविवेकानंदजयं
२८९	३०	शुभ	८.	श.	२	५	वि	५६	६	गं	२६	४६	कौ	२	५	२७/२	२८	१६	१६	२१	वृश्चि. ४३/८	९ १५ ३४ ५३	६१ ८	कुंभेबुध १७/५ बिच्छुड़ा ४३/८ उप.
२९०	३१	मृत्यु	९.	सू.	४	४४	अ	६०	०	वृ	२६	१३	ग	४	४४	६	२६	१७	१७	२२	वृश्चिक	९ १६ ३६ १	६१ ७	भ.३६/३७ उप.,
२९१	१	मानस	१०.	चं.	८	१०	अ	४	१	ध्रु	२६	३०	वि	८	१०	९	२६	१८	१८	२३	वृश्चिक	९ १७ ३७ ७	६१ ६	भ.८/१० या.,फरवरी२८दिन,
२९२	२	मुद्गर	११.	मं.	१२	४७	ज्ये	६	४६	व्या	३०	२२	बा	१२	४७	१२	२६	१८	१९	२४	धनु ६/४६	९ १८ ३८ १४	६१ ५	बिच्छुड़ा ६/४६ या. षट्तिला११व्रतंसर्वे.
२९३	३	ध्वज	१२.	बु.	१७	५४	मू	१६	५	ह	३१	३२	तै	१७	५४	१५	२५	१९	२०	२५	धनु	९ १९ ३९ १९	६१ ४	धनेष्ठायां४बुध ३३/२५ग २१/३०प्रदोष तिलद्वादशी,माधवपूजा
२९४	४	प्रजापति	१३.	बृ.	२३	१२	पू	२२	३३	व	३२	५७	व	२३	१२	१८	२४	२०	२१	२६	मकर ३६/७	९ २० ४० २३	६१ ३	भ.२३/१२उप.५५/४८या.,मेरु१३जैन
२९५	५	आनंद	१४.	शु.	२८	२४	उ	२८	४६	सि	३४	३	श	२८	२४	२१	२४	२०	२२	२७	मकर	९ २१ ४१ २६	६१ २	
२९६	६	सुस्थिर	३०.	श.	३३	६	श्र	३४	२८	व्य	३४	४२	च	०	४५	२४	२४	२२	२३	२८	मकर	९ २२ ४२ २८	६१ १	धनेष्ठायांरवि ३७/१,वक्रीबुध ५७/४८ बु १०/५। २३/६ ग २१/३० मौनीअमावस्या, **B**

B दैवपितृकार्येऽमा.,द्वापरयुगादि,महोदययोग

गोचर ग्रहाः

बुधोदय प.
गुरु,मंगल वक्र



माघ कृष्णा ८ शनिवार
गण २८८ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १३ ६ ४५	६ २८ ५७ २५	४ १ ३ ३४	७ २६ ११ ४६	११ १० २ १६	९ २६ ६ ५६	३ २६ ६ ५६
२६ ३० +	४८ ४२	५ २० +	६८ १३	६ ३	३ ११	३ ११
मघा४	धनि.२	मघा१	ज्ये.४	उभा३	धनि.१	श्ले.३
अमृत	अमृत	अमृत	पवन	सौम्य	अमृत	अमृत

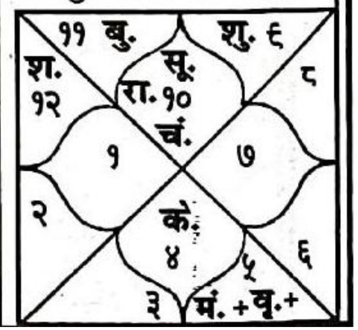
भंडा फोड़ पापी मरे,विस्फोट जंग भूकम्प। ईशाने छत्रभंग हो,पांच शनि हो अणुकंप।।१।। माघ अमावस पूर्णिमा,रवि शनि मंगलवार ।शस्त्रयुद्ध राजा लड़े,रोग शोक अपार।२। माघ सुदी जो अष्टमी ,कृत्तिका नक्षत्रयोग। कै फागुण रोली पड़े,श्रावण महंगो भोग।।३।। पांच शनिचर पांच रवि,पांच भूमिजा जोय। छत्र टूटी धरणी पड़े, माघादिक जब होय।।४।। माघ सुदी एक रवि,युद्ध उपद्रव होय। सुदी आठम रविवार सुं,फागुण रोली जोय।।५।। माघ सुदी एकम रवि,बहु झूंझे रणबंक। सोम शत्तभिष चंदा उदय,छत्र भंग आतंक ।।६।। माघ अमा शनि पड़ो,कुंभ संक्रांत शनिवार। बहु उदंगल वायु घणी,रोग विग्रह संसार।।७।। चंद्रोदय शशिवार को,शत्तभिष रिख के माय। माघ सुदी इण योग सुं,नृप मरण हो जाय।।८।।

माघ कृष्णा ३० शनि
गण २९६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ६ ३४ ३६	१० ४ ४६ ५७	४ ० २० ४८	८ ८ १७ ११	११ १० ५० ४७	९ २५ ४४ २६	३ २५ ४४ २६
२६ ३० +	३४ २७	५ २० +	६८ १०	६ ३	३ ११	३ ११
मघा३	धनि.४	मघा१	मूल३	उभा३	धनि.१	श्ले.३
अमृत	अमृत	अमृत	दहन	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

बुधोदय प.
गुरु व मंगल वक्री



माघ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण २९७से३१०)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मि.[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२९७	७	मातंग	१	सू.	३६	४४	ध	३६	१४	व	३४	३८	किं	४	५५	२७/२८	७/२३	६/२३	२४	२६	कुंभ ६/५१	९ २३ ४३ २०	६० ५८
२९८	८	अमृत	२	चं.	३६	१७	श	४२	५४	प	३३	४०	बा	८	०	३१	२३	२३	२५	३०	कुंभ	९ २४ ४४ १५	६० ५७
२९९	९	काण	३	मं.	४०	३२	पू	४५	२०	शि	३१	४७	तै	९	५४	३४	२२	२४	२६	१	मीन ३६/४३	९ २५ ४५ १४	६० ५६
३००	१०	लुंबक	४	बु.	४०	२७	उ	४६	२९	सि	२८	५४	व	१०	२९	३७	२२	२४	२७	२	मीन	९ २६ ४६ १०	६० ५५
३०१	११	मैत्र	५	वृ.	३९	९	रे	४६	२४	सा	२५	०	ब	९	४८	४०	२३	२५	२८	३	मेष ४६/२४	९ २७ ४७ २	६० ५३
३०२	१२	वज्र	६	शु.	३६	४०	अ	४५	१६	शु	२०	११	कौ	७	५४	४३	१९	२५	२९	४	मेष	९ २८ ४७ ५४	६० ५९
३०३	१३	ध्वांक्ष	७	श.	३३	११	भ	४३	१०	शु	१४	३२	ग	४	५५	४६	१९	२५	३०	५	वृषभ ५७/४२	९ २९ ४५ ३५	६० ५०
३०४	१४	धूम्रा	८	सू.	२८	५१	कृ	४१	१८	ब्र	८	९	वि	१	१	४९	१८	२६	१	६	वृषभ	१० ० ४५ ३३	६० ४५
३०५	१५	प्रवर्धमान	९	चं.	२३	४७	रो	३६	५०	ऐं	१/१६	५३/५१	कौ	२३	४७	५३	१७	२७	२	७	वृषभ	१० १ ५० २२	६० ४७
३०६	१६	राक्षस	१०	मं.	१८	१७	मृ	३२	५७	वि	४६	१३	ग	१८	१७	५६	१७	२७	३	८	मिथुन ४/५३	१० २ ५१ ६	६० ४६
३०७	१७	मूसल	११	बु.	१२	३२	आ	२८	५२	प्री	३८	२६	वि	१२	३२	५९	१६	२८	४	९	मिथुन	१० ३ ५१ ५०	६० ४८
३०८	१८	सिद्धि	१२	वृ.	६	३९	पु	२४	४६	आ	३०	४०	बा	६	३९	२९/२	१६	२८	५	१०	कर्क १०/४७	१० ४ ५२ ३२	६० ४३
३०९	१९	उत्पात	१३	शु.	०	५२	पु	२०	५२	सौ	२३	४	तै	०	५२	६	१५	२९	६	११	कर्क	१० ५ ५३ १३	६० ४१
०	०	०	१४	शु	५५	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
३१०	२०	मानसः	१५	श.	५०	२५	श्ले	१७	२१	शो	१५	४६	वि	२२	५४	१०	१४	३०	७	१२	सिंह १७/२१	१० ६ ५३ ५३	६० ३५

दिनांक ७ फरवरी से २० फरवरी २०२७ई.तक।

शिशिर/वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः।

卐 (माघ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

पंचक ६/५१उप.गुप्तनवरात्रारंभ,श्रीवल्लभजयंति

चंद्रोदयमु.१५तेजी,

वक्रीश्लेषा४कर्केगुरु५३/२४ग६/३० रोजात्यौहार,रमजान९मु.गौरीतृतीयाव्रतं.

भ.१०/२९उप.४०/२७या.,बुधास्तप.१२/४८पूषायांशुक्र३६/३९ग७२/२तिलचतुर्थीप्रदोषव्यापिनी

पंचक४६/२४या. वसंत पंचमी,श्रीसरस्वतीमहोत्सव,श्रीपंचमी,नेताजीसुभाषजय.

वक्रीधनेष्ठा३बुध४१/२३ग७/५४ Aमर्यादामहोत्सवजैन,अचला७पुत्र७व्रतं,

भ.३३/११ उप.,कुंभेऽर्कः११/१२ ,ज्वालामुखी ४३/१० उप.,रथ७,मन्वादि, A

भ.१/१ या.,ज्वालामखी३६/५१या.४१/१८उप.भीष्माष्टमी

ज्वालामुखी३३/४७या.,कृतयुगादी

भ.४५/२४उप., B विश्वकर्माजयंति,गुरुगोरखनाथजयं.,कल्पादि,

भ.१२/३२या.,जया११व्रतंसर्वे:, भिष्मद्वादशी,

मीनेभानु३/३५,वसंतऋतुप्रारंभ अर्यमाआदित्य१२व्रतं प्रदोष B

भ.५५/२३उप.,शत्तभिषायांरवि४६/१९ माघजयं.,मेलाबाणेश्वर बांसवाड़ा,

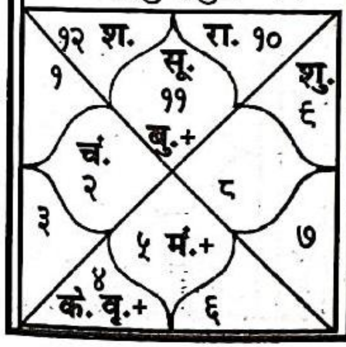
भ.२३/५४या.,होलिका(रोपणी)रोपणम् भद्रोपरांत,रामस्नेहिजयं. C

C प्रयागराज माघस्नानपूर्ण,रविदासजयं.,ललिताजयं.

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपश्चिमे

मंगल,बुध,गुरु वक्र



माघ शुक्ला ८ सूर्य
गण ३०४ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ६ २ ३३	१० ३ १४ ४६	३ २९ ३३ १३	८ १७ ३५ ४८	११ ११ ३९ १६	९ २५ १९ ३	३ २५ १९ ३
२६ ३० +	३ ५९ +	६ ३० +	७२ २	६ ३	३ ११	३ ११
मघा२	धनि.३	पू.षा.४	पुष्य२	उ.भा.३	धनि.१	पू.षा.३
अमृत	अमृत	अमृत	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

माघ शुक्ला ७शनि कुंभेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ सुभिक्षः,नक्षत्रात् ३ सुभिक्षः। वार नाम राक्षसी,चांडाल सुखी। नक्षत्र नाम घोरा, शूद्र सुखी। संक्रांति काल पूर्वाण्हे,विप्रराजा सुखी। पश्चिमे मुख ,ईशान दृष्टि,उत्तरे गमनं। वणिज कर्णे खड़ी,तेजी। महिषी वाहन,ऊँट उपवाहन,क्लेश। श्यामवस्त्र,तोमर आयुध,पीतल पात्र,दधि भोजन,आंवला लेपन,विप्र जाति,अर्कपुष्प,मणिभूषण ,श्वेत कंचुकी, प्रगल्भा अवस्था,अग्निमुख,ढोलवाद्य,ज्वराचिता अवस्था। हस्ते रक्तफल,प्रजादुखी। संक्रांति निवास तटे,रजक (धोबी) गृहे,सुभिक्ष। मुहूर्ता १५तेजी। संक्रांति पुण्यं स्वदिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे।

माघ शुक्ला १५ शनि
गण ३१०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ३ २३ २९	१० २ ५० ४८	३ २८ ५४ ७	८ २४ ४८ २	११ १२ १५ ३७	९ २४ ५९ ५८	३ २४ ५९ ५८
२६ ३० +	३ ५९ +	६ ३० +	७२ २	६ ३	३ ११	३ ११
मघा२	धनि.३	पू.षा.४	पुष्य४	उ.भा.३	धनि.१	पू.षा.३
अमृत	अमृत	अमृत	सौम्य	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपश्चिमे

मंगल,बुध,गुरु वक्र



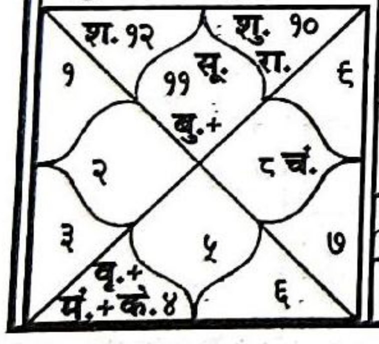
फाल्गुन कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण ३११से३२६)

दिनांक २१ फरवरी से ८मार्च २०२७ई.तक। वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायने:,दक्षिणगोले:। (माघ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३११	२१	मुद्गरः	१.	सू.	४६	४	म	१४	२५	अ	८	५७	बा	१८	१४	२८ १४	७ १३	६ ३१	८	१३	सिंह	१० ७ ५४ २९	६० ३८	उषायांशुक्र३३/४७ग७२/१६
३१२	२२	ध्वजः	२.	चं.	४२	३७	पू	१२	१५	सु	३ ४२	५७ १३	तै	१४	२०	१८	१२	३२	६	१४	कन्या २६/५६	१० ८ ५५ ६	६० ३६	
३१३	२३	प्रजापति	३.	मं.	४०	१०	उ	११	१	शू	५२	२४	व	११	२३	२२	१२	३२	१०	१५	कन्या	१० ९ ५५ ३६	६० ३४	भ.११/२३उप.४०/१०या.,
३१४	२४	आनंद	४.	बु.	३८	५५	ह	१०	५३	गं	४८	५०	ब	६	३२	२६	१०	३२	११	१६	तुला ४१/२५	१० १० ५६ १२	६० ३२	मकरेशुक्र१८/४३ चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/१ बजे,
३१५	२५	चरः	५.	बृ.	३८	५४	चि	११	५७	वृ	४६	७	कौ	८	५४	३०	६	३३	१२	१७	तुला	१० ११ ५६ ४१	६० ३०	
३१६	२६	गदः	६.	शु.	४०	१२	स्वा	१४	१६	ध्रु	४४	२३	ग	६	३३	३३	८	३४	१३	१८	तुला	१० १२ ५७ ६	६० २८	भ.४०/१२ उप.,बुधोदयपू.३४/११श्रीनाथजीपाटोत्सव(नाथद्वारा)
३१७	२७	शुभ	७.	श.	४२	४४	वि	१७	४६	व्या	३३	३६	वि	११	२८	३७	६	३४	१४	१९	वृश्चि. १/५५	१० १३ ५७ ३५	६० २६	भ.११/२८या.,वक्रीश्लेषायांकर्केभौम४०/३०ग२९/५५बिच्छुड़ा१/५५उप.
३१८	२८	मृत्यु	८.	सू.	४६	२४	अ	२२	३१	ह	३३	४५	बा	१४	३४	४१	५	३५	१५	२०	वृश्चिक	१० १४ ५८ ०	६० २५	श्रीसीताष्टमी,राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
३१९	१	पद्म	९.	चं.	५१	२	ज्ये	२८	७	व	४४	३१	तै	१८	४३	४५	४	३६	१६	२१	धनु २८/७	१० १५ ५८ २०	६० २२	मार्गीबुध३६/११बु२०/२१ १३/५४ग५४बिच्छुड़ा२८/७या. मार्च३१दिन,श्रीसमर्थरामदास९,
३२०	२	छत्र	१०.	मं.	५६	११	मू	३४	२१	सि	४५	४४	व	२३	३६	४९	३	३७	१७	२२	धनु	१० १६ ५८ ४१	६० २०	भ.२३/३६उप.५६/११या.,उभा४शनि३७/१५ग७/८ ,इबादरात
३२१	३	श्रीवत्स	११.	बु.	६०	०	पू	४०	५३	व्य	४७	८	ब	२८	४६	५३	३	३७	१८	२३	मकर ५७/२७	१० १७ ५९ ०	६० १९	विजया११स्मार्ता
३२२	४	सौम्य	११.	बृ.	१	२७	उ	४७	१०	व	४८	३४	बा	१	२७	५७	२	३६	१९	२४	मकर	१० १८ ५९ १८	६० १७	श्रवणेशुक्र३६/३१ग७२/५०,विजया११निम्बार्का
३२३	५	धूम्रा	१२.	शु.	६	३२	श्र	५३	३	प	४६	१८	तै	६	३२	२९ १	३	३७	२०	२५	मकर	१० १९ ५९ ३३	६० १४	पूभायांरवि२०/२५,प्रदोष गोविन्दपूजा,अतिरात्रयज्ञफल
३२४	६	प्रवर्धमान	१३.	श.	११	७	ध	५८	३	शि	४६	३३	व	११	७	५	०	३८	२१	२६	कुंभ २५/३३	१० २० ५९ ४६	६० १२	भ.११/७उप.४३/५३या.,पंचक२५/३३उप.महाशिवरात्रिव्रतं.मध्यरात्रि A
३२५	७	राक्षसः	१४.	सू.	१४	३६	श	६०	०	सि	४८	५५	श	१४	३६	६	६ ५६	३६	२२	२७	कुंभ	१० २१ ५९ ५५	६० १०	Aव्यापिनी रुद्राभिशेषरात्रिजागरणम्,श्रीदयानन्दबोधोत्सवः,शब ए कद्रमुस.
३२६	८	अमृतः	३०.	चं.	१७	८	श	२	०	सा	४७	२५	ना	१७	८	१३	५७	३६	२३	२८	मीन ४६/११	१० २३ ० ३	६० ८	दैवपितृकार्येऽमा,शिवखप्परपूजा

गोचर ग्रहाः

बुधादय पूर्वे,
बुध,मंगल,गुरु वक्र



फाल्गुन कृष्णा ८ रवि
गण ३१८ इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २६ ५३ १३	१० २ १८ ५०	३ २८ १ ५६	६ ४ २६ ४२	११ १३ ४ ६	६ २४ ३४ ३२	३ २४ ३४ ३२
२० ५५ +	३ ५६ +	६ ३० +	७२ १६	६ ३	३ ११	३ ११
श्ले.४	धने.३	श्ले.४	उषा.३	उभा३	धने.१	श्ले.३
अमृत	अमृत	अमृत	नीर	सौम्य	अमृत	अमृत

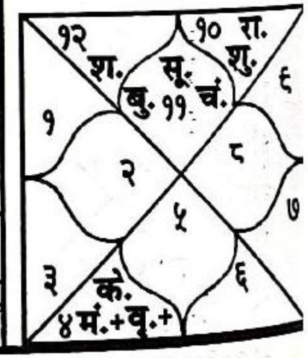
पांच रवि भय घणो,अग्नि उपद्रव रोग। फोड़ा फुंसी विसूचिका,छत्र भंग को भोग।।१।। फागुण वदी तीज मंगली,छठ स्वाति संयोग। रणबंका रण लड़े,पांच रवि को योग।।२।। शिवरात शनिचरी,शिव ताण्डव करंत। सोमवती अमावसी,सुख सुभिक्ष होवंत।।३।। रवि शनि मंगल होलिका,उल्कापाती योग। ताण्डव नर प्रकृति का, हाहाकार दुःख भोग।।४।। फागुण वदी जो बीज दिन,बादल होय न बीज। वरसे सावन भादवों,सखियों खेलों तीज।।५।। फागुण में खर पवन,वायु मार करंत। तो निश्चय जानिये आगे काल पडंत ।।६।। फागुण गर्भ्यो जोय,जो होवे मावठ माघजी। झडी श्रावण ज्युं होय,ऊनाले अन्न नीपजे।।७।। रोपणी में रूप गया,बादल जो आकाश। होली तक ये बादला,खेती करे विनाश।।८।।

फाल्गुन कृष्णा३० चंद्र
गण ३२६, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २७ ५ ५१	१० ३ ४ २५	३ २७ ६ ५१	६ १४ ७ १	११ १३ ५८ २३	६ २४ ६ ५	३ २४ ६ ५
२० ५५ +	७ ५४ मा	६ ३० +	७२ ५०	७ ८	३ ११	३ ११
श्ले.४	धने.३	श्ले.४	श्रव.२	उभा४	धने.१	श्ले.३
अमृत	अमृत	अमृत	अमृत	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

बुधादय पूर्वे,बुधमार्गी
मंगल,गुरु वक्र



फाल्गुन शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः१९४८ (लघुगण३२७से३४०)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
३२७	९	काण	१.	मं.	१८	१४	पू	४	४५	शु	४४	५६	ब	१८	१४	२९/१७	६/५७	६/३६	२४	२९	मीन	१० २४ ० ५	६० ६
३२८	१०	लुंबक	२.	बु.	१८	४	उ	६	१३	शु	४१	२५	कौ	१८	४	२१	५६	४०	२५	१	मीन	१० २५ ० १५	६० ३
३२९	११	मैत्र	३.	बृ.	१६	३६	रे	६	३४	ब्र	३६	५७	ग	१६	३६	२५	५५	४१	२६	२	मेष ६/३४	१० २६ ० १५	६० १
३३०	१२	वज्र	४.	शु.	१४	१	अ	५	४२	ऐं	३१	३७	वि	१४	१	२९	५४	४२	२७	३	मेष	१० २७ ० १४	५९ ५९
३३१	१३	ध्वांक्षः	५.	श.	१०	२६	भ	३	५१	वै	२५	२१	बा	१०	२६	३२	५३	४१	२८	४	वृषभ १८/१०	१० २८ ० १२	५९ ५९
३३२	१४	धूम्रा	६.	सू.	५	५८	कृ	१/७	५७/४६	वि	१८	४२	तै	५	५८	३६	५२	४२	२९	५	वृषभ	१० २९ ० ७	५९ ५४
३३३	१५	आनंद	७.	चं.	०	५४	मृ	५४	३	प्री	११	३२	व	०	५४	४०	५१	४३	३०	६	मिथुन २७/५६	१० २९ ५९ ५९	५९ ५२
०	०	०	८.	चं.	५५	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
३३४	१६	चर	९.	मं.	४९	३२	आ	५०	०	आ	४/३	५६/२३	बा	२२	२६	४४	४६	४३	१	७	मिथुन	११ ० ५९ ५०	५९ ५१
३३५	१७	गद	१०.	बु.	४३	३५	पु	४५	५४	शो	४८	३६	तै	१६	३३	४८	४८	४४	२	८	कर्क ३१/५५	११ १ ५९ ४१	५९ ४५
३३६	१८	शुभ	११.	बृ.	३७	४७	पु	४१	५७	अ	४१	३	व	१०	४१	५२	४८	४४	३	९	कर्क	११ २ ५९ ३५	५९ ४६
३३७	१९	मृत्यु	१२.	शु.	३२	१७	श्ले	३८	२१	सु	३३	४३	ब	५	२	५५	४५	४५	४	१०	सिंह ३८/२१	११ ३ ५९ ३१	५९ ३५
३३८	२०	पद्म	१३.	श.	२७	१७	म	३५	१७	धृ	२६	४८	तै	२७	१७	३०/०	४५	४५	५	११	सिंह	११ ४ ५९ २५	५९ ४१
३३९	२१	छत्रः	१४.	सू.	२२	५८	पू	३२	५६	शू	२०	२६	व	२२	५८	४	४३	४५	६	१२	कन्या ४७/३६	११ ५ ५९ ३४	५९ ३५
३४०	२२	श्रीवत्सः	१५.	चं.	१६	२६	उ	३१	३६	गं	१४	४८	ब	१६	२६	८	४६	४६	७	१३	कन्या	११ ६ ५९ १२	५९ ३७

दिनांक ९मार्च से २२ मार्च २०२७ ई. तक।

वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिण/उत्तरगोलेः।

卐 (फाल्गुन शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

मार्गीधनेष्ठा४बुध ५९/१ ग ३३/२० चंद्रोदयमु.४५मंदी,

सव्वाल१०मु.मीठीईद, फूलेरा दूज, पयोव्रतप्रारंभ(भारत) A

भ. ४४/१८ उप., पंचक ६/३४ या.

A श्रीरामकृष्णपरमहंस जयंती,

भ. १४/१ या., वक्रीश्लेषा३गुरु ३४/५२ ग २/५०, ज्वालामुखी १४/१ उप.

ज्वालामुखी ३/५१ या., रंगपंचमी याज्ञवल्क्यजयं.,

भ. ०/५४ उप. २८/८ या., मीनेऽर्कः ०/२ धनेष्ठायांशुक्र ३५/३० ग ७३/४ B

B होलाष्टक ०/५४ उप.प्रारंभ

शनिअस्त ३६/३०

C आमलकी११व्रतंसर्वे, मेलाखाटूश्यामजीप्रा.

भ. १०/४१ उप. ३७/४७ या., उभायांरवि ३०/२७ शत्तभिषायांबुध ३२/१७ ग ६०/७ C

मेषेभानुः ४६/५८, रविउत्तरगोलेमहाविषुवदिन, दिन-रातबराबर

प्रदोष पयोव्रत पूर्ण,

भ. २२/५८ उप. ५१/१४ या., कुंभेशुक्र ३/५५ होलिकादहनंभद्रोपरांतः ५१/१४ उप., ब्रह्ममुहूर्ते

पूर्णिमाव्रतं, मन्वादि, गणगौरीव्रतारंभ ढुंढोत्सव D

D वसंतोत्सव, फागछारड़ी, जमड़ा,

गोचर ग्रहाः

बुधमार्गी,बुधोदयपूर्वे
मंगल व गुरु वक्र



फाल्गुन शुक्ला७+८चंद्र
गण ३३३ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २४ ३९ २४	१० ५ १७ २६	३ २६ ३३ ७	९ २२ ३६ ५५	११ १४ ४८ २१	९ २३ ४६ ५०	३ २३ ४६ ५०
२० ५५ +	२३ २०	२ ५० +	७२ ५०	७ ८	३ ११	३ ११
श्ले.३	धनि.४	श्ले.४	श्र.४	उभा.१	धनि.१	श्ले.३
अमृत	अमृत	अमृत	अमृत	सौम्य	अमृत	अमृत

फाल्गुन शुक्ला ७ चंद्र मीनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ सुभिक्षः। नक्षत्रात् ४ दुर्भिक्षः। वार नाम ध्वांक्षी,वैश्य सुखी। नक्षत्र नाम मंदाकिनी,नृपसुखी। संक्रांति काल प्रातःविप्रराजासुखी। पश्चिमे मुख,अग्निकोणे दृष्टिःउत्तरे गमनं। वणिज कर्णे खड़ी,तेजी। महिषी वाहन,ऊँट उपवाहन,क्लेश। श्याम वस्त्र,तोमर आयुध,पीतल पात्र,दधि भोजन,आंवला लेपन,विप्र जाति,अर्क पुष्प,मणि भूषण,श्वेत कंचुकी,प्रगल्भा अवस्था,अग्निमुख, ढोलवाद्य,ज्वरोचिता अवस्था। हस्ते श्वेतफल सुखी। संक्रांति निवास तटे,रजक(धोबी) गृहे,सुभिक्ष। मुहूर्ता ३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं स्व दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पूर्वे।

फाल्गुन शुक्ला१५ चंद्र
गण ३४०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २२ १२ ५७	१० ११ १७ २२	३ २६ १३ १४	१० १ ८ १८	११ १५ ३८ १९	९ २३ २४ ३४	३ २३ २४ ३४
२० ५५ +	८० ७	२ ५० +	७३ ४	७ ८	३ ११	३ ११
श्ले.२	शतभि	श्ले.३	धनि.३	उभा.४	धनि.१	श्ले.३
अमृत	जल	अमृत	अमृत	सौम्य	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शनिअस्त,बुधोदयपूर्वे
मंगल व गुरु वक्र



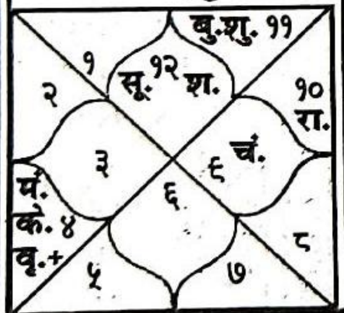
चैत्र कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८३ शालिवाहन शकः १९४८(लघुगण ३४१से३५५तक)

दिनांक २३ मार्च से ६अप्रेल २०२७ई.तक।
वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,उत्तरगोलेः।
(फाल्गुन कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	१५ तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	स्टेण्डर्ड जोधपुर अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	विवरण
३४१	२३	सौम्यः	१.	मं.	१७	३	ह	३१	६	वृ	६	५६	कौ	१७	३	३०/३२	६/४२	६/४६	८	१४	कन्या	११ ७ ५७ ४७	५९ ३६	श्रवण४राहुश्लेषा२केतु२६
३४२	२४	काल	२.	बु.	१५	४७	चि	३१	५३	ध्रु	५	५६	ग	१५	४७	१६	४०	४६	९	१५	तुला १/२६	११ ८ ५७ २१	५९ ३४	भ.४४/४६ उप.,मार्गीभौम३३/३४मं३/२१।१६/४५ग११/१४ संततुकाराम जयंति
३४३	२५	सुस्थिर	३.	वृ.	१५	४५	स्वा	३३	५६	व्या	३	२	वि	१५	४५	२०	३९	४७	१०	१६	तुला	११ ९ ५६ ५२	५९ ३०	भ.१५/४५या.,चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/६ बजे कल्पादि
३४४	२६	मातंग	४.	शु.	१७	३	वि	३७	१३	ह	१	४	बा	१७	३	२४	३८	४८	११	१७	वृश्चि. ३१/२३	११ १० ५६ २१	५९ २८	शत्तभिषायांशुक्र३२/१६ग७३/३६ विच्छुड़ा२१/२३ उप.
३४५	२७	अमृत	५.	श.	१९	३८	अ	४१	४१	व	०	७	तै	१९	३८	२८	३६	४८	१२	१८	वृश्चिक	११ ११ ५५ ४७	५९ २६	श्रीरंगपंचमी,
३४६	२८	काण	६.	सू.	२३	१८	ज्ये	४७	७	सि	०	२	व	२३	१८	३१	३६	४८	१३	१९	धनु ४७/७	११ १२ ५५ १०	५९ २३	भ.२३/१८उप.५५/३४या.,पूभायांबुध३१/२०ग६३/३३विच्छुड़ा४७/७या. एकनाथषष्ठी,
३४७	२९	लुंबक	७.	चं.	२७	५०	मू	५३	१५	व्य	०	४२	ब	२७	५०	३५	३५	४९	१४	२०	धनु	११ १३ ५४ ३२	५९ २१	शीतला७पूजनबासोड़ा
३४८	३०	मैत्र	८.	मं.	३२	५६	पू	५९	४९	व	१	५२	बा	०	२३	३९	३४	५०	१५	२१	धनु	११ १४ ५३ ५१	५९ २०	रेवती१शनि३६/३३ग७/१३ शीतलाष्टमी,केसरियाजीमेलामेवाड़,ऋषभदेवजंयति
३४९	३१	वज्र	९.	बु.	३८	९	उ	६०	०	प	३	१९	तै	५	३२	४३	३३	५१	१६	२२	मकर १६/२५	११ १५ ५३ ८	५९ १९	रेवत्यांरवि४७/२५ A दशामाताव्रत
३५०	१	सौम्य	१०.	वृ.	४३	११	उ	६	१५	शि	४	४४	व	१०	४०	४७	३२	५०	१७	२३	मकर	११ १६ ५२ २२	५९ १६	भ.१०/४०उप.४३/११या.,बुधास्तपू.१२/२,अप्रेल३०दिन,बैंकवार्षिक लेखाबंदी A
३५१	२	धूम्रा	११.	शु.	४७	३६	श्र	१२	१९	सि	५	५९	ब	१५	२३	५१	३१	५१	१८	२४	कुंभ ४४/५३	११ १७ ५१ ३४	५९ १४	पंचक४४/५३उप.पापमोचनी११व्रतंसर्वे
३५२	३	प्रवर्धमान	१२.	श.	५१	३	ध	१७	३०	सा	६	२१	कौ	१९	१९	५५	२९	५१	१९	२५	कुंभ	११ १८ ५० ४५	५९ १४	मीनेबुध५६/५७
३५३	४	राक्षस	१३.	सू.	५३	२५	श	२१	४२	शु	६	६	ग	२२	१४	५९	२८	५२	२०	२६	कुंभ	११ १९ ४९ ५३	५९ १०	भ.५३/२५ उप.,प्रदोष,वारुणीयोग
३५४	५	मूसल	१४.	चं.	५४	२९	पू	२४	४३	शु	४	५७	वि	२३	५७	३१/३	२८	५३	२१	२७	मीन ५६/५७	११ २० ४९ ०	५९ ६	भ.२३/५७या., विष्णुपूजा पौण्डरीक यज्ञ फल गंगास्नानवत् पुण्यद
३५५	६	सिद्धि	३०.	मं.	५३	३२	उ	२६	३०	ब्र	२/४८	५६/३८	च	२४	०	७	२७	५३	२२	२८	मीन	११ २१ ४८ १	५९ ४	उभायांबुध५/२६ग१५३/२७,पूभायांशुक्र२३/५८ग७३/३८ देवपितृकार्येऽमा,मन्वादि

गोचर ग्रहाः

शनिअस्त,बुधोदयपूर्वे
मंगलमार्गी,गुरु वक्र



चैत्र कृष्णा ८ मंगल
गण ३४७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २२ ६ ५२	१० २० ४४ ३६	३ २५ ५३ २०	१० ६ ४१ १८	११ १६ २८ १६	६ २३ २ १८	३ २३ २ १८
११ १४ मा	६३ २१	२ ५० +	७३ ३६	७ ८	३ ११	३ ११
श्ले.२	पूभा१	श्ले.३	शत्त१	उभा३	श्रव.४	श्ले.२
अमृत	नीर	अमृत	जल	सौम्य	अमृत	अमृत

पांच मंगल अमंगल करे,रक्तपात उत्पात। छत्रभंग विस्फोट हो,जनता पर आघात।।१।। एकम आठम अमावसी,मंगलवारी आय। चतुग्रही संयोग सुं,प्रकृति ताण्डव थाय।।२।। सभी ग्रह राह केतु बिच,तब काल सर्प को योग। सत्ता पलट उत्पात हो,विष प्रदूषण रोग।।३।। चैत्र अमावस रवि शनि मंगल,छत्र भंग वा देश उदंगल। पांच मंगल चैत्र में होय,हाहाकार करे सब कोय।।४।। चैत वदी में अंबर जोय,बीज छांट बांदल जो होय। समो आगलो होय सुगाल,सुदी में दिखे तो पड़े दुकाल।।५।। चैत गरभियों माघजी,फूल रही वनराय। कंत खिलावे कामिनी, वच्छ खिलावे गाय।।६।। चैत शुक्ल दस दिवस जों,करै न इन्द्र मंडाण। कार्तिकादि माधांत गर्भ,सब पक्के जान।।७।। चैत सुदी पक्ष में,दस दिन बीज खिवंत। जो अंबर गरजे नहीं,चारों मास झरंत।।८।।

चैत्र कृष्णा ३० मंगल
गण ३५५, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २३ ३६ ५२	११ ३ ११ २६	३ २५ ३० ३५	१० १६ ३० ३५	११ १७ २५ ५६	६ २२ ३६ ५२	३ २२ ३६ ५२
११ १४ मा.	६३ २१	२ ५० +	७३ ३६	७ १३	३ ११	३ ११
श्ले.३	पूभा४	श्ले.३	शत्त४	रेव.१	श्रव४	श्ले.२
अमृत	नीर	अमृत	जल	दहन	अमृत	अमृत

गोचर ग्रहाः

शनिअस्त,बुधास्तपू.
मंगलमार्गी,गुरु वक्र



तेजी मंदी

(सर्वधातु,अनाज,रसकस,तिलहन,शेयर,किराना के विशेष चांस नीच ग्रहों के व राशि अनुसार देखें।)

सूर्य (सिंह राशि) की वस्तुयें-लाल गुलाबी वस्तुयें,जवाहरात,मुद्रा,चावल, दवाईयां,सोना,चमड़ा,पत्थर,ऊनीवस्त्र,रसकस(गुड़,शक्कर) मसाले,पीतल केशर।

चंद्र(कर्क राशि) की वस्तुयें- सफेद वस्तुयें,सफेद कपड़ा, चांदी, कांच, सूत, कपड़ा, रेशमी वस्त्र,ऑयल पेट्रोल शेयर, शराब, तंबाकु , मसाले, सौन्दर्य वस्तुयें, जलोत्पन्न वस्तुयें। पानी,शर्बत आदि।

मंगल(राशि1,8)की वस्तुयें- लाल वस्तुयें,शस्त्रास्त्र,बिजली की वस्तुयें,खनीज वस्तुयें,जमीन,मकान निर्माण सामग्री ,ताँबा, सोना, मशीनरी,रेल्वे शेयर्स,तेल तिलहन, कॉफी चाय, हल्दी, किराणा, अलसी, मूंगफली, अनाज, कठोल, दवाईयां, रसकस,केमीकल्स,हींग,लाख चमड़ा,अरण्डी,तेजाब,सुपारी,सड़क आदि भूमि पर निर्माण सामग्री। इन वस्तुओं के शेयर। इत्तर आदि तेल।

बुध(राशि 3,6)की वस्तुयें- हरि वस्तुयें,सूत,कपड़ा,सूतली,बारदान,गवार,रुई बाजार,ज्वार ,मटर,मक्का,सौंफ,जीरा,कामाशक्ति की वस्तुयें,धनियां,दालें,मूंग, ग्वार, राई,सरसों,जूट,पिस्ता,शक्कर,सिल्क,टेक्सटाईल शेयर,वनस्पति घी,कागज, अखबार,स्त्री व स्त्रियोचित्त वस्तुयें,सौन्दर्य का सामान। इन वस्तुओं के शेयर।

गुरु(राशि 9,12) की वस्तुयें- पीली वस्तुयें, सोना,चांदी,घी, मक्खन,ऐरण्डी, ग्वार, अलसी, रबड़,बारदाना, रसकस, कागज, किताबें, हल्दी, जस्ता, टीन, कांसा, तांबा, सीसा, स्टील, प्लास्टिक, ज्वेलरी, जवाहरात, पत्थर,सीमेंट, चूना, घी, मक्खन,समुद्रीय वस्तुयें,मछली,शक्कर,शेयर व इन वस्तुओं के शेयर,सुगंधित वस्तुयें,इत्तर आदि।

शुक्र(राशि 2,7) की वस्तुयें- सफेद वस्तुयें, सेक्स वर्धक वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें, स्टील, सूत,सफेद कपड़ा, चांदी, कांच,जूट, शक्कर,ऐरण्डी, सोना, ज्वेलरी, मेवें, पशु, तेल तिलहन,रंगीन वस्त्र,शक्कर,शेयर इन वस्तुओं के शेयर, वाहन यान,सुगंधित वस्तुयें इत्तर आदि।

शनि(राशि 10,11) की वस्तुयें- काली,नीली,वस्तुयें,तेल तिलहन, सीमेण्ट ,एरण्डी , कोयला,कोयला शेयर,हींग,लाख,चमड़ा,कालीमिर्च,लोहा,मशीनरी,वाहन समुद्रीय जहाज। मीलों के शेयर,मशालें,मेवे,नील,सूत, कपड़ा, नशीली वस्तुयें, मशीनरी पार्ट्स,नमक,बर्तन,लोहे की वस्तुयें।

राहु(कन्या राशि) की वस्तुयें- काली,स्लेटी वस्तुयें,जहर,सर्पादि जीव, सीसा, लोहा, प्याज,लसण,केमीकल्स,अपंग लोगों की वस्तुयें हींग

केतु(मीन राशि)की वस्तुयें- काली वस्तुयें विष(जहर) हड्डी,चर्बी,विकलांग की वस्तुयें।

चैत्र शुक्ल पक्षः- यह १४ दिन का पक्ष रुई चांदी अनाज घी तेज। मीने सू.+चं. +शु.+श.युति ता.१६,२० मार्च २०२६ तक गुरु चंद्र की वस्तुयें तेज व सूर्य,शुक्र ,शनि की वस्तुओं में घटाबढ़ी से तेजी। ता.१६ मार्च से ता.५ अप्रेल तक कुंभे मं. +बु.+रा.युति से बुध की वस्तुयें तेज व मंगल,राहु में घटाबढ़ी से तेज। बाजार देख कर चले। ता.२० मीने **चंद्रोदय मु.३०**स्थिरता। दक्षिण तेजी। **२शुक्रवारी** रुई में घटाबढ़ी। ता.२१,२२ **मेषे चं.+शु.** से इनकी वस्तुयें मंदी। ता.२३ **पूभायां भौम** कुंभ राशि की वस्तुयें तेज। ता.२५ को कुंभे बु.+रा.युति **बुध ग्रहण** से बुध की वस्तुओं में भारी तेजी। ता.१६ मार्च से ५ अप्रेल तक **मीने सू.+श.**युति से इन ग्रहों व राशि में भारी तेजी,व्यापारी डूबे,लाईन देख कर धंधा करें। ता.२६ **भौमोदय** पू.कुंभ राशि व मंगल की वस्तुओं अकस्मात् तेजी से मंदी,बाजार उल्टा विपरीत चले,देख कर काम करे। ता.२५ से २७ तक **मिथुने चं.+वृ.**युति से इनकी वस्तुओं में भारी मंदी का झटका। ता.२६ को १२ क्षया रुई चांदी,अनाज, घी तेज। ता.२७ से २८ तक चंद्र की वस्तुओं में अच्छी मंदी। ता.२६ से ३१ तक सिंह चं.+के.युति से चंद्र की वस्तुयें तेज व सूर्य की वस्तुयें मंदी। ता.३१ मार्च तक कालसर्पयोग से दवाईयां तेज। ता.३१ को **रेवत्यां रवि** से मीन व सूर्य राशि की वस्तुयें तेज।

वैशाख कृष्ण पक्षः- १६ दिन का पक्ष रुई तेज,चांदी मंदी। ता.२.४.२६ को १ गुरुवारी गुरु की वस्तुयें मंदी व शस्त्रास्त्र तेज। ता.३ से ५ तक **तुले चं.+शु.**युति से इनकी वस्तुओं में भारी मंदी का झटका। ता.२ मार्गी **पुन.२** गुरु अनाज तेज। ता.४ **भरण्यां शुक्र** से शुक्र वस्तुयें घटाबढ़ी से मंदी। ता.५ को **मीने भौम** से तेजी। ता.५ से ७ तक वृश्चिक चंद्र से भारी घटाबढ़ी से नीचा भाव। ता.७ **मीने बुध** से तेजी। **मीने सू.+मं.+बु.+श.**युति से बुध,गुरु की वस्तुयें तेज व सूर्य,शनि में मंदी का रुख। ता.८ से १० तक धनु चंद्र से इनकी वस्तुयें मंदी। ता.८ को **शनि उदय** पू.विपरीत बाजार। **उभायां भौम** से तेजी। **उभायां बुध** तेजी। ता.६ से १६ तक

उभा मं.+बु.+श.युति से बुध की वस्तुयें तेज। मंगल शनि की मंदी। ता.१० से १२ तक **मकरे चंद्र** से इनकी वस्तुयें अच्छी मंदी आगे। ता.१७ तक चंद्र की वस्तुयें अच्छी तेजी। ता.१२ को **पंचक** रविवारी तेजी। ता.१४ **मेषेऽर्क** रविवारी से सूर्य,मंगल,शुक्र की वस्तुयें अच्छी तेज। ता.१५ **कृत्तिकायां शुक्र** से शुक्र वस्तुओं में अच्छी घटाबढ़ी। उन वस्तुओं का बाजार देख कर चले।

वैशाख शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी अनाज घी तेज। ता.१८.४.२६ को मेषे चंद्रोदय मु.१५ तेजी। ता.१८,१६ को चंद्र वस्तुयें तेज। **बुधास्त** पू. विपरीत बाजार। **वृषे शुक्र** पर शनि दृष्टि से चं.+शु.की कई वस्तुओं में भारी मंदी व भारी तेजी होगी। उन वस्तुओं का बाजार ता.१८ अप्रेल से १२ मई तक देख कर चले। ता.२१ से २३ तक **मिथुने चं.+वृ.**युति मंगल दृष्ट से भारी मंदी से तेजी। ता.१८ अप्रेल से १२ मई तक **मिथुने गुरु पीछे शुक्र** से भारी मंदी तेजी की उठापटक रहेगी। वस्तुओं का बाजार देख कर चलें। ता.१६ को **रेवत्यां बुध**(नीच बुध) से बुध के भाव अप्रत्याशित नीचे आ सकते हैं। ता.२१ को **५मंगली** व क्षया से शस्त्रास्त्र,लाल वस्तुयें भारी तेज। ता.२३ से २५ तक **स्वचंद्र** से अच्छी मंदी। ता.२६ **रेवत्यां भौम** से तेजी। ता.२६ अप्रेल से १३ मई तक **मीने मं.+श.**से इनकी वस्तुयें अच्छी तेज। ता.२६,२७ को **सिंह चं.+के.**से चंद्र की तेज, केतु की मंदी। ता.२६ अप्रेल से ता.१२ मई तक **मेषे सू.+बु.**युति से बुध की तेज सूर्य की मंदी में रहे। ता.२६ अप्रेल से ता.७ मई तक **रोहिण्यां शुक्र** वाहनों में भारी मंदी। ता.२७ **भरण्यां रवि** से सूर्य,मेष की वस्तुयें तेज। ता.२८ अप्रेल से ता.२ मई तक चंद्र की वस्तुओं में घटाबढ़ी से तेजी रहेगी। ता.२६ अप्रेल से १२ मई तक **मेषे सू.+बु.**से बुध वस्तुयें तेज,सूर्य मंदी।

प्र.ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः- पांच शनि का मास तेजी। ता.२ से ६ मई तक चंद्र गुरु शुक्र की वस्तुयें अच्छी मंदी व मंगल,शनि की वस्तुयें घटाबढ़ी में रहेगी। ता.३ **भरण्यां बुध** तेजी। ता.४ पुनर्वसु ३ गुरु तेजी। ता.११ **कृत्तिका रवि** सोमवारी मंदी। ता.१० से १६ तक चंद्र वस्तुयें तेज,अन्य मं.,श.,रा.की मंदी। ता.१० पंचक रविवारी से प्रत्येक वस्तु तेज। ता.१२ से १४ तक **मीने चं.+मं.+श.**से चंद्र की वस्तुयें भारी तेज। ता.१२ **उभा.३शनि** तेजी। वृषे बुध अच्छी मंदी। **मिथुने शुक्र** अच्छी मंदी। ता.१२ से २५ मई तक **मिथुने वृ.+शु.**से अच्छी मंदी का झटका लाभ उठावें। शत्त.२ राहु **मघा३ केतु** में चणों में तेजी,लाभ। ता.१३ मई से ता.२२ जनवरी तक **मेषे मंगल** इनकी वस्तुयें अच्छी तेजी। ता.१५ से २८ मई तक **वृषे सू.+बु.** से बुध की वस्तुयें तेज,सूर्य की मंदी। ता.१५ मई ये १५ जून तक **वृषेऽर्क** से वृष की वस्तुयें तेज।

प्र.ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- ता.१७.५.२६ को **रोहिण्यां बुध** वाहन तेज बुध वस्तुयें तेज। ता.१८ **अगस्तास्त** मंदी। **२ चंद्र** से रुई तेज। चंद्रोदय मु.३० स्थिरता द. श्रृंग से तेजी। रसहानि ता.१८ से २० मई तक **मिथुने चं.+बु.+शु.**तक व ता. २० से २५ तक **मिथुने वृ.+शु.**युति से इनकी वस्तुयें अच्छी मंदी। ता.२१,२२ तक **कर्के चंद्र** पर मंगल नीच दृष्टि से अकस्मात् तेजी या मंदी का झटका। देख कर चलें। ता.२१ को **बुधोदय** पू.विपरीत बाजार। **६ बुधवारी** अनाज एक मास तेज। ता.२३ से ३१ तक **चंद्र क्रूर** ग्रहों से प्रभावित सफेद वस्तुयें तेज। के.,श. ,मं.,वस्तुयें मंदी। ता.२५ **रोहिण्यां रवि** में वाहन तेज व सूर्य की वस्तुयें तेज। ता. २५ मई से ता.२३ अक्टू.तक कर्के गुरु उच्च गुरु अपनी वस्तुओं को भारी ऊँचाई पर ले जा सकती है या ऊँचाई से भारी नीचे भी क्रूर ग्रहों के प्रभाव से गिरा सकती है। अतः बाजार चाल देख कर चलें। ता.२५ मई से २२ जून तक मंगल की नीच दृष्टि से गुरु की वस्तुओं में उचत्व से नीचस्थ का प्रभाव संभव है, चाल देख कर चलें। आगे ता.२२ जून से ३ जुलाई तक **कर्के वृ.+शु.**युति अच्छी मंदी भी संभव है। ता.२८ मई से ७ जून तक **मिथुने बु.+शु.**युति से इनकी वस्तुओं में अच्छी मंदी परन्तु राहु दृष्ट से स्टॉक करने वालों पर रेड़ पड़े। ता. २६ **पुनर्वसु शुक्र** जोरदार मंदी। ता.३१ **भरण्यां भौम** अच्छी तेजी। १५ रविवारी तेजी।

द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः- पांच सोम से मंदी का मास। ता.१.६.२०२६ को **आर्द्रायां बुध** मंदी। ता.३ तक चंद्र पापग्रह दृष्ट घटाबढ़ी। आगे ता.६ तक **मकरे चंद्र** से अच्छी धमाकेदार मंदी। ता.६ को **पंचक शनिवारी** से प्रत्येक वस्तुयें तेज। शेयर एकदम तेज। ता.६ जून से ३ जुलाई तक **कर्के वृ.+शु.**युति मंगल,राहु दृष्ट से तेजी मंदी की भारी उठा पटक। इन ग्रहों की कुछ वस्तुयें उच्च तेजी व कुछ की बहुत मंदी रहेगी। वस्तुओं का बाजार देख कर चलें। ता.८ **मृगे रवि** सोमवारी तेजी से मंदी। ता.७ से १४ जून तक चंद्र पापाक्रांत से इनकी वस्तुओं में अच्छी तेजी। ता.१० **पुक्षे शुक्र** कपूर हींग,पारा लाख चमड़ा मंद,अन्य वस्तुयें तेज। ता. १२ **पुनर्वसु बुध** मंदी। पुक्ष **१गुरु** तेजी। ता.१२ से २२ जून तक **पुक्षे वृ.+शु.**युति मंगल दृष्ट से इनकी वस्तुओं में भारी उठाव पटक। वस्तुओं के भाव की चाल देख कर काम करें। ता.१५ जून से १७ जुलाई तक **मिथुने सू.+बु.+चं.**युति राहु दृष्ट सूर्य की वस्तुयें तेज,बुध की मंदी। ता.१५ को **अमा+मिथुनेऽर्क** सोमवारी से **खप्पर योग** भारी मंदी से तेजी। कई वस्तुयें दुर्लभ हो जायेगी। **कालसर्प** का पक्ष

दवाईयां तेज।

द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्ष चांदी अनाज तेज। ता.१५ को १ क्षया धान्य तेज। अफीम मंदा। ता.१६.६.२६ को **चंद्रोदय मु.४५** मंदी मंगलवारी अफीम मंदा। ता.१५ से १७ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.१७ जून से १२ जुलाई तक **मिथुने सू.+बु.**युति राहु दृष्ट से सूर्य वस्तुयें तेज,बुध की मंदी। ता.१७ को मोहर्रम् बुधवारी मूंग, अनाज,कपास तेज। ता.१८ **कृत्तिका भौम** इनकी वस्तुयें तेज। ता.१७ से १९ तक **कर्के चं.+वृ.+शु.**युति इनकी वस्तुयें भारी मंदी। ता. २० को ६ शनिवारी अनाज तेज। ता.२२ **आर्द्रा रवि** में कठोल तेज। ८सोमवारी से मंदी कुछ वस्तुओं में आवे। **वक्री बुध** विपरीत बाजार। **वृषे भौम** इनकी वस्तुयें तेज। **आश्लेषा शुक्र** से मंदी का झटका। ता.१९ से २६ तक चंद्र पापाक्रांत से अच्छी तेजी। ता.२५ को **बुधास्त प.** अच्छी तेजी। ता.२७ को **१३ शनिवारी** तेजी का मास। ता.२८ **पुक्ष२** गुरु तेजी। ता.२९ को **पूर्णिमा+मूल** से मंदी। कंद मूल फल मंदे। **कालसर्प** का पक्ष प्रदूषण,दवाईयां महंगी।

आषाढ़ कृष्ण पक्षः- पांच मंगली मास तेजी का मास। अग्नि उपद्रव। ता.३० जून २०२६ को **१ मंगलवारी** वर्षा अवरोध,अफीम मंदा। ता.३ से ३१ जुलाई तक **सिंह शुक्र व शु.+के.**युति से शुक्र की वस्तुयें तेज व केतु की वस्तुयें मंदी। **पंचक शुक्रवारी** रुई में मंदी। ता.३ से १८ जुलाई तक विषभय,दवाईयां तेज। ता.१ से ३ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.४ जुलाई **आद्रायां बुध** मंदी। उभा.४शनि सुगंधित वस्तुयें व शनि की वस्तुयें तेज। ता.४ से ९ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.६**पुनर्वसु रवि** क्रूरवारी तेजी। **रोहिण्यां भौम** ता.६ से २५ जुलाई तक वाहन,चौपायें व मंगल ,शुक्र की वस्तुयें तेज। ता.८ को नवमी क्षय मंदी का झटका। ता.११ को १२ रोहिणी रसकस आदि तेज। ता.११ **बुधोदय पू.**विपरीत बाजार। ता.८ से १० तक व चंद्र की वस्तुयें घटबढ़ मंदी। ता.११ से १४ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१३ पुक्ष ३ गुरु इनकी वस्तुओं में मंदी का अच्छा झटका। ता.१४ **मार्गी बुध** विपरीत बाजार। शेयर मंदे। **धने.४राहु मघा२** केतु से कठोल तेज। ता.१२ से १४ जुलाई तक **मिथुने चं.+बु.+सू.**से लाल वस्तुएं मंदी,चं.,बु. की वस्तुयें तेज।

आषाढ़ शुक्ल पक्षः- इस पक्ष में तीन बुध से घी तेज। ता.१५ जुलाई से ता.१४ अगस्त २०२६ई. तक **कर्के गुरु** अस्त प.से गुरु की वस्तुओं में अच्छी तेजी। कुछ अन्य वस्तुओं का भाव विपरीत भी संभव है। ता.१५ से १७ जुलाई तक **मिथुने सू.+बु.**से सूर्य की वस्तुयें मंदी। बुध की तेज। ता.१७ जुलाई से १ अगस्त तक **कर्के सू.+वृ.**से इनकी वस्तुयें,अच्छी तेज। ता.१५ से १८ तक चंद्र की वस्तुयें अच्छी तेज। ता.२१ तक चंद्र की वस्तुओं में घटाबढ़ी से तेजी। ता.१५ चंद्रोदय बुधवारी मंदी परन्तु घी में तेजी। ता.१७ जुलाई से १७ अगस्त तक **कर्के सूर्य शुक्रवारी** से मंदी परन्तु चंद्र,गुरु की वस्तुयें तेज रहेगी। ता.१८ जुलाई से ता.४ दिसम्बर तक **मीने वक्रे शनि** से विपरीत बाजार रहेगा। कई शनि की वस्तुयें अच्छी तेजी में रहेगी। ता.२१ से २९ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी,घटाबढ़ी भी होगी। ता.२५ **मृगे भौम** को शनि दृष्टि से भारी तेजी। मृगे भौम पुक्षे गुरु ता.२६ जुलाई से १८ अगस्त तक **अंगारक योग** से भारी तेजी। तेजी वाली वस्तुयें ज्यादा तेज व मंदी वाली वस्तुयें ज्यादा मंदी होगी। ता.२५ को मार्ग.पुन.बुध विपरीत बाजार। ता.२८ को **उफायां शुक्र** तेजी। ता.२९ **पुख.४गुरु** तेजी। १५ बुधवारी दवाईयां तेज।

श्रावण कृष्ण पक्षः- पांच गुरु का मास मंदी। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। ता.३०.७.२६ई.को **१ गुरुवारी** कठोल तिल तेल तेज। पंचक शनिवारी मंदी। ता.४ अगस्त तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३१ जुलाई से १८ सितम्बर तक कन्या **नीच शुक्र क्रूर ग्रह दृष्ट** होनें से शुक्र की वस्तुयें भारी नीचे व अकस्मात् तेज होगी। धोखा न खायें। बाजार देख कर चले। ता.१ से १७ अगस्त तक **कर्के सू.+बु.+वृ.**युति से सूर्य की वस्तुयें मंद बुध,गुरु की वस्तुयें तेज होगी। ता.३ **आश्लेषा रवि** शुभवारी मंदी। **पुक्षे बुध** मंदी। **मिथुने भौम** ता.३ अगस्त से १९ सितम्बर तक होने से बुध की वस्तुयें,ताकत की दवायें व राहु दृष्ट होने से मंगल की वस्तुयें तेज होगी। ता.४,५ को चंद्र वस्तुयें अच्छी मंदी। आगे ता.१२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज रहेगी। ता.५ को **७ बुधवारी** मंदी। ता.८ को **१० रोहिणी** तेजी। ता.९ ११मृगसिर तेजी वक्री **उभा३शनि** से गुरु,शुक्र वस्तुयें तेज। शनि वस्तुयें मंदी। ९ को १२ क्षय से घी रुई तेज। ता.१० **हस्ते शुक्र** घटाबढ़ी से तेजी। ता.१०से १२तक **कर्के सू.+चं.+बु.+वृ.**युति से सूर्य वस्तुयें मंदी,अन्य तेज होवे।

श्रावण शुक्ल पक्षः-१६ दिन का पक्ष चांदी मंदी। ता.१३ अगस्त को **आद्रायां भौम** तेजी,सफेद वस्तुयें मंदी। ता.१५ तक **सिहे सू.+चं.+के.**युति से चंद्र वस्तुयें तेज,सू.के.मंदी। **आश्लेषा गुरु** तेजी। **आश्लेषा बुध** तेजी। ता.१३ से २० तक **आश्लेषा बु.+वृ.**युति व ता.१७ से २० तक **कर्के बु.+वृ.**युति से इन ग्रहों की वस्तुओं में मंदी का झटका आयेगा। कुछ वस्तुयें अच्छी तेजी संभव है बाजार की चाल देख कर चलें। ता.१४ **बुधास्त** तेजी। गुरु उदय से विपरीत बाजार,तेजी से

मंदी। चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। रुई में घटाबढ़ी। ता.१७ **सिंहेऽर्क** सोमवारी मंदी से तेजी। ता.१७ अगस्त से १७ सितम्बर तक सूर्य के आगे शुक्र पीछे गुरु से सूर्य की वस्तुओं पर पाबंदी तेजी नहीं होने देवे,मंदी रहे। ता.१७ अगस्त तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२२ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.२० **सिंहे बुध** व ता.२० अगस्त से ६ सितम्बर तक **सिंहे सू.+बु.+के.**युति से बुध वस्तुयें तेज। सू.,के.की मंदी। ता. २३,२४ चंद्र वस्तुयें तेज। ता.२५ से २७ तक चंद्र वस्तुयें अच्छी मंदी। ता.२३ को **११मूल** तेजी का भूकम्प। ता.२५ **चित्रायां शुक्र** चित्रान्न नारियल,सुपारी, मूंज, बांस,नील तेज। ता.२७ **पूफायां बुध** मंदी। **पंचक** मंदी। ता.२७ से २६ चंद्र वस्तुयें तेज। ता.२८ **आश्लेषा गुरु** प्रत्येक वस्तु तेज।

भाद्रपद कृष्ण पक्षः- पांच शनि से तेजी का मास। १४ का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। ता.२६ अगस्त **१ शनिवारी** तेजी। ता.३१ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता. ३१ **पूफायां रवि** शुभवारी मंदी से तेजी। ता.१,२ सितम्बर को चंद्र वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.३ से ७ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.३ **पुनर्वसु भौम** में अच्छी तेजी। ता.४ **उफायां बुध** से तेजी। ८ **शुक्रवारी** रोहिणी से गेहूँ तेज। ता.६ से १७ सितम्बर तक कन्या बु.+शु.युति क्रूर दृष्ट से भारी तेजी। ता.७ से ६ तक **कर्के चं.+वृ.**युति भारी मंदी। ता.१० से ११ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.६ **कन्यायां बुध** मंदी व ता.६ से १७ सितम्बर तक **सिंहे सू.+बु.+के.**युति से बुधवस्तुयें तेज। सू. के.मंदी।

भाद्रपद शुक्ल पक्षः- ता.१२.६.२६ को चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। १शनिवारी सर्व वस्तु तेज। **हस्ते बुध** मंदी। ता.१२,१३ को चंद्र वस्तुयें तेज। ता.१४ से १८ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.१४ **उफायां रवि** शुभवारी से मंदी से तेजी। **आश्लेषा गुरु** अच्छी तेजी। ता.१५ धनेष्ठा ३ राहु मघा१ केतु तेजी। ता.१७ **कन्याऽर्क** गुरुवारी मंदी। ता.१७,१८ **कन्या सू.+बु.+शु.**से सूर्य वस्तुयें मंदी,शुक्र तेज। ता. १८ बुधोदय पू.विपरीत बाजार। तुले शुक्र मंदी। ता.१६ **चित्रायां बुध** चित्रान्न मंदे। कुछ वस्तुयें तेज भी रहेगी। **कर्के भौम+वृ.युति** ता.१६ सितम्बर से २३ अक्टु.तक होने से चंद्र गुरु की वस्तुयें घटबढ़ से तेजी,मंगल वस्तुयें मंदी। ता.१६ से २३ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी,वस्तुओं का बाजार देख कर चलें। ता.२४ से २७ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.२१ **वक्री शुक्र** विपरीत बाजार। ता.२१ सितम्बर से ता.१५ अक्टु.तक शुक्र व शनि वक्र होने से इन की वस्तुओं का विपरीत बाजार अर्थात् तेजी से मंदी व मंदी से तेजी में चलेगा। ता.२३ **पंचक** बुधवारी मंदी। ता. २४ से २६ सितम्बर तुले बु.+शु.युति अच्छी मंदी परन्तु मंगल दृष्ट होने से कुछ वस्तुओं में घटाबढ़ी में भी रहेगी। ता.२५ **पुक्षे भौम** सोना में अच्छी तेजी,चांदी में घटाबढ़ी। ता.२६ सितंबर **कन्यायां शुक्र** नीचस्थ ता.२८ नवम्बर तक चलेगा जिससे शुक्र के भाव बहुत नीचे गिर जायेंगे परन्तु क्रूर ग्रह युत से तेजी का बदला भी आयेगा ध्यान रखें। ता.२६ सितम्बर से १८ अक्टु.तक **कन्या सू.+शु.**युति शुक्र के भाव तेज,सूर्य के मंदे रहेंगे। इस में भी शुभ ग्रह से मंदी,क्रूर से तेजी का ध्यान रखें।

आश्विन कृष्ण पक्षः- १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। पूरा मास पांच रवि में तेजी। ता.२७ सितम्बर २०२६ई.को **हस्ते रवि** क्रूरवारी घी तेजी, हस्त निर्मित वस्तुयें,हेण्डीक्राफ्ट आदि तेज। ता.२८ **पंचक** सोमवारी मंदी। ता. २८ से ता.४ अक्टुम्बर तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। आगे ता.५ से १० अक्टुम्बर तक चंद्र वस्तुयें अच्छी तेज। ता.२६ सितम्बर **स्वात्यां बुध** मंदी। ता.१ अक्टुम्बर वक्री **उभा.२शनि** तेजी। ता.२ **आश्लेषा ४ गुरु** उच्चस्थ तेजी। ता.३ को ८ क्षया घी तेज। ता.४ से ६ अक्टुं.तक **कर्के चं.+मं.+वृ.**युति से मंगल वस्तुयें मंदी। ता. ६ से ११ तक **कन्या सू.+चं.+शु.**युति से सूर्य की वस्तुयें मंदी,शेष में तेजी।

आश्विन शुक्ल पक्षः- १६ दिन का पक्ष चांदी तेज। ता.११.१०.२०२६ को **चित्रायां रवि** क्रूरवारी तेजी,चित्रान्न तेज। ता.११ से २४ अक्टुम्बर तक **चित्रा सू.+शु.**युति शुक्र वस्तुयें तेज,सूर्य मंदी। ता.१२ चंद्रोदय मु.१५ तेजी। ता.११ से १८ तक चंद्र वस्तुयें मंदी व ता.१६ से २६ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१३ **स्वात ४ बुध** मंदी। ता.१५ **वक्री बुध** विपरीत बाजार। ता.१५ अक्टुं.से ७ नवं.तक बुध, शुक्र,शनि तीन ग्रह वक्री से विपरीत बाजार,किराणा तेज। ता.१७ से २८ नवम्बर तक **शुक्रास्त पू.**चित्रा राक्षस गण पर विपरीत बाजार,जमाखोरी बढ़े। ता.१८ तुलेऽर्क रविवारी तेजी। ता.१८ अक्टु. से १६ नवं. तक सूर्य नीच,शुक्र नीच इन दो ग्रहों की वस्तुओं पर विशेष ध्यान रखे घटे तो भारी नीचे आयेगी,कुछ वस्तुयें बढ़े तो व्यापारियों को धोखा मिलेगा,नीचे गिरेंगे,दिवालियां हो जायेंगे। ध्यान रखें। ता.१६ **बुधास्त** किराणा तेज। **आश्लेषा भौम** चांदी,रुई मंदी,समस्त अनाज तेज। ता.२० **पंचक** मंगलवारी तेजी। ता.२३ अक्टुम्बर से ता.६ फरवरी २७ तक **मघा१ सिंहे** गुरु से सर्व धातुयें व सूर्य की वस्तुयें मंदी,गुरु की तेज रहेगी। ता.२३ अक्टु.१७ नवं.तक **सिंहे वृ.+के.**युति से केतु वस्तुयें मंदी,गुरु की तेज रहेगी। ता.२४ **स्वात्यां रवि** क्रूरवारी से तेजी।

कार्तिक कृष्ण पक्षः- १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। पूरा मास मंगली भारी तेजी। ता.२७ अक्टू.को १ मंगली अफीम मंदा। वक्री **हस्ते शुक्र** विपरीत बाजार। हस्त उद्योग मंदे। **२ क्षया** घी तेज। ता.२८ **शुक्रोदय पू.**देवगण में मंदी, विपरीत बाजार। ता.२८,२९ को चंद्र की वस्तुयें अच्छी मंदी। आगे ता.३० अक्टु.से ता.६ नवं.तक चंद्र की वस्तुयें तेजी में रहेगी। ता.१,२ को मंगल वस्तुयें मंदी। ता.३,४ को केतु ,गुरु वस्तुयें मंदी। ता.४ **बुधोदय पू.**मंदी,विपरीत बाजार। ता.५ से ७ तक शुक्र वस्तुयें मंदी। ता.७ **विशाषा रवि** क्रूरवारी तेजी। **मार्गी बुध** विपरीत बाजार,तेजी से मंदी। ता.७ से ९ तक **तुले सू.+चं.+बु.**युति लाल वस्तुयें मंदी। ता.७ से १४ नवं.तक शुक्र,शनि दो ग्रह वक्र इनकी वस्तुयें तेज। ता.८ दीपावली रवि+स्वा+आयुष.में भारी तेजी,शस्त्रास्त्र तेज। ता.९ **सोमवती अमा.** मंदी।

कार्तिक शुक्ल पक्षः- ता.१०.११.२६को चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। मंगलवारी तेजी,अफीम मंदा। ता.१० से १२ **वृश्चिके सू.+चं.**से चंद्र वस्तुयें तेज,सूर्य मंदी। ता.१२ से १४ तक चंद्र वस्तुयें अच्छी मंदी। ता.१५ से २१ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.११ से **२ बुधवार** घी तेज। ता.१४ को **५ शनिवारी** तेजी। **मार्गी शुक्र** विपरीत बाजार,तेजी से मंदी। ता.१५ को ६ रविवारी रुई घी तेज। ता.१६ **वृश्चिकेऽर्क** सोमवारी मंदी। अफीम तेज। **मघायां सिंहे भौम** व ता.१६,१७ नवं.तक **सिंहे मं.+वृ.+के.**युति से गुरु,केतु,सूर्य की वस्तुयें तेज व मंगल,केतु की मंदी। ता.१७ मकरे धनेष्ठा२राहु ,कर्के श्लेषा४ केतु अनाज मंदी से तेज। पंचक मंगलवारी तेजी। ता.१७ से ३० तक **सिंह मं.+वृ.**युति से मंगल वस्तुयें मंदी,सूर्य,गुरु की तेज। ता.१८ **मार्गी चित्रा शुक्र** पर शनि,राहु दृष्टि तेज। ता.१९ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.२० **अनुराधा रवि** शुभवारी मंदी। मंगल दृष्ट लाल वस्तुयें तेज। **विशाषा बुध** मंदी। ता.२२ से २५ तक चंद्र की वस्तुयें अच्छी मंदी। ता.१५ देव दीवाली मंगल तेजी।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः- १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। इस मास में पांच बुध से मंदी का मास। ता.२५ नवं.से **मघा २ गुरु** मंदी। ता.२६ नंव.से ४ दिसं.तक चंद्र की वस्तुयें तेज। आगे ता.५,६चंद्र वस्तुयें मंदी व ता.७ से ९ तक तेजी ता.२८ नवं. से ता.२ जन.२७ तक तुले स्व.शुक्र होने से शुक्र की वस्तुओं में अच्दी मंदी का झटका। कुछ वस्तुयें तेज भी संभव है। बाजार देख कर चलें। ६क्षया रुई तेज। ता.२८ से ३० तक **कर्के चं.+के.**से केतु वस्तुयें मंदी। ता.३० से २ तक **सिंहे मं.+वृ.+चं.**युति से चंद्र,गुरु वस्तुयें मंदी। ता.३,४ तक कन्या की वस्तुयें मंदी। ता.२ **अनुराधा बुध** मंदी। ता.३ **ज्येष्ठा रवि** गुरुवारी तेजी से मंदी। ता.४ मार्गी शनि विपरीत बाजार,तेजी से मंदी। ता.७ बुधास्त पू.सप्तधातु तेज। ता.७ से ९ तक **सू.+बु.+चं.**युति से सूर्य बुध वस्तुयें मंदी। ता.८ **स्वात्यां शुक्र** रसकस तेज,अनाज मंदे। व्यापारी व न्यायाधीशों का वर्चस्व बढ़े। ता.८ अमा. मंगली अच्छी तेजी।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः- पांच बुध से मंदी परन्तु घी भाव तेज। ता.९.१२.२६ को १ बुधवारी चांदी अफीम,अनाज,घी तेज। चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। उत्तर श्रृंग, धान्यादि सस्ते। ता.१० से १८ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। सूर्य,राहु,शनि की मंदी। ता.११ **ज्येष्ठा बुध** पर मंगल दृष्टि तेजी। ता.१४ से **वक्री गुरु** आगे वर्ष पर्यन्त होने से विपरीत बाजार। नौ मास संग्रह से लाभ होता है। पंचक सोमवारी मंदी। ता.१५ को ६ मंगलवारी लाल वस्तुयें, गुड़,गेहूं तेज। ता.१६ **मूले धनेऽर्क** बुधवारी मंदी,कंदमूल मंदे। ता.१६ दिसम्बर से ता.६ जन.२०२७ई. तक **धने सू.+बु.युति** से सूर्य वस्तुयें मंदी,बुध वस्तुयें तेज। ता.१६ से २३ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.२३ **विशाषा शुक्र** मंदी। पूर्णिमा क्षय रुई चांदी घी,अनाज तेज।

पौष कृष्ण पक्षः- पांच गुरु का मास मंदी। ता.२४.१२.२६ को **१ गुरुवारी** पीली वस्तुयें मंदी। ता.३१ तक चंद्र की वस्तुयें तेज व केतु,मंगल,गुरु की मंदी। ता.२५ पूफायां भौम से तेजी। ता.२७ **पूषायांबुध** मंदी। ता.२९ **पूषायां रवि** क्रूरवारी तेजी। सर्दी के ऊनी वस्त्र तेज। ता.१ से ५ जन.२७ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.६ से ८तक चंद्र की वस्तुयें तेज व सू.,बु.वुस्तुयें मंदी। ता.२ **वृश्चिके शुक्र** अच्छी मंदी परन्तु मंगल दृष्ट से कुछ लाल वस्तुयें तेज भी रहेगी। बाजार देख चले। ता.११ वक्री **मघा१गुरु** मंदी। ता.४ **उषायांबुध** मंदी। ता.५ **अनुराधा शुक्र** मंदी। ता.६ **मकरे बुध** व ता.६ से १४ जन.तक मकरे बु.+रा.युति से अच्छी तेजी। राहु की वस्तुयें मंदी। ता.७ बुधोदय प.मंदी। अमा.गुरुवारी मंदी। अन्न मंदा।

पौष शुक्ल पक्षः- ता.९.१.२७ को **२ शनि** चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। किराणा, अनाज,रस,अफीम तेज। ता.८ से १५तक चंद्र की वस्तुयें तेज,बुध,राहु,शनि की मंदी। ता.१० पंचक रविवारी तेजी। ता.११ **उषायां रवि** शुभवारी मंदी। मशालें तेज। ता.१२ श्रवणे बुध तेजी। ता.१४ **मकरेऽर्क** गुरुवारी से मंदी,परन्तु राहु युति के कारण रसकस तेज। कुछ वस्तुयें मंदी,तेजी में चलेगी बाजार देख कर चलें।

ता.१४ से ३० जन.तक **मकरे सू.+बु.+रा.**युति से बुध की तेज,सू.रा.की मंदी। ता.१५ वक्री भौम विपरीत बाजार। ता.१५ जन.से ६फर.तक दो ग्रह मंगल,गुरु वक्र होने से अकस्मात् बाजार पलटा खायेगा। मंदी से तेजी व तेजी से मंदी विपरीत चलेगा। बाजार देख कर चलें। ७ क्षया रुई चांदी मंदी। ता.१७ **ज्येष्ठायां शुक्र** मंदी। ता.१६ से २१ तक चंद्र की वस्तुयें अच्छी मंदी। ता.२२ से २५ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.१६ धनेष्ठा १राहु श्लेषा ३ केतु कठोल तेज। ता.२२ को **वृषे बुध** व अच्छी मंदी।

माघ कृष्ण पक्षः- पांच शनि का मास तेजी। ता.२३.१.२७ को १ शनिवारी व अभिजित रवि शनिवार से तेजी,अफीम मंदा। ता.२४ को **श्रवणे रवि** रविवारी से तेजी। अफीम १४ दिन में तेज। ता.२४ से २८ तक चंद्र वस्तुयें तेज,मं.,वृ.मंदी। ता.२८ मार्गी **उभा३ शनि** तेजी। वक्री **मघायां भौम** तेजी। ता.२८ से ४ फरवरी तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२६ मूले धने शुक्र अच्छी मंदी,कुछ में घटाबढ़ी से तेजी। ता.३० कुंभे बुध मंदी से तेजी। ता.३ **धनेष्ठा** ४बुध तेजी। ता.५ से ७ तक **मकरे सू.+चं.+रा.**से चंद्र वस्तुयें तेज व सू.रा.वस्तुयें मंदी। ता.६ धनिष्ठा रवि,शनिवारी से तेजी। वक्री बुध विपरीत बाजार। अमा.शनिवारी तेजी।

माघ शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्षरुई चांदी अनाज घी तेज। ता.७.२.२७ को पंचक रविवारी तेजी। ता.८ चंद्रोदय मु.१५ तेजी। ता.७ से ११ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.६ वक्री श्लेषा४ कर्के गुरु तेजी। ता.६ फरवरी से वर्ष पर्यन्त **आश्लेषा वृ.+के.** युति से गुरु वस्तुयें अच्छी तेजी,केतु मंदी। ता.१० बुधास्त प. तेजी। **पूषायां शुक्र** अच्छी मंदी। ता.१२ से १८ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.१६ से २२ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.१२ फरवरी से १ मार्च तक मंगल,बुध,गुरु तीन ग्रहों से अच्छी तेजी,विपरीत चाल। ता.१३ **कुंभेऽर्क** शनिवारी से अच्छी तेजी। ता.१३ फर.से ६ मार्च तक कुंभे सू.+बु.युति मंगल दृष्ट,पापकर्तरी में अच्छी तेजी। सू.+बु.की वस्तुओं में भारी उछाल। ८+**कृत्तिका** से तेजी। ता.१८ से २० फरवरी **कर्के चं.+वृ.+के.**युति से कई वस्तुयें ज्यादा तेज,बाकी मंदी। बाजार देख कर चले। ता.१६शत्तभिषा रवि शुभवारी से मंदी। ता.२० को १५शनिवारी तेजी।

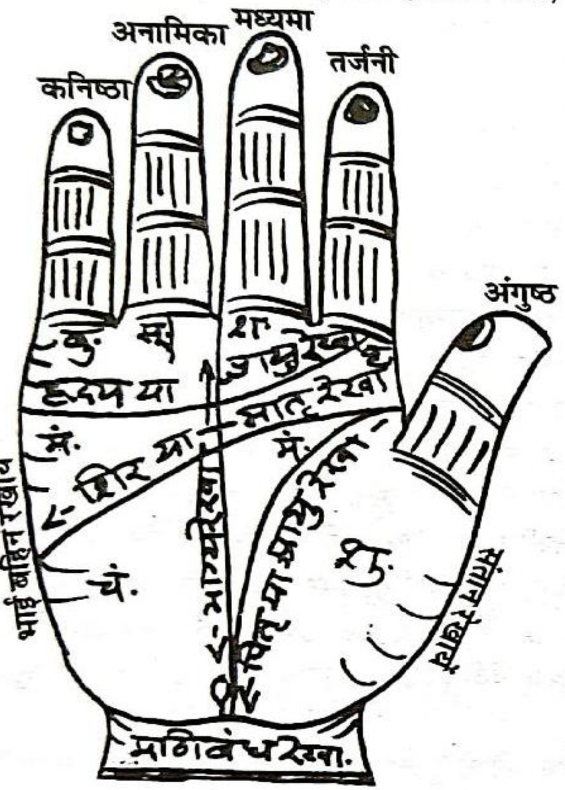
फाल्गुन कृष्ण पक्षः- १६ दिन का पक्ष रुई गेहूं तेज,चांदी मंदी। पांच रवि का महिना तेजी। ता.२१.२.२७ को १ रविवारी तेजी। **उषायां शुक्र** अच्छी मंदी। ता. २४ फर.से ३ मार्च तक **मकरे शु.+रा.**युति अच्छी तेजी। ता.२१ से २६ तक चंद्र की वस्तुयें घटाबढ़ी से तेजी। ता.२७ से ३ मार्च तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.४ से ८ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.२७ वक्री श्लेषा कर्के भौम तेजी। ता.१ मार्च **मार्गी बुध** विपरीत बाजार। तेजी से मंदी। ता.२ उभा.४ शनि तेजी। ता.४ **श्रवणे शुक्र** मंदी। तिलहन तेल तेज। ता.५ **पूभायां रवि** शुक्रवारी मंदी। ता.६ पंचक शनिवारी तेजी। ता.६ से २१ मार्च तक **कुंभे सू.+बु.+चं.**से अच्छी तेजी। ता.८ अमा. सोमवती मंदी।

फाल्गुन शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्ष रुई ,चांदी,अनाज घी तेज। ता.८.३.२७ को १ मंगली तेजी। **मार्गी धनेष्ठा** ४ बुध मंदी। ता.२१ मार्च तक मकरे शु.+रा. युति से अच्छी तेजी,राहु वस्तुयें मंदी। चंद्रोदय मु.४५ मंदी। मंगलवारी दक्षिण श्रृंग से तेजी। **दिग्दाहयोग** ता.१५ से १७ व १६ से २१ तक भारी तेजी। जो वस्तुयें उछाल खाए वे तेज ज्यादा रहेगी। ज्यादातर चंद्र वस्तुयें तेज। ता.६,१० को चंद्र वस्तुयें तेज। ता.११ से १४ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.१८ से २३ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.१२ वक्री श्लेषा ३गुरु तेजी। ता.१५ **मीनाऽर्क** सोमवारी मंदी परन्तु ता.१५ मार्च से ३ अप्रेल तक **मीने सू.+श.**युति अकस्मात् भारी तेजी। विशेष कर सूर्य,शनि वस्तुयें भारी तेज। **धनेष्ठा शुक्र** मंदी। क्षया८ तेजी। ता.१६ से वर्ष पर्यन्त शनि अस्त अच्छी तेजी। कुछ वस्तुओं के भाव अतिमंदी में भी संभव है देख कर चलें। ता.१७ से १६ तक **कर्के वृ.+मं.+चं.+के.**भारी घटाबढ़ी मंगल,केतु की वस्तुयें मंदी,चंद्र गुरु की तेज। ता.१८ उभायां रवि गुरुवारी मंदी थोड़े समय में फिर तेज। शत्तभिषा बुध मंदी। ता.२१ मार्च से ३ अप्रेल तक **कुंभ बु.+शु.**से अच्छी मंदी।

चैत्र कृष्ण पक्षः- पांच मंगली मास तेजी। ता.२३.३.२७ को १ मंगलवारी तेजी,अफीम मंदा। श्रवण४ राहु श्लेषा२ केतु गेहूँ ,अन्न तेज। ता.२४ **मार्गी भौम** विपरीत बाजार। ता.२४ से ३१ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। क्रूर ग्रह दृष्ट से घटाबढ़ी से कुछ वस्तुयें तेज संभव है। ता.२६ **शत्तभिषा शुक्र** मंदी,रसकस तेज। ता.२८ **पूभायां बुध** मंदी। ता.३० रेवती १ शनि कठोल तेज,सोना,चांदी मंदे। ता. ३१ **रेवत्यां रवि** बुधवारी मंदी। ता.१ अप्रेल बुधास्त पू.विपरीत बाजार तेजी। ता. २ **पंचक शुक्रवारी** मंदी। ता.३ **मीने बुध** वर्षांत तक मीने सू.+बु.+श.युति बुध की वस्तुयें तेज। सूर्य,शनि की मंदी। ता.१ से वर्षान्त तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.६ **उभायां बुध** मंदी। **पूभायां शुक्र** मंदी। अमा.मंगली तेजी। **मीने सू.+चं.+बु.+श.**चतुग्रही युति अच्छी तेजी। ☐☐☐

हस्त रेखा ज्ञान

(१) **कनिष्ठा:-** अंक १,अग्नि तत्व,लालरंग,पश्चिम दिशा,बाल्याऽवस्था,विषम,ब्राह्मणवर्ण, लक्ष्मण रूपा, प्रथम पर्व से धातु मूल जीव चिंता, **(२)अनामिका:-** अंक२, वायुतत्व, हरारंग,दक्षिण दिशा, कुमार अवस्था,सम,क्षत्रियवर्ण,विभिक्षणरूपा, प्रथम पर्व से जीव,मूल,धातु चिंता **(३)मध्यमा:-** अंक३, जल तत्व,श्वेत रंग, उत्तर दिशा,युवावस्था,विषम, वैश्यवर्ण,हनुमान रूप प्रथम पर्वसे धातु, मूल जीव चिंता। **(४)तर्जनी:-** अंक ४,पृथ्वीतत्व,पीला रंग,पूर्व दिशा, प्रौढावस्था, सम, शुद्रवर्ण, सीतारूप, प्रथम पर्व से जीव ,मूल,धातु चिंता। **(५) अंगुष्ठ:-** अंक नहीं, आकशतत्व, श्याम रंग,वृद्धावस्था,विषम,श्रीराम रूप, प्रथम पर्व से धातु,मूल जीव चिंता, **स्पर्शनाधिकार:-** अपने आराध्य देव का स्मरण कर पूछने वाले से अंगुलियों का स्पर्श करावें। शुक्ल पक्ष से जिमणा हाथ सम्मुख करके व कृष्ण पक्ष में डावा हाथ सम्मुख करें व रात्रि में पृष्ठ भाग से सम्मुख कर स्पर्श करावें-



चौपाई:**रामचंद्र घर लीला विलास,सीता कष्ट सेवई बनवास। हनुमत काज सफल बनावई,लक्ष्मण काज करी घर आवई।। लंकाराज विभिक्षण पावई, कर्मरूप फल सर्व बतावई।।१।।**अर्थात् **अंगुष्ठ**(रामचंद्र) का स्पर्श करें तो भगवान् श्री राम के जीवनवत् घटनाक्रम कहें। घर में लीला,विलास व खुसियां होवे। अनीति,अत्याचार के खिलाफ लड़ना पड़ेगा। माता-पिता का विछोह रहेगा। युवावस्था में पतिव्रता सुन्दर स्त्री का सुख रहेगा परन्तु स्त्री चिंता रहेगी। भ्रातृ सुख अच्छा। अंततो जीवन में राजयोग,संतान सुख,निष्कलंक जीवन होगा। **तर्जनी**(सीता) के स्पर्श से कष्ट युक्त जीवन,बनवास आदि का व्रतांवत् फल कहे। **मध्यमा**(हनुमान) के स्पर्श से सभी कार्य सफल होवे। स्वामी भक्त व सत्यनिष्ठ घोटे लंगोटे का सावधान होवे। भगवत् स्मरण से पूज्य होवे। **कनिष्ठिका**(लक्ष्मण) के स्पर्श से सभी कार्य करके घर आयेगा। जय विजय,भ्रातृ स्नेह,क्रोधी स्वाभिमानी होवे। **अनामिका**(विभिक्षण) के स्पर्श से राजयोग बनें। सत्यनिष्ठा,सत्य का पक्ष, भगवान पर दृढ़ आस्था सर्वोच्च सत्ता तक पहुँचायेगी। सभी शत्रुओं का पराभव होगा। अपनी सम्पत्ति, अधिकार मिलेगा। इस प्रकार विभिक्षण के अनुसार फलकहें। चारों ही अंगुलियों का स्पर्श करनें पर कर्म के अनुसार सुख दुख प्राप्त होगा। जीवन की रामायण लम्बी एवं विचित्र है। इसी प्रकार सम अंगुलि से बालिका,**विषम** से पुत्र व **तल**(हथेली) स्पर्श से नपुंसक जन्म होवे। **विषम अंगुली** स्पर्श से लाभ,सुख, जीवित,आगमन,जय और कार्य होगा व सम अंगुली स्पर्श करनें से अलाभ,दुख,मरण, अनागम,पराजय और कार्य नहीं बनेगा कहें। **कनिष्ठा से तर्जनी** तक क्रमशः१,२,३,४ अंक माने व प्रश्चक को इन अंगुलियों का स्पर्श तीन बार करावें उन सभी अंकों का योग एकी है तो उत्तम,कार्य बनेगा। व दोकी(सम) हो तो कार्य में विलम्ब है। अंक लाभ भी इसी प्रकार देखें। **मुष्टि प्रश्न** में अंगुलियों के पर्व(पौर) स्पर्श से धातु मूल जीवचिंता को बतावें। **नष्ट वस्तु** में पृथ्वी वा जल तत्व हो तो नष्ट वस्तु भूमि वा जल में है और प्रयास करनें पर भी न मिले। अग्नि,वायु और आकाश तत्व हो तो वस्तु मिलेगी। इसी प्रकार दिशा,वर्ण अवस्था ज्ञान कर नष्ट वस्तु चौर का ज्ञान करे।

रेखाधिकार– मूलं निहत्याऽत्र कुतः सुखीस्यात्– अर्थात् मूल(भाग्य रेखा) आदि शुभ रेखाओं के न होनें से मनुष्य सुखी नहीं रहते हैं। **कुशाग्र रेखा कुतो दरिद्रता** अर्थात् कुश के समान अग्र भाग वाली सुन्दर रेखाओं के होनें से मनुष्य दरिद्र नहीं होते है।

विनाशयुक्ताश्च कुत फलानी– अर्थात् छिन्न-भिन्न रेखाएं अपने शुभ फल को नहीं देती है। **अंगुष्ठ में यव** हो तो शुक्ल पक्ष का जन्म जानें। अंगुष्ठ मूल में शुक्रपर्वत पर बड़ी रेखाओं से पुत्र,छोटीसे कन्याएं कहे,टूटी रेखाओं से संतानों का गुजरना व ज्यांदा जगह हो तो गर्भपातादि से संतान में विलम्ब कहे। कनिष्ठिका के नीचें **स्त्रियों का कहें।** दो या तीन स्त्री रेखायें हो तो मंगली जानें। इससे नीचे हृदय रेखा व इससे नीचे भाई-बहिन रेखाएं होती है। बड़ी रेखाओं से भाई व छोटी से बहिनें कहें। हृदय रेखा स्वच्छ साफ हो तो हृदय का पवित्र व लम्बी आयुष्य वाला है। इसके कटीफटी होनें से हृदय रोगी जानें। मस्तिष्क रेखा से माता सुख,बुद्धि की कुशाग्रता,विद्या योग को बतावें। पितृ रेखा से पितासुख,दीर्घायु आदि का ज्ञान करें। बीचों-बीच भाग्य रेखा से भाग्यशाली,सुखी सम्पन्न होवे। एवं च-

राजते करगो यस्य तिलोऽतुल धनप्रदः। तदा पादतले पुंसां वाहनार्थ सुखप्रदः।।१।।

अर्थात् जिसके दाहिने हाथ में तिल हो तो अतुल धन देता है एवं पैर के तलुवे मे तिल हो तो वाहन और धन का सुख देते है।

स्वास्तिके धन सौभाग्यं मीने सर्वत्र पुज्यता। श्रीवत्स वांछिता लक्ष्मी,गवाद्यं दामकेन च।।२।।

अर्थात् स्वास्तिक के चिन्ह होनें से धनी और सौभाग्यशाली होता है। मत्स्य के चिन्ह से सर्वभाग्य और पूज्य होता है। लक्ष्मी के चिन्ह से धनी और रस्सी के चिन्ह से गौ इत्यादि वाला होता है ▢▢▢

वार्षिक राशि भविष्य संवत् २०८३
(सन् 2026-2027 ई.)

विशेषः- स्त्री,पुरुष,देश ग्राम वस्तु चर अचर की राशि का भविष्य भी निम्न अनुसार प्रभावी होगा।



मेषः- चू चे चो ला ली लू ले लो अ (ल = लृ,अ = अं,आ)

इस वर्ष में आपको पूरे वर्ष १२ वें शनि साढ़े साती पनोती **लोह का पाया सियार वाहन पर गमन** करेगी। पाया वाहन तेज होने से विश्वास से धोखा,भागीदारी में धोखा,यात्रा प्रवास में सावधानी रखें। सिरदर्द,सर्दी,जलघात उदर पीड़ा बने। शुभकार्यों में खर्च प्रदेश से आर्थिक लाभ,राजकीय क्षेत्र में खर्च,विजय,शत्रु दमन होवे। धार्मिक आस्था,कपट से दूर रहे शनि लाभ देगा। वर्ष प्रवेश से **कुंभे राहु ११ वें व सिंहे केतु ५ वें** ता.१६.११.२६ तक होने से राहु सर्वारिष्ट नाशक, आर्थिक प्रगति लाभप्रद है। केतु पढ़ाई में अवरोधक है। संतान चिंताप्रद भी रहे। आगे वर्ष पर्यन्त मकरे १० वें राहु प्रगति,स्थान परिवर्तन, राजयोगद है। **केतु चौथे कर्क** का आगे वर्ष पर्यन्त पारीवारिक संघर्ष,सम्पत्ति विवाद प्रद है। वाहन चालन में सावधानी, भागीदारी में धोखा। खानपान में सावधानी रखें। वर्ष प्रवेश से ३ रें **मिथुने गुरु** ता.२५.५.२६ तक परीश्रम से लाभ, पराक्रम वृद्धिः, भाग्योदय,स्त्री संतान सुख व धार्मिक शुभकार्यों में यश,संतान चिंता कम होगी। आगे सुखस्थ **कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२६ ई.तक भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख,भाग्य में उच्चत्व,आकस्मिक लाभ,यात्रा प्रवास में लाभ बनेगा। आगे **५वें सिंहे गुरु ५वें** ता.१०.२.२७ ई.तक संतान हेतु शुभ काम,संतान की प्रगति व स्वयं का विद्या बुद्धि से भाग्योदय,आर्थिक लाभ,मनोबल बढ़े। आगे पुनः **कर्क गुरु** वर्ष पर्यन्त भाग्य में उच्च स्थिति प्रद रहेगा। पूरे वर्ष में अकेला गुरु पराक्रम ,सुख,संतान भावों पर गतिशील होगा जो अनिष्ट से बचायेगा, मनोनुकूल सफलता देगा।

निष्कर्षतः- इस पूरे वर्ष में भाग्य में उच्चत्व,संतान की प्रगति व चिंता कम होगी। किसी की बातों व धोखे से बचे। वर्ष में भाग्य आपके अनुकूल रहेगा। तथापि पनोती में लाभ हेतुग्रहों की अनुकूलता के लिये रुद्राभिषेक, प्रदोषव्रत, सर्पशांति, ग्रहशांति यज्ञ, हनुमान उपासना, गायों को घास व धार्मिक शुभकार्यों में खर्च करनें से रुके कार्य बनेंगे। दूर्वा,कुशा,समी (खेजड़ी)समिधा यज्ञ से प्रगति बनें,रुके कार्य बने। मूंगा,मोती,पुखराज रत्न धारण से लाभ होगा। नीलम, गोमेद, लहसुनियां भूल करके भी नहीं पहनें। अंक १,५,६ एवं लाल पीली गुलाबी वस्तुओं में लाभ बनेगा।



वृषभः-ई उ ए ओ वा वी वू वे वो (व = ब)

इस वर्ष प्रवेश से **मीने शनि ११ वें** भाग्य में राजकीय व व्यापारिक क्षेत्र लाभ भाग्योदय,सम्पन्नता,मनोबल वृद्धि,संतान सुख, संतान की प्रगति व आकस्मिक लाभ के संयोग बनेंगे। वर्ष में १० वें **कुंभे राहु व चौथे सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक राजयोगद, प्रगति, स्थान परिवर्तनप्रद है। केतु के कारण शोक संवेदना,सम्पत्ति भूमि विवाद,पारीवारिक कलह रहेगा। आगे वर्ष पर्यन्त मकरे राहु ९वें भागयोदय,राजयोगद है। एवं **कर्क का केतु ३रें** सर्वारिष्ट नाशक, पराक्रम वृद्धिप्रद है। सहोदर चिंता रहेगी। वर्ष प्रवेश से **मिथुने गुरु २ रे** ता.२५.५.२०२६ तक आकस्मिक धन लाभ,कष्टों से व धोखें से बचाव होगा। आगे ३ रें **कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२०२६ई.तक पराक्रम वृद्धि,स्त्री संतान चिंता दूर होगी। उच्च आर्थिक लाभ होगा। धार्मिक कार्यों में यश मिलेगा। आगे सुखस्थ **सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७

तक होने से भूमि मकान वाहन सुख,जमीन से आकस्मिक लाभ,यात्रा प्रवास, तीर्थाटन होंगे। विदेश गमन भी होवे। तथापि राजकीय व व्यावसायिक क्षेत्र में धोखे से सावधान रहें, प्रलोभन से धोखा, विश्वासघात होवे।

निष्कर्षतः- **गुरुक्षैत्री शनि व गुरु की उच्चस्थिति**,भाग्योदय, राजयोग, आकस्मिक धनलाभ,सम्पन्नता,सुख समृद्धि का वर्ष है। तथापि ग्रहों कि प्रसन्नता हेतु रुद्राभिषेक, शिव उपासना, सर्पशांति, सुन्दरकांड पाठ, प्रदोष व्रत, ग्रहशांति, दुर्गायज्ञ से विजय लाभ सफलता प्रगति मिलेगी। मंदिर पर ध्वज चढ़ाना,दुर्वायज्ञ,मयूर मछलियों,चीलों व कुत्तों को भोजन देनें से राहु केतु आदि अपग्रह शांत होंगे। गायों को घास अपंग, अपाहिजों को भोजन देनें से शुभ रहेगा। हीरा पन्ना नीलम रत्न धारण से लाभ होगा। अंक २,६,११ व सफेद,हरी,पीली,काली वस्तुओं से लाभ बनेंगा। स्त्रियोचित वस्तुयें व सौन्दर्य प्रसाधन के व्यवसाय में लाभ होगा। घी,मक्खन, दूध,छाछ आदि से लाभ बनेगा।



मिथुनः-का की कू घ ड़ छ के को ह(क=कं,का,ह=हं,हा)

आपको इस पूरे वर्ष में आपका भाग्येश **शनि १०वें मीन** पर चलेगा जो राजकीय व व्यावसायिक क्षेत्र में आकस्मिक लाभ,स्त्री संतान सुख, भूमि मकान वाहन सुख,विदेश गमन,यात्रा प्रवास व कष्टों से बचाव होगा। वर्ष प्रवेश से **९वें कुंभे राहु ३रें सिंहे केतु** ता. १६.११.२०२६ तक प्रगति,मान सम्मान,पराक्रम वृद्धि व सर्वारिष्ट नाशक फल देंगे। आगे वर्ष पर्यन्त **८वें मकरे राहु व २रे कर्के केतु** स्वास्थ्य चिंता, ऐलर्जी, विषभय, रियेक्शन, शोक संवेदना, आर्थिक धोखाप्रद है सावधान रहें। वर्ष में आपकी राशि पर मिथुने गुरु ता. २५.५.२०२६ तक मनोबल वृद्धिः,स्त्री संतान सुख,विद्या बुद्धि से भाग्योदय बने। आगे **२ रे कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२०२६तक उच्च धनस्थिति, राजयोग, व्यवसाय में उच्चत्व, विजय राजकीय व्यावसायिक क्षेत्र धन वृद्धि होगी। तथापि गुप्त चिंता, स्वास्थ्य चिंता,विश्वास से धोखा बने। आगे **३रें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२०२७ तक चलेगा। पराक्रम वृद्धि,स्त्री संतान सुख, परीश्रम से लाभ सफलता, सहोदरों के लिए शुभकाम करेंगे। आगे पुनः कर्के उच्च गुरु वर्ष पर्यन्त धन पर आर्थिक उच्च लाभ के शेषकार्य बनेंगे। गुप्त धंधे में धोखा होगा। अपनी गोपनीयता बनाये रखें।

निष्कर्षतः पूरा वर्ष धनप्राप्ति की भाग दौड़ में रहेगा। अनिष्ट से बचने के लिये शिवउपासना, रुद्राभिशेष ,सर्पशांति, दुर्गायज्ञ, त्रिपुरापूजा, सुन्दर काण्ड पाठ, मंदिर पर ध्वजा चढ़ना,दुर्वा कुशा समी(खेजड़ी) समिधाओं के यज्ञ से रुके कार्य बनेंगे। मयूर, मछलियां, चीलों,कुत्तों,कीड़ी मकोड़ी, गायों को भोजन देनें से **"धर्मेण हन्यते व्याधिः"** कष्ट दूर होंगे। अपंग अपाहिजों व ब्राह्मणों को भोजन देनें से रुके कार्य बनेंगे। सफेद,हरी,नीली रंग की वस्तुओं में लाभ होगा। विलासिता की वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें,सौन्दर्य प्रसाधन, स्त्रियोचित वस्तुओं के व्यवसाय में लाभ बनेगा। अंक ३,७,११ आपके लिये शुभ है। पन्ना,हीरा रत्न धारण से मनोबल बढ़ेगा। नीलम रत्न परीक्षण के बाद लाभ हो तो धारण करे, भाग्योदय बनें।



कर्कः-ही हु हे हो डा डी डू डे डो

आपको इस वर्ष में आपका भाग्येश १२ वें मिथुने गुरु ता. २५.५.२६ ई. तक शुभकार्यों में खर्च, यात्रा,प्रवास,विदेश गमन,तीर्थयात्रायें होगी। विद्या बुद्धि के निमित्त खर्च,भाग्योदय होगा। भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख मिलेगा। आगे आपकी कर्क राशि पर उच्च गुरु ता.२४.१०.२६तक भाग्य में उच्चत्व,प्रगति,विद्या बुद्धि से अच्छी सफलता,स्त्री संतान सुख मिलेगा। अन्य स्त्री के धोखे से बचे। आगे २रें सिंहे गुरु ता.१०.२.२७ई. तक आर्थिक धनलाभ होगा।

रुका धन मिलगा। राजयोग बनेगा। व्यावसायिक क्षैत्र से भी लाभ होगा। गुप्त कार्यों में धोखा बनेगा,बचके रहें। पुनः आगे कर्क का उच्च गुरु वर्ष पर्यन्त आपकी राशि पर मनोबल वृद्धि,मान सम्मान, भाग्य में सम्पन्नता प्रद रहेगा। इस वर्ष में वर्ष पर्यन्त **मीने शनि ६वें** चलेगा। भाग्य में आकस्मिक लाभ,स्त्री संतान सुख, भाग्योदय, पराक्रम वृद्धिः, विद्या बुद्धि से भाग्योदय, अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष में **८वें कुंभे राहु व २रें सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक स्वास्थ्य चिंता,एलर्जी,दंत कर्ण नैत्र पीड़ा,गुह्य पीड़ा,आर्थिक धोखा,विषभय, रियेक्शन से कष्ट बनेगा। आकस्मिक लाभ,प्रगति होगी पर लालच गला कटावें का ध्यान रखें। आगे वर्ष पर्यन्त **७वें मकरे राहु** पहला कर्के केतु चलेंगे जिससे बुद्धि विभ्रम, स्वास्थ्य चिंता, स्त्री से धोखा, अर्द्धंग रोग से सावधानी रखें।

निष्कर्षतः:- प्रभुत्व भाग्योदय, श्री सम्पन्नता का वर्ष है। हाय पैसा का लालच संकट में डाल सकता है। धोखे से बचे। बहुत स्वतः मिला संतोष रखें। आप शिवउपासना, सर्पशांति, ग्रहशांति यज्ञ, दुर्गायज्ञ, सुन्दर काण्ड पाठ, गोपाल सहस्त्रनाम व विष्णुसहस्त्रनाम पाठ,मंदिर पर ध्वज चढ़ानें से शुभ रहेगा। कीड़ी मकोड़ी, चीलों कुत्तों, गायों, अपंग अपाहिजों व मयूर, मछलियों को भोजन देनें से विजय लाभ सफलतायें मिलेगी। दूर्वा,कुशा के हवन से राहु केतु की शांति होगी। मोती, माणक, पुखराज रत्नधारण से मनोबल बढ़ेगा। अंक४, ८, १२, १, २में लाभ व सफेद,पीली, लाल, गुलाबी रंग की वस्तुओं में व पानी, समुद्रीय वस्तुयें,सौन्दर्य प्रसाधनों से लाभ बनेंगा।



सिंहः- मा मी मु मे मो टा टी टू टे (म = मं,मा)

वर्ष **८वां मीने शनि वर्ष पर्यन्त ढैया पनौती लोह का पाया** वृषभ वाहन पर शत्रु वर्धक है। गुप्त कार्यों में बदनामी,आर्थिक धोखा,अन्य स्त्री से धोखा मिलेगा। तथापि राजकीय व व्यावसायिक क्षैत्र से आकस्मिक व गुप्त लाभ मिलेगा। विद्या बुद्धि से सफलता, राजयोग, व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वर्ष प्रवेश से आपकी राशि पर **सिंहे केतु व ७वें कुंभे राहु** ता.१६.११.२०२६ तक एलर्जी, शिरोभ्रम, अर्द्धांग पीड़ा, कष्ट, शोक संवेदना, गुप्त पीड़ा, गुप्त धोखा, अस्थिरताप्रद है। आगे वर्ष पर्यन्त **१२ वें कर्के केतु व ६ ठें मकरे राहु** होने से स्थान परिवर्तन,खर्च की अधिकता, विश्वासघात, शोक संवेदना, शत्रुनाशक समय रहेगा। राहु सर्वारिष्ट नाशक बचाव भी करेगा। तथापि सतर्क रहे,सावधान रहे। वर्ष में आपके ११ वें मिथुने गुरु ता.२५.५.२६ तक विद्या बुद्धि से सफलता बने। आकस्मिक गुप्त लाभ पराक्रम वृद्धिः,स्त्री संतान सुख मिले। आगे **१२वें कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२६ई.तक शुभकार्यों में विद्या बुद्धि के निमित्त संतान के निमित्त तीर्थाटन पर खर्च होवे। भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख व आकस्मिक लाभ के संयोग बनेंगे। आगे **सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७ तक चलेगा जिससे मनोबल वृद्धि,विद्या बुद्धि से भाग्योदय, स्त्री संतान सुख बनेगा। आगे पुन.**कर्के गुरु** ता.१०.२०२७ ई.तक वर्ष पर्यन्त चलेगा। जो आर्थिक लाभ व खर्च के शेष कार्यों को पूरे करेगा।

निष्कर्षतः:- वर्ष में धनलाभ के साथ साथ गुप्त शत्रुओं का प्रकोप,स्वास्थ्य चिंता रहेगी। ग्रहों को शांत करने के लिये शिव उपासना, रुद्रयज्ञ, रुद्राभिशेष , हनुमान जी पर तेल सिंदूर चढ़ाना, सुन्दर काण्ड पाठ, सूर्योपासना, दुर्गायज्ञ, से मनोनुकूल कार्य बनेंगे। कीड़ी मकोड़ी,चीलों गायों मछलियों कुत्तों,को भोजन देने से रुके कार्य बनेंगे। लाल पीली,गुलाबी वस्तुओं में लाभ बनें। अंक ५,६,१,२,३, ८में शुभ है। मांणक,मोती, पुखराज रत्न धारण से लाभ बनेगा।



कन्याः- टो पा पी पू ष ण ठ पे पो(प = पं,पा)

इस प्रवेश से १०वें मिथुने गुरु ता.२५.६.२६तक भूमि

मकान वाहन सम्पत्ति सुखद है। परन्तु राजकीय,व्यावसायिक क्षैत्र में संघर्षप्रद भी है। खर्च की अधिकता,शत्रु वर्धक धोखाप्रद भी है। आगे **११ वें कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२६ तक भूमि से उच्च धनलाभ, स्त्री,संतान सुख,पराक्रम वृद्धि,धार्मिक शुभकार्यों में यश मिले। तथापि किसी संतान से धोखा कष्ट भी बने। आगे **१२ वें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७ तक शुभकार्यों में खर्च,तीर्थाटन,विदेश गमन, प्रदेश से आकस्मिक लाभ,सम्पत्ति सुख,मकान वाहन पर खर्च होवे। आगे पनुः **कर्के गुरु** वर्ष पर्यन्त रहेगा जो उच्च धन लाभप्रद रहेगा। पराक्रम वृद्धि स्त्री सुखद होगा। वर्ष में **७ वें मीन शनि** वर्ष पर्यन्त चलेगा जो स्त्री संतान सुख,भूमि,मकान वाहन सम्पत्ति सुखद रहेगा। भोग विलासिता में धोखे से सावधान रहें। वर्ष में **६ठे कुंभे राहु व १२ वें सिंहे केतु** ता.१६.११.२०२६ तक चलेंगे। राहु सर्वारिष्ट नाशक, विजयप्रद है। केतु में खर्च की अधिकता स्थान परिवर्तन, प्रगति,यात्रा,अस्थिरताप्रद रहेगा। आगे **५वें मकरे राहु व ११ वें कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त तक चलेंगे। राहु राजयोगद व केतु सर्वारिष्ट नाशक, लाभप्रद है। तथापि संतान चिंता, आर्थिक धोखे से सावधानी रखें।

<u>निष्कर्षतः</u>:-विजय लाभ सम्पन्नता प्रगति के साथ शत्रुओं के मान मर्दन भी होगा। विजयार्थग्रहों को प्रसन्न करने हेतु ग्रह शांति शिवोपासना रुद्राभिशेष, सर्पशांति, दुर्गायज्ञ, त्रिपुरा पूजन,श्रीयंत्र पूजन, गोपाल सहस्त्रनाम व विष्णुसहस्त्रनाम पाठ से परेशानियां, अनिष्ट दूर होंगे। ब्राह्मण कन्या विवाह या गरीब कन्या विवाह से अशुभ ग्रहों का प्रभाव शांत होगा। हनुमानजी को तेल सिंदूर चढ़ानें से व सुन्दरकाण्ड पाठ से क्रूर ग्रह शांत होंगे। हीरा पन्ना रत्न धारण से लाभ होगा। नीलम अनुकूल होवे तो धारण करें वरना नहीं। अंक २,३,४,६ व हरी नीली,काली वस्तुयें व सौंदर्य प्रसाधन, स्त्रियोचित व्यवसाय में लाभ बनेगा।



तुलाः-रा री रु रे रो ता ती तु ते(र = ऋ, त = तृ,त्रि)

इस वर्ष प्रवेश से **६ठें मीने शनि** वर्ष पर्यन्त चलेगा शत्रु वर्धक,उदर पीड़ा,खर्च ज्यादा,परीश्रम से लाभ,भूमि मकान वाहन से आकस्मिक लाभ बनेगा। शनि सर्वारिष्ट नाशक होने विजय सफलता देगा। अन्य स्त्री के लांछन से बचे। वर्ष प्रवेश **से ५वें कुंभे राहु व ११ वें सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक चलेंगे। विद्या बुद्धि से सफलता, दूर प्रवास भाग्य में आकस्मिक लाभ,प्रगति के संयोग बनेंगे। संतान चिंता रहे। आगे **चौथे मकरे राहु व १० वें कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त प्रगति, राजयोग, व्यवसाय में नया बदलाव, स्थान परिवर्तनप्रद है। शोक संवेदना,अलगाव भी बने। वर्ष में **६वें मिथुने गुरु** ता.२५.५.२६ई. तक परीश्रम से भाग्योदय,धार्मिक आस्था से सफलता मिले। आगे **१०वें उच्च कर्के गुरु** ता.२४.१०.२६तक उच्च राजयोग व व्यवसाय योग व आर्थिक सम्पन्नताप्रद रहेगा। स्त्री संतान सुख बने। आगे **११ वें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७ तक परीश्रम से लाभ,पराक्रम वृद्धिः,स्त्री संतान सुखद है। आगे पुनः **कर्के उच्च १०वें गुरु उच्च** राजयोग,व व्यवसाय की उच्च स्थिति को मजबूत करेगा। रुके कार्यो में सफलता मिलेगी।

<u>निष्कर्षतः</u>:-वर्ष में आकस्मिक लाभ,राजयोग व सफलता मिलेगी। तथापि क्रूर ग्रहों को प्रसन्न करनें के लिये रुद्राभिशेष, शिवउपासना, गुप्त तुलादान, प्रदोष व्रत, शनिवार व्रत, दुर्गा यज्ञ,ग्रहशांति यज्ञ, विष्णु सहस्त्रनाम व गोपाल सहस्त्रनाम पाठ, सुन्दरकाण्डपाठ, हनुमान जी को तेल सिंदूर चढ़ावें। कीड़ी मकोड़ी, गाय, कुत्तों, मछलियों, ब्राह्मणों को भोजन देनें से रुके कार्य बनें,सफलता मिले। पन्ना,हीरा रत्नधारण से लाभ होगा। नीलम अनुकूल हो तो ही पहिनें वरना नहीं। अंक ३,४, ५, ७,११ व सफेद,हरी,नीली,काली वस्तुयें, दवाईयाँ, वस्त्राभूषण के व्यवसाय में लाभ होगा।



वृश्चिक-तो ना नी नू ने नो या यी यू(न=नं,ना/य=यं,या)

वर्ष प्रवेश से वर्ष पर्यन्त **५वें मीने शनि** स्थान वृद्धिःकारक है। परीश्रम से सफलता पराक्रम वृद्धिः,भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख,विद्या बुद्धि से अच्छी सफलता, राजयोग व संतान सुखद, आर्थिक सम्पन्नता लाभ व स्त्री सुखद वर्ष रहेगा। वर्ष में **चौथे कुंभे राहु व १०वें सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक राजयोगद,व्यवसाय में वृद्धिप्रद है तथापि संघर्ष से सफलता मिलेगी। आगे **३रें मकरे राहु व ९वें कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त सर्वारिष्ट नाशक,विजय सफलताप्रद है। भाग्य में परीश्रम से सफलता,राजयोग बनेगा। शोक संवेदना,स्थान परिवर्तन,प्रगति के संयोग भी बनेंगे। वर्ष में **८वें मिथुने गुरु** ता.२५.५.२६ तक स्वास्थ्य चिंता,खर्च की अधिकता,गुप्तलाभ,गुप्तकृत्यों में खर्च,गोपनीयता भंग होने से पारीवारिक परेशानियां होगी। आगे **९वें कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२६ तक उच्च भाग्योदय,भागय में उच्च धन लाभ,मनोबल वृद्धि,विद्या बुद्धि से भाग्य में उच्चत्व,राजयोग बने। स्त्री संतान सुख,पुत्र संतान सुख भोगे। आगे **१० वें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२०२७ तक चलेगा। राजयोग व व्यवसाय से अच्छा लाभ। विद्या बुद्धि से राजयोग बने। संतान को भी राजयोग व व्यवसाय से लाभ प्रगति बने। आगे पुनः **९वें कर्के उच्च गुरु** वर्ष पर्यन्त भाग्योदय में उच्च स्थिति का प्रतीक रहेगा। अपने ही ईर्ष्याष्पदों से धोखा ''घर का भेदी लंका ढावे'' होगा,सावधान रहें।

<u>निष्कर्षतः</u> वर्ष सफलता व सम्पत्ति प्राप्ति के मदांध में रहेंगे तो धोखा मिलेगा। आप ग्रहों की प्रसन्नता हेतु रुद्राभिशेष, शिवउपासना, सर्पशांति, दुर्गायज्ञ, गणपति पर दूर्वानुष्ठान, ग्रहशांति यज्ञ, सुन्दरकाण्ड पाठ, मंगल चंडिका पाठ से समस्यायें दूर होगी। विष्णुसहस्त्र नाम व गोपालसहस्त्रनाम पाठ से आर्थिक लाभ होगा। गायों, मछलियों, मयूरों व कीड़ी मकोड़ीयों को भोजन देनें से रुके कार्य बनेंगे। मूंगा, पुखराज, मोती रत्न धारण से लाभ होगा। अंक ४,५,६,८ व लाल पीली, सफेद,गुलाबी वस्तुओं में लाभ होगा। बिजली का सामान,रंग रोगान,दवाईयां, जहर, कीट नाशक, शस्त्र, रंगीन कपड़ा व लाल रंग की वस्तुओं के व्यवसाय में लाभ बनेगा।



धनुः-ये यो भा भी भू धा फा ढा भे

इस वर्ष में आपका राश्यैष गुरु तीन राशियों को प्रभावित कर रहा है जो आपके भाग्य को चमकायेगा। ७ वें मिथुने गुरु ता.२५.५.२६ तक स्त्री संतान सुखद है। मनोबल मजबूत, विद्या बुद्धि से सफलता। भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख। परन्तु प्रेम प्रसंग के लांछन,धोखे से बचे। आगे ८वें कर्क उच्च गुरु ता.२४.१०.२६ तक आकस्मिक उच्च लाभ,भूमि मकान वाहन सम्पत्ति से उच्च लाभ व कष्टों से बचाव होवे। तथापि आर्थिक धोखा बने सावधान रहें। आगे ९वें सिंहे गुरु ता.१०.२.२०२७ तक भाग्योदय,विद्या बुद्धि से भाग्य में सफलता,मनोबल बढ़ेगा। अपने ही मित्र,स्वजन के धोखे से सतर्क रहें। आगे पुनः ८ वें उच्च गुरु वर्ष पर्यन्त आकस्मिक आर्थिक उच्चत्व देगा, परन्तु गोपनीयता भंग होने से आर्थिक धोखा भी मिलेगा। वर्ष में चौथा शनि ढैय्या पनौती लोह का पाया,अश्व वाहन पर से वैर विरोध बढ़ेगा। तथापि मीन शनि स्थान वृद्धि करो शनि धन,पराक्रम व भूमि सम्पत्ति वाहन वृद्धि को देगा। विजय, मनोबल बढ़ेगा। राजकीय व व्यापारिक सफलता,शत्रुओं का पराभव होगा। वर्ष प्रवेश से ३रें कुंभे राहु व ९वें सिंहे केतु ता.१६.११.२६ तक सर्वारिष्ट नाशक,राजयोगद है। आगे २रें मकरे राहु व ८वें कर्के गुरु वर्ष पर्यन्त चलेंगे जो कष्ट, विषभय,एलर्जी, रियेक्शन, आर्थिक धोखा संघर्षप्रद है। सावधान रहें।

<u>निष्कर्षतः</u>-श्री सम्पन्नता का वर्ष है परन्तु लालच बुरी बला से धोखा भी है इसलिये धर्मेण हन्यते ग्रहाः के लिये ग्रहशांति दुर्गायज्ञ, सर्पशांति, शिवउपासना, रुद्राभिशेष, सुन्दरकाण्ड पाठ,मंदिर पर

ध्वजा चढ़ाने से कष्ट दूर होवे। गाय कुत्तों,कीड़ी मकोड़ी, मयूर, मछलियों को भोजन देने से समस्यायें दूर होगी। अंक १,५,६,७,९ व पीली सफेद,लाल,गुलाबी वस्तुयें, वस्त्राभूषण, रत्न, सोना चांदी सौन्दर्य वस्तुयें, शस्त्र, कागज, स्टेशनरी के व्यापार में लाभ होगा। पुखराज, मोती, माणक रत्न धारण से प्रगति होवे। मूंगा रत्न अनुकूल हो तो धारण करें,वरना नहीं पहिनें।



मकरः-भो जा जी जु जे जो खा खी खु खे खो ग गी (ग=ज्ञ, क्ष=ख)

आपका **राश्येष शनि ३रें मीन राशि पर** वर्ष पर्यन्त चलेगा। पराक्रम वृद्धि,विजय, सर्वारिष्ट नाशक, विद्या बुद्धि से भाग्योदय, प्रदेश गमन,मनोबल वृद्धि,स्थान वृद्धि करो शनि सफलता देगा। वर्ष में **२रें कुंभे राहु व ८वें सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक मार्कदोष युक्त कष्टप्रद, घातपात,पैर में चोट, अर्थिक नुक्सान,धोखाप्रद है एलर्जी विषभय,रियेक्शन से सावधानी रखें। आगे **मकरे राहु व कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त चलेंगे। स्थान परिवर्तन,राजयोग व व्यवसाय में बदलाव लायेंगे। स्त्री कष्ट,स्त्री लांछन से बचे। गुंप्त कृत्यों व गोपनीयता भंग से धोखा होगा। वर्ष में **६ठें मिथुने गुरु** ता.२५.५.२६ तक भागीदारी में या लेनदेन में धोखा। खर्च की अधिकता,तीर्थाटन,शुभकार्यों में खर्च होगा। आगे **७वें उच्च गुरु** ता.२४.१०.२६ तक स्त्री संतान सुख,उच्चपराक्रम वृद्धि,परीश्रम से लाभ बनेगा। तथापि मानसिक श्रम, चिंता भी रहेगी। आगे **८वें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७तक चलेगा। स्वास्थ्य चिंता, प्रदेश से लाभ, भूमि, मकान वाहन सम्पत्ति से आकस्मिक लाभ बनेगा। धार्मिक शुभकार्यों में खर्च, तीर्थाटन, विदेश गमन होगा। आर्थिक गोपनीयता भंग,विश्वास से धोखा,सावधान रहें। आगे पुनः **७वें उच्च कर्क गुरु** वर्ष पर्यन्त चलेगा जो अवशिष्ट कार्यों को पूरा करेगा। उच्च राजयोग स्त्री संतान सुख देगा।

<u>निष्कर्षतः</u>- शनि पनौती में खायी मार की भरपाई शुरु रहेगी,धन मान बढ़ेगा। तथा घणां हेत वाले खाड़ा भरायेंगे,सावधान रहें। शिवउपासना, रुद्राभिशेष, सर्पशांति, सुन्दरकाण्डपाठ, मंदिर पर ध्वजा चढ़ानें,ग्रहशांति यज्ञ में दूर्वा,कुशा की समीधाओं के हवन से शांति बनें। दुर्गायज्ञ, श्रीसूक्त पाठ से आर्थिक लाभ बनें। मंदिर पर ध्वजा चढ़ानें से राहु केतु की शांति होवे। मयूरों, मछलियों,गायों,कुत्तों व कीड़ी मकोड़ी को भोजन देनें से कष्ट दूर होवे। तुलसी, पीपल रोपण पूजन से सुख समृद्धि होवे। तुलसी विवाह,ब्राह्मण कन्या का विवाह में सहयोग करनें से मनोकामनाएं पूर्ण होवे। पन्ना,हीरा,नीलम रत्न धारण करनें से लाभ होगा। अंक २,६,७,८ व काली, सफेद, हरी,नीली व जलज वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ होगा।



कुंभः- गु गे गो शा शी शु शे शो द (स=श, श्र, द=दं, दा)

आपका राश्यैष **शनि २रें वर्ष पर्यन्त मीन राशि पैरों पर** उतरती साढ़े सात वर्ष की पनौती चांदी के पाया,कागवाहन पर होने से रोग,चिंताप्रद रहेगी। स्त्री कष्ट,स्त्री लांछन,गुप्त पीड़ा,स्वास्थ्य चिंता रहेगी। तथापि आकस्मिक धनलाभ,धन कमानें की लालसा बढ़ेगी। भूमि मकान वाहन सम्पत्ति सुख बढ़ेगा। स्थान वृद्धि करो शनि से धन सम्पत्ति बढ़ेगी। वर्ष में **कुंभे राहु व ७वें सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक चलेंगे मनोबल वृद्धि, राजयोग व व्यवसाय योग से लाभ,नये धंधे, करेंगे। स्त्री चिंता,अन्य स्त्री से लांछन, एलर्जी,गुप्त पीड़ा से चिंतित रहेंगे। आगे **१२ वें मकरे राहु व ६ठें कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त चलेंगे। खर्च ज्यादा,स्थान परिवर्तन,उदर पीड़ा,विश्वास से धोखा होगा। तथापि केतु शत्रु नाशक,सर्वारिष्ट नाशक बचाव भी करेंगे। वर्ष प्रवेश से ५वें **मिथुने गुरु** ता.२५.५.२६ तक विद्या बुद्धि व परीश्रम से लाभ,

भाग्योदय होवे। तथापि मानसिक चिंता भी मनोनुकूल सफलता नहीं होने से रहेगी। आगे **६ठें उच्चकर्के गुरु** ता.२४.१०.२६ तक चलेगा उच्च राजयोग,धनलाभ बनेगा। तथापि धोखे से खर्च परेशान भी करेगा। आगे **७वें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७ तक चलेगा, स्त्री संतान सुख,पराक्रम वृद्धि,अच्छी सफलता मिले। राजयोग व व्यवसाय से लाभ बने। आगे पुनः**६ठें उच्च कर्के गुरु** वर्ष पर्यन्त चलेगा। जो रुके कार्यों में उच्च सफलता प्राप्त करेगा। आर्थिक धोखे से सावधान रहें।

<u>निष्कर्षतः</u> उतरती पनोती लाभ देगी,क्षतिपूर्ति करेगी।धार्मिक कृत्य करें व आस्था बनाई रखे। उतावलापन से बचे। आप शिव उपासना रुद्राभिशेष, ग्रहशांति, दुर्गायज्ञ, सुन्दरकाण्ड पाठ, हनुमानजी को तेल सिंदूर चढ़ाने से शुभ रहेगा। गणपति पर दुर्वाभिशेष कुश, शमी समीधाओं से यज्ञ मनोबल बढ़ायेगा, सफलता देगा। पानी से भरा कुंभ दान,कीड़ी मकोड़ी,चीलों,कुत्तों,गायों को भोजन देने से रुके कार्य दूर होंगे। श्री सूक्तपाठ, विष्णु सहस्त्रनाम व गोपाल सहस्त्र नाम पाठ से लक्ष्मी बढ़ेगी। पन्ना व नीलम रत्न पहनने से लाभ होगा। अंक ३,७,८,११ में लाभ बनें। काली,हरी,नीली,सफेद वस्तुओं में व स्टील, लोहा,हार्डवेयर,मशीनरी,तेल,तिलहन,पैट्रोल आदि के व्यवसाय में लाभ होगा।



मीनः- दी दू थ झ ञ दे दो च ची (च = चं,चा)

आपका वर्ष में **राश्येष ४थे मिथुने गुरु** ता.२५.५.२६ तक हृदय उदय विकार। घर में क्लेश। सम्पत्ति विवाद,प्रेम प्रसंग में धोखा लांछन लगे। तथापि राजयोग,व्यवसाय योग श्रेष्ठ। मनोबल मजबूत, गुप्तलाभ गुप्तकृत्य में सतर्क रहे। आगे **५वें कर्के उच्च गुरु** ता.२४.१०.२६ तक होने से उच्च विद्या बुद्धि से उच्च राजयोग, उच्च मनोबल, भाग्योदय होवे। स्त्री संतान सुख। पुत्र सुख,धार्मिक शुभकार्यों में यश। नीच लोगों से लाभ में अवरोध,धोखा। आगे **६ठें सिंहे गुरु** ता.१०.२.२७ तक राजयोग,आर्थिक लाभ,विजय,शत्रुनाश, होवे। परन्तु धोखे से खर्च होवे। आगे पुनः**५वें कर्के उच्च गुरु** वर्ष पर्यन्त चलेगा जो अवशिष्ट उच्च सफलता को देगा। वर्ष पर्यन्त **मीने शनि साढ़े साती पनोती पेट पर सोना के पाया,बकरावाहन** पर हानिप्रद हे। बड़े बुढ्ढों सहोदर को कष्ट। स्त्री चिंताअन्य स्त्री से लांछन,मानसिक विभ्रम,सिरदर्द,उदरपीड़ाप्रद है। तथापि स्थान वृद्धि करो शनि होने से मनोबल मजबूत, परीश्रम से सफलता,राजयोग, व्यवसाय योग लाभ प्रगतिप्रद है। प्रदेश से लाभ,विदेश गमन होगा। वर्ष में **१२ वें कुंभे राहु व ६ठे सिंहे केतु** ता.१६.११.२६ तक चलेगा। खर्च की अधिकता,यात्रा प्रवास,विदेश गमन,अस्थिरता,शोक संवेदना, अलगाव,एलर्जी,रियेक्शन,उदरपीड़ा बने। केतु शत्रु नाशक सर्वारिष्ट नाशक व विजयप्रद है। आगे **११वें मकरे राहु व ५वें कर्के केतु** वर्ष पर्यन्त है जो राजयोगद,सफलता,लाभप्रद है। विद्या बुद्धि में एक लक्ष्य परीश्रम से सफलता मिले। संतान चिंता भी रहे। व्यापार में बदलाव से लाभ बढ़ेगा।

<u>निष्कर्षतः-</u> वर्ष में शनि,राहु का विशेष प्रभाव संघर्ष व सफलता में बाधक है। धर्मेण हन्यते ग्रहा को देखते शिव उपासना, रुद्राभिशेष, सर्पशांति, मंदिर पर ध्वजा चढ़ानें से सफलता प्राप्त करेंगे। गणपति पर दुग्धाभिशेष ,दुर्गायज्ञ, ग्रहशांति, दुर्वा व कुशा समीधाओं का यज्ञ करनें से प्रगति बनें,रुके कार्य पूर्ण होंगे। गायों, चीलों, मछलियों, मयूरों, कुत्तों व अपंग अपाहिजों को भोजन देनें से मनोरथ पूर्ण होगें। कन्यादान से लक्ष्मी बढ़े। पुखराज, मूंगा,मोती रत्न धारण से लाभ होगा। अंक ४,८,६,१२ व सफेद,पीली,लाल, गुलाबी रंग की वस्तुयें, सोना, चांदी, आभूषण, जवाहरात,जलज वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें, एक्सपोर्ट आदि व्यवसाय में लाभ होगा। ▢▢▢